क्रम-संख्या 49

ग्रन्थ-नाम रामायण

ग्रन्थकर्त्ता तुलसीदास

विषय काव्य

लिपि देवनागरी

पत्र-संख्या १८४

पत्र-प्रमाण 30.6 × 15.6 मि० मि०

पंक्तियां १४

अक्षर 32

पाठ-संख्या ५१६४

पूर्ण/अपूर्ण खण्डित

प्रारम्भ :—

बालकाण्ड का पृष्ठ नं. 47 तथा अयोध्याकाण्ड का पृष्ठ नं. 54 नहीं है।

७१

(तुलसीकृत) रामायण लै ख. नं. २८२४

रा०षा० १

॥श्रीगणेशायनमः॥ वर्णानामर्थसंघानांरसानांछंदसामपि॥ मंगलानांचकर्त्तारौवंदेवाणी
विनायकौ॥१॥ भवानीशंकरौवंदेश्रद्धाविश्वासरूपिणौ॥ याभ्यांबिनानपश्यंतिसिद्धाः
स्वांतस्थमीश्वरं॥२॥ वंदेबोधमयंनित्यंगुरुंशंकररूपिणं॥ यमाश्रितोहिवक्रोपिचंद्रःसर्व
त्रबंद्यते॥३॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ॥ बंदेविशुद्धविज्ञानौकवीश्वर
कपीश्वरौ॥४॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणींक्लेशहारिणीं॥ सर्वश्रेयस्करींसीतांनतोहंरा
मवल्लभां॥५॥ यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलंब्रह्मादिदेवासुरायत्सत्वादमृषैवभाति
सकलंरज्जौयथाहेर्भ्रमः यत्पादप्लवमेवमेवहिभवांभोधेस्तितीर्षावतां॥ वंदेहंतमशेष
कारणपरंरामाख्यमीशंहरिं॥६॥ नानापुराणनिगमागमसंमतंयद्रामायणेनिगदि
तंक्वचिदन्यतोपि॥ स्वांतःसुखायतुलसीरघुनाथगाथा॥ भाषानिबंधमतिमंजुलमात
नोति॥७॥ सोरठा॥ जिहसुमिरतसिधिहोय॥ गणनायककरिबरबदन॥ करौअनुग्रह
सोइ॥ बुद्धिराशिशुभगुणसदन॥१॥ मूकहोइबाचाल॥ पंगुचढैगिरिबरगहन॥ जासु
कृपासुदयाल॥ द्रवौसकलकलिमलदहन॥२॥ नीलसरोरुहश्याम॥ तरुणअरुण
वारिजनयन॥ करौसोममउरधामसदाक्षीरसागरशयन॥३॥ कुंदइंदुसमदेह॥ उमा
रमणकरुणाअयन॥ जाहिदीनपरनेह॥ करौकृपामर्दनमयन॥४॥ बंदौगुरुपदकंज

राम १

श्री

स

कृपासिंधुनररूपहरि॥महामोहतमपुंज॥जासुबचनरबिकरनिकर॥५॥चौपई॥बंदौंगुरु
पदपदुमपरागा॥सुरुचिसुबाससरसअनुरागा॥अमियमूरमयचूरणचारू॥समनसकल
भवरुजपरिवारू॥सुकृतसंभुतनबिमलबिभूती॥मंजुलमंगलमोदप्रसूती॥जनमनमं
जुमुकरमलहरणी॥कियेतिलकगुणगणबशकरणी॥श्रीगुरुपदनखमणिगणजो
ती॥सुमिरतदिव्यदृष्टिहियहोती॥दलनमोहतमसोसुप्रकासू॥बडेभागउरआवहि
जासु॥उघरहिंबिमलबिलोचनहियके॥मिटहिंदोषदुखभवरजनीके॥सूझहिंरामच
रितमणिमाणिक॥गुप्तप्रगटजहंजोजेहिखानिक॥दोहा॥यथासुअंजनअंजिदृगसा
धकसिद्धसुजान॥कौतुकदेखहिंशैलबन॥भूतलभूरिनिधान॥१॥चौपई॥गुरुपदरज
मृदुमंजुलअंजन॥नयनअमियदृगदोषबिभंजन॥तिहिकरिबिमलबिबेकबिलो
चन॥बरनउंरामकथाभवमोचन॥बंदौंप्रथममहीसुरचरना॥मोहजनितसंशयसबहर
ना॥सुजनसमाजसकलगुनखानी॥करौंप्रनामसप्रेमसुबानी॥साधुचरितसुभसरिसकपासू॥निरसबिशदगुनमयफलजासू॥जोसहिदुखपरछिद्रदुरावा॥बंदनीयजेहि
जगजसुपावा॥मुदमंगलमयसंतसमाजू॥जोजगजंगमतीरथराजू॥रामभगतिजहं
सुरसरिधारा॥सरस्वतीब्रह्मबिचारप्रचारा॥बिधिनिषेधमयकलिमलहरणी॥करम

रा० बा० २

कथारविनंदननिबरनी॥ हरिहरकथाबिराजतबेनी॥ सुनतसकलमुदमंगलदेनी॥ ब
टुविश्वासअचलनिजधर्मा॥ तीरथराजसमाजसुकर्मा॥ सबहिंसुलभसबदिनसबदेसा
॥ सेवतसादरसमनकलेसा॥ अकथअलौकिकतीरथराऊ॥ देयसद्यफलप्रगटप्रभा
ऊ॥ दो० सुनिसमझहिंजनमुदितमन॥ मज्जहिंअतिअनुराग॥ लहहिंचारिफलअछतत
नुसाधुसमाजप्रयाग॥ २॥ चौपई॥ मज्जनफलपेखियततकाला॥ काकहोइपिकबक
उमराला॥ सुनिआचरजकरैजनिकोई॥ सतसंगतिमहिमानहिंगोई॥ बालमीकना
रदघटजोनी॥ निजनिजमुखनकहीनिजहोनी॥ जलचरथलचरनभचरनाना॥ जे
जडचेतनजीवजहाना॥ मतिकीरतिगतिभूतिभलाई॥ जबहिंजतनजहांजिहिपाई॥ जि
सोजानबसतसंगप्रभाऊ॥ लोकहूबेदनआनउपाऊ॥ बिनुसतसंगबिबेकनहोई
॥ रामकृपाबिनुसुलभनसोई॥ संतसंगतिमुदमंगलमूला॥ सोइफलसिधिसाधनसब
फूला॥ सठसुधरहिंसतसंगतिपाई॥ पारसपरसिकुधातुसुहाई॥ बिधिबससुजनकु
संगतिपरहीं॥ फनिमनिसमनिजगुनअनुसरहीं॥ बिधिहरिहरकविकोबिदबानी
॥ कहतसाधुमहिमासकुचानी॥ सोमोसनकहिजातनकैसें॥ साकबनिकमनि
गनगुनजैसें॥ दोहा॥ बंदौसंतसमानचित॥ हितअनहितनहिंकोइ॥ अंजलिगतसु

राम २

न सुमन जिमि॥सम सुगंध कर दोइ॥संत सरल चित जगत हित॥जानि सुभाउ सनेह॥बा
ल बिनय सुनि करि कृपा॥राम चरन रति देहु॥३॥बहुरि बंदि खल गन सतिभायें॥जे
बिनु काज दाहिनेहु बायें॥पर हित हानि लाभ जिन्ह केरे॥उजरे हरष बिषाद बसेरे।
॥सुनत कहत पर अघ न अघाहीं॥जौं प्रभु श्रोष सरस जग माहीं॥हरि हर जस रा
केस राहु से॥पर अकाज भट सहसबाहु से॥जे पर दोष लखहिं सहसाखी॥पर हि
त घृत जिन्ह के मन माखी॥तेज कृसानु रोष महिषेसा॥अघ अवगुन धन धनी धने
सा॥उदय केतु सम हित सबही के॥कुंभकरन सम सोवत नीके॥पर अकाज लगि त
न परिहरहीं॥जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं॥बंदौं खल जस सेष सरोषा॥सह
स बदन बरनै पर दोषा॥पुनि प्रनवौं पृथुराज समाना॥पर अघ सुनै सहस दस का
ना॥बहुर सुक्र सम बिनवौं तेही॥संतत सुरानीक हित जेही॥बंदौं जगा नर सक्र समा
ना॥करहिं उपाय काज जेहि हाना॥बचन बज्र जेहि सदा पियारा॥सहस नयन पर दो
ष निहारा॥दोहा॥उदासीन अरि मीत हित॥सुनत जरहिं खल रीति॥जानि पानि जुग जो
रि जन॥बिनती करइ सप्रीति॥४॥चौपई॥मैं अपनी दिशि कीन्ह निहोरा॥तिन निज ओर
न लाउब भोरा॥बायस पालहिं अति अनुरागा॥होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा॥

रा॰बा॰
३

बंदौं संत असज्जन चरना॥ दुखप्रद उभय बीच कछु बरना॥ बिछुरत एक प्रान हरि ले
हीं॥ मिलत एक दुख दारुन देहीं॥ उपजहिं एक संग जल माहीं॥ जलज जोंक जिमि
गुन बिलगाहीं॥ सुधा सुरा सम साधु असाधू॥ जनक एक जग जलधि अगाधू॥ भ
ल अनभल निज निज करतूती॥ लहत सुजस अपलोक बिभूती॥ सुधा सुधाकर सु
रसरि साधू॥ गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू॥ गुन अवगुन जानत सब कोई॥ जो
जेहि भावनीक तेहि सोई॥ दोहा॥ भलो भलाई पै लहै॥ लहै निचाई नीचु॥ सुधा सराही अ
मरता॥ गरल सराही मीचु॥ ५॥ चौपई॥ खल अघ अगुन साधु गुन गाहा॥ उभय अपा
र उदधि अवगाहा॥ तेहि ते कछु गुन दोष बखानें॥ संग्रह त्याग न बिनु पहिचानें॥ भले
उ पोच सब बिधि उपजाए॥ गनि गुन दोष बेद बिलगाये॥ कहहिं बेद इतिहास पुरा
ना॥ बिधि प्रपंच गुन अवगुन साना॥ दुख सुख पाप पुन्य दिन राती॥ साधु असाधु सु
जाति कुजाती॥ दानव देव ऊंच अरु नीचू॥ अमिअ सजीवन माहुर मीचू॥ माया
ब्रह्म जीव जगदीसा॥ लछि अलछि रंक अवनीसा॥ कासी मघ सुरसरि क्रमनासा॥
मरु मालव महिदेव गवासा॥ सुरग नरक अनुराग बिरागा॥ निगम आगम गुन दोष
बिभागा॥ दोहा॥ जड चेतन गुन दोषमय॥ बिस्व कीन्ह करतार॥ संत हंस गुन ग

धा

राम
३

५

हरिपय ॥ परिहरि बारि बिकार ॥६॥ चौपई ॥ अस बिबेक जब देइ बिधाता ॥ तब तजि
दोष गुनहि मन राता ॥ काल सुभाव कर्म बरिआई ॥ भलेउ प्रकृति बस चूकइ भलाई
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं ॥ दलि दुख दोष बिमल यश देहीं ॥ खलउ करइ भल
पाइ सुसंग ॥ मिटहि न मलिन सुभाव अभंग ॥ लखि सुबेष जग बंचक जेऊ ॥ बेष
प्रताप पूजियत तेऊ ॥ उघरहिं अंत न होय निबाहू ॥ कालनेमि जिमि रावण राहू
॥ कियेकु बेष साधु सनमानू ॥ जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥ हानि कुसंग सुसंगति
लाहू ॥ लोकहु बेद बिदित सब काहू ॥ गगन चढै रज पवन प्रसंगा ॥ कीचइ मिलइ नी
च जल संगा ॥ साधु असाधु सदन शुक सारी ॥ सुमरहिं राम देहिं गुण गारी ॥ धूम कुसंग
ति कारिख होई ॥ लिखिये पुराण मंजु मसि सोई ॥ सोइ जल अनल अनिल संघाता
॥ होइ जलद जग जीवनदाता ॥ दोहा ॥ ग्रह भेषज जल पवन पट ॥ पाइ कुजोग सुजोग
होइ कुबस्तु सुबस्तु जग ॥ लखहिं सुलक्षण लोग ॥ ७ ॥ चौपई ॥ सम प्रकाश तम पाख
दुहू ॥ नाम भेद बिधि कीन्ह ॥ शशि पोषक सोषक समुझि ॥ जग यश अपयश दीन्ह ॥ ८ ॥
जड चेतन जग जीव जत ॥ सकल राममय जानि ॥ बंदौं सब के पद कमल ॥ सदा जोरि
जुग पानि ॥ ९ ॥ देव दनुज नर नाग खग ॥ प्रेत पितर गंधर्ब ॥ बंदौं किन्नर रजनिचर ॥ ह

च्यार षान चौरासी लाष जीवा जुन॥

रा॰बा॰ ४

षाकरकृअवसर्व ॥७॥ चौपई॥ आकर चार लाष चौरासी॥ जात जीव नभ जल थल
बासी॥ सियाराममय सब जग जानी॥ करौं प्रनाम जोरि जुग पानी॥ जानि कृपा
कर किंकर मोहू॥ सब मिलि करहिं छाडि छल छोहू॥ निज बल बुधि भरोस मो
हि नाही॥ तातें बिनय करत सब पाही॥ करण चहौं रघुपति गुण गाहा॥ लघु म
ति मोरि चरित अवगाहा॥ सूझ न एकौ अंक उपाऊ॥ मन मति रंक मनोरथ राऊ
॥ मति अति नीच ऊंच रुचि आछी॥ चहिय अमिय जग जुरै न छाछी॥ छमिहहिं
सज्जन मोरि ढिठाई॥ सुनहहिं बालबचन मन लाई॥ जौं बालक कह तोतरि बा
ता॥ सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता॥ हसिहहिं कूर कुटिल सुबिचारि॥ जे पर दूष
ण भूषणधारी॥ निज कवित केहि लाग न नीका॥ सरस होउ अथवा अति फीका
॥ जे पर भणित सुनत हरषांहीं॥ ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥ जग बहु नर
सरि सर सम भाई॥ जे निज बाढ बढहि जल पाई॥ सज्जन सकृत सिंधु सम कोई॥
देषि पूर बिधु बाढहि जोई॥ दोहा॥ भाग छोट अभिलाष बड॥ करत एक बिश्वास
॥ पैहहिं सुष सुनि सुजन जन॥ खल करिहैं उपहास॥८॥ चौपई॥ बल परिहास॥
होइ हित मोरा॥ काक कहहिं कलकंठ कठोरा॥ हंसहिं बक दादुर चातकहीं॥

कु

राम ४

पनपावा॥ धूमौतजैसहजकरुआई॥ अगरप्रसंगसुगंधबसाई॥ भणितभदेसबस्तुभ
लिबरणी॥ रामकथाजगमंगलकरणी॥ छंद॥ मंगलकरनिकलिमलहरनितुलसी
कथारघुनाथकी॥ गतिकूरकबितासरितकीज्यौंपरमपावनपाथकी॥ प्रभुसुयशसं
गतिभणितभलिहोइहिसुजनमनभावनी॥ भवअंगभूतिमसानकीसुमिरतसुहाव
निपावनी॥ दोहा॥ प्रियलागहिअतिसबहिमम। भणितरामयशसंग॥ दारुविकार
किंकरइकोउ॥ वंदियमलयप्रसंग॥ श्यामसुरभिपयविशदअति॥ गुणदकरहिते
हिपानु॥ गिराग्राम्यसियरामयश॥ गावहिंसुनहिंसुजान॥२०॥ चौपई॥ मणिमाणिक
मुकुताछविजैसी॥ अहिगिरिगजसिरसोहनतैसी॥ नृपकिरीटतरुणीतनपाई॥ लह
हिंसकलशोभाअधिकाई॥ तैसहिंसुकविकवितबुधकहहीं॥ उपजहिंअनतअनत
छविलहहीं॥ भक्तिहेतुविधिभवनविहाई॥ सुमरतिसारदआवतिधाई॥ रामचरि
तसरबिनुअन्हवाए॥ सोश्रमजाइनकोटिउपाए॥ कविकोबिदअसहृदयबिचारी॥
गावहिंहरिगुणकलिमलहारी॥ कीन्हेप्राकृतजनगुनगाना॥ शिरधुनिगिरालगति
पछिताना॥ हृदयसिंधुमतिसीपसमाना॥ स्वातीशारदकहहिंसुजाना॥ जौंबरषैबर
बारिविचारु॥ होहिंकवितमुकुतामणिचारू॥ दोहा॥ युक्तिबेधिपुनिपोहिये॥ रा

करतबबायसबेषमराला२

मदचरितबरताग॥पहिरहिंसज्जनबिमलउर॥शोभाअतिअनुराग॥११॥चौपई॥जे
जनमेंकलिकालकराला॥ँचलतकुपंथबेदमगछाडे॥कपटकलेवरकलिमलभा
डे॥बंचकभक्तकहाइरामके॥किंकरकंचनकोहकामके॥तिनमहप्रथमरेखजगमो
री॥धींगधर्मध्वजधंधकधोरी॥जोअपनेअवगुणसबकहहूं॥बाढेकथापारनहिंल
हऊं॥तातेमैंअतिअलपबखाने॥थोरेमहंजानिहहिंसयाने॥समुझिबिबिधिबिधिबि
नतीमोरी॥कोउनकथासुनदेइहिखोरी॥एतेहुपरकरिहहिंजेशंका॥मोहितेअधि
कतेजडमतिरंका॥कबिनहोउंनहिंचतुरकहाऊं॥मतिअनुरूपरामगुणगाऊं॥क
हांरघुपतिकेचरितअपारा॥कहांमतिमोरिनिरतसंसारा॥जेहिमारुतगिरिमेरुउडा
हीं॥कहहुतूलकेहिलेखेमाही॥समुझतअमितरामप्रभुताई॥करतकथामनअति
कदराई॥दोहा॥सारदशेषमहेशबिधि॥आगमनिगमपुरान॥नेतिनेतिकहिजासुगु
ण॥करहिंनिरंतरगान॥१२॥चौपई॥सबजानतप्रभुप्रभुतासोई॥तदपिकहेंबिनु
रहानकोई॥तहांबेदअसकारणराखा॥भजनप्रभावभांतिबहुभाषा॥एकअनीह
अरूपअनामा॥अजसच्चिदानंदपरधामा॥ब्यापकबिश्वरूपभगवाना॥तेइधरिदे
हचरितकृतनाना॥सोकेवलभक्तनहितलागी॥परमकृपालुप्रणतअनुरागी॥जेहि

रा० बा० ६

जन परम ममता अरु छोहू ॥ तेहि करुणा कर कीन्ह न कोहू ॥ गई बहोरि गरीब नेवाजू
॥ सरल सबल साहिब रघुराजू ॥ बुध बरनहिं हरियश अस जानी ॥ करहिं पुनीत सफ
ल निज बानी ॥ तेहि बल मैं रघुपति गुण गाथा ॥ कहिहौं नाइ राम पद माथा ॥ मुनिन्हि प्र
थम हरि कीरति गाई ॥ तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई ॥ दोहा ॥ अति अपार जे सरि
त बर ॥ जो नृप सेतु कराहि ॥ चढि पिपीलिका परम लघु ॥ बिनु श्रम पारहिं जाहिं ॥ १३ ॥
चौपई ॥ एहि प्रकार बल मनहि दिढाई ॥ करिहौं रघुपति कथा सुहाई ॥ व्यास आदि क
बि पुंगव नाना ॥ जिन्ह सादर हरि चरित बषाना ॥ चरण कमल बंदौं सब केरे ॥ पुरवहु
सकल मनोरथ मेरे ॥ कलि के कबिन करौं परणामा ॥ जिन बरणे रघुपति गुण ग्रा
मा ॥ जो प्राकृत कबि परम सयाने ॥ भाषा जिन्ह हरि चरित बषाने ॥ भये जे अहहिं ज
े होइहैं आगे ॥ प्रणऊं सबहि कपट छल त्यागे ॥ होउ प्रसन्न देहु बरदानू ॥ साधु समा
ज भणित सनमानू ॥ जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं ॥ सो श्रम बादि बाल कबि करहीं ॥
कीरति भणित भूत भलि सोई ॥ सुरसरि सम सब कहं हित होई ॥ राम सुकीरति भणि
त भदेसा ॥ असमंजस अस मोहि अंदेसा ॥ तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे ॥ सिअनि सुहा
वनि टाट पटोरे ॥ करहु अनुग्रह अस जिय जानी ॥ बिमल यशहिं अनुहरइ सुबानी ॥ सु

राम ६

दोहा॥ सरलकवितकीरतिबिमल॥ सोइआदरहिंसुजान॥ सहजबयरबिसरायरि
पु॥ जोसुनिकरहिंबषान॥ सोनहोइबिनुबिमलमति॥ मोहिमतिबलअतिथोरि॥
करहुकृपाहरियशकहौं॥ पुनिपुनिकरहुनिहोरि॥ कविकोबिदरघुबरचरित
॥ मानसमंजुमराल॥ बालयबिनयसुनिसुरुचिलखि॥ मोपरहोहुकृपाल॥ १४॥
सोरठा॥ बंदौमुनिपदकंज रामायणजिननिर्मयो॥ सखरसकोमलमंजु॥ दोषरहि
तदूषणसहित॥ बंदौचारौबेद॥ भवबारिधिबोहितसरस॥ जिनहिनसपनेहुखे
द॥ बरणतरघुपतिबिशदयश॥ बंदौबिधिपदरेणु॥ भवसागरजिनकीनयहं॥ सं
तसुधाशशिधेनु॥ प्रगटेखलबिषबारुणी॥ दोहा॥ बिबुधबिप्रबुधग्रहचरण॥ बं
दिकहौंकरजोर॥ होइप्रसन्नपुरवहुसकल॥ मंजुमनोरथमोर॥ १४॥ चौपई॥ पु
निबंदौशारदसुरसरिता॥ जुगलपुनीतमनोहरचरिता॥ मज्जनपानपापहरए
बे का॥ कहतसुनतइकहरअबिबेका॥ गुरुपितुमातमहेशभवानी॥ प्रणऊंदीनबं
धुहितदानी॥ सेवकस्वामिसखासियपीके॥ हितनिरुपधसबबिधतुलसीके॥
कलिबिलोकिजगहितहरगिरिजा॥ शाबरमंत्रजालजिनसिरजा॥ अनमिल
आखिरअरथनजापू॥ प्रगटप्रभावमहेशप्रतापू॥ सोमहेशमोपरअनुकूला॥

करौंकथामुदमंगलमूला॥सुमिरिशिवाशिवपाइपसाऊ॥बरणौंरामचरितचि
तचाऊ॥भणितमोरिशिवकृपाबिभाती॥शशिसमाजमिलिमनहुंसुराती॥जेएहि
कथासनेहसमेता॥कहिहहिंसुनिहहिंसमुझिसचेता॥होइहहिंरामचरण
अनुरागी॥कलिमलरहितसुमंगलभागी॥दोहा॥सपनेहुंसांचहुमोहिपर
॥जौहरगौरिपसाउ॥तौफुरहोउजोकहेउसब॥भाषाभणितप्रभाउ॥१५॥
चौपई॥बंदौंअवधपुरीअतिपावनि॥सरजूसरिकलिकलुषनसावनि॥प्रणऊं
पुरनरनारिबहोरि॥ममताजिनपरप्रभुहिनथोरी॥सियनिंदकअघओघनसाये
॥लोकबिशोकबनाइबसाये॥बंदौंकौशल्यादिशिप्राची॥कीरतजासुसकलजगमा
ची॥प्रगटेउजहंरघुपतिशशिचारू॥बिश्वसुखदखलकमलतुषारू॥दशरथराउ
सहितसबरानी॥सुकृतसुमंगलमूरतिखानी॥करौंप्रणामकरममनबानी॥करहु
कृपासुतसेवकजानी॥जिनहिबिरचिबडभयउबिधाता॥महिमाअवधिरामपितु
माता॥सोरठा॥बंदौंअवधभुआल॥सत्यप्रेमजेहिरामपद॥बिछुरतदीनदयाल
॥प्रियतनतृणइवपरिहरेउ॥१६॥चौपई॥प्रणवौंपरिजनसहितबिदेहू॥जाहि
रामपदगूढसनेहू॥योगभोगमहंराखेउगोई॥रामबिलोकतप्रगटेउसोई॥प्रणवौं

प्रथम भरत के चरण॥ जासु नेम ब्रत जाइ न बरण॥ राम चरण पंकज मन जासू॥ लु
ब्ध मधुप इव तजै न पासू॥ बंदौं लक्ष्मण पद जलजाता॥ सीतल सुभग भक्त सुखदाता
रघुपति कीरति बिमल पताका॥ दंड समान भयो यश जाका॥ शेष सहस्र सीस जग का
रण॥ जो अवतरेउ भूमि भय टारण॥ सदा सो सानुकूल रहु मो पर॥ कृपासिंधु सौमि
त्रि गुणाकर॥ रिपुसूदन पद कमल नमामी॥ सूर सुशील भरत अनुगामी॥ महाबी
र बिनवौं हनुमाना॥ राम जासु यश आपु बखाना॥ सोरठा॥ बंदौं पवनकुमार॥ ख
ल बन पावक ज्ञानघन॥ जासु हृदय आगार॥ बसहि राम सर चाप धर॥ १७॥ चौपई॥
कपिपति रीछ निशाचर राजा॥ अंगदादि जे कीस समाजा॥ बंदौं सब के चरण सुहा
॥ अधम शरीर राम जिन पाये॥ रघुपति चरण उपासक जेते॥ खग मृग सुर नर असुर
समेते॥ बंदौं पद सरोज सब केरे॥ जे बिनु काम राम के चेरे॥ शुक सनकादि भक्त मुनि
नारद॥ जे मुनिवर बिज्ञान बिशारद॥ प्रणवौं सबहि धरणि धरि सीसा॥ करहु कृपा
जन जानि मुनीसा॥ जनकसुता जग जननि जानकी॥ अतिशय प्रिय करुणानिधान
की॥ ताके युग पद कमल मनाऊं॥ जासु कृपा निर्मल मति पाऊं॥ पुनि मन बचन कर्म र
घुनायक॥ चरण कमल बंदौं सब लायक॥ राजिवनयन धरे धनु सायक॥ भक्त बि

पतिमंजनसुखदायक ॥ दोहा ॥ गिराअरथजलवीचिसम ॥ कहियतभिन्ननभिन्न ॥ बंदौ
सीतारामपद ॥ जिनहिपरमप्रियखिन्न ॥ १८ ॥ चौपई ॥ वंदौंरामनामरघुबरके ॥ हेतु
कृशानुभानुहिमकरके ॥ विधिहरिहरमयबेदप्राणसो ॥ अगुणअनुपमगुणनिधा
नसो ॥ महामंत्रजोजपतमहेसू ॥ काशीमुक्तिहेतुउपदेसू ॥ महिमाजासुजानगणराऊ
॥ प्रथमपूजियतनामप्रभाऊ ॥ जानआदिकविनामप्रतापू ॥ भयशुद्धकरिउलटाजा
पू ॥ सहसनामसमसुनिशिववानी ॥ जपिजेईपियसंगभवानी ॥ हरषेहेतुहेरिहरहीको
॥ कियभूषनतियभूषनतीको ॥ नामप्रभाउजानशिवनीके ॥ कालकूटफलदीन्हअमी
के ॥ दोहा ॥ बरषारितुरघुपतिभगति ॥ तुलसीशालिसुदास ॥ रामनामबरबरणयुग ॥ श्रा
वणभादोमास ॥ १९ ॥ चौपई ॥ आखरमधुरमनोहरदोऊ ॥ बरणबिलोचनजनजिय
जोऊ ॥ सुमिरतसुलभसुखदसबकाहू ॥ लोकलाहुपरलोकनिबाहू ॥ कहतसुन
तसुमिरतसुठिनीके ॥ रामलषणसमप्रियतुलसीके ॥ बरणतबरणप्रीतिबिलगा
ती ॥ ब्रह्मजीवसमसहजसंघाती ॥ नरनारायणसरिससुभ्राता ॥ जगपालकबिशेष
जनत्राता ॥ भक्तिसुतियकलकरणबिभूषण ॥ जगहितहेतुबिमलविधुपूषण ॥ स्वा
दतोषसमसुगतिसुधाके ॥ कमठशेषसमधरबसुधाके ॥ जनमनमंजुकंजमधुकर

प्रपुराणकोहो संतान

से॥ जीहं जसोमति हरि हलधर से॥ दोहा॥ एक छत्र इक मुकट मणि॥ सब बरणन पर जो
ऊ॥ तुलसी रघुबर नाम के॥ बरण बिराजत दोऊ॥ २०॥ चौपई॥ समुझत सरस नाम
अरु नामी॥ प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी॥ नाम रूप दोउ ईस उपाधी॥ अकथ अनादि सु
सामुझि साधी॥ को बड छोट कहत अपराधू॥ सुनि गुण भेद समुझि हैं साधू॥ देखिय
रूप नाम आधीना॥ रूप ग्यान नहि नाम बिहीना॥ रूप बिशेष नाम बिनु जाने॥ करतल गत
न परहि पहिचाने॥ सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे॥ आवत हृदय सनेह बिशेषे॥ नाम
रूप गति अकथ कहानी॥ समुझत सुखद न परे बखानी॥ अगुण सगुण बिच नाम सुसा
खी॥ उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी॥ दोहा॥ राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार॥ तुल
सी भीतर बाहिरैं॥ जो चाहसि उजियार॥ २१॥ चौपई॥ नाम जीह जपि जागहि योगी॥ बि
रति बिरंचि प्रपंच बियोगी॥ ब्रह्म सुखहि अनुभवहि अनूपा॥ अकथ अनामय नाम
न रूपा॥ जाना चहहि गूढ गति जेऊ॥ नाम जीह जपि जानहि तेऊ॥ साधक नाम जपहि
लय लाये॥ होहि सिद्ध अणिमादिक पाये॥ जपहि नाम जन आरत भारी॥ मिटहि कु
संकट होहि सुखारी॥ राम भक्ति जग चारि प्रकारा॥ सुकृती चारि अनघ उदारा॥ चऊ च
तुर नकहं नाम अधारा॥ ज्ञानी प्रभुहि बिशेष पियारा॥ चहुं युग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ

रा०बा० ए

कलिविशेषनहिंआनउपाऊ॥दोहा॥सकलकामनाहीनजे॥रामभक्तिरसलीन॥नामसु
प्रेमपियूषहृद॥तिनकुंकियेमनमीन॥२२॥चौपई॥अगुणसगुणदोउब्रह्मस्वरूपा
अकथअगाधअनादिअनूपा॥मोरेमतबडनामदुहूतें॥कियेजेहिंयुगनिजबसनिज
बूते॥प्रौढसुजनजनजानहिंजनकी॥कहहुंप्रतीतिप्रीतिरुचमनकी॥एकदारुगतदे
खियएकू॥पावकयुगसमब्रह्मबिवेकू॥उभयअगमयुगसुगमनामतें॥कहहुंनाम
बडब्रह्मरामतें॥व्यापकब्रह्मएकअबिनासी॥जडचेतनघनआनंदरासी॥असप्रभुहृ
दयअछतअबिकारी॥सकलजीवजगदीनदुखारी॥रामनिरूपणनामयतनतें॥सो
उप्रगटतजिमिमोलरतनतें॥दोहा॥निर्गुणतेंइहिभांतिबड॥नामप्रभावअपार॥क
हहुंनामबडरामतें॥निजविचारिअनुसार॥२३॥चौपई॥रामभक्तहितनरतनुधारी
॥सहिसंकटकियसाधुसुखारी॥नामसप्रेमजपतअनयासा॥भक्तहोहिंमुदमंगलबासा
॥रामएकतापसतियतारी॥नामकोटिखलकुमतिसुधारी॥ऋषिहितरामसुकेतुसुता
की॥सहितसैनसुतकीन्हविवाकी॥सहितदोषदुखदासदुरासा॥दलइनामजिमिरबि
निशिनासा॥भंजेउरामआपभवचापू॥भवभयभंजननामप्रतापू॥दंडकबनप्रभुकी
न्हसुहावन॥जनमनअमितनामकियपावन॥निशिचरनिकरदलेरघुनंदन॥नामस

राम ए

कलकलिकलुषनिकंदन॥दोहा॥शबरीगीधसुसेवकनि॥सुगतिदीन्हरघुनाथ॥नाम
उधारेअमितखल॥बेदबिदितगुणगाथ॥२४॥चौपई॥रामसुकंठबिभीषणदोऊ॥रा
खेशरणजानसबकोऊ॥नामअनेकगरीबनिवाजे॥लोकबेदबरबिरदबिराजे॥राममा ब
लकपिकटकबटोरा॥सेतुहेतुश्रमकीन्हनथोरा॥नामलेतभवसिंधुसुखाही॥करहु
विचारसुजनमनमाही॥रामसकुलरणरावणमारा॥सीयसहितनिजपुरपगधारा॥रा
जारामअवधरजधानी॥गावतगुणसुरमुनिबरबानी॥सेवकसुमिरतनामसप्रीते॥वि
नुश्रमप्रबलमोहदलजीते॥फिरतसनेहमगनसुखअपने॥नामप्रसादसोचनहिंसपने
दोहा॥ब्रह्मरामतेनामबड॥बरदायकबरदानि॥रामचरितशतकोटिमह॥लियेमहे
शजियजानि॥२५॥चौपई॥नामप्रसादशंभुअबिनाशी॥साजअमंगलमंगलरासी
शुकसनकादिसिद्धमुनियोगी॥नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी॥नारदजानेउनामप्रताप
॥जगप्रियहरिहरहरिप्रियआप॥नामजपतप्रभुकीन्हप्रसाद॥भक्तशिरोमणिभेप्र
ह्लाद॥ध्रुवसगलानिजपेउहरिनामू॥पायेउअचलअनूपमठामू॥सुमिरिपवनसु
तपावननामू॥अपनेबसकरिराखेउरामू॥अपरअजामिलगजगणिकाऊ॥भयेमु
क्तिहरिनामप्रभाऊ॥कहहुकहांलगिनामबडाई॥रामनकहिनामगुणगाई॥दो०

रा॰ बा॰ २०

रामनामकौकल्पतरु॥कलिकल्याणनिवास॥जोसुमिरतभयभांगते॥तुलसीतुलसीदा
स॥२६॥चौपई॥चहुंजुगतीनिकालतिहुंलोका॥भयेनामजपिजीवविशोका॥वेदपु
राणसंतमतएहू॥सकलसुकृतफलनामसनेहू॥ध्यानप्रथमजुगमखजुगपूजे॥द्वा
परपरितोषनप्रभुपूजे॥कलिकेवलमलमूलमलीना॥पापपयोनिधिजनमनमीना
॥नामकामतरुकालकराला॥सुमिरतशमनसकलजगजाला॥रामनामकलिअभि
मतदाता॥हितपरलोकलोकपितुमाता॥नहिकलिकर्मनभक्तिविवेकू॥रामनामअ
वलंबनएकू॥कालनेमिकलिकपटनिधानू॥नामसुमतिसुमरतहनुमानू॥दोहा
रामनामनरकेसरी॥कनककशिपुकलिकाल॥जापकजनप्रहलादजिमि॥पालिहिं
दलिसुरसाल॥२७॥चौपई॥भायकुभायअनखआलसहू॥नामजपतमंगलदि
शिदशाहू॥सुमिरिसोनामरामगुणगाथा॥करौंनाइरघुनाथहिमाथा॥मोरिसुधारहि
सोसबभांती॥जासुकृपानहिंकृपाअघाती॥रामसुस्वामिकुसेवकमोसे॥निजदिशि
देखिदयानिधिपोसे॥लोककहुंवेदसुसाहिबरीती॥विनयसुनतपहिचानतप्रीति
गनीगरीबग्रामनरनागर॥पंडितमूढमलीनउजागर॥सुकविकुकविनिजमतिअ
नुसारी॥नृपहिंसराहतसबनरनारी॥साधुसुजानसुसीलनृपाला॥ईशअंसभवपर

राम २०

म कृपाला॥ सुनि सनमानहि सबहि सुबानी॥ भणित भक्ति मति गति पहिचानी॥ यह प्राकृ
त महिपाल सुभाऊ॥ जानि सिरोमणि कोसलराऊ॥ रीझत राम सनेह निसोते॥ कोज
ग मंद मलिन मति मोते॥ दोहा॥ शठ सेवक की प्रीति रुचि॥ रखिहहि राम कृपाल॥ उपल
किये जलजान जेहि॥ सचिव सुमति कपि भालु॥ हौंहुं कहावत सब कहत॥ राम सह
त उपहास॥ साहेब सीतानाथ से॥ सेवक तुलसीदास॥ २८॥ चौपई॥ अति वड मोरि
ढिठाई खोरी॥ सुनि अघ नरकहुं नाक सकोरी॥ समुझि सहमि मोहि अपडर अपनो
॥ सो सुधि राम कीन्ह नहिं सुपने॥ सुनि अवलोकि सुचित चख चाही॥ भक्ति मोरि मति
स्वामि सराही॥ कहत नसाइ होइ अति नीकी॥ रीझत राम जानि जन जी की॥ रहत न प्र
भु चित चूक किये॥ करत सुरत सै वार हिये की॥ जेहि अघ बधेउ व्याध जिमि बाली॥ फिरि सुकं
ठ सोइ कीन्ह कुचाली॥ सोइ करतूति विभीषण केरी॥ सपनेहुं सो न राम हिय हेरी॥ ते भरत
हि भेटत सनमाने॥ राजसभा रघुवीर वखाने॥ दोहा॥ प्रभु तरु तर कपि डार॥ ते किय आ
पु समान॥ तुलसी कहूं न राम से॥ साहेब सील निधान॥ राम निकाई रावरी है सब ही को
नीक॥ जो यह सांची है सदा॥ तो नीको तुलसीक॥ इहि विधि निज गुण दोष कहि॥ सब हि व
हुरि सिरनाइ॥ वरणौं रघुवर विशद यश॥ सुनि कलि कलुष नसाइ॥ २९॥ चौपई॥

जागबल्क जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई॥ कहिहौं सोइ संबाद बखानी॥
सुनहु सकल सज्जन सुख मानी॥ संभु कीन्ह यह चरित सुहावा॥ बहुरि कृपा करि उम
हि॥ सुनावा सोइ शिव काकभुसुंडहि दीन्हा॥ राम भक्ति अधिकारी चीन्हा॥ तेहि सन याज
बल्क पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा॥ ते श्रोता बकता सम सीला॥ सव
दरशी जानहि हरिलीला॥ जानहि तीनि काल निज ज्ञाना॥ करतल गत आमलक समा
ना॥ औरौ जे हरि भक्त सुजाना॥ कहहि सुनहि समुझहि बिधि नाना॥ दोहा॥ मैं पुनि नि
ज गुरु सन सुनी॥ कथा सु सूकरखेत॥ समुझ न हीं तसु बालपन॥ तब अति रहेउँ अ
चेत॥ श्रोता बकता ज्ञाननिधि॥ कथा राम की गूढ॥ किमि समझैं यह जीव जडु॥ कलि
मल ग्रसित बिमूढ॥ ३०॥ चौपई॥ तदपि कही गुरु बारहि बारा॥ समुझ परी कछु मति
अनुसारा॥ भाषा बंध करत मैं सोई॥ मोरे मन प्रबोध जेहि होई॥ जस कछु बुधि बिबेक ब
ल मोरे॥ तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे॥ निज संदेह मोह भ्रम हरणी॥ करौं कथा भव सरि
ता तरणी॥ बुध बिश्राम सकल जन रंजनि॥ राम कथा कलि कलुष बिभंजनी॥ राम कथा क
लि पन्नग भरणी॥ पुनि बिबेक पावक कहु अरणी॥ राम कथा कलि कामद गाई॥ सुजन
सजीवन मूरि सुहाई॥ सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि॥ भव भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि॥ अ

सुरसेनसमनरकनिकंदनि॥साधुबिबुधकुलहितगिरिनंदनि॥संतसमाजपयोधरमासी
॥बिस्वभारधरअचलछमासी॥यमगणमुहमसिजगजमुनासी॥जीवनमुक्तिहेतुजनकासी
॥रामहिप्रियपावनतुलसीसी॥तुलसीदासहितहियहुलसीसी॥शिवप्रियमेकलशैलसुतासी
॥सकलसिद्धिप्रदसंपतिरासी॥सदगुणसुरगणअंबअदितिसी॥रघुबरभक्तिप्रेमपरमि
तिसी॥ दोहा॥ रामकथामंदाकिनी॥चित्रकूटचितचारु॥तुलसीसुभगसनेहबन॥सियर
घुबीरबिहारु॥३१॥चौपई॥रामचरितचिंतामणिचारु॥संतसुमतितियसुभगसिंगारु॥जग
मंगलगुणग्रामरामके॥दानमुक्तिधनधर्मधामके॥सदगुरुग्यानबिरागयोगके॥बिबुध
बैदभवभीमरोगके॥जननिजनकसियरामप्रेमके॥बीजसकलब्रतधर्मनेमके॥शम
नपापसंतापशोकके॥प्रियपालकपरलोकलोकके॥सचिवसुभटनृपतिबिचारके॥
॥कुंभजलोभउदधिअपारके कामकोहकलिमलकरगणके॥केहरिशावकजन
मनबनके॥अतिथिपूज्यप्रीतमपुरारिके॥कामदघनदारिददवारिके॥मंत्रमहामणि
बिषयब्यालके॥मेटनकठिनकुअंकभालके॥हरणमोहतमदिनकरकरसे॥सेवक
शालिपालजलधरसे॥अभिमतदानिदेवतरुबरसे॥सेवतसुलभसुखदहरिहरसे॥
सुकविशारदनभमनउडुगणसे॥रामभक्तिजनजीवनधनसे॥सकलसुकृतफलभू

रिजोगसे॥जगहितनिरुपधिसाधुलोगसे॥सेवकमनमानसमरालसे॥पावनगंगतरंगमा
लसे॥दोहा॥कुपथकुतर्ककुचालिकलि॥कपटदंभपाषंड॥दहनरामगुणग्रामजिमि
॥इंधनअनलप्रचंड॥रामचरितराकेशकरि॥सरिससुखदसबकाहु॥सज्जनकुमुदच
कोरचित॥हितबिशेषबडलाहु॥दोहा॥ कीन्हप्रश्नजेहिभांतिभवानी॥जेहिबिधिशं
करकहाबखानी॥सोसबहेतुकहवमैंगाई॥कथाप्रबंधविचित्रबनाई॥जिनेंकथासु
निनहिंहोई॥जनिआश्चर्यकरैसुनिसोई॥कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी॥नहिंआ
श्चर्यकरैंहिंअसजानी॥रामकथाकीमितिजगनाहीं॥असप्रतीतितिनकेमनमाहीं॥नाना
भांतिरामअवतारा॥रामायणशतकोटिअपारा॥कल्पभेदहरिचरितसुहाये॥भांतिअ
नेकमुनीशनगाये॥करियनसंशयअसउरआनी॥सुनियकथासादररतिमानी॥दोहा॥
॥रामअनंतअनंतगुण॥अमितकथाबिस्तार॥सुनिआश्चर्यनमानिहहिं॥जिनकेबि
मलबिचार॥३३॥चौपई॥इहिबिधिसबसंशयकरिदूरी॥शिरधरिगुरुपदपंकजधू
री॥पुनिसबहीविनवौंकरजोरी॥करतकथाजेहिंलागनखोरी॥सादरशिवहिनाइअ
बमाथा॥बरणौंबिसदरामगुणगाथा॥संवतसोरहसैइकतीसा॥करौंकथाहरिपदधरिसी
सा॥नौमीभौमबारमधुमासा॥अवधपुरीयहचरितप्रकासा॥जोहिदिनरामजन्मश्रुति

गावहिं॥ तीरथसकलतहांचलिआवहिं॥ असुरनागखगनरमुनिदेवा॥ आयकरहिंरघुना
यकसेवा॥ जन्ममहोत्सवरचहिंसुजाना॥ करहिंरामकलिकीरतिगाना॥ दोहा॥ मज्जहिं
सज्जनबृंदबहु॥ पावनसरजूनीर॥ जपहिंरामधरिध्यानउर॥ सुंदरस्यामसरीर॥ ३४॥
चौपई॥ दरसपरसमज्जनअरुपाना॥ हरैंपापकहबेदपुराना॥ नदीपुनीतअमितमहि
माअति॥ कहियनसकैसारदाबिमलमति॥ रामधामदापुरीसुहावनि॥ लोकसमस्तविदित
जगपावनि॥ चारिखानिजगजीवअपारा॥ अवधतजेतनुनहिंसंसारा॥ सबबिधिपुरीमनोहर
जानी॥ सकलसिद्धिप्रदमंगलखानी॥ बिमलकथाकरकीन्हअरंभा॥ सुनतनसाहिंकामम
ददंभा॥ रामचरितमानसयहनामा॥ सुनतश्रवणपाइयबिश्रामा॥ मनकरिबिषयअनल
वनजरई॥ होइसुखीजोइहिसरपरई॥ रामचरितमानसमुनिभावन॥ बिरचेउसंभुसुहाव
नपावन॥ त्रिबिधदोषदुखदारिददावन॥ कलिकुचालिकलकलुषनसावन॥ रचिमहेसनि
जमानसराखा॥ पाइसुसमयसिवासनभाखा॥ तातेरामचरितमानसबर॥ धरेउनामहियहे
रिहरषिहर॥ कहौंकथासोइसुखदसुहाई॥ सादरसुनहिसुजनमनलाई॥ दोहा॥ जसमा
नसजेहिबिधिभयो॥ जगप्रचारजेहिहेतु॥ अबसोईकहौंप्रसंगसब॥ सुमिरिउमाबृषकेतु
३५॥ चौपई॥ संभुप्रसादसुमतिहियहुलसी॥ रामचरितमानसकबितुलसी॥ करइमनो

रघुपतिचरणउपासकजेते सोइसुकृतीसुरमजुहितेते

रा॰बाल ३७

हरमतिअनुहारी॥ सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी॥ सुमतिभूमिथलहृदयअगाधू॥ बेदपुराण
उदधिघनसाधू॥ बरषहिरामसुयशबरवारी॥ मधुरमनोहरमंगलकारी॥ लीलासगुणजोक
हहिबखानी॥ सोइस्वच्छताकरैमलहारी॥ प्रेमभक्तिजोबरणिनजाई॥ सोइमधुरतासीतल
ताइ॥ सोजलसुकृतशालिहितहोई॥ रामभक्तजनजीवनसोई॥ मेधामहिगतसोजलपावन॥
सिमिटिश्रवणमगचलेउसुहावन॥ भरेउसुमानससुथिथिलथिराना॥ सुखदशीतरुचिचारुचि
ना॥ दोहा॥ सुठिसुंदरसंबादबर॥ बिरचेबुद्धिबिचारि॥ तेइयहपावनसुभगसर॥ घाटमनो
हरचारि॥ ३६॥ चौपई॥ सप्तप्रबंधसुभगसोपाना॥ ज्ञाननयननिरखतमनमाना॥ रघु
पतिमहिमाअगुणअबाधा॥ बरणबसोइबरवारिअगाधा॥ रामसीययशसलिलसुधास
म॥ उपमाबीचिबिलासमनोरम॥ पुरइनिसघनचारुचौपाई॥ युक्तिमंजुमणिसीपसुहाई॥
छंदसोरठासुंदरदोहा॥ सोइबहुरंगकमलकुलसोहा॥ अरथअनूपसुभावसुभासा॥ सोइ
परागमकरंदसुबासा॥ सुकृतपुंजमंजुलअलिमाला॥ ज्ञानविरागबिचारमराला॥ धु
निअवरेबकवितगुणजाती॥ मीनमनोहरतेबहुभांती॥ अर्थधर्मकामादिकचारी॥ कह
बज्ञानबिज्ञानबिचारी॥ नवरसजपतपयोगविरागा॥ तेसबजलचरचारुतडागा॥
सुकृतीसाधुनामगुणगाना॥ तेविचित्रजलविहंगसमाना॥ संतसभाचहुंदिशिअंब

राम ३७

राई॥ श्रद्धा रितु बसंत सम गाई॥ भक्ति निरूपण विविधि बिधाना॥ छमा दया दम लता बिता
ना॥ संयम नियम फूल फल ज्ञाना॥ हरिपद रति रस बेद बखाना॥ औरौ कथा अनेक
प्रसंगा॥ तेइ सुक पिक बहु बरण बिहंगा॥ दोहा॥ पुलक वाटिका बाग बन॥ सुख
सुबिहंग बिहारु॥ माली सुमन सनेह जल॥ सींचत लोचन चारु॥ ३७॥ चौपई॥ जे गा
वहिं यह चरित संभारे॥ तेइ एहि ताल चतुर रखवारे॥ सदा सुनहि सादर नर नारी॥ ते
इ सुरबर मानस अधिकारी॥ अति खल जे बिषयी बक कागा॥ इहि सर निकट न जा
हि अभागा॥ संबुक भेक सिबार समाना॥ इहां न बिषय कथा रस नाना॥ तेहि कारण
आवत हिय हारे॥ कामी काक बलाक बिचारे॥ आवत इहि सर अति कठनाई॥ रा
म कृपा बिनु आई न जाई॥ कठिन कुसंग कुपंथ कराला॥ तेइ अति दुर्गम सैल बि
शाला॥ गृहकारज नाना जंजाला॥ तेइ अति दुर्गम सैल बिशाला॥ बन बहु बिषय मोह
मद माना॥ नदी कुतर्क भयकर नाना॥ दोहा॥ जे श्रद्धा संबल रहित॥ नहि संतन क
र साथ॥ तिन कहं मानस अगम अति॥ जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ॥ ३८॥ चौपई॥ जो क
रि कष्ट जाइ पुनि कोई॥ जातहि नींद जुडाइ होई॥ जडता जाड बिषम उर लागा॥ गये
हु न मज्जन पाव अभागा॥ करि न जाय सर मज्जन पाना॥ फिरि आवै समेत अभिमा

रा० बा०
२४

ना॥ जोबहोरिकोउपछुनआवा॥ सरनिंदाकरिताहिसुनावा॥ सकलविघ्नव्यापहिंन।
हितेई॥ रामकृपाकरिचितवहिंजेई॥ सोइसादरसरमज्जनकरहीं॥ महाघोरत्रयता
पनजरहीं॥ तेनरयहसरतजहिंनकाऊ॥ जिनकेरामचरितनलनाऊ॥ जोनहायचह
इहिसरभाई॥ सोसतसंगकरोमनलाई॥ असमानसमानसचषचाही॥ भैकविबुद्धिवि
मलअँगाही॥ भयोहृदयआनंदउछाऊ॥ उमगेउप्रेमप्रबोधप्रभाऊ॥ चलीसुभगक।
वितासरितासो॥ रामबिमलयशजलभरितासो॥ सरजूनामसुमंगलमूला॥ लोकबेदमत
मंजुलकूला॥ नदीपुनीतसुमानसनंदिनि॥ कलिमलतृणतरुमूलनिकंदनि॥ दोहा
श्रोतात्रिविधिसमाजपुर। ग्रामनगरदुहुंकूल॥ संतसभाअनुपमअवध॥ सकलसुमंग
लमूल॥ ३९॥ चौपई॥ रामभक्तिसुरसरितहिंजाई॥ मिलीसुकीरतिसरजूसुहाई॥ सा
नुजरामसमरयशपावन॥ मिलेउमहानदशोणसुहावन॥ युगबिचभक्तिदेवधुनिधा
रा॥ सोहतिसहितसुविरतिविचारा॥ त्रिविधतापत्रासकतिमुहानी॥ रामस्वरूपसोसिंधु
समानी॥ मानसमूलचलीसुरसरहीं॥ सुनतसुजनमनपावनकरहीं॥ विचविचकथावि
चित्रविभागा॥ जनुसरितीरतीरबरबागा॥ उमामहेशविवाहबराती॥ तेजलचरअ
गणितबहुभांती॥ रघुबरजन्मअनंतबधाई॥ भवरतरंगमनोहरताई॥ दोहा॥ बाल

व

राम
२४

कहत सुनत हरषहि पुलकाहीं ते सुकृति मन मुदित नहाहीं

चरित चक्र बंधके । बन जब बिपुल बहु रंग ॥ नृप रानी परिजन सुकृत ॥ मधुकर बारि बिहंग ॥४०॥

॥ चौपई ॥ सीय स्वयंबर कथा सुहाई ॥ सरित सुहावनि सो छबि छाई ॥ नदी नाव पटु प्रश्न अनेका ॥ केवट कुशल उतर सबिबेका ॥ सुनि अनुकथन परस्पर होई ॥ पथिक समाज सोह सरि सोई ॥ घोर धार भृगुनाथ रिसानी ॥ घाट सुबंध राम बर बानी ॥ सानुज राम बिवाह उछाहू ॥ सो शुभ उमग सुखद सब काहू ॥ कहत सुनत हरषहि पुलकाहीं ॥ ते सुकृती जन मुदित नहाहीं ॥ राम तिलक हित मंगल साजा ॥ पर्ब योग जनु जुरे समाजा ॥ काई कुमति केकयी केरी ॥ परी जासु फल बिपत घनेरी ॥ दोहा ॥ शमन अमित उतपात सब ॥ भरत चरित जपयाग ॥ कलि अघ खल अवगुण कथन ॥ ते जलमल बक काग ॥४१॥ चौपई ॥ कीरति सरित छहू रितु रूरी ॥ समय सुहावनि पावनि भूरी ॥ हिम हिमशैलसुता शिव व्याहू ॥ शिशिर सुखद प्रभु जन्म उछाहू ॥ बरनब राम बिवाह समाजू ॥ सो मुद मंगलमय रितुराजू ॥ ग्रीषम दुसह राम बनगवनू ॥ पंथकथा खर आतप पवनू ॥ बरषा घोर निशाचर रारी ॥ सुरकुल शालि सुमंगलकारी ॥ राम राज सुख बिनय बडाई ॥ विशद सुखद सोइ शरद सुहाई ॥ सती शिरोमणि सिय गुण गाथा ॥ सोइ गुण अमल अनूपम पाथा ॥ भरत सुभाउ सो सीतलताई ॥ सदा एकरस बरणि न जाई ॥ दोहा ॥ अवलोकनि बोलनि मिलनि ॥ प्री

रा॰ बाल॰ ९
२५

तिपरस्परहास॥ भायपभलिचहुबंधुकी। जलमाधुरीसुबास॥४२॥ **चौपई**॥ आरतिबिनय
दीनतामोरी॥ लघुताललितसुबारिनथोरी॥ अदभुतसलिलसुनतगुणकारी॥ आसपियास
मनोमलहारी॥ रामसुप्रेमहिपोषतपानी॥ हरतसकलकलिकलुषगलानी॥ भवश्रम
शोषकतोषकतोषा॥ समनदुरितदुखदारिददोषा॥ कामकोहमदमोहनसावन॥ बिम
लबिबेकबिरागबढावन॥ सादरमज्जनपानकिपते॥ मिटहिंपापपरितापहियेते
॥ जिनयहबारिनमानसधोये॥ तिनकायरकलिकालबिगोये॥ तृषितनिरखिरबि
करभवबारी॥ फिरहिंमृगजिमिजीवदुखारी॥ **दोहा**॥ मतिअनुहारिसुबारिख
र॥ गुणगणमनअन्हवाई॥ सुमिरिभवानीशंकरहिं॥ कहकबिकथासुहाइ॥ नर
हाजजिमिप्रश्नकिय॥ याज्ञबल्क्यमुनिपाय॥ प्रथममुख्यसंबादसोइ॥ कहिहौं
हेतुबुझाय॥ अबरघुपतिपदपंकरुह॥ हियधरिपायप्रसादु॥ कहौंजुगलमुनिब
र्यकर॥ मिलनसुभगसंबाद॥४३॥ **चौपई**॥ भरद्वाजमुनिबसहिंप्रयागा॥ जिनहि
रामपदअतिअनुरागा॥ तापससमदमदयानिधाना॥ परमारथपथपरमसुजाना॥ माघ
मकरगतरबिजबहोई॥ तीरथपतिहिंआवसबकोई॥ देवदनुजकिन्नरनरश्रेणी
॥ सादरमज्जहिंसकलत्रिबेणी॥ पूजहिंमाधवपदजलजाता॥ परसिअक्षयबटहर्षि

राम
२५

नगाता॥ भरद्वाज आश्रम अतिपावन॥ परमरम्य मुनिबर मन भावन॥ तहां होइ मुनि रि
षयसमाजा॥ जाहिं जे मज्जन तीरथराजा॥ मज्जहिं प्रात समेत उछाहा॥ कहहिं परस्प
र हरिगुणगाहा॥ दोहा॥ ब्रह्म निरूपण धर्म बिधि बरनहिं तत्व बिभाग॥ कहहिं
भक्ति भगवंत की संयुत ज्ञान बिराग॥ ४४॥ चौपई॥ इहि प्रकार भरि मकर नहा
हीं॥ पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं॥ प्रति संबत अस होइ अनंदा॥ मकर मज्जि
गवनहिं मुनि वृंदा॥ एक बार भरि मकर नहाये॥ सब मुनीस आश्रमनि सिधाये॥
याज्ञबल्क्य मुनि परम बिबेकी॥ भरद्वाज राखे पद टेकी॥ सादर चरण सरोज पषा
रे॥ अति पुनीत आसन बैठारे॥ करि पूजा मुनि सुयश बखानी॥ बोले अति पुनी
त मृदु बानी॥ नाथ एक संशय बड मोरे॥ करतल बेद तत्व सब तोरे॥ कहत मोहि ला
गत भय लाजा॥ जो न कहों बड होइ अकाजा॥ दोहा॥ संत कहहिं अस नीति प्रभु श्रु
ति पुराण जो गाव॥ होइ न बिमल बिबेक उर गुरु सन किये दुराव॥ ४५॥ चौपई॥
॥ अस बिचारि प्रगटों निज मोहू॥ हरहु नाथ करि जन परि छोहू॥ राम नाम करि
अमित प्रभावा॥ संत पुराण उपनिषद गावा॥ संतत जपत शंभु अबिनासी॥ शिव
भगवान ज्ञान गुण रासी॥ आकर चारि जीव जग अहहीं॥ काशी मरत परम पद ल

रही॥सोपिराममहिमामुनिराया॥शिवउपदेशकरतकरिदाया॥रामकवनप्रभुपूछ
औंतोही॥कहहुबुझायकृपानिधिमोही॥एकरामअवधेशकुमारा॥तिनकरचरित
विदितसंसारा॥नारिबिरहदुखलहेउअपारा॥भयेउरोषरणरावणमारा॥दोहा॥प्र
भुसोइरामकिअपरकोउ॥जाहिजपतत्रिपुरारि॥सत्यधामसर्वज्ञतुम॥कहहुविवेक
बिचारि॥४६॥चौपई॥जैसेमिटैमोहभ्रमभारी॥कहहुसोकथानाथबिस्तारी॥या
ज्ञवल्क्यबोलेमुसुकाई॥तुमहिविदितरघुपतिप्रभुताई॥रामभक्ततुममनकर
बानी॥चतुराईतुम्हारिमैंजानी॥चाहहुसुनैरामगुणगूढा॥कीन्हेहुप्रश्नमनहुं
अतिमूढा॥तातसुनहुसादरमनलाई॥कहहुरामकीकथासुहाई॥महामोहम
हिषेषाबिशाला रामकथाकालिकाकराला॥रामकथाशशिकिरणसमाना॥
॥संतचकोरकरहिंतेहिपाना॥ऐसेसंशयकीन्हभवानी॥महादेवतबकहाबखा
नी॥दोहा॥कहौंसोमतिअनुहारिअब॥उमाशंभुसंवाद॥भयेउसमयजेहिहे
तुजेहि॥सुनिमुनिमिटहिबिषाद॥४७॥चौपई॥एकबारत्रेतायुगमाहीं॥शंभुग
येकुंभजऋषिपाहीं॥संगसतीजगजननिभवानी॥पूजेऋषिअखिलेश्वरजानी
॥रामकथामुनिवर्यबखानी॥सुनिमहेशपरमसुखमानी॥ऋषिपूछीहरिभक्ति

सुहाई॥ कहीप्रभुअधिकारीपाई॥ कहतसुनतरघुपतिगुणगाथा॥ कछुदिनतहांरहे
गिरिनाथा॥ मुनिसनबिदामांगित्रिपुरारी॥ चलेभुवनसंगदक्षकुमारी॥ तेहिअव
सरभंजनमहिभारा॥ हरिरघुबंसलीन्हअवतारा॥ पिताबचनतजिराजउदासी॥ दंडक
बनबिचरतअबिनासी॥ दोहा॥ हृदयबिचारतजातहर केहिबिधिदर्शनहोइ॥ गुप्तरूपअ
तरेउप्रभु॥ गयेजानसबकोइ॥ सोरठा॥ शंकरउरअतिछोभ॥ सतीनजानहिंमर्मसोइ॥
तुलसीदर्शनलोभ॥ मनडरलोचनलालची॥ ४८॥ चौपई॥ रावणमरणमनुजकरजाचा
॥ प्रभुबिधिबचनकीन्हचहसांचा॥ जौंनहिंजाउंरहैपछतावा॥ करतबिचारनबनतबना
वा॥ इहिबिधिभियेसोचबसईशा॥ ताहीसमयजाइदशसीसा॥ लीन्हनीचमारीचहिसंगा
॥ भयेतुरतसोइकपटकुरंगा॥ करिछलमूढहरीबैदेही॥ प्रभुप्रतापतसबिदितनतेही॥
मृगबधिबंधुसहितप्रभुआये॥ आश्रमदेखिनयनजलछाये॥ बिरहबिकलनरइव
रघुराई॥ खोजतबिपिनफिरतदोउभाई॥ कबहूंयोगबियोगनजाके॥ देखाप्रगटबिरह
दुखताके॥ दोहा॥ अतिबिचित्ररघुपतिचरित॥ जानहिंपरमसुजान॥ जेमतिमंदबिमो
हबस॥ हृदयधरहिंकछुआन॥ ४९॥ चौपई॥ शंभुसमयतेहिरामहिदेखा॥ उपजाअ
तिहियहर्षबिशेषा॥ भरिलोचनछबिसिंधुनिहारी॥ कुसमयजानिनकीन्हचिन्हारी॥ जय

सच्चिदानंदजगपावन ॥ असकहिचलेमनोजनसावन ॥ चलेजातशिवसतीसमेता ॥ पुनिपुनि
पुलकितकृपानिकेता ॥ सतीसोदशाशंभुकीदेखी ॥ उरउपजासंदेहविशेषी ॥ शंकरजगतवं
द्यजगदीसा ॥ सुरमुनिनरसबनावतसीसा ॥ तिननृपसुतहिकीन्हपरनामा ॥ कहिसच्चिदानंद
परधामा ॥ भयेमगनछबितासुविलोकी ॥ अजहूप्रीतिउररहतिनरोकी ॥ दोहा ॥ ब्रह्मजो
व्यापकविरजअज ॥ अकलअनीहअभेद ॥ सोकिदेहधरिहोइनर ॥ जाहिनजानत
बेद ॥ ५० ॥ चौपई ॥ विष्णुजोसुरहितनरतनुधारी ॥ सोउसर्वज्ञयथात्रिपुरारी ॥ खोजतसो
किअज्ञइवनारी ॥ ज्ञानधामश्रीपतिअसुरारी ॥ शंभुगिरापुनिमृषानहोई ॥ शिवसर्वज्ञजा
नसबकोई ॥ अससंशयमनभयोअपारा ॥ होइनहृदयप्रबोधप्रचारा ॥ यद्यपिप्रगट
नकहेउभवानी ॥ हरअंतरजामीसबजानी ॥ सुनहुसतीतवनारिसुभाऊ ॥ संशयअस
नधरियेउरकाऊ ॥ जासुकथाकुंभजऋषिगाई ॥ भक्तिजासुमैंमुनिहिसुनाई ॥ सोममइष्ट
देवरघुवीरा ॥ सेवतजाहिसदामुनिधीरा ॥ छंद ॥ मुनिधीरयोगीसिद्धसंततविमलमन
जेहिध्यावहीं ॥ कहिनेतिनिगमपुराणआगमजासुकीरतिगावहीं ॥ सोइरामव्यापकब्रह्म
भुवननिकायपतिमायाधनी ॥ अवतरेउअपनेभक्तहितनिजतंत्रनितरघुकुलमनी ॥
सो० ॥ लागनउरउपदेश ॥ यद्यपिकहेशिवबारबहु ॥ बोलेविहसिमहेश ॥ हरिमायाब

जानिजिव ॥५१॥ चौपई जोतुमरेमन अतिसंदेहू ॥ तोकिन जाइपरिछालेहू ॥ तबलगिबैठिरहों
बटछांहीं ॥ जबलगितुमआवहु मोहिपाहीं ॥ जैसेजाइमोहभ्रमभारी ॥ करहुसोयतनबि
वेकबिचारी ॥ चलीसतीशिवआयसुपाई ॥ करहिबिचारकरौंकाभाई ॥ इहांशंभुअसमन
अनुमाना ॥ दक्षसुताकहनहिकल्याना ॥ मोरेहूकहेनसंशयजाहीं ॥ बिधिबिपरीतभला
ईनाहीं ॥ होइहेसोइजोरामरचिराखा ॥ कोकरितर्कबढावहिसाखा ॥ असकहिलगेज
पन हरिनामा ॥ गईसतीजहांप्रभुसुखधामा ॥ दोहा ॥ पुनिपुनिहृदयबिचारकरि ॥ धरि
सीताकररूप ॥ आगेहोइचलिपंथतेइ जेहआवतनरभूप ॥५२॥ चौपई ॥ लछमण
दीषउमाकृतबेषा ॥ चकितहृदयभ्रमभयेउबिशेषा ॥ कहिनसकतकछुअतिगंभी
रा ॥ प्रभुप्रभावजानतमतिधीरा ॥ सतीकपटजानेउसुरस्वामी ॥ सबदरशीसबअंत
रजामी ॥ सुमिरितजाहिमिटैअज्ञाना ॥ सोइसर्वज्ञरामभगवाना ॥ सतीकीन्हचहतहांहीं
दुराऊ ॥ देखहुनारिसुभावप्रभाऊ ॥ निजमायाबलहृदयबखानी ॥ बोलेबिहंसिरा
ममृदुबानी ॥ जोरिपाणिप्रभुकीन्हप्रणामू ॥ पितासमेतलीन्हनिजनामू ॥ कहेउब
होरिकहांवृषकेतू ॥ बिपिनअकेलीफिरहंकेहिहेतु ॥ दोहा ॥ रामबचनमृदुगूढसुनि
उपजाअतिसंकोच ॥ सतीसभीतमहेशपहं ॥ चलीहृदयबडसोच ॥५३॥ चौपई ॥ मैं

रा०बा० २८

शंकरकरकहानामाना॥निजअज्ञानरामपरआना॥जाइउतरअबदेहौंकहा॥उरउप
जाअतिदारुणदाहा॥जानारामसतीदुखपावा॥निजप्रभावकछुप्रगटजनावा॥सती
दीखकौतुकमगजाता॥आगेरामसहितसियभ्राता॥फिरिचितवापाछेप्रभुदेखा॥सहित
बंधुसियसुंदरबेषा॥जहिंचितवहितहंप्रभुआसीसा॥सेवहिंसिद्धिमुनीसप्रबीना॥दे
खिशिवबिधिविष्णुअनेका॥अमितप्रभावएकतेएका॥बंदतचरणकरतप्रभुसेवा
विविधिबेषदेखेसबदेवा॥दोहा॥सतीविधात्रीइंदिरा॥देखीअमितअनूप॥जेहिजेहि
बेषअजादिसुर॥तेहितेहितनुअनूप॥५४॥चौपई॥देखेजहंतहंरघुपतिजेते॥शक्ति
नसहितसकलसुरतेते॥जीवचराचरजेसंसारा॥देखेसकलअनेकप्रकारा॥पूज
हिंप्रभुहिदेवबहुबेषा॥रामरूपदूसरनहिंदेखा॥अवलोकेरघुपतिबहुतेरे॥
सीतासहिततनबेषघनेरे॥सोइरघुबरसोइलछमणसीता॥देखिसतीअतिभयीसभ
ीता॥हृदयकंपतनुसुधिकछुनाहीं॥नयनमूंदिबैठीमगुमाहीं॥बहुरिविलो
केउनयनउघारी॥कछुनदीखततहंदछकुमारी॥पुनिपुनिनाइरामपदसीसा॥चलीं
तहांजहंरहेगिरीसा॥दोहा॥गयीसमीपमहेशतब॥हंसिपूछीकुशलात॥लीन्हपरी
छाकवनबिधि॥कहहुसत्यसबबात॥५५॥चौपई॥सतीसमुझिरघुबीरप्रभाऊ॥

राम २८

नयबससिवसनकीन्हदुराऊ॥ कछुनपरीछालीन्हगोसांई॥ कीन्हप्रणामतुम्हारि
हिनाई॥ जोतुम्हकहासोम्रखानहोई॥ मोरेमनप्रतीतिअबसोई॥ तबशंकरदेखेउ
धरिध्याना॥ सतीजोकीन्हचरित्तसबजाना॥ बहुरिराममायहिशिरनावा॥ प्रेरिसती
हिझूठकहावा॥ हरिइच्छाभावीबलवाना॥ हृदयबिचारतशंभुसुजाना॥ सतीकीन्ह
सीताकरबेषा॥ शिवउरभयउबिषादबिशेषा॥ जोअबकरौंसतीसनप्रीती॥ मिटै
भक्तिपथहोइअनीती॥ दोहा॥ परमप्रेमनहिजाइतजि॥ कियेप्रेमबडपाप॥ प्रग
टनकहतमहेशकछु॥ हृदयअधिकसंताप॥ ५६॥ चौपई॥ तबहिशंभुप्रभुपद
शिरनावा॥ सुमिरतरामहृदयअसआवा॥ इहितनसतीहिभेटमोहिनाही॥ शिव
संकल्पकीन्हमनमाही॥ असबिचारिशंकरमतिधीरा॥ चलेभवनसुमिरतरघुबीरा
॥ चलतगगनभैगिरासुहाई॥ जयमहेशभलिभक्तिदृढाई॥ असप्रणतुम्हबिनुक
रैकोआना॥ रामभक्तसमरथभगवाना॥ सुनिनभगिरासतीउरसोचू॥ पूछाशिव
हिसमेतसकोचू॥ कीन्हकवनप्रणकहहुकृपाला॥ सत्यधामप्रभुदीनदयाला॥
यदपिसतीपूछाबहुभांती॥ तदपिनकहेउत्रिपुरआराती॥ दोहा॥ सतीहृदयअ
नुमानकिय॥ सबजानासर्वज्ञ॥ कीन्हकपटमैंशंभुसन॥ नारिसहजजडअज्ञ॥ सोरठा॥

बरनतपंथबिबिधिइतिहासाबिस्वनाथपहुंचेकैलासा ५

रा०बा० २९

जलपयसरिसबिकाइ॥देखहुप्रीतिकिरीतिभलि॥बिलगहोइरसजाइ॥कपटखटाईपर
तही॥५७॥चौपई॥हृदयसोचसमुझतनिजकरणी॥चिंताअमितजाइनहिबरणी॥कृ
पासिंधुशिवपरमअगाधा॥प्रगटनकहेउमोरअपराधा॥शंकररुखअवलोकिभवानी॥प्र
भुमोहितजेउहृदयअकुलानी॥निजअघसमुझिनकछुकहिजाई॥तपेअवांइवउर
अधिकाई॥सतीहिससोचजानिबृषकेतू॥कहेउकथासुंदरसुषहेतु॥तहंपुनिशंभुसमु
झिपणआपन॥बैठेबटतरुकरकमलासन॥शंकरसहजसरूपसंभारा॥लागिसमा
धिअखंडअपारा॥दोहा॥सतीबसहिकैलाशतब॥अधिकसोचमनमाहिं॥मर्मनको
ऊजानकछु॥युगसमदिवससराहिं॥५८॥चौपई॥नितनवसोचसतीउरभारा॥कबजे
होंदुषसागरपारा॥मैंजोकीरघुपतिअपमाना॥पुनिपतिवचनमृषाकरिजाना॥सो
फलमोहिबिधातादीन्हा॥जोकछुउचितरहासोकीन्हा॥अबविधिअसबूझियनहिमो
ही॥शंकरबिमुखजिआवनमोही॥कहिनजायकछुहृदयगलानी॥मनमहिंरामहि
सुमिरसयानी॥जोप्रभुदीनदयालुकहावा॥आरतिहरणबेदयशगावा॥तोमैंबिन
यकरौंकरजोरी॥छूटौबेगदेहअबमोरी॥जोमेरेशिवचरणसनेहू॥मनक्रमबचनस
त्यब्रतएहू॥दोहा॥तोसमदर्शीसुनियप्रभु करोसोबेगिउपाइ॥होइमरणजेहिबिनय

राम २९

श्रम दुसह बिपति बिहाइ ॥ ५९ ॥ चौपई ॥ इहि बिधि दुखित प्रजेशा कुमारी ॥ अथकनी
यदारुण दुख नारी ॥ बीते संवत सहस सतासी ॥ तजी समाधि शंभु अविनासी ॥ रामराम शिव
सुमिरन लागे ॥ जानेउ सती जगतपति जागे ॥ जाइ शंभु पद बंदन कीन्हा ॥ सनमुख शंकर
आसन दीन्हा ॥ लगे कहन हरि कथा रसाला ॥ दक्ष प्रजेश भये तेहि काला ॥ देखा बिधि बि
चारि सब लायक ॥ दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥ बड अधिकार दक्ष जब पावा ॥ अति अ
भिमान हृदय तब आवा ॥ नहिं कोउ अस जनमेउ जग माही ॥ प्रभुता पाइ जाहि मद नाही ॥
दोहा ॥ दक्ष लिये मुनि बोलि सब ॥ करण लगे बड जाग ॥ नेवते सादर सकल सुर ॥ जे पा
वत मख भाग ॥ ६० ॥ चौपई ॥ किंनर नाग सिद्ध गंधर्बा ॥ बधुन समेत चले सुर सर्बा ॥ बिष्णु
बिरंचि महेशा बिहाई ॥ चले सकल सुर जान बनाई ॥ सती बिलोके गगन बिमाना ॥ जा
त चले सुंदर बिधि नाना ॥ सुर सुंदरी करहि कल गाना ॥ सुनत श्रवण छूटहिं मुनि ध्याना
॥ पूछेउ तब शिव कहेउ बषानी ॥ पिता यज्ञ सुन कछु हरषानी ॥ जो महेशा मोहि आय
सु देही ॥ कछु दिन जाय रहौ मिस एही ॥ पति परित्याग हृदय दुख भारी ॥ कहै न निज अ
पराध बिचारी ॥ बोली सती मनोहर बानी ॥ भय संकोच प्रेम रस सानी ॥ दोहा ॥ पिता भ
वन उत्सव परम ॥ जो प्रभु आयसु होइ ॥ तौ मैं जाउ कृपायतन ॥ सादर देखन सोइ ॥

॥दो॥ चौपई॥ कहेउ नीक मोरेहु मन भावा॥ यह अनुचित नहि नेवत पठावा॥ दक्ष सकल नि
ज सुता बुलाई॥ हमरे बयर तुम्हैं बिसराई॥ ब्रह्मसभा हम सन दुख माना॥ तेहि ते अ
जहूं करहिं अपमाना॥ जौं बिनु बोले जाहु भवानी॥ रहै न शील सनेह न कानी॥ यदपि मि
त्र प्रभु पितु गुरु गेहा॥ जाइय बिनु बोलेन संदेहा॥ तदपि बिरोध मान जहं कोई॥ तहां गये
कल्याण न होई॥ भांति अनेक शंभु समझावा॥ भावी बस न ज्ञान उर आवा॥ कह प्र
भु जाहु जो बिनय बुलाये॥ नहिं भलि बात हमारे भाये॥ दोहा॥ कहि देखा हर जतन बहु
॥ रहै न दक्ष कुमारि॥ दिये मुख्य गण संग तब॥ बिदा किये त्रिपुरारि॥ दो॥ चौपई॥ पिता
भवन जब गयी भवानी॥ दक्ष त्रास काहु न सनमानी॥ सादर भलेहि मिली इक माता॥ भ
गिनी मिली बहुत मुसुकाता॥ दक्ष न कछु पूछी कुशलाता॥ सतीहि बिलोकि जरे सब गा
ता॥ सती जाय देखे तब जागा॥ कतहु न दीख शंभु कर भागा॥ तब चित चढेउ जो शंकर
कहेउ॥ प्रभु अपमान समुझि उर दहेउ॥ पाछिल दुख न हृदय अस ब्यापा॥ जस यह भ
येउ महा परितापा॥ यद्यपि जग दारुण दुख नाना॥ सब ते कठिन जाति अपमाना॥ समु
झि सो सतिहि भयो अति क्रोधा॥ बहु बिधि जननी कीन प्रबोधा॥ दोहा॥ शिव अपमान न जाइ
सहि॥ हृदय न होत प्रबोध॥ सकल सभहि हठि हटकि तब॥ बोली बचन सक्रोध॥ दो॥ चौ

५६॥ सुनहु सभासद सकल मुनिंदा॥ कही सुनि जिन्ह संकर निंदा॥ सो फल तुरत लहब सब
काहू॥ भली भांति पछिताय पिताहू॥ संत संभु श्रीपति अपवादा॥ सुनिय जहां तहं अस
मर्यादा॥ काटिय तासु जीभ जो बसाई॥ श्रवण मूंदि न त चलिय पराई॥ जगदातमा महेश पु
रारी॥ जगत जनक सब के हितकारी॥ पिता मंदमति निंदत तेही॥ दक्ष शुक्र संभव यह देही
॥ तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू॥ उर धर चंद्रमौलि वृषकेतू॥ अस कहि योग अगिनि तनु
जारा॥ भयउ सकल मख हाहाकारा॥ दोहा॥ सती मरण सुनि शंभु गण॥ लगे करण मख
खीस॥ यज्ञ विध्वंस विलोकि भृगु॥ रक्षा कीन्ह मुनीस॥ ६४॥ चौपाई॥ समाचार जब शंकर पा
ये॥ वीरभद्र करि कोप पठाय॥ यज्ञ विध्वंस जाइ तिन्ह कीन्हा॥ सकल सुरन्ह विधिवत फ
ल दीन्हा॥ भइ जग विदित दक्ष गति सोई॥ जस कछु शंभु विमुख की होई॥ यह इतिहास सक
ल जग जाना॥ ताते मैं संक्षेप बखाना॥ सती मरत हरि सन बर मांगा॥ जन्म जन्म शिव पद
अनुरागा॥ तेहि कारण हिमगिरि गृह जाई॥ जनमी पारवती तनु पाई॥ जब ते उमा शैल
गृह आइ॥ सकल सिद्धि संपति तहं छाई॥ जहं तहं मुनिन सुआश्रम कीन्हे॥ उचित बास
हिम भूधर दीन्ह॥ दोहा॥ सदा सुमन फल सहित सब॥ द्रुम नव नाना जाति॥ प्रगटी सुंदर
शैल पर॥ मणि आकर बहु भांति॥ ६५॥ चौपाई॥ सरिता सब पुनीत जल बहई॥ खगमृ

रा०बा०
२१

मधुपसुषीसबरहहीं ॥ सहजबयरसबजीवनत्यागा ॥ गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा ॥
सोहसैलगिरिजागृहआये ॥ जिमिजनुरामभक्तिकेपाये ॥ नितिनूतनमंगलगृहतासू
॥ ब्रह्मादिकगावहिंयसजासू ॥ नारदसमाचारसबपाये ॥ कौतुकहिंगिरिगेहसिधाये ॥ रा
॥ सैलराजबडआदरकीन्हा ॥ पदपखारिबरआसनदीन्हा ॥ नारिसहितमुनिपदसिर
नावा ॥ चरणसलिलसबभवनसिंचावा ॥ निजसौभाग्यबहुतगिरिबरणा ॥ सुताबोलि
मेलीमुनिचरणा ॥ दोहा ॥ त्रिकालज्ञसर्वज्ञतुम ॥ गतिसर्वत्रतुम्हारि ॥ कहहुसुताकेदोष
गुण ॥ मुनिबरहृदयविचारि ॥ ६६ ॥ चौपई ॥ कहमुनिबिहसिगूढमृदुबानी ॥ सुतातुम्हा
रिसकलगुणखानी ॥ सुंदरसहजसुसीलसयानी ॥ नामउमाअंबिकाभवानी ॥ सब
लक्षणसंपन्नकुमारी ॥ होइहिसंततपियहिपियारी ॥ सदाअचलएहिकरअहिबाता ॥ इ
हितेयसुपैहहिपितुमाता ॥ होयहपूज्यसकलजगमाहीं ॥ इहिसेवतकछुदुर्लभना
हीं ॥ इहिकरनामसुमिरिसंसारा ॥ त्रियचढिहहिंपतिब्रतअसिधारा ॥ सैलसुलक्षण
सुतातुम्हारी ॥ सुनहुजेअबअवगुणदुइचारी ॥ अगुणअमानमातुपितुहीना ॥ उदा
सीनसबसंशयछीना ॥ दोहा ॥ जोगीजटिलअकाममन ॥ नगनअमंगलवेष ॥ अस
स्वामीइहिकहंमिलिहि ॥ परीहस्तअसिरेष ॥ ६७ ॥ चौपई ॥ सुनिमुनिगिरासत्यजिय

राम
२१

जानी॥ दुखदंपतिहि उमा हरषानी॥ नारद हूँ यह भेद न जाना। दशा एक समुझत बिलगानाँ
॥ सकल सखी गिरिजा गिरि मयना॥ पुलक शरीर भरे जल नयना॥ होइ न मृषा देव ऋषि
भाषा॥ उमा सो बचन हृदय धरि राषा॥ उपजेउ शिव पद कमल सनेहू॥ मिलन कठिन
मन भा संदेहू॥ जानि कुअवसर प्रीति दुराई॥ सषी उछंग बैठी पुनि जाई॥ झूठि न हो
य देव ऋषि बानी॥ सोचहिं दंपति सषी सयानी॥ उर धरि धीर कहै गिरिराऊ॥ कहहु
नाथ का करिय उपाऊ॥ दोहा॥ कह मुनीस हिमवंत सुनु॥ जो बिधि लिषा लिलार॥ देव
दनुज नर नाग मुनि॥ कोउ न मेटनहार॥ ६८॥ चौपई॥ तदपि एक मैं कहौं उपाई॥ होइ
करै जो दैव सहाई॥ जस बर मैं बरणेउँ तुम पाहीं॥ मिलिहि उमहि तस संशय नाहीं॥ जे जे
बर के दोष बखाने॥ ते सब शिव पहि मैं अनुमाने॥ जो विवाह शंकर सन होई॥ दोषो गुण
सम कह सब कोई॥ जो अहि सेज सेन हरि करहीं॥ बुध कछु तिन कह दोष न धरहीं॥ भा
नु कृशानु सर्व रस खाहीं॥ तिन कह मंद कहत कोउ नाहीं॥ शुभ अरु अशुभ सलिल सब
वहहीं॥ सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं॥ समरथ कहु नहिं दोष गुसाई॥ रवि पावक सु
रसरि की नाई॥ दोहा॥ जो अस हिसिषा करहीं॥ जड़ विवेक अभिमान॥ परहिं कल्प भर
नर्क महि॥ जीव कि ईश समान॥ ६९॥ चौपई॥ सुरसरि जल कृत बारुणि जाना॥ कबहुँ

बालकांड
२२

नसंतकरहितेहिपाना ॥ सुरसरिमिलेसुपावनजैसे ॥ ईशअनीशहिअंतरतैसे ॥ शंभु
सहजसमरथभगवाना ॥ इहिविवाहसवविधिकल्याना ॥ दुराराध्यपैअहहिमहेसू
आशुतोषपुनिकियेकलेसू ॥ जोतपकरैकुमारितुम्हारी ॥ भावीमेटसकैत्रिपुरा
री ॥ यद्यपिबरअनेकजगमाहीं ॥ इहिकहशिवतजिदूसरनाही ॥ बरदायकप्रण
तारतिभंजन ॥ कृपासिंधुसेवकमनरंजन ॥ इच्छितफलविनुशिवअराधे ॥ लहइन
कोटियोगतपसाधे ॥ दोहा ॥ असकहिनारदसुमिरिहरि ॥ गिरिजहिंदीनअसीस ॥ होइहि
यहिकल्याणअब ॥ संशयतजहुगिरीस ॥ ७० ॥ चौपई ॥ कहिअसब्रह्मभुवनमुनिगयेऊ
॥ आगिलचरितसुनऊजसभयेऊ ॥ पतिइकांतपायकहमयना ॥ नाथनमैंसमझेउ
मुनिवयना ॥ जोघरबरकुलहोयअनूपा ॥ करियविवाहसुताअनुरूपा ॥ नतुकन्या
बररहौकुमारी ॥ कंतउमाममप्राणपियारी ॥ जोनमिलिहिबरगिरिजहियोगू ॥ गि
रिजडसहजकहहिंसबलोगू ॥ सोविचारिपतिकरऊबिवाहू ॥ जेहिनवहोरिहोइ
उरदाहू ॥ असकहिपरीचरणधरसीसा ॥ बोलेसहितसनेहगिरीसा ॥ बरपावकप्रग
टैशशिमाहीं ॥ नारदबचनअन्यथानाहीं ॥ दोहा ॥ प्रियासोचपरिहरऊसब ॥ सुमि
रऊंश्रीभगवान ॥ पारवतीजिननिर्मयो ॥ सोइकरिहहिंकल्यान ॥ ७१ ॥ चौपई ॥ अ

स्म

राम
२२

बजोतुमहिसुतापरनेकू॥ तोअसजाइसिखावनदेहू॥ करैसोतपजेहिमिलहिमहेसू॥ आ
नउपायनमिटहिकलेसू॥ नारदबचनसगर्भसहेतू॥ सुंदरसबगुणनिधिबृषकेतू॥ अ
सबिचारितुमतजिसबसंका॥ सबहिभांतिसंकरअकलंका॥ सुनिपतिबचनहरषिमन
माही॥ गयीतुरतउठिगिरिजापाही॥ उमहिबिलोकिनयनभरिबारी॥ सहितसनेहगोद
बैठारी॥ बारहिबारलेतिउरलाई॥ गदगदकंठनकछुकहिजाई॥ जगतमातुसर्बज्ञभ
वानी॥ मातुसुखदबोलीमृदुबानी॥ दोहा॥ सुनहुमातमैंदीखअस॥ सुपनसुनाऊंतोही
सुंदरगोरसुबिप्रबर॥ असउपदेसोमोहि॥७२॥ चौपई॥ करहुजाइतपसैलकुमारी
॥ नारदकहासोसत्यबिचारी॥ मातुपितहिपुनियहमतभावा॥ तपसुखप्रददुखदोषन
सावा॥ तपबलरचैप्रपंचबिधाता॥ तपबलबिष्णुसकलजगत्राता॥ तपबलसंभुकर
हिसंहारा॥ तपबलसेषधरहिमहिभारा॥ तपअधारसबसृष्टिभवानी॥ करहुजायत
पअसजियजानी॥ सुनतबचनबिस्मितमहतारी॥ सुपनसुनायेउगिरिहिहंकारी॥ मा
तुपितहिबहुबिधिसमुझाई॥ चलीउमातपहितहरषाई॥ प्रियपरिवारपिताअरुमा
ता॥ भयेबिकलमुखआवनबाता॥ दोहा॥ बेदसिरामुनिआइतब॥ सबहिकहासमु
झाइ॥ पारबतीमहिमासुनत॥ रहेप्रबोधहिपाइ॥७३॥ चौपई॥ उरधरिउमाप्राणपति

चरणा ॥ जाइ विपिन लागी तप करणा ॥ अति सुकुमारि न तन तप योगू ॥ पति पद सुमिरि त
जेउ सब भोगू ॥ नित नव चरण उपज अनुरागा ॥ बिसरी देह तपहि मन लागा ॥ संवत सहस
मूल फल खाये ॥ शाक खाइ शत बर्ष गवाये ॥ कछु दिन भोजन बारि बतासा ॥ किये कठि
न कछु दिन उपबासा ॥ बेल पात महि परे सुखाई ॥ तीनि सहस संवत सो पाई ॥ पुनि परि
हरेउ सुखाने परणा ॥ उमा नाम तब भयेउ अपरणा ॥ देखि उमहि तप छीन शरीरा ॥ ब्रह्म
गिरा भइ गगन गभीरा ॥ दोहा ॥ भयेउ मनोरथ सुफल तव ॥ सुनु गिरिराज कुमारि ॥ परिहरदु
सह कलेश सब ॥ अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ॥ ७४ ॥ चौपई ॥ अस तप काहु न कीन्ह भवानी
॥ भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥ अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी ॥ सत्य सदा संतत शुचि जा
नी ॥ आवै पिता बुलावन जबही ॥ हठ परिहरि घर जायहु तबही ॥ मिलहि तुमहि जब स
प्त ऋषीसा ॥ जानेहु तब प्रमाण बागीशा ॥ सुनत गिरा बिधि गगन बखानी ॥ पुलक गात
गिरिजा हरषानी ॥ उमा चरित मैं सुंदर गावा ॥ सुनहु शंभु कर चरित सुहावा ॥ जब ते सती
जाय तनु त्यागा ॥ तब ते शिव मन भयेउ बिरागा ॥ जपहिं सदा रघुनायक नामा ॥ जहं त
हं सुनहिं राम गुण ग्रामा ॥ दोहा ॥ चिदानंद सुखधाम शिव ॥ बिगत मोह मद काम ॥ बिचरहिं
महि धरि हृदय हरि ॥ सकल लोक अभिराम ॥ ७५ ॥ चौपई ॥ कतहुं मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना

कतऊरामगुणाकरहिंबखाना॥ यदपिअकामतदपिभगवाना॥ भक्तबिरहदुखदुखित
सुजाना॥ इहिबिधिगयेउकालबहुबीती॥ नितिनवहोयरामपदप्रीति॥ नेमप्रेमशंकरकर
देखा॥ अबिचलहृदयभक्तिकीरेखा॥ प्रगटेरामकृतज्ञकृपाला॥ रूपशीलनिधितेजबिशा
ला॥ बहुप्रकारशंकरहिसराहा॥ तुमबिनअसब्रतकोनिरबाहा॥ बहुबिधिरामशिवहि
समुझावा॥ पारबतीकरजन्मसुनावा॥ अतिपुनीतगिरिजाकीकरणी॥ बिस्तरसहितकृपा
निधिबरणी॥ दोहा॥ अबबिनतीममसुनऊशिव॥ जोमोपरनिजनेऊ॥ जाइबिवाहऊ
शैलजहि॥ यहमोहिमांगेदेऊ॥ ७६॥ चौपई॥ कहशिवयदपिउचितअसनाहीं॥ नाथब
चनपुनिमेटनजाहीं॥ शिरधरिआयसुकरियतुम्हारा॥ परमधरमयहनाथहमारा॥ मा
तुपिताप्रभुगुरुकीबानी॥ बिनहिबिचारकरियशुभजानी॥ तुमसबभांतिपरमहितकारी
॥ अज्ञाशिरपरनाथतुम्हारी॥ प्रभुतोषेउसुनिशंकरबचना॥ भक्तिबिबेकधर्मयुतर
चना॥ कहप्रभुहरतुम्हारप्रणरहेऊ॥ अबउरराखेउजोहमकहेऊ॥ अंतरधाननये
असभाषी॥ शंकरसोइमूरतिउरराखी॥ तबहिसप्तऋषिशिवपेआये॥ बोलेप्रभुअस
बचनसुनाये॥ दोहा॥ पारबतीपहजाइतुम॥ प्रेमपरीक्षालेहू॥ गिरिहिप्रेरिपठयेहुभव
न दूरकरेऊसंदेह॥ ७७॥ चौपई॥ ऋषिनगौरिदेखीतहकैसी॥ मूरतिवंततपस्याजैसे

म

सी॥ बोलेमुनिसुनशैलकुमारी॥ करहुकवनकारणतपभारी॥ केहिआराधहुकातुमचहह
हू॥ हमसनसत्यमर्मसबककहहू॥ सुनतऋषिनकेवचनभवानी॥ बोलीगूढमनोहरबानी॥
॥ कहतमर्ममनअतिसकुचाई॥ हंसिहहुसुनिहमारजडताई॥ मनहठपरानसुनैसिखा
वा॥ चहतवारिपरभीतिउठावा॥ नारदकहासत्यसोइजाना॥ बिनुपंखनहमचहहिंउडा
ना॥ देखियमुनिअविवेकहमारा॥ चाहतपतिशंकरअविकारा॥ दोहा॥ सुनतबचनबि
हंसेऋषयगिरिसंभवतवदेह॥ नारदकरउपदेशसुनि॥ कहहुबसेकोगेह॥ ७८॥ चौ
पई॥ दक्षसुतनउपदेशिनजाई॥ तिनफिरिभवननदेखाआई॥ चित्रकेतुकरघर
उनघाला॥ कनककशिपुकरपुनिअसहाला॥ नारदशिषजेसुनहिंनरनारी॥ अ
वशिभवनतजिहोंहिंभिखारी॥ मनकपटीतनसज्जनचीन्हा॥ आपसरीससबहीचह
कीन्हा॥ तेहिकेवचनमानिविश्वासा॥ तुमचाहहुपतिसहजउदासा॥ निर्गुणनिलजकुबेष
कपाली॥ अकुलअगेहदिगंबरव्याली॥ कहहुकवनसुषअसवरपाये॥ भलभूलिहुठ
गकेबौराये॥ पंचकहेशिवसतीविवाही॥ पुनिअवडेरिमराइनताही॥ दोहा॥ अब
सुषसोवतसोचनहि॥ भीषमांगिभवषांही॥ सहजएकाकिनकेभवन॥ कहुकिनना
रिषटांहि॥ ७९॥ चौपई॥ अजहूंमानहुकहाहमारा॥ हमतुमकहवरनीकविचारा॥

हुरि सप्तरिषि शिवपह जाई॥ कथा उमा की सकल सुनाई॥ भये मगन शिव सुनत नेहा
॥ हर्षि सप्तरिषि गवने गेहा॥ मन थिर करि तब शंभु सुजाना॥ लगे करण रघुनायक
ध्याना॥ तारक असुर भये तेहि काला॥ भुज प्रताप बल तेज बिशाला॥ तेंहि सब लोक
लोकपति जीते॥ भये देव सुष संपति रीते॥ अजर अमर सो जीति न जाई॥ हारे सुर
करि बिबिध लराई॥ तब बिरंचि सन जाइ पुकारे॥ देखे बिधि सब देव दुखारे॥ दो
हा॥ सब सन कहा बुझाय बिधि॥ दनुज निधन तब होय॥ शंभु शुक्र संभूत सुत इ
हि जीते रण सोइ॥ ८२॥ चौपई॥ मोर कहा सुनि करहु उपाई॥ होइहि ईश्वर करिहि
सहाई॥ सती जो तजी दक्ष मख देहा॥ जनमी जाइ हिमाचल गेहा॥ तेहि तप कीन्ह शंभु
पति लागी॥ शिव समाधि बैठे सब त्यागी॥ यदपि अहै असमंजस भारी॥ तदपि बात
इक सुनहु हमारी॥ पठहु काम जाइ शिव पाही॥ करै छोभ शंकर मन माहीं॥ तब
हम जाइ शिवहि शिर नाई॥ करवाउब बिबाह बरिआई॥ ऐहि बिधि भलेहि देव हित होई॥
मत अति नीक कही सब कोई॥ अस्तुति सुरन कीन्ह अस हेतु॥ प्रगटे विषम बाण झष के
तु॥ दोहा॥ सुरन कही निज बिपति सब॥ सुनि मन कीन्ह बिचार॥ शंभु बिरोध न कुशल
मोहि॥ बिहसि कहेउ अस मार॥ ८३॥ चौपई॥ तदपि करब मैं काज तुम्हारा॥ श्रुति कह पर

मधरमउपकारा॥परहितलागितजेजोदेही॥संततसंतप्रसंसहितेही॥असकहिचलेउसब
हिसिरनाई॥सुमनधनुषकरसहितसहाई॥चलतमारअसहृदयबिचारा॥शिवबिरोधध्रु
वमरणहमारा॥तबआपनप्रभावबिस्तारा॥निजबसकीन्हसकलसंसारा॥कोपेउजबहिं
वारिचरकेतू॥छणमहंमिटेसकलश्रुतिसेतु॥ब्रह्मचर्यब्रतसंयमनाना॥धीरजधरमज्ञा
नविज्ञाना॥सदाचारजपयोगविरागा॥सभयबिबेककटकसबभागा॥दोहा॥छंद॥भागेवि
वेकसहायसहितसोसुभटसंजुगमहिमुरे॥सदग्रंथपरवतकंदरनमहिजाइतेहिअवसर
दुरे॥होनिहारकाकरतारकोरखवारजगखरभरपरा॥दुइमाथकेहिरतिनाथजेहिक
हंकोपिकरधनुषरधरा॥दोहा॥जेसजीवजगअचरचर॥नारिपुरुषअसनाम॥तेनिजनि
जमर्यादतजि॥नयेसकलबसकाम॥८४॥चौपई॥सबकेहृदयमदनअभिलाषा॥ल
तानिहारिनवहितरुशाखा॥नदीउमगिअंबुधिकहंधाई॥संगमकरहिंतलावतलाई॥ज
हंअसदशाजडनकीबरणी॥कोकहिसकैसचेतनकरणी॥पशुपक्षीनभजलथलचारी
॥नयेकामबससमयबिसारी॥मदनअंधब्याकुलसबलोका॥निसदिननहिंअवलोकहिं
कोका॥देवदनुजनरकिन्नरब्याला॥प्रेतपिशाचभूतबेताला॥इनकीदशानकहेउबखा
नी॥सदाकामकेचेरेजानी॥सिद्धविरक्तमहामुनियोगी॥तेपिकामबसभयेबियोगी॥दोहा॥

छंद॥ भयेकामबसयोगीशतापसपामरनकीकोकहै॥ देखहिंचराचरनारिमयजेब्रह्ममय
देखतरहे॥ अबलाविलोकहिंपुरुषमयजगपुरुषसबअबलामयं॥ दुइदंडभरिब्रह्मं
डभीतरकामकृतकौतुकअयं॥ सोरठा॥ धरीनकाहूधीर॥ सबकेमनमनसिजहरे॥ जे
राखेरघुवीर॥ तेउबरेतेहिकालमहं॥ ८५॥ चौपई॥ उभयघरीअसकौतुकभयेऊ॥
जबलगिकामशंभुपहंगयेऊ॥ शिवहिविलोकिसशंकेउमारू॥ भयेउयथाथितसब
संसारू॥ भयेतुरतजगजीवसुषारे॥ जिमिमदउतरगयेमतवारे॥ रुद्रहिदेषिमदनभय
माना॥ दुराधर्षदुर्गमभगवाना॥ फिरतलाजकछुकरिनहिंजाई॥ मरणठानमनरचे
सिउपाई॥ प्रगटेसितुरतरुचिरऋतुराजा॥ कुसुमितनवतरुराजविराजा॥ बनउपवन
बापिकातडागा॥ परमसुभगसबदिशाबिभागा॥ जहंतहंजनुउमगतअनुरागा॥ देषि
मुयेउमनमनसिजजागा॥ छंद॥ जागेउमनोभवमुयेमनबनसुभगतानपरैकही॥ सीत
लसुगंधसुमंदमारुतमदनअनलसषासही॥ ८६ विकसेसरन्हिबहुकंजगुंजतपुंज
मंजुलमधुकरा॥ कलहंसपिकसरसरवकरिगाननाचहिंअपसरा॥ दोहा॥ सकलकला
करिकोटिविधि॥ हारेउसेनसमेत॥ चलीनअचलसमाधिशिव॥ कोपेउहृदयनिकेत॥ ८
चौपई॥ देषिरसालविटपबरशाखा॥ तेहिपरचढेमदनमनमाखा॥ सुमनचापनिजश

रसंधाने॥अतिरिसताकिश्रवणलगिताने॥छाडेबिषमविशिषउरलागे॥छूटिसमाधिपंरजु
तबजागे॥नयेईशमनक्षोनविशेषी॥नयनउघारिसकलदिशिदेषी॥सोरवपल्लवम
मदनविलोका॥नयेउकोपकंपेउत्रयेलोका॥तबशिवतीसरनयनउघारा॥चितवतत
कामनयेउजरिछारा॥हाहाकारनयेउजगभारी॥डरपेसुरनयेअसुरसुषारी॥समुझ
झिकामसुषसोचहिंभोगी॥नयेअकंटकसाधकयोगी॥छंद॥योगीअकंटकनयेपतिग
ति॥सुनतरतिमूर्छितनयी॥रोदतिबदतिबहुनांतिकरुणाकरतिशंकरपहंगयी॥अ
तिप्रेमकरबिनतीबिबिधिविधिजोरिकरसन्मुखरही॥प्रभुआशुतोषकृपालशिवअ
बलानिरषिबोलेसही॥दोहा॥अबतेंरतितवनाथकरहोइहिनामअनंग॥बिनबपु
व्यापिहिसबहिपुनि॥सुननिजमिलनप्रसंग॥८८॥चौपई॥जबयदुवंशकृस्नअवता
रा॥होइहिहरणमहामहिभारा॥कृस्नतनयहोइहैपतितोरा॥बचनअन्यथाहोइन
मोरा॥तबरतिगवनीसुनिशंकरबानी॥कथाअपरअबकहोबषानी॥देवनसमाचा
चारसबपाये॥ब्रह्मादिकबैकुंठसिधाये॥सबसुरविष्णुविरंचिसमेता॥गयेजहांसबकृ
पानिकेता॥पृथकपृथकतिन्हकीन्हप्रशंसा॥नयेप्रसन्नचंद्रअवतंसा॥बोलेकृपासिं
धुवृषकेतु॥कहहुअमरआयेकेहिहेतु॥कहविधितुमप्रभुअंतरजामी॥तदपिन

वाल०
२१

क्रिबसबिनवनस्वामी ॥ दोहा ॥ सकलसुरनकेहृदयअस ॥ शंकरपरमउछाह ॥ निजनय
नहिंदेखाचहहि ॥ नाथतुम्हारविवाह ॥ ८९ ॥ चौपई ॥ यहउत्सवदेखियभरलोचन ॥ सोक
सुकरियमदनमदमोचन ॥ कामजारिरतिकहंबरदीन्हा ॥ कृपासिंधुयहअतिभल
कीन्हा ॥ सासतिकरिपुनिकरहिंपसाऊ ॥ नाथप्रभुनकरसहजसुभाऊ ॥ पारबतितप
कीन्हअपारा ॥ करहुतासुअबअंगीकारा ॥ सुनिविधिवचनसमुझिप्रभुवानी ॥ ऐसो
उहोउकहासुषमानी ॥ तबदेवनडुंडुभीबजाई ॥ बरषिसुमनजयजयसुरसांई ॥ अव
सरजानिसप्तरिषिआये ॥ तुरतहिविधिगिरिभवनपठाये ॥ प्रथमगयेजहंरहीभवा
नी ॥ बोलेबचनमधुरछलसानी ॥ दोहा ॥ कहाहमारनसुनेहुतब ॥ नारदकेउपदेश
॥ अबभाझूठतुम्हारप्रण ॥ जारेउकाममहेश ॥ ९० ॥ चौपई ॥ सुनुबोलीमुसुकायभवा
नी ॥ उचितकहेहुमुनिवरविज्ञानी ॥ तुम्हरेजानकामहरजारा ॥ अबलगिशंभुरहे
सबिकारा ॥ हमरेजानसदाशिवयोगी ॥ अजअनवद्यअकामअभोगी ॥ जोमेंशिवसे
येउअसजानी ॥ प्रीतिसमेतकर्ममनवानी ॥ तोहमारप्रणसुनहुमुनीसा ॥ करिहहि
सत्यकृपानिधिईशा ॥ तुमजोकहाहरजारेउमारा ॥ सोअतिबडअविवेकतुम्हारा ॥ ता
तअनलकरसहजसुभाऊ ॥ हिमतेहिनिकटजाइनहिंकाऊ ॥ गयेसमीपसोअवशि

ब

राम
२१

नसाई॥ असमनमधममहेशाकीनाई॥ दोहा॥ हियहरषेमुनिबचनसुन॥ देषिप्रीतिबिश्वा
स॥ चलेभवानीनाइशिर॥ गयेहिमाचलपास॥ ए२॥ चौपई॥ सबप्रसंगगिरिपति
हिसुनावा॥ मदनदहनसुनिअतिदुखपावा॥ बहुरिकहेउरतिकरबरदाना॥ सुनि
हिमवंतबहुतसुषमाना॥ हृदयबिचारिशंभुप्रभुताई॥ सादरमुनिबरलियेबुलाई॥
सुदिनसुनखतसुघरीसुहाई॥ बेगिबेदबिधिलगनधराई॥ पत्रीसप्तऋषिनसोइदी
न्ही॥ गहपदबिनयहिमाचलकीन्ही॥ जाइबिधिहितिन्हदीन्हसोपाती॥ बाचतप्रीतिन
हृदयसमाती॥ लगनबांचिअजसबहिसुनाई॥ हरषेमुनिसबसुरसमुदाई॥ सुमन
बृष्टिनभबाजनबाजे॥ मंगलकलशदशहुदिशिसाजे॥ दोहा॥ लगेसवारनसकल
सुर॥ बाहनबिबिधिबिमान॥ होहिंसगुणमंगलसुभग॥ करहिंअपसरागान॥ ए२॥ चौ
पई॥ शिवहिंशंभुगणकरहिंसिंगारा॥ जटामुकुटअहिमौरसंवारा॥ कुंडलकंकणप
हिरेब्याला॥ तनबिभूतिपटकेहरिछाला॥ शशिललाटसुंदरशिरगंगा॥ नयनतीन
उपवीतभुजंगा॥ गरलकंठउरनरशिरमाला॥ अशुभभेषशिवधामकृपाला॥ कर
त्रिशूलवरडमरूबिराजा॥ चलेबृषचढिबाजहिबाजा॥ देखिशिवहिंसुरत्रियमुसुका
हीं॥ बरलायकदुलहिनिजगनाहीं॥ बिष्णुबिरंचिआदिसुरब्राता॥ चढिचढिवाहनच

लेबराता॥सुरसमाजसबभांतिअनूपा॥नहिबरातदुलहअनुरूपा॥दोहा॥बिष्णुकहाअ
सबिहसितब बोलिसकलदिसिराज॥बिलगिबिलगिहोइचलेहुसब॥निजनिजसहि
तसमाज॥९३॥चौपई॥बरअनुहारबरातनभाई॥हंसीकरैहहुपरपुरजाई॥बिष्णु
बचनसुनिसुरमुसुकाने॥निजनिजसेनसहितबिलगाने॥मनहीमनमहेसुमुसुकाई
॥हरिकेब्यंगबचननहिंजाई॥अतिप्रियबचनसुनतहरिकेरे॥भृंगीप्रेरिसकलगण
टेरे॥सिवअनुसासनसुनिसबआये॥प्रभुपदजलजसीसतिननाये॥नानावाहनना
नाबेषा॥बिहंसेसिवसमाजनिजदेषा॥कोउमुखहीनबिपुलमुखकाहू॥बिनुपदकर
कोउबहुपदबाहू॥बिपुलनयनकोउनयनबिहीना॥रिष्टपुष्टकोउअतितनषी
ना॥छंद॥तनुषीणकोउअतिपीनपावनकोउअपावनतनुधरे॥भूषणकरालकपा
लकरसबसद्यसोणिततनुभरे॥खरस्वानसुअरसृगालमुखगणबेषअगणितकोग
नै॥बहुजिनिसप्रेतपिसाचयोगिनिभांतिबरनतनहिबनै॥सोरठा॥नाचहिंगावहिं
बहिंगीत॥परमतरंगीभूतसब॥देषतअतिबिपरीत॥बोलेबचनबिचित्रबिधि॥९४॥
चौपई॥जसदूलहतसबनीबराता॥कौतुकबिबिधिहोहिंमगुजाता॥इहाहिमाचल
रचेउबिताना॥अतिबिचित्रनहिंजायबखाना॥सैलसकलजहंलगिजगमाहीं

लघुविसालनहिंबरनिसिराहीं १

ग

बनसाँरसबनदीतलावा ॥ हिमगिरिसबकहँनिवतपगावा ॥ कामरूपसुंदरतनुधारी ॥
सहितसमाजसहितबरनारी ॥ गयेसकलरितुहिमचलगेहा ॥ गावहिंमंगलसहितसनेहा
प्रथमहिगिरिबहुग्रहसवराये ॥ यथायोगजहँतहँसबछाये ॥ पुरशोभाअबलोकि
सुहाई ॥ लागेलघुविरंचिनिपुणाई ॥ छंद ॥ लघुलागविधिकीनिपुणताअवलोकि
पुरशोभासही ॥ बनबागकूपतडागसरितासुभगसबसककोकही ॥ मंगलविपुलतोर
णपताकाकेतुग्रहग्रहसोहहीं ॥ बनितापुरुषसुंदरचतुरछबिदेषिमुनिमनमोहहीं ॥ दो
हा ॥ जगदंबाजहँअवतरी ॥ सोपुरबरनिनजाइ ॥ ऋद्धिसिद्धिसंपतसकल ॥ नितिनूतनअ
धिकाइ ॥ ९४ ॥ चौपई ॥ करिबनावसजिवाहननाना ॥ चलेलेनसादरअगवाना ॥ हियह
रषेसुरसेननिहारी ॥ हरिहिदेषिअतिभयेसुषारी ॥ शिवसमाजजबदेषनलागे ॥ विड
रिचलेवाहनसबभागे ॥ धरिधीरजतहाँरहेसयाने ॥ बालकसबलेजीवपराने ॥ गयेभव
नपूछहिंपितुमाता ॥ कहहिंवचनभयकंपितगाता ॥ कहियेकहाकहिजाइनबाता ॥ यम
करधारकिधौंबरियाता ॥ बरबौराहबरदअसवारा ॥ व्यालकपालविभूषणछारा ॥ छं
द ॥ तनछारव्यालकपालभूषणनगनजटिलभयंकरा ॥ संगभूतप्रेतपिशाचयोगिनिवि
कटमुषरजनीचरा ॥ जोजियतरहिहिंबरातदेखतपुन्यबडतिन्हकरसही ॥ देखिहिसोउ

नगरनिकटबरातजबआय पुरखरभरसोभाअधिकाई ९४

मा बिवाहघरघरबातअसलरकनकही॥ दोहा॥ समुझिमहेशसमाजसब॥ जननिजन
कसुसुकाहिं॥ बालवुझायेविविधिबिधि॥ निडरहोउडरनाहिं॥ ९६॥ चौपई॥ लै अग
वानबरातहिआय॥ दियेसबहिजनकसमुहाये॥ मैनाशुभआरतीसवारी॥ संगसुमंग
गावहिंनारी॥ कंचनथारसोहबरपानी॥ परिछनचलीहरहिंहरषानी॥ बिकटभेषज
बरुद्रहिदेषा॥ अवलनउरभयभयउबिशेषा॥ भागिभवनपेठीअतित्रासा॥ गयेमहे
शजहांजनवासा॥ मयनाहृदयभयउदुषभारी॥ लीनीबोलिगिरीसकुमारी॥ अधिक
सनेहगोदबैठारी॥ श्यामसरोजनयनभरिवारी॥ जेहिंविधितुमहिरूपअसदीन्हा॥ ते
हिजडबरुवाउरकसकीन्हा॥ छंद॥ कसकीन्हबरबौराहविधिजेहेंतुमहिसुरतादई
॥ जोचहियफलसुरतरुहिंसोबरबसबबूरहिंलागई॥ तुमसहितगिरितेंगिरौंपावकजज
रौंजलनिधिमहपरौं॥ घरजाउअपजसहोउजग॥ जीवतविवाहनहौंकरौं॥ दोहा॥
भयीविकलअबलासकल॥ दुखितदेषिनरनारि॥ करिविलापरोवतिवदति॥ सु
तासनेहमनारि॥ ९७॥ चौपई॥ नारदकरमकहाबिगारा॥ भवनमोरजिनवसतउ
जारा॥ असउपदेसउमहिजिन्हदीन्हा॥ बौरेबरहिंलागितपकीन्हा॥ साचेहुउनकेमो
हनमाया॥ उदासीनधनधामनजाया॥ परघरघालककलाजननीरा॥ बांझकिजानप्रस

बंकीपीरा ॥ जननीबिकलबिलोकिमनवानी ॥ बोलीसुतबिबेकमृदुबानी ॥ असबिचारिसोच
हुमतिमाता ॥ सोनटरैजोरचैबिधाता ॥ करमलिषाजौबावरनाहू ॥ तौकतदोषलगाउब
काहू ॥ तुमसनमिटहिंकिबिधिकेअंका ॥ मातुव्यर्थजनिलेहुकलंका ॥ छंद ॥ जनिलेहु
मातुकलंककरुणापरिहरहुअवसरनहीं ॥ दुखसुषजोलिखालिलारहमरेजावजहंपा
उबतहीं ॥ सुनिउमावचनबिनीतकोमलसकलअबलासोचहीं ॥ बहुभांतिबिधिहिलगा
यदूषणनयनबारिबिमोचहीं ॥ दोहा ॥ तेहिअवसरनारदसहित ॥ औरिषिसप्तसमेत
॥ समाचारसुनितुहिनगिरि ॥ गवनेतुरतनिकेत ॥ ९७ ॥ चौपई ॥ तबनारदसबहीसमुझावा
॥ पूरबकथाप्रसंगसुनावा ॥ मयनासत्यसुनहुममबानी ॥ जगदंबातवसुताभवानी ॥ अ
जाअनादिशक्तिअबिनाशिनी ॥ सदाशंभुअरधंगनिवासिनी ॥ जगसंभवपालनल
यकारिणि ॥ निजइच्छालीलाबपुधारिणि ॥ जननीप्रथमदक्षगृहजाई ॥ नामसतीसुंदरतनु
पाई ॥ तहहुंसतीशंकरहिबिवाही ॥ कथाप्रसिद्धसकलजगमाहीं ॥ एकबारआवतशि
वसंगा ॥ देषेउरघुकुलकमलपतंगा ॥ भयउमोहशिवकहानकीन्हा ॥ भ्रमबसभेषसीय
करलीन्हा ॥ छंद ॥ सियभेषसतीजोकीन्हतेहिअपराधशंकरपरिहरी ॥ हरबिरहजाइ
बहोरिपितुकेयज्ञजोगानलजरी ॥ अबजनमितुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुणतप

गिरि

सव

बाल० रु०

किवा॥ असजानिसंशयतजहुगिरिजासर्वदाशुंकरप्रिया॥ दोहा॥ मुनिनारदकेबचन तबकरमिटाविषाद॥ छनमहंव्यापेउसकलपुर॥ घरघरयहसंबाद॥ ९९॥ चौपई॥ तबमयनाहिमवंतअनंदे॥ पुनिपुनिपारवतीपदबंदे॥ नारिपुरुषशिशुयुवासयाने ॥ नगरलोगसबअतिहरषाने॥ लगेहोनपुरमंगलगाना॥ सजेसबहिंहाटकघटनाना॥ भांतिअनेकभईजेवनारा॥ सूपशास्त्रजसकछुमवहारा॥ सोजेवनारिकिजाइबखानी॥ बसहिंभवनजेहिमातुभवानी॥ सादरबोलेसकलबराती॥ विष्णुविरंचिदेवसबजाती॥ विविधिभांतिबैठीजेवनारा॥ लगेपरोसननिपुणसुआरा॥ नारिवृंदसुरजेवतजानी॥ लगीदेनगारीमृदुबानी॥ छंद॥ गारीमधुरसुरदेहिंसुंदरव्यंगवचनसुनावहीं॥ भोजनकरहिंसुरअतिविलंबविनोदसुनिसुखपावहीं॥ जेवतजोबढ्योअनंदसोमुखकोटिहूंनपरैकह्यो॥ अंचवायदीन्हेपानगवनेवासजहंजाकोरह्यो॥ दोहा॥ बहुरिमुनिनहिमवंतकहं॥ लगनजनाईआइ॥ समयविलोकिविवाहकर॥ पठयेदेवबुलाइ॥ १००॥ चौपई॥ बोलिसकलसुरसादरलीन्हे॥ सबहियथोचितआसनदीन्हे॥ वेदीवेदविधानसवारी॥ सुभगसुमंगलगावहिंनारी॥ सिंहासनअतिदिव्यसुहावा॥ जाइनवरणिविरंचिबनावा॥ बैठेशिवविप्रन्हिशिरनाई॥ हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई॥ बहुरिमुनी

राम रु०

अंचवायदीन्हेपानगवनेवासजहंजाकोरह्यो

सुरन्हमनहिंमनकीन्हप्रणामा सुंदरतामर्य्यादभवानी जोंनकोटिहुंबदनभवानी ३

सनुमाबुलाई ॥ करिस्रृंगारसखीलैंआई ॥ देषतरूपसकलसुरमोहे ॥ बरनैछबिअसजग
कविकोहे ॥ जगदंबिकाजानिभवभामा ॥ सुरन्हमनहिंमनकीन्हप्रणामा ॥ सुंदरतामर्य्याद
भवानी ॥ जोंनकोटिहुंबदनबषानी ॥ छंद ॥ कोटिहुंबदननहिंबनैबरणतजगजननि
शोभामहा ॥ सकुचहिंकहतश्रुतिशेषसारदमंदमतितुलसीकहा ॥ छबिखानिमातुभवा
निगवनीमध्यमंडपशिवजहां ॥ अवलोकिसकहिनसकुचिपतिपदकमलमनमधु
करतहां ॥ दोहा ॥ मुनिअनुसासनगणपतिहिं ॥ पूजेशंभुभवानि ॥ कोउसुनिसंशयकरै
जनि ॥ सुरअनादिजियजानि ॥ १०१ ॥ चौपई ॥ जसबिवाहकीविधिश्रुतिगाई ॥ महामुनि
नसोसबकरवाई ॥ गहिगिरीशकुशाकंन्यापानी ॥ शिवहिंसमर्पीजानिभवानी ॥ पाणिग्र
हणजबकीन्हमहेशा ॥ हियहर्षेतबसकलसुरेशा ॥ बेदमंत्रमुनिवरउच्चरहीं ॥ जयजय
जयशंकरसुरकरहीं ॥ बाजहिंबाजनविविधविधाना ॥ सुमनवृष्टिनभभैविधिनाना ॥ ह
रगिरिजाकरभयउबिवाहू ॥ सकलभुवनभरिरहाउछाहू ॥ दासीदासतुरगरथनागा ॥ धे
नुबसनमणिवस्तुविभागा ॥ अन्नकनकभाजनभरिजाना ॥ दाइजदीन्हनजाइबषाना ॥
छंद ॥ दाइजदियोबहुभांतिपुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो ॥ कादेउंपूरणकामशंकरच
रणपंकजगहिरह्यो ॥ शिवकृपासागरससुरकरपरितोषसबभांतिकियो ॥ पुनिगहेपद

सत

बाल० ९२

पाथोजनयनानेमपरिहरणहियो ॥ दोहा ॥ नाथउमाममप्राणसम ॥ गृहकिंकरीकरेउ ॥
॥ छमेहुसकलअपराधअब ॥ होइप्रसन्नवरदेउ ॥ १०२ ॥ चौपई ॥ बहुविधिशंभुसा
सुसमुझाई ॥ गवनीभवनचरणसिरनाई ॥ जननीउमाबोलितबलीन्ही ॥ लेउछंगसुंदरसि
षदीन्ही ॥ करहुसदाशंकरपदपूजा ॥ नारिधर्मपतिदेवनदूजा ॥ बचनकहतभरिलोचन
वारि ॥ बहुरिलाइउरलीन्हकुमारी ॥ कतविधिसृजिनारिजगमांहीं ॥ पराधीनसपने
हुसुषनाहीं ॥ भैअतिप्रेमविकलमहतारी ॥ धीरजकीन्हकुसमयविचारी ॥ पुनिपुनिमि
लतपरतिगहिचरणा ॥ परमप्रेमकछुजाइनबरणा ॥ सबनारिनिमिलिभेटभवानी ॥ जा
इजननिउरपुनिलपटानी ॥ छंद ॥ जननीहिबहुरिमिलीचलीउचितअसीससबकाहू
दई ॥ फिरफिरविलोकतमातुतनतबसषीलैशिवपहंगई ॥ याचकसकलसंतोषशंकर
उमासहितभवनहिंचले ॥ सबअमरहरषेसुमनबरषनिसाननभबाजहिंभले ॥ दोहा ॥
चलेसंगहिमवंतसब ॥ पहुंचावनअतिहेतु ॥ विविधिभांतिपरितोषकरि ॥ विदाकीन्हवृ
षकेत ॥ २० ॥ चौपई ॥ तुरतभवनआवेगिरिराई ॥ सकलशैलसुरलियेबुलाई ॥ आदर
दानबिनयबहुमाना ॥ सबकरबिदाकीन्हहिमवाना ॥ जबहिंशंभुकैलाशहिंआये ॥ सु
रसबनिजनिजलोकसिधाये ॥ जगतमातुपितुशंभुभवानी ॥ तेहिशृंगारनकहौंबषानी

राम ९२

करहिंबिबिधिबिधियोगबिलासा॥गणनसमेतबसहिकैलासा॥हरगिरिजाविहारनितिन
यऊ॥इहिबिधिबिपुलकालचलिगयऊ॥तबजनमेषटबदनकुमारा॥तारकअसुरस
मरजिनमारा॥आगमनिगमप्रसिद्धपुराना॥षटमुखजन्मसकलजगजाना॥छंद॥ज
गजानषटमुषजन्मकर्मप्रतापपुरुषारथमहा॥तेहिहेतुमैंबृषकेतुसुतकरचरितसंछे
पहिकहा॥यहउमासंभुबिबाहजेनरनारिकहहिजोगावहीं॥कल्याणकाजविवाह
मंगलसर्बदासुषपावहीं॥दोहा॥चरितसिंधुगिरिजारमणबेदनपावहिंपार॥२०४॥
[चौपई]॥बरणैतुलसीदासकिमि॥अतिमतिमंदगवार॥२०४॥चौपई॥संभुचरित्रसु
निसरससुहावा॥भरद्वाजमुनिअतिसुषपावा॥बहुलालसाकथापरबाढी॥नयन
नीररोमावलिगाढी॥प्रेमविबसमुखआवनबानी॥दशादेषिहरषेमुनिग्यानी॥अ
होधन्यतवजन्ममुनीसा॥तुमहिंप्राणसमप्रियगौरीसा॥शिवपदकमलजिनहिंर
तिनाहीं॥रामहितेसपनेहुनसुहाहीं॥बिनुछलविश्वनाथपदनेहु॥रामभक्तकरल
क्षणएहु॥शिवसमकोरघुपतिव्रतधारी॥विनुअघतजीसतीअसनारी॥प्रणकरिर
घुपतिभक्तिदृढाई॥कोशिवसमरामहिंप्रियभाई॥दोहा॥प्रथमकहेमैंशिवचरित
॥बुझामरमतुम्हार॥शुचिसेवकतुमरामकें॥रहितसमस्तविकार॥२०५॥चौपई॥मैं॥

बाल० ११२

सरस्वतिसोतोकछ तलीकीतुरमचंद्र वाजीगरन बानजु

२

जानातुम्हारगुणशीला॥कहौमुनकछुरघुपतिकीलीला॥सुनिमुनिआजुसमागमतोरे॥
कहिनजायजससुषमनमोरे॥रामचरितअतिआमितमुनीशा॥कहिनसकहिंशत
कोटिअहीसा॥तदपियथाश्रुतिकहौंबषानी॥सुमिरिगिरापतिप्रभुधनपानी॥सारद
दारुनारिसमस्वामी॥रामसूत्रधरअंतरजामी॥जेहिपरकृपाकरहिंजनजानी॥क
विउरअजिरनचावहिंबानी॥प्रणवौंसोइकृपालरघुनाथा॥वरणौंविशदतासुगु
णगाथा॥परमरम्यगिरिबिरकैलासू॥सदाजहांशिवउमानिवासू॥दोहा॥सिद्ध
तपोधनयोगिजन॥सुरकिंनरमुनिवृंद॥बसहिंतहांसुकृतीसकल॥सेवहिंशिवसुष
कंद॥१०५॥चौपई॥हरिहरबिमुखधर्मरतनाहीं॥तेनरतहांनसपनेहुजाहीं॥ते
हिगिरिपरवटविटपविशाला॥नितनूतनसुंदरसबकाला॥त्रिविधसमीरसुशीतलछा
या॥शिवविश्रामविटपश्रुतिगाया॥एकबारतेहितरप्रभुगयऊ॥तरुबिलोकिउ
रअतिसुषभयऊ॥निजकरडासिनागरिपुछाला॥बैठेसहजहिंशंभुकृपाला॥कुंद
इंदुदरगौरशरीरा॥भुजप्रलंबपरधनमुनिचीरा॥तरुणअरुणअंबुजसमचरणा॥न
खद्युतिभक्तहृदयतमहरणा॥भुजगभूतिभूषणत्रिपुरारी॥आननशरदचंद्रछबिहा
री॥दोहा॥जटामुकुटसुरसरितासिर॥लोचननलिनबिशाल॥नीलकंठलावन्य

राम ११२

विधि॥सोहबालविधुमाल॥१०६॥चौपई॥बैठेसोहकामरिपुकैसें॥धरेशरीरशांतरसजै
सें॥पारबतीभलअवसरजानी॥गईशंभुपहमातुभवानी॥जानिप्रियाआदरअतिकीन्हा
॥बामभागआसनहरदीन्हा॥बैठेशिवसमीपहरषाई॥पूरबजन्मकथाचितआई॥पति
हियहेतुअधिकअनुमानी॥बिहसिउमाबोलीप्रियबानी॥कथाजोसकललोकहितका
री॥सोइपूछनचहेशैलकुमारी॥विश्वनाथममनाथपुरारी॥त्रिभुवनमहिमाविदिततुम्हा
री॥चरअरुअचरनागनरदेवा॥सकलकरहिंपदपंकजसेवा॥दोहा॥प्रभुसमर्थसर्वे
ज्ञशिव॥सकलकलागुणधाम॥योगज्ञानबैराग्यनिधि॥प्रणतकल्पतरुनाम॥१०७॥
चौपई॥जोमोपरप्रसन्नसुषरासी॥जानियसत्यमोहिनिजदासी॥तोप्रभुहरहुमोरअज्ञा
ना॥कहिरघुनाथकथाबिधिनाना॥जासुभवनसुरतरुतरहोई॥सहकिदरिद्रज
नितदुषसोई॥शशिभूषणअसहृदयबिचारी॥हरहुनाथममतिभ्रमभारी॥प्रभुजे
मुनिपरमारथवादी॥कहहिंरामकहंब्रह्मअनादी॥शेषशारदाबेदपुराना॥सक
लकरहिंरघुपतिगुणगाना॥तुमपुनिरामनामदिनराती॥सादरजपहुअनंगअराती ज
रामसोअवधनृपतिसुतसोई॥कीअजअगुणअलषगतिकोई॥दोहा॥जोंनृपतन
यतोब्रह्मकिमि॥नारिविरहमतिभोरि॥देषिचरितमहिमासुनत॥भ्रमतबुद्धिअतिमो

जेहिबिधिमोहमिटेसोइकरहू

रि॥चौपई॥जौंअनीहव्यापकविभुकोऊ॥कहहुबुझाइनाथमोहिसोऊ॥अज्ञजानिरिसि
जनिउरधरहू॥मैंबनदीखरामप्रभुताई॥अतिभयबिकलनतुमहिसुनाई॥तदपिमा
लिनमनबोधनआवा॥सोफलभलीभांतिमैंपावा॥अजहूंकछुसंशयमनमोरे॥क
रहुकृपाबिनवौंकरजोरे॥प्रभुतबमोहिबहुभांतिप्रबोधा॥नाथसोसमुझिकर
हुजनिक्रोधा॥तबकरअसविमोहमोहिनाहीं॥रामकथापररुचिमनमाहीं॥क
हहुपुनीतरामगुणगाथा॥भुजगराजभूषणसुरनाथा॥दोहा॥वंदौपदधरिधरणि
सिर॥विनयकरौंकरिजोरि॥बरणोरघुबरविशदयश॥श्रुतिसिद्धांतनिचोरि॥१०९
चौपई॥यदपियोषिताअनअधिकारी॥दासीमनक्रमबचनतुम्हारी॥गूढौतत्वनसा
धुदुरावहिं॥आरतअधिकारीजहंपावहीं॥अतिआरतिपूछौंसुरराया॥रघुपतिक
थाकहोकरिदाया॥प्रथमसोकारणकहहुबिचारी॥निर्गुणब्रह्मसगुणवपुधारी॥
पुनिप्रभुकहहुरामअवतारा॥बालचरितपुनिकहहुउदारा॥कहहुयथाजा
नकीविवाही॥राजतजासोदूषणकहा॥बनबसकीन्हेचरितअपारा॥कहहु
नाथजिमिरावणमारा॥राजबैठिकीन्हीबहुलीला॥सकलकहहुशंकरसुखशीला॥
दोहा॥बहुरिकहहुकरुणायतन॥कीन्हजोअचरजराम॥प्रजासहितरघुबंसम

लि। क्रिमिगवनेनिजधाम॥११०॥चौपई॥पुनिप्रभुकहहुसोतत्वबषानी॥जेहिबिज्ञान
मगनमुनिज्ञानी॥भक्तिज्ञानबिज्ञानविरागा॥पुनिसबबरणहुसहितबिभागा॥औरौं
रामरहस्यअनेका॥कहहुनाथअतिबिमलबिबेका॥जोप्रभुमैंपूछानहिहोइ॥सोउद
यालुराषहुजनिगोई॥तुमत्रिभुवनगुरुबेदबषाना॥आनजीवपामरकाजाना॥प्रश्न
उमाकीसहजसुहाई॥छलविहीनसुनिशिवमनभाई॥हरहियरामचरितसबआये॥पु
लकिलोचनजलछाये॥श्रीरघुनाथरूपउरआवा॥परमानंदअमितसुषपावा॥दो
हा॥मगनध्यानरसदंडयुग॥पुनिमनबाहिरकीन्ह॥रघुपतिचरितमहेशतब॥हरषि
तबरणैलीन्ह॥१११॥चौपई॥झूठेसत्यजाहिविनुजाने॥जिमिभुजंगबिनरजुपहिचाने
॥जेहिजानेजगजाइहेराई॥जागेयथासपनभ्रमजाई॥वंदौबालरूपसोईरामू॥सब
सिधिसुलभजपतजसनामू॥मंगलभुवनअमंगलहारी॥द्रवौसोदसरथअजिरबि
हारी॥करिप्रणामरामहिंत्रिपुरारी॥हरषिसुधासमगिराउचारी॥धन्यधन्यगिरिरा
जकुमारी॥तुमसमाननहिंकोउउपकारी॥पूछेउरघुपतिकथाप्रसंगा।सकललोक
जगपावनिगंगा॥तुमरघुबीरचरणअनुरागी।कीन्हेउप्रश्नजगतहितलागी॥दोहा
॥रामकृपातेपार्वती॥सपनेहुतवमनमाहीं॥शोकमोहसंदेहभ्रम।ममविचारकछुना

बाल० ७४

हि॥११२॥ चौपई॥ तदपि असंका कीन्हेउ सोई॥ कहत सुनत सब कर हित होई॥ जिन हरिक
था सुनी नहिं काना॥ श्रवणरंध्र अहिभवन समाना॥ नयनन संत दरस नहिं देषा॥ लोचन
मोरपंख कर लेषा॥ ते शिर कटु तूमरि सम तूला॥ जे न नमत हरि गुरुपद मूला॥ जिन हरि
भक्ति हृदे नहि आनी॥ जीवत सब समान तेइ प्रानी॥ जे नहिं करहिं राम गुण गाना॥ जीह
सुदादुर जीह समाना॥ कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती॥ सुनि हरि चरित न जो हरषाती॥
॥गिरिजा सुनहु राम कर लीला॥ सुर हित दनुज विमोहन शीला॥ दोहा॥ राम कथा सुर
धेनु सम॥ सेवत सब सुष दान॥ संत समाज सुरलोक सम॥ को न सुनै अस जान॥११३॥ चौ०
पई॥ राम कथा सुंदर करतारी॥ संशय विहंग उडावन हारी॥ राम कथा कलि विटप कु
ठारी॥ सादर सुनु गिरिराजकुमारी॥ राम नाम गुण चरित सुहाये॥ जन्म कर्म अगणित
श्रुति गाये॥ यथा अनंत राम भगवाना॥ तथा कथा कीरति गुण नाना॥ तदपि यथा श्रुति
जस मति मोरी॥ कहिहौं देषि प्रीति अति तोरी॥ उमा प्रश्न तव सहज सुहाये॥ संशय सुम
न सुषद मोर भाये॥ एक बात नहि मोहि सोहानी॥ यदपि मोहबस कहेहु भवानी॥ तुम
जो कहा राम कोउ आना॥ जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना॥ दोहा॥ कहहिं सुनहिं अ
स अधम नर॥ ग्रसे जो मोह पिशाच॥ पाषंडी हरि बिमुष॥ जानहिं झूठ न सांच॥११४॥

पुनी

राम ७४॥

चौपई॥ अज्ञ अकोबिद अंध अभागी॥ काई बिषय मुकुर मन लागी॥ लंपट कपटी कुटिल बिषेषी॥ सपनेहुं संत समान नहिं देषी॥ कहहिं ते बेद असंमत बानी॥ जिनहि न सूझ लाभ नहिं हानी॥ मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना॥ राम रूप देखहिं किमि दीना॥ जिनके अगुण न सगुण बिबेका॥ जल्पहिं कल्पित बचन अनेका॥ हरि माया बस जगत भ्रमाहीं॥ तिनहिं कहत कछु अघटित नाहीं॥ बातुल भूत बिबस मतवारे॥ ते नहिं बोलहिं बचन संभारे॥ जिन कृत महा मोद मद पाना॥ तिन कर कहा करिय नहिं काना॥ दो०॥ अस निज हृदय बिचारि॥ तज संशय भज राम पद॥ सुन गिरिराज कुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम॥११५॥ चौपई॥ सगुणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा॥ गावहिं मुनि पुराण बुध बेदा॥ अगुण अरूप अलख अज जोई॥ भक्त प्रेम बस सगुण सो होई॥ जो गुण रहित सगुण सो कैसे॥ जल हिम उपल बिलग नहिं जैसे॥ जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा॥ तिहि किमि कहिय बिमोह प्रसंगा॥ राम सच्चिदानंद दिनेसा॥ नहिं तह मोह निसा लव लेसा॥ सहज प्रकास रूप भगवाना॥ नहिं तह पुनि बिज्ञान बिहाना॥ हरष बिषाद ज्ञान अज्ञाना॥ जीव धर्म अहमिति अभिमाना॥ राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना॥ परमानंद परेस पुराना॥ दोहा॥ पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि॥ प्रगट परावर नाथ॥ रघुकुलमणि म

बाल० ७५

मस्वामिसोई॥कहशिवनायउमाथ॥११६॥चौपाई॥निजभ्रमनहिंसमुझहिंअग्यानी॥प्र
भुपरमोहधरहिंजडप्रानी॥यथागगनघनपटलनिहारी॥झांपेउभानुकहहिंकुबि
चारी॥चितवतजोलोचनअंगुलिलायें॥प्रगटयुगलशशितेहिकेभायें॥उमारामविष
यिकअसमोहा॥नभतमधूमधूरिजिमिसोहा॥विषयकरणसुरजीवसमेता॥सक
लएकतेएकसचेता॥सबकरपरमप्रकाशकरामू॥मायाधीशज्ञानगुणधामू॥
॥जासुसत्यतातेजडमाया॥भाससत्यइवमोहसहाया॥दोहा॥रजतसीपमहंभा
सजिमि॥यथाभानुकरवारि॥यदपिमृषातिहुंकालसोइ॥भ्रमनसकैकोउटारि
॥११७॥चौपाई॥इहिविधिजगहरिआश्रितरहई॥यदपिअसत्यदेतदुखअहई॥
॥जौंसपनेशिरकाटैकोई॥बिनुजागेदुखदूरिनहोई॥जासुकृपाअसभ्रममिटि
जाई॥गिरिजासोइकृपालरघुराई॥आदिअंतकोउजासुनपावा॥मतिअनुमान
निगमअसगावा॥विनुपदचलैसुनैविनुकाना॥करविनुकर्मकरैविधिनाना॥
॥आननरहितसकलरसभोगी॥विनुवाणीवक्ताबडयोगी॥तनुविनुपरसन
यनविनुदेषा॥ग्रहैघ्राणविनुवासअशेषा॥असिसबभांतिअलौकिककरणी
॥महिमाजासुजाइनहिंबरणी॥दोहा॥जेहिइमिगावहिंबेदबुध॥जाहिधरहिं

राम ७५

मुनिध्यान॥ सोइ दसरथसुत भक्तिहित॥ कोशलपति भगवान॥११८॥ चौपई॥ काशी
मरत जंतु अवलोकी॥ जासु नाम बल करौ बिशोकी॥ सोइ प्रभु मोरे चराचर स्वामी
॥ रघुबर सब उर अंतरजामी॥ विवसहुं जासु नाम नर कहहीं॥ जन्म अनेक रचित
अघ दहहीं॥ सादर सुमिरन जो नर करहीं॥ भव बारिधि गोपद इव तरहीं॥ राम सो
परमातमा भवानी॥ तहं भ्रम अति अनहित तव बानी॥ अस संशय आनत उर माहीं
ज्ञान बिराग सकल गुण जाहीं॥ सुनि शिव के भ्रम भंजन बचना॥ मिटि गै सब कुतर्क के
की रचना॥ भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती॥ दारुण असंभावना बीती॥ दोहा॥ पुनि पुनि
प्रभु पद कमल गहि॥ जोरि पंकरुह पानि॥ बोली गिरिजा बचन बर॥ मनहु प्रेम रस सा
नि॥११९॥ चौपई॥ शशि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी॥ मिटा मोह शरदातप भारी॥ तुम
कृपाल सब संशय हरेऊ॥ राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ॥ नाथ कृपा अब गयेउ बि
षादा॥ सुखी भयेउ प्रभु चरण प्रसादा॥ अब मोहि आपनि किंकर जानी॥ यदपि सहज
जड़ नारि अयानी॥ प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहो॥ जो मो पर प्रसन्न प्रभु अहहो॥ रा
म ब्रह्म चिन्मय अविनाशी॥ सर्व रहित सब उर पुर वासी॥ नाथ धरेउ नरतन केहि हे
तु॥ सोइ समुझाइ कहहु वृषकेतु॥ उमा बचन सुनि परम बिनीता॥ राम कथा पर

त्रीतिसुनीता॥ दोहा॥ हियहरषेकामारितब॥ शंकरसहजसुजान॥ बहुविधिउमहिप्र
प्रसंसिपुनि॥ बोलेकृपानिधान॥ सोरठा॥ सुनसुभकथाभवानि॥ रामचरितमानसविम
ल॥ कहाभुसुंडिबषानि॥ सुनाविहंगनायकगरुड॥ सोइसंवादउदारजेहिविधिभा
आगेकहव॥ सुनहुरामअवतार॥ चरितपरमसुंदरअनघ॥ हरिगुणनामअपार
कथारूपअगणितअमित॥ मैंनिजमतिअनुसार॥ कहौउमासादरसुनहु॥ १२०॥
चौपई॥ सुनिगिरिजाहरिचरितसुहाये॥ विपुलविसदनिगमागमगाये॥ हरिअ
वतारहेतुजेहिहोइ॥ इदमित्थंकहिजायनसोई॥ रामअतर्कबुद्धिमनवानी॥ मतह
मारअससुनहुसयानी॥ तदपिसंतमुनिवेदपुराना॥ जसकछुकहहिंसुमतिअनुमा
ना॥ तसमैंसुमुखिसुनावहुतोहि॥ समुझिपरेजसकारणमोही॥ जबजबहोइधर्म
कीहानी॥ बाढहिंअसुरअधमअभिमानी॥ करहिंअनीतिजाइनहिंवरनी॥ सीदहिं
विप्रधेनुसुरधरणी॥ तबतबप्रभुधरिविविधिशरीरा॥ हरहिंकृपानिधिसज्जनपीरा॥
दोहा॥ असुरमारथापहिंसुरन्हि॥ राखहिंनिजश्रुतिसेतु॥ जगविस्तारहिंविशदय
श॥ रामजन्मकरहेतु॥ १२१॥ चौपई॥ सोइयशगाइभक्तिभवतरहीं॥ कृपासिंधुजन
हिततनधरहीं॥ रामजन्मकेहेतुअनेका॥ परमविचित्रएकतेएका॥ जन्मएकदु

इकहौंबषानी॥सावधानसुनुसुमतिभवानी॥द्वारपालहरिकेप्रियदोऊ॥जयअरुबिज
यजानसबकोऊ॥बिप्रश्रापतेंदोनोभाई॥तामसअसुरदेहतिनपाई॥कनककशिपु
अरुहाटकलोचन॥जगतबिदितसुरपतिपदमोचन॥बिजयीसमरबीरबिख्याता
॥धरिबराहबपुएकनिपाता॥होइनरहरिदूसरमारा॥जनप्रहलादसुयशबिस्तारा॥
दोहा॥भयेनिशाचरजाइते॥महाबीरबलवान॥कुंभकरणरावणसुभट॥सुरबिजयीज
गजान॥१२२॥चौपई॥मुक्तनभयेहतेभगवाना॥तीनजन्मद्विजबचनप्रमाना॥ए
कबारतिनकेहितलागी॥धरेउशरीरभक्तअनुरागी॥कश्यपअदितितहापितुमा
ता॥दशरथकौशल्याबिख्याता॥एककल्पइहिबिधिअवतारा॥चरितपवित्रकिये
संसारा॥एककल्पसुरदेखिदुखारे॥समरजलंधरसनसबहारे॥शंभुकीन्हसंग्राम
अपारा॥दनुजमहाबलमरैनमारा॥परमसतीअसुराधिपनारी॥तेहिबलताहिन
जीतपुरारी॥दोहा॥छलकरिटारेउतासुब्रत॥प्रभुसुरकारजकीन्ह॥जबतेइजाने
उमरमतब॥श्रापकोपकरिदीन्ह॥१२३॥चौपई॥तासुश्रापहरिकीन्हप्रमाना॥कौ
तुकनिधिकृपालभगवाना॥तहांजलंधररावणभयऊ॥रणहतिरामपरमपददय
ऊ॥एकजन्मकरकारणएहा॥जेहिलगिरामधरीनरदेहा॥इतिअवतारकथा

ऋतुकेरी॥सुनिमुनिबरणीकबिनघनेरी॥नारदश्रापदीन्हइकबारा॥कल्पएकतेहिल
गिअवतारा॥गिरिजाचकितभईसुनिबानी॥नारदविष्णुभक्तपुनिज्ञानी॥कारणकौ
नश्रापमुनिदीन्हा॥काअपराधरमापतिकीन्हा॥यहप्रसंगमोहिकहहुपुरारी॥मुनि
मुनिमोहसोअचरजभारी॥दोहा॥बोलेविहंसिमहेशतब॥ज्ञानीमूढनकोइ॥जेहि
जसरघुपतिकरहिंजब॥सोतसतेहिछणहोइ॥सोरठा॥कहोरामगुणगाथा॥भरद्वा
जसादरसुनहु॥भवभंजनरघुनाथ॥भजतुलसीतजमानमद॥१२४॥चौपई॥हिम
गिरिगुहाएकअतिपावनि॥वहसमीपसुरसरितसुहावनि॥आश्रमपरमपुनी
तसुहावा॥देखिदेवऋषिमनअतिभावा॥निरखिशैलसरिविपिनविभागा॥भयेउर
मापतिपदअनुरागा॥सुमिरतहरिश्रापगतिबांधी॥सहजविमलमनलागिसमाधी
॥मुनिगतिदेखिसुरेशडराना॥कामहिबोलिकीन्हसनमाना॥सहितसहायजाहुमम
हेतू॥चलेउहरषजियजलचरकेतू॥सुनासीरमनमहंअतित्रासा॥चहतदेवऋ
षिममपुरवासा॥जेकामीलोलुपजगमाहीं॥कुटिलकाकइवसबहिडराई॥दोहा
सूषहाडलैभागसठ॥श्वाननिरखिमृगराज॥छीनिलेइजनिजानिजड॥तिमिसु
रपतिहिनलाज॥१२५॥चौपई॥तेहिआश्रममदिमदनजबगयेऊ॥निजमायाब

स

संतनिर्मयकृ॥ कुसुमितबिबिधिबिटपबहुरंगा॥ कूंजहिंकोकिलगुंजहिंभृंगा॥ चलीसु
हावनित्रिबिधबयारी॥ कामकृसानुबढावनहारी॥ रंभादिकसुरनारिनवीना॥ सकल
असमसरकलाप्रवीना॥ करहिंगानबहुताननतरंगा॥ बहुबिधिक्रीडहिंपानिपतंगा
॥ देषिसहायमदनहरषाना॥ कीन्हेसिपुनिप्रपंचबिधिनाना॥ कामकलाकछुमुनहिन
ब्यापी॥ निजभयडरेउमनोभवपापी॥ सीमकिचापिसकैकोउतासू॥ बडरखवाररमाप
तिजासू॥ दोहा॥ सहितसहायसभीतअति॥ मानिहारिमनमैन॥ गहेसिजाइमुनिबरच
रण॥ कहिसुठिआरतबैन॥ १२६॥ चौपई॥ नयेउननारदमनकछुरोषा॥ कहिप्रियब
चनकामपरितोषा॥ नाइचरणसिरआयसुपाई॥ गयेउमदनतबसहितसहाई॥ मुनि
सुशीलताआपनिकरणी॥ सुरपतिसभाजाइसबबरणी॥ सुनिसबकेमनअचरजआ
वा॥ मुनिहिप्रसंसिहरिहिसिरनावा॥ तबनारदगवनेसिवपाही॥ जीतिकामअहमितिम
नमाही॥ मारचरितसंकरहिसुनावा॥ अतिप्रियजानिमहेसषिषावा॥ बारबारविनउमु
नितोही॥ जिमियहकथासुनायउमोही॥ तिमिजनिहरिहिसुनाबहुकबहू॥ चलेउप्रसंग
दुरायउतबहू॥ दोहा॥ संभुदीनउपदेसहित॥ नहिंनारदहिसुहान॥ भरद्वाजकौतुक
सुनहु॥ हरिइछाबलवान॥ १२७॥ चौपई॥ रामकीन्हचाहैसोहोई॥ करैअन्यथाअस

नहिकोई। संभुवचनमुनिमननहिंभाये॥ तबबिरंचिकेलोकसिधाये। एकवारकरतलबरबी
णा। गावतहरिगुणगानप्रबीणा। छीरसिंधुगवनेमुनिनाथा॥ जहंवसश्रीनिवासश्रुतिमाथा
॥ हरषिमिलिउठिरमानिकेता॥ बैठेआसनरिषिहिसमेता॥ बोलेबिहंसिचराचरराया।
॥ बहुतदिनहिंकीन्हीमुनिदाया॥ कामचरितनारदसबभाषे॥ यद्यपिप्रथमवरजिशिवरा
खे॥ अतिप्रचंडरघुपतिकीमाया॥ जेहिनमोहअसकोजगजाया। दोहा॥ रुखवदनक
रिबचनमृदु॥ वोलेश्रीभगवान॥ तुम्हरेसुमिरणतेमिटहिं। मोहमारमदमान॥ १२८॥
चौपई॥ सुनमुनिमोहहोइमनताके॥ ज्ञानबिरागहृदयनहिंजाके॥ ब्रह्मचर्य्यब्रतर
तिमतिधीरा। तुमहिकिकरैमनोभवपीरा॥ नारदकहेउसहितअभिमाना। कृपातुम्हा
रिसकलभगवाना॥ करुणानिधिमनदीखविचारी। उरअंकुरेउगर्वतरुभारी। बेगि
सोमैंडारिहौंउपारी॥ पणहमारसेवकहितकारी। मुनिकरहितममकौतुकहोई। अब
शिउपायकरवमैंसोई॥ तबनारदहरिपदशिरनाई॥ चलेहृदयअहमितिअधिका
ई॥ श्रीपतिनिजमायातबप्रेरी॥ सुनहुकठिनकरनीतेहिकेरी॥ दोहा॥ विरचेउम
गमहंनगरतेहि॥ शतजोजनविस्तार॥ श्रीनिवासपुरतेअधिकरचनाविविधप्रकार
॥ १२९॥ चौपई॥ वसहिंनगरसुंदरनरनारि॥ जनुबहुमनसिजरतितनुधारी॥ तेहिपुर

बसेषीलनिधिराजा॥ अगणितहयगयसेनसमाजा॥ सतसुरेषसमविभवविलासा॥ रू
पतेजबलनीतिनिवासा। विश्वमोहिनीतासकुमारी॥ श्रीविमोहजेहिरूपनिहारी। सोह
रिमायासबगुणखानी॥ शोभातासुकिजाइबषानी॥ करैस्वयंवरसोनृपबाला॥ आये
तहंअगणितमहिपाला॥ मुनिकौतुकीनगरतेहिगयऊ॥ पुरवासिसनपूछतभयऊ
॥ सुनिसबचरितभूपगृहआये॥ करिपूजानृपमुनिबैठाये॥ दोहा॥ आनिदेखाईना
रदहि॥ नृपतिराजकुमारि। कहहुनाथगुणदोषसब॥ इहकरहृदयविचारि॥ १३०
चौपई॥ देषिरूपमुनिविरतिविसारी॥ वडीवारलगिरहेनिहारी॥ लछणतासुबि
लोकिभुलाने॥ हृदयहर्षनहिप्रगटबषाने॥ जोइहिबरैअमरसोहोई॥ समरभू
मितेहिजीतनकोई॥ सेवहिंसकलचराचरताहीं॥ बरैषीलनिधिकन्याजाहीं॥ लछ
णसबविचारिउरराखे॥ कछुकबनाइनृपसनभाषे॥ सुतासुलछणकहिनृप पाहीं
॥ नारदचलेसोचमनमाहीं॥ करौंजायसोइयतनविचारी॥ जेहिप्रकारमोहिब
रैकुमारी॥ जपतपकछुनहोइइहिकाला॥ हेविधिमिलेकवनविधिबाला॥ दो
हा॥ इहिअवसरचाहियपरम॥ शोभारूपविशाल॥ जोविलोकिरीझैकुवरि॥
तवमेलेजयमाल॥ १३१॥ चौपई॥ हरिसनमांगोसुंदरताई॥ होइहिजातगहरुअति

तिनाई॥ मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ॥ इहि अवसर सहाय सो होऊ॥ बहु बिधि बिनय
कीन्ह तेहि काला॥ प्रगटे प्रभु कौतुकी कृपाला॥ प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुडाने
॥ होइहि काज हिये हरषाने॥ अति आरति कहि कथा सुनाई॥ करहु कृपा करि हो
हु सहाई॥ आपन रूप देहु प्रभु मोही॥ आन भांति नहि पावौं ओही॥ जेहि बिधि
नाथ होइ हित मोरा॥ करौ सो बेगि दास मैं तोरा॥ निज माया बल देखि बिसाला॥
हिय हंसि बोले दीनदयाला॥ दोहा॥ जेहि बिधि होइहि परम हित॥ नारद सुनहु
तुम्हार॥ सोइ हम करब न आन कछु॥ बचन न मृषा हमार॥ १३२॥ चौपई॥ कुपथ
मांग रुज ब्याकुल रोगी॥ बैद न देइ सुनहु मुनि योगी॥ इहि बिधि हित तुम्हार मैं ठ
यऊ॥ कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ॥ माया बिबस भये मुनि मूढा॥ समुझि न
ही हरि गिरा निगूढा॥ गवने तुरत तहां रिषिराई॥ जहां स्वयंबर भूमि बनाई॥ निज
निज आसन बैठे राजा॥ बहु बनाव करि सहित समाजा॥ मुनि मन हरष रूप अति मो
रे॥ मोहि तजि आन बरिहि नहि भोरे॥ मुनि हित कारण कृपानिधाना॥ दीन्ह कुरूप
न जाइ बखाना॥ सो चरित्र लखि काहि न पावा॥ नारद जानि सबहि सिर नावा॥ दोहा
॥ रहे तहां दुइ रुद्रगण॥ ते जानहिं सब भेद॥ बिप्र भेष देखत फिरहिं॥ परम कौतुकी

तेह ॥ १२२ ॥ चौपई ॥ जेहि समाज बैठे मुनि जाई ॥ ह्रदय रूप अहमिति अधिकाई ॥ तहं
बैठे महेस गण दोऊ ॥ विप्र भेष गति लषे न कोऊ ॥ करहि कूट नारदहि सुनाई ॥ नीक
दीन्ह हरि सुंदरताई ॥ रीझिहि राजकुवरि छवि देषी ॥ इनहि बरिहि हरि जानि बिशेषी
॥ मुनिहि मोह मन हाथ पराये ॥ हंसहिं संभु गण अति सचु पाये ॥ यदपि सुनहिं मुनि अ
टपटि बानी ॥ समुझि न परै बुधि भ्रम सानी ॥ काहु न लषा सो चरित विशेषा ॥ सो सरू
प नृप कन्या देषा ॥ मरकट वदन भयंकर देही ॥ देषत ह्रदय क्रोध भा तेही ॥ दोहा ॥
सषी संग लै कुवरि तब ॥ चलि जनु राजमराल ॥ देषत फिरै महीप सब ॥ कर सरोज
जयमाल ॥ १२४ ॥ चौपई ॥ जेहि दिशि बैठे नारद फूली ॥ सो दिशि तेहि न बिलोकी भू
ली ॥ पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं ॥ देषि दशा हरिगण मुसकाहीं ॥ धरि नृपत
नु तहं गये कृपाला ॥ कुवरि हरषि मेलि जयमाला ॥ दुलहिनि लै गो लछिनिवासा ॥
नृपसमाज सब भये निरासा ॥ मुनि अति बिकल मोह मति नाठी ॥ मणि गिरि गई छूटि ज
नु गांठी ॥ तब हरगण बोले मुसुकाई ॥ निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई ॥ अस कहि दो
उ भागे भय भारी ॥ बदन दीष मुनि बारि निहारी ॥ भेष बिलोकि क्रोध अति बाढा ॥ ति
न्हहि श्राप दीन्हा अति गाढा ॥ दोहा ॥ होउ निशाचर जाइ तुम ॥ कपटी पापी दोउ

वाल० ५०

हंसेऊ हमैं सो लेऊ फल ॥ बऊरि हंसेउ मुनि कोउ ॥ १३४ ॥ चौपई ॥ पुनि जल दीष रूप नि
ज पावा ॥ तदपि हृदय संतोष न आवा ॥ फरकत अधर कोप मन माहीं ॥ सपदि चले
कमलापति पाहीं ॥ देहौं श्राप कि मरिहौं जाई ॥ जगत मोर उपहास कराई ॥ बीच
हि पंथ मिले दनुजारी ॥ संग रमा सोइ राजकुमारी ॥ बोले मधुर बचन सुरसाई ॥ मु
नि कहं चले बिकल की नाई ॥ सुनत बचन उपजा अति क्रोधा ॥ माया बस न रहा मन
बोधा ॥ पर संपदा सकऊ नहिं देषी ॥ तुमरे ईर्ष्या कपट बिशेषी ॥ मथत सिंधु रुद्रहि
बौरायेऊ ॥ सुरन प्रेरि बिषपान करायेऊ ॥ दोहा ॥ असुर सुरा बिष संकरहि ॥ आ
(साधक) पु रमा मणि चारु ॥ स्वारथ कुटल तुम ॥ सदा कपट ब्यवहारु ॥ १३५ ॥ चौपई ॥ परम
स्वतंत्र न सिर पर कोई ॥ भावै मन हिं करहु तुम सोई ॥ भलेहि मंद मंदहिं भल करहू
॥ बिस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू ॥ डहकि डहकि परचेहु सब काहू ॥ अति असंक
मन सदा उछाहू ॥ कर्म सुभासुभ तुमहि न बाधा ॥ अब लगि तुमहि न काहू साधा ॥
भले भवन अब बायन दीन्हा ॥ पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥ बंचेउ मोहि जवनि ध
रि देहा ॥ सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा ॥ कपि आकृति तुम कीन्हि हमारी ॥ करिहहिं की
स सहाय तुम्हारी ॥ मम अपकार कीन्ह तुम भारी ॥ नारि बिरह तुम होउ दुखारी ॥

राम ५०

॥दोहा॥ आपसीसधरिहरखिहिय ॥ प्रभुसुरकाजकीन्ह ॥ निजमायाकीप्रबलता ॥ करखिकृपानिधिलीन्ह ॥ १२६ ॥ चौपई ॥ जब हरिमायादूरिनिवारी ॥ नहिंतहंरमानराजकुमारी ॥ तबमुनिअतिसभीतहरिचरणा ॥ गहेपाहिंप्रणतारतिहरणा ॥ मृषाहोउममश्रापकृपाला ॥ ममइछाकहदीनदयाला ॥ मैंदुर्वचनकहेउबहुतेरे ॥ कहमुनिपापमिटहिंकिमिमेरे ॥ जपहुजाइशंकरशतनामा ॥ होइहिहृदयतुरतविश्रामा ॥ कोउनहिशिवसमानप्रियमोरे ॥ असपतीतितजागेउजनिभोरे ॥ जेहिपरकृपानकरहिंपुरारी ॥ सोनपावमुक्तिहमारी ॥ असउरधरिमहिबिचरहुजाइ ॥ अवनतुमहिमायानियराई ॥ दोहा बहुविधिमुनिहिप्रबोधिप्रभु तबभयेअंतर्धान ॥ हरगणमुनिहिंजातपथदेषी ॥ विगतमोहमनहर्षविशेषी ॥ अतिसभीतनारदपहंआये ॥ गहिपदआरतबचनसुनाये ॥ हरगणहमनमुनविप्रमुनिराया ॥ बडअपराधकीन्हफलपाया ॥ श्रापअनुग्रहकरहुकृपाला ॥ बोलेनारददीनदयाला ॥ निशिचरजायहोउतुमदोऊ ॥ वैभवविपुलतेजबललदोऊ ॥ भुजबलविश्वजितवतुमजहिआ ॥ धरिहहिंबिस्नुमनुजतनुतहिआ ॥ समरमरणहरिहाथतुम्हारा ॥ होइहहुमुक्तनपुनिसंसारा ॥ चलेजुगलमुनिपद

निम

१२७ चौ०

प

फिरि नाई॥ भये निशाचर कालहिं पाई॥ दोहा॥ एक कल्प इहि हेतु प्रभु लीन्ह मनु
ज अवतार॥ सुररंजन सज्जन सुषद हरि भंजन भू भार॥१२८॥ चौपई॥ इहि बिधि ज
न्म कर्म हरि केरे॥ सुंदर सुषद बिचित्र घनेरे॥ कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं॥ चा
रु चरित नाना बिधि करहीं॥ तब तब कथा मुनि ग्यान गाई॥ परम बिचित्र प्रबंध बना
ई॥ बिबिध प्रसंग अनूप बषाने॥ करहिं न सुनि आश्चर्य सयाने॥ हरि अनंत हरिकथा
अनंता॥ कहहिं सुनहिं बहु बिधि श्रुति संता॥ रामचंद्र के चरित सुहाये॥ कल्प कोटि
लगि जाहिं न गाये॥ यह प्रसंग मैं कहा भवानी॥ हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी॥ प्रभु
कौतुकी प्रणत हितकारी॥ सेवत सुलभ सकल दुख हारी॥ सोरठा॥ सुर नर मुनि को
उ नाहिं॥ जेहि न मोह माया प्रबल॥ अस बिचारि मन माहिं॥ भजिय महामाया पति
हिं॥१२९॥ चौपई॥ अपर हेतु सुनु शैलकुमारी॥ कहौं बिचित्र कथा बिस्तारी॥
जेहि कारण अज अगुण अरूपा॥ ब्रह्म भये कोशलपुर भूपा॥ जो प्रभु बिपिन
फिरत तुम देषा॥ बंधु समेत किये मुनि बेषा॥ जासु चरित्र अवलोकि भवानी॥ सती
शरीर रहिहु बौरानी॥ अजहुं न छाया मिटत तुम्हारी॥ तासु चरित सुनु भ्रम रुज
हारि॥ लीला कीन्ह जो तेहिं अवतारा॥ सो सब कहिहौं मति अनुसारा॥ भरद्वाज

मुनिशंकरबानी॥ सकुचिसप्रेमउमामुसुकानी॥ लगेबहुरिबरनैब्रषकेतू॥ सोअव
तारभयेउजेहिहेतु॥ दोहा॥ सोमैंतुमसनकहोसब॥ सुनुमुनीशमनलाइ॥ रामकथा
कलिमलिहरणि। मंगलकरणसुहाइ॥ १४०॥ चौपई॥ स्वयंभूपअरुशतरूपा।
जिनतेंभैनरसृष्टिअनूपा। दंपतिधर्मआचरणनीका। अजहुंगावश्रुतिजिनकीली
ला॥ नृपउत्तानपादसुतजासू॥ ध्रुवहरिभक्तिभयेसुतजासू॥ लघुसुतनामप्रिय
व्रततोही। बेदपुराणप्रशंसतजाही॥ देवहूतीपुनितासुकुमारी॥ जोमुनिकर्म
दमकीप्रियनारी॥ आदिदेवप्रभुदीनदयाला॥ जठरधरेउजेहिकपिलकृपा
ला॥ सांख्यशास्त्रजिनप्रगटबखाना॥ तत्वविचारनिपुणभगवाना॥ तेहम
नुराजकीन्हबहुकाला॥ प्रभुआयसुबहुविधिप्रतिपाला॥ दोहा॥ होइनविष
यबिराग॥ भवनबसतभाचौथपन॥ हृदयबहुतदुखलाग॥ जन्मगयेहरिभक्ति
बिन॥ १४१॥ चौपई॥ बरबसराजसुतहितबदीन्हा॥ नारिसमेतगवनबनकीन्हा॥ तीरथब
रनैमिषबिख्याता॥ अतिपुनीतसाधकसिधिदाता॥ बसहिंतहांमुनिसिद्धसमाजा
॥ तहंहियहरषिचलेमनुराजा॥ पंथजातसोहहिमतिधीरा॥ ज्ञानभक्तिजनु
धरेशरीरा॥ पहुंचेजाइधेनुमतितीरा॥ हरषेनहानेनिरमलनीरा॥ आयेमिलन

बेन

ब

बाल० ८२

नसिष्ठमुनिग्यानी ।। धर्मधुरंधरनृपरुषिजानी ।। जहं तहं तीरथरहे सुहाये ।। मुनिन
सकलसादरकरबाये ।। क्रसशरीरमुनिपटपरिधाना ।। संतसमाजनितिसुनहिपु
राना ।। दोहा ।। द्वादसअछरमंत्रबर ।। जपहिसहितअनुराग ।। बासुदेवपदपंके
रुह ।। दंपतिमनअतिलाग ।। १४३ ।। चौपई ।। करहिअहारशाकफलकंदा ।। सुमि
रहिब्रह्मसच्चिदानंदा ।। पुनिहरिहेतुकरनतपलागे ।। बारिअधारमूलफलत्या
गे ।। उरअभिलाषनिरंतरहोई ।। देषियपरमनयनप्रभुसोई ।। अगुणअखंड
अनंतअनादी ।। जेहिचितहिपरमारथबादी ।। नेतिनेतिजेहिबेदनिरूपा ।। चिदा
नंदनिरुपाधिअनूपा ।। शंभुबिरंचिबिष्णुभगवाना ।। उपजेहिजासुअंशतेहिना
ना ।। ऐसेप्रभुसेवकबसअहहीं ।। भक्तिहेतुलीलातनुगहहीं ।। जोयहबचनसत
श्रुतिभाषा ।। तौहमारपूजिहिअभिलाषा ।। दोहा ।। इहिबिधिबीतेबर्षषट ।। सहस
बारिअहार ।। संबतसप्तसहस्रपुनि ।। रहेसमीरअधार ।। १४४ ।। चौपई ।। बरषसहसद
सत्यागेउसोउ ।। ठाढेरहेएकपददोऊ ।। बिधिहरिहरतपदेषिअपारा ।। मनुसमीप
आयेबहुबारा ।। मांगहुबरबहुभांतिलुभाये ।। परमधीरनहिचलहिचलाये
।। अस्थिमात्रहोयरहेशरीरा ।। तदपिमनागमनहिनहिपीरा ।। प्रभुसर्बज्ञदासनि

राम ८२

फु

जानी॥ गति अनन्य तापस न्रप रानी॥ मांगु मांगु बर भै नभ बानी॥ परम गंभीर कृपाम्रि
तसानी॥ मृतकु जिआवनि गिरा सुहाई॥ श्रवण रंध्र होइ उर जब आई॥ हृष्ट पुष्ट त
न भये सुहाये॥ मानहुं अवहिं भवन ते आये॥ दोहा॥ श्रवण सुधा सम बचन सुनि
पुलक प्रफुल्लित गात॥ बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात॥ १४४॥ चौपई॥ सु
न सेवक सुरतरु सुरधेनू। विधि हरि हर बंदित पद रेनू॥ सेवत सुलभ सकल सुषदाय
क॥ प्रणतपाल सचराचर नायक॥ जौं अनाथ हित हम पर नेहु॥ तौ प्रसन्न होय य
ह वर देहु॥ जो सरूप वस शिव मन माहीं॥ जेहि कारण मुनि यतन कराहीं॥ जो भुसुं
डि मन मानस हंसा॥ सगुण अगुण जेहि निगम प्रसंसा॥ देषहिं हम सो रूप भरि लोच
न॥ कृपा करहु प्रणतारति मोचन॥ दंपति बचन परम प्रिय लागे॥ म्रदुल बिनीत
प्रेम रस पागे॥ भक्त बछल प्रभु कृपानिधाना॥ विश्ववास प्रगटे भगवाना॥ दोहा॥
नील सरोरुह नीलमणि नील नीरधर स्याम॥ लाजहिं तन शोभा निरषि॥ कोटि कोटि
शत काम॥ १४५॥ चौपई॥ शरद मयंक बदन छवि सींवा॥ चारु कपोल चिवुक दर ग्री
वा॥ अधर अरुण रद सुंदर नासा॥ विधु कर निकर विनिंदक हासा॥ नव अंबुज अं
वक छवि नीकी॥ चितवन ललित भावनी जी की॥ भ्रकुटि मनोज चाप छवि हारी॥ तिल

वाल ०
धरू

कलललाटपटललइतिकारी॥ कुंडलमकरमुकुटसिरभ्राजा॥ कुटिलकेपाजनु मधुपसमाजा॥ उरश्रीवत्सरुचिरबनमाला॥ पदिकहारभूषणमणिजाला॥ केहरि कंधरचारुजनेऊ॥ बाहुबिभूषणसुंदरतेऊ॥ करिकरसरिसप्रुभगभुजदंडा॥ कटि निषंगकरशरकोदंडा॥ दोहा॥ तडितविनिंदकपीतपट॥ उदररेषबरतीनि॥ नाभिमनोहरलेतजनु॥ यमुनभवंरछबिछीनि॥ १४६॥ चौपई॥ पदराजीवबरणिन हिंजाहीं॥ मुनिमनमधुपबसहिंजहिमाहीं॥ बामभागशोभतिअनुकूला॥ आदिश क्तिछबिनिधिजगमूला॥ जासुअंशउपजहिंगुणषानी॥ अगणितलछमारमाब्रह्मा णी॥ भृकुटिबिलासजासुजगहोई॥ रामवामदिशिसीतासोई॥ छबिसमुद्रहरिरू पविलोकी॥ एकटकरहेनयनपटरोकी॥ चितवहिंसादररूपअनूपा॥ त्रप्तिन मानहिमनुशतरूपा॥ हर्षबिवशतनदशाभुलानी॥ परेदंडइवगहिपदपानी॥ सिरपरसेप्रभुनिजकरकंजा॥ तुरतउठायेकरुणापुंजा॥ दोहा॥ बोलेकृपानि धानपुनि॥ अतिप्रसन्नमोहिजानि॥ मांगहुबरजोइभावमन॥ महादानिअनु मानि॥ १४७॥ चौपई॥ सुनिप्रभुबचनजोरियुगपाणी॥ धरिधीरजबोलेमृदुवानी॥ नाथदेषिपदकमलतुम्हारे॥ अबपूजेसबकामहमारे॥ एकलालसाबडिमन

लि

राम
धरू

माही॥ सुगम अगम कहि जात सो नाही॥ तुमहि देत अति सुगम गोसांई॥ अगम लागु
मोहि निज कृपनाई॥ यथा दरिद्र विबुधतरु जाई॥ बहु संपति मांगत सकुचाई॥
तासु प्रभाव न जाने सोई॥ यथा हृदय मम संशय होई॥ सो तुम जानहु अंतरजामी॥ पु
रवहु मोर मनोरथ स्वामी॥ सकुच बिहाय मांगु नृप मोही॥ मोरे नहि अदेव कछु तोही॥ दो
हा॥ दानि शिरोमणि कृपानिधि॥ नाथ कहौं सतभाव॥ चाहौं तुमहि समान सुत॥ प्रभु सन
कवन दुराव॥ १४८॥ चौपई॥ देखि प्रीति सुनि बचन अमोले॥ एवमस्तु करुणानिधि
बोले॥ आप सरिस खोजौं कहं जाई॥ नृप तव तनय होव मैं आई॥ शतरूपहि बिलो
कि कर जोरे॥ देवि मांगु बर जो रुचि तोरे॥ जो बर नाथ चतुर नृप मागा॥ सोइ कृपालु मो
हि अतिप्रिय लागा॥ प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई॥ यदपि भक्ति हित तुमहि सुहाई॥
तुम ब्रह्मादि जनक जगस्वामी॥ ब्रह्म सकल उर अंतरजामी॥ अस समुझत मन सं
शय होई॥ कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई॥ जे निज भक्त नाथ तव अहई॥ जो सुख पावहि
सो गति सु लहई॥ दोहा॥ सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति॥ सोइ निज चरण सनेह॥ सोई
विबेक सोइ रहनि प्रभु॥ मोहि कृपा करि देहु॥ १४९॥ चौपई॥ सुनि मृदु गूढ रुचिर
बर रचना॥ कृपासिंधु बोले मृदु बचना॥ जो कछु रुचि तुमरे मन माही॥ मैं सो दीन्ह सब

दंपति उरधरि भक्तिकृपाल तेहि आश्रम निबसे कछु काला १९

संसय नाहीं॥ मातु बिबेक अलौकिक तोरे॥ कबहु न मिटिहि अनुग्रह मोरे॥ बंदि चरण
मनु कहेउ बहोरी॥ अवर एक बिनती प्रभु मोरी॥ सुत बिषयक तव पद रति होऊ॥ मो
हि बड मूढ कहै किन कोऊ॥ मणि बिनु फणि जिमि जल बिनु मीना॥ मम जीवन तिमि
तुमहि अधीना॥ अस बर मांगि चरण गहि रहेऊ॥ एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ॥ अ
ब तुम मम अनुशासन मानी॥ बसहु जाइ सुरपति रजधानी॥ दोहा॥ तहं करि भोग
विशाल॥ तात गये कछु काल पुनि॥ होइहहु अवध भुआल॥ तब मैं होब तुम्हार सु
त॥ १५०॥ चौपई॥ इच्छामय नर भेष संवारे॥ होइहों प्रगट निकेत तुम्हारे॥ अंसन
सहित देह धरि ताता॥ करिहौं चरित भक्त सुखदाता॥ जे सुनि सादर नर बडभागी॥ भव
तरिहहिं ममता मद त्यागी॥ आदिशक्ति जेहि जग उपजाया॥ सोउ अवतरहि मोरि य
ह माया॥ पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा॥ सत्य सत्य पण सत्य हमारा॥ पुनि पुनि अस क
हि कृपानिधाना॥ अंतरधान भये भगवाना॥ समय पाइ तनु तजि अनुयासा॥ जाइ
कीन्ह अमरावति वासा॥ दोहा॥ यह इतिहास पुनीत अति॥ उमहि कहेउ वृषके
तु॥ भरद्वाज सुनु अपर मुनि॥ राम जन्म कर हेतु॥ १५१॥ चौपई॥ सुनु मुनि कथा पुनी
त पुरानी॥ जो गिरिजा प्रति शंभु बखानी॥ बिश्व बिदित इक कैकय देसू॥ सत्यके

तु तहं बसैं नरेसूं॥ धर्म्म धुरंधर नीति निधाना॥ तेज प्रताप शील बलवाना॥ तेहि के भये जुगल सुत वीरा॥ सब गुण धाम महा रणधीरा॥ राज धनी जेठे सुत आही॥ नाम प्रतापभानु अस ताही॥ अपर सुतहिं अरिमर्दन नामा॥ भुजबल अतुल अचल संग्रामा॥ भाइहि भाइहि परम समीती॥ सकल दोष छल वर्जित प्रीती॥ जेठे सुतहिं राज नृप दीन्हा॥ हरि हित आपु गवन बन कीन्हा॥ दोहा॥ जब प्रताप रवि भये नृप॥ फिरि दोहाई देश॥ प्रजा पाल अति बेद विधि॥ कतऊं नही अघ लेश॥ १५३॥ चौपई॥ नृप हितकारक सचिव सुजाना॥ नाम धर्मरुचि शुक्र समाना॥ सचिव सयान बंधु बलवीरा॥ आपु प्रतापपुंज रणधीरा॥ सेन संग चतुरंग अपारा॥ अमित सुभट सब समर जुझारा॥ सेन विलोकि राउ हरषाना॥ अरु वाजे गहगहे निसाना॥ विजय हेतु कटकाइ बनाई॥ सुदिन साधि नृप चले बजाइ॥ जहं तहं परी अनेक लराई॥ जीते सकल भूप वरिआई॥ सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे॥ लै लै दंड छाडि नृप दीन्हे॥ सकल अवनि मंडल तेहि काला॥ एक प्रतापभानु महिपाला॥ दोहा॥ सब बस विश्व करि बाहुबल॥ निज पुर कीन्ह प्रवेश॥ अर्थ धर्म कामादि सुष॥ सेवैहि सबै नरेस॥ १५४॥ चौपई॥ भूप प्रतापभानु बल पाई॥ कामधेनु भै भूमि सुहाई॥ सब दुख वर्जित प्रजा सुषारी॥ धर्मशील सुंदर नर नारी॥ सचिव धर्मरुचि

बाल० ७५

हरषद्प्रीति॥ नृपहितहेतुसिषावतरीती॥ गुरसुरसंतपितरमहिदेवा॥ करैसदानृपस
बकीसेवा॥ नृपधर्मजेवेदबषानैं॥ सकलकरैसादरसुषमानै॥ दिनप्रतिदेइविविधिविधि
दाना॥ सुनैशास्त्रबरवेदपुराना॥ नानावापीकूपतडागा॥ सुमनवाटिकासुंदरबागा॥
॥ विप्रभवनसुरभवनसुहाये॥ सबतीरथनविचित्रबनाये॥ दोहा॥ जहंलगिक
हेपुराणश्रुति॥ एकएकसबयाग॥ वारसहस्रनृप॥ कियेसहितअनुराग॥ १५५॥
चौपई॥ हृदयनकछुफलअनुसंधाना॥ नृपविवेकीपरमसुजाना॥ करैजोधर्म
कर्ममनबानी॥ वासुदेवअर्पितनृपज्ञानी॥ चढिबरबाजिवारइकराजा॥ मृगया
करसबसाजिसमाजा॥ विंध्याचलगंभीरबनगयऊ॥ मृगपुनीतबहुमारतभयऊ
॥ फिरतविपिननृपदीषबराहू॥ जनुबनदुरेउशशिहिग्रसराहू॥ बडविधुनहिस
मातमुषमाहीं॥ मनहुंक्रोधबसउगिलतनाहीं॥ कोलकरालदशनछविगाई॥ तनु
विशालपीवरअधिकाई॥ घुरघुरातहयआरवपाये॥ चकितविलोकतकानउठा
ये॥ दोहा॥ नीलमहीधरशिषरसम देषिविशालबराह॥ चपरचलेउहयसुटुकि
नृप॥ हांकिनहोइनिवाह॥ १५६॥ चौपई॥ आवतदेषिअधिकरववाजी॥ चलाब
राहमरुतगतिभाजी॥ तुरतकीन्हनृपशरसंधाना॥ महिमिलिगयेउविलोकतबा

सहस्र

राम ७५

ना॥ तकितकितीरमहीपुचलावा॥ करिछलसुअरसरीरबचावा॥ प्रगटतदुरतजायमृ
गभागा॥ रिसिबसनृपचलेउसंगलागा॥ गयेउदूरिघनगहनबराहू॥ जहँनाहीगजबा
जिनिबाहू॥ अतिअकेलबनबिपुलकलेसू॥ तदपिनमृगमगतजैनरेसू॥ कोलबि
लोकिनृपबडधीरा॥ भागिपैठुगिरिगुहागभीरा॥ अगमदेखिनृपअतिपछिताई॥ फि
रेउमहाबनपरेउभुलाई॥ दोहा॥ खेदखिन्नतृषितछुधित राजाबाजिसमेत। खो
जतब्याकुलसरितसर। जलबिनुभयेउअचेत॥ १५७॥ चौ० फिरतबिपिनआश्रमय
कदेषा॥ तहँबसनृपतिकपटमुनिभेषा॥ जासुदेसनृपलीन्हछडाई॥ समरसेनतजि
गयेउपराई॥ समयप्रतापभानुकरजानी॥ आपनअतिअसमयअनुमानी॥ गयेउ
नग्रहमनबहुतगलानी॥ मिलानराजहिनृपअभिमानी॥ रिसिउरमारिरंकजिमि
राजा॥ बिपिनबसैतापसकेसाजा॥ तासुसमीपगवननृपकीन्हा॥ यहप्रतापरबिते
हतबचीन्हा॥ राउतृषितनहिसोपहचाना॥ देषिसुबेषमहामुनिजाना॥ उतरितुर
गतेकीन्हप्रणामा॥ परमचतुरनकहेउनिजनामा॥ दोहा॥ नृपतितृषितबिलो
कितेहू॥ सरबरदीन्हदेषाइ॥ मज्जनपानसमेतहय॥ कीन्हनृपतिहरषाय॥
५ १५८॥ चौपई॥ गैश्रमसकलसुखीनृपभयेउ॥ निजआश्रमतापसलेगयेउ

ऊ ॥ आस्रमनदीह्रअस्तरविजानी ॥ उनितापसबोलामृदुवानी ॥ कोतुमकसवनफिरहुअ
केले ॥ सुंदरजुवाजीवपरहेले ॥ चक्रवर्तिकेलछणतोरे ॥ देषतदयालागिअतिमोरे ॥
नामप्रतापभानुअवनीसा ॥ तासुसचिवमैसुनहुमुनीसा ॥ फिरतअहेरहिपरेउभु
लाई ॥ बडेभाग्यदेषेउपदआई ॥ हमकहदुर्लभदरसतुम्हारा ॥ जानतहौंकछुभलहो
निहारा ॥ कहमुनिताततभयेउअंधियारा ॥ योजनसत्तरनगरतुम्हारा ॥ दोहा ॥ निसाघो
रगंभीरबन ॥ पंथनसूझसुजान ॥ बसहुआजुअसजानितुम ॥ जायेहुहोतविहान
तुलसीजसभवतब्यता ॥ तैसीमिलैसहाय ॥ आपुनआवैताहिपै ॥ कितहितहांलैजाय ॥
चौपई ॥ २५८ ॥ भलेहिनाथआयसुधरिसीसा ॥ बांधितुरगतरुबैठिमहीसा ॥ नृपवहुभांति
प्रसंसेउताही ॥ चरणवंदिनिजभाग्यसराही ॥ पुनिबोलेमृदुगिरासुहाई ॥ जानिपिताप्र
भुकरौढिठाई ॥ मोहिमुनिसासुतसेवकजानी ॥ नाथनामनिजकहहुबषानी ॥ तेहिन
जाननृपनृपहिसुजाना ॥ भूपसुहृदयसोकपटसयाना ॥ वैरीपुनिछत्रीपुनिराजा ॥
छलबलकीन्हचहैनिजकाजा ॥ समुझिराजसुषदुषितअराती ॥ अवाअनलइवसुलगै
छाती ॥ सरलबचननृपकेसुनिकाना ॥ वयरसंभारिहृदयहरषाना ॥ दोहा ॥ कपटवो
रिवाणीमृदुल ॥ बोलेउजुगुत्तिसमेत ॥ नामहमारभिषारिअब ॥ निर्धनरहितनिकेत ॥

ततन॥समरनजीतेकोउ॥एकछत्ररिपुहीनमहि॥राजकल्पप्रातहोउ॥१६४॥चौपई॥क
हतापसनृपऐसेइहोऊ॥कारणएककठिनसुनसोऊ॥कालौतबपदनाइहिसीसा॥ए
कविप्रकुलछाडिमहीसा॥तपबलविप्रसदाबरियारा॥तिनकेकोपनकोउरषवारा॥
॥जोविप्रनवसकरहुनरेसा॥तोतवबसविधिविष्णुमहेसा॥चलनब्रह्मकुलसेबरि
आई॥सत्यकहौंदोउभुजाउठाई॥विप्रश्रापविनुसुनुमहिपाला॥तोरनाशनहिकव
निहुकाला॥हरषेउराउबचनसुनितासू॥नाथनहोइमोरअबनासू॥तवप्रसादप्रभु
कृपानिधाना॥मोकहंसर्बकालकल्याना॥दोहा॥एवमस्तुकहिकपटमुनि॥बोला
कुटिलबहोरि॥मिलबहमारभुलावनिज॥कहहुतोमोरिनषोरि॥१६५॥चौपई॥ता
तेमैंतोहिबरजौराजा॥कहेकथातवपरमअकाजा॥छुटेश्रवनयहपरतकहानी॥ना
शतुम्हारसत्यममबानी॥यहप्रगटेअथवाद्विजश्रापा॥नाशतोरसुनुभानुप्रतापा॥आ
नउपायनिधनतवनाही॥जोंहरिहरकोपहिंमनमाही॥सत्यनाथपदगहिनृपभाषा॥
॥द्विजगुरुकोपकहहुकोराषा॥राषैगुरुजोकोपबिधाता॥गुरुविरोधनहिंकोउजग
त्राता॥जोंनचलबहमकहेतुम्हारो॥होइनाशनहिंसोचहमारे॥एकहिंडरडरपतमन
मोरा॥प्रभुमहिदेवश्रापअतिघोरा॥दोहा॥होहिंविप्रबसकवनविधि॥कहहुकृपा

करि सोउ ॥ तुम तजि दीनदयाल निज ॥ हितू न देखों कोउ ॥ १६६ ॥ चौपई ॥ सुनु नृप विविध यतन जग माहीं ॥ कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं ॥ अहै एक अति सुगम उपाई ॥ तहां परंतु एक कठिनाई ॥ मम आधीन युक्ति नृप सोई ॥ मोर जाव तव नगर न होई ॥ आजु लगे अरु जब तें भयेऊ ॥ काहू के गृह ग्राम न गयेऊ ॥ जो न जाव तव होइ अकाजू ॥ बना आइ असमंजस आजू ॥ सुनि महीप बोले मृदु बानी ॥ नाथ निगम असि नीति बखानी ॥ बडे सनेह लघुन पर करहीं ॥ गिरि निज सिरन सदा तृण धरहीं ॥ जलधि अगाध मौलि बह फेनू ॥ संतत धरणि धरत सिर रेणू ॥ दोहा ॥ अस कहि गहे नरेस पद ॥ स्वामी होउ कृपाल ॥ मोहि लागि दुख सहिय प्रभु ॥ सज्जन दीनदयाल ॥ १६६ ॥ चौपई ॥ जानि नृपहि आपन आधीना ॥ बोला तापस कपट प्रवीना ॥ सत्य कहों भूपति सुनु तोही ॥ जग में नहिं दुर्लभ कछु मोही ॥ अवशि काज मैं करिहों तोरा ॥ मन क्रम बचन भक्त तैं मोरा ॥ योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ ॥ फलै तव हि जब करिय दुराऊ ॥ जो नरेश मैं करहु रसोई ॥ तुम परसहु मोहि जान न कोई ॥ अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई ॥ सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥ पुनि तिनके गृह जेवैं जोई ॥ तव बस होइ नृप सुनु सोई ॥ जाइ उपाय रचहु नृप एहू ॥ संवत भरि संकल्प करेहू ॥ दोहा ॥ नित नूतन द्विज सहस

प्रात ॥ नरेस सहित परिवार ॥ मैं तुम्हरे संकल्प लगि ॥ दिनहिं करब जेवनार ॥१६७॥ चौपई
इहि बिधि नृप कष्ट अति थोरे। होइहहिं सकल बिप्र बस तोरे ॥ करिहहिं होम मष सेवा
॥ तेहि प्रसंग सहजहिं बस देवा ॥ और एक तोहि कहौं लषाऊ ॥ मैं यहि भेष न आउब
काऊ ॥ तुमरे उपरोहित कहं राया ॥ हरि आनऊं मैं करि निज माया ॥ तपबल तेहि क
रि आपु समाना ॥ रषिहौं इहां बरष परमाना ॥ मैं धरि तासु भेष सुनु राजा ॥ सब बिधि तो
र सवारब काजा ॥ मैं निशि बहुत शयन अब कीजे ॥ मोहि तोहि नृप भेंट दिन तीजे
मैं तपबल तोहि तुरग समेता ॥ पहुंचैहों सोवतहि निकेता ॥ दोहा ॥ मैं आउब सोइ भेष
धरि ॥ पहिचानेहु तब मोहि ॥ जब एकांत बुलाइ सब ॥ कथा सुनाऊं तोहि ॥१६८॥ चौ
पई ॥ शयन कीन्ह नृप आयसु मानी ॥ आसन जाइ बैठ छलज्ञानी ॥ श्रमित भूप निद्रा
अति आई ॥ सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥ कालकेतु निशाचर तहं आवा ॥ जेहि सू
कर होइ नृपहि भुलावा ॥ परम मित्र तापस नृप केरा ॥ जानै सो अति कपट घनेरा ॥
तेहि के सत सुत अरु दस भाई ॥ खल अति अजय देव दुखदाई ॥ प्रथमहिं भूप समर स
ब मारे ॥ बिप्र संत सुर देषि दुखारे ॥ तेहि खल पाछिल बयर संभारा ॥ तापस मिलि नृप
मंत्र बिचारा ॥ जेहि रिपु छय सोइ रचेसि उपाऊ ॥ भावी बस न जान कछु राऊ ॥ दोहा ॥

रिपुतेजसीअकेलअपि। लघुकरिगणियनताहु॥ अजहुंदेतदुखरविससिहिंसि
रअवसेषितराहु॥१६९॥ चौपई॥ तापसनृपनिजसखहिनिहारी॥ हरषिमिलेउ
उठिभयउसुखारी॥ मित्रहिकहिसबकथासुनाई॥ यातुधानबोलासुखपाई॥ अ
बसाधेउरिपुसुनहुनरेसा॥ जौंतुमकीन्हमोरउपदेसा॥ परिहरसोचरहहुतुम
सोई॥ बिनुऔषधहिव्याधिबिधिखोई॥ कुलसमेतरिपुमूलबहाई॥ चौथेदिवस
मिलबमैंआई॥ तापसनृपहिबहुतपरितोषी॥ चलामहाकपटीअतिरोषी॥ भा
नुप्रतापहिंबाजिसमेता॥ पहुंचायेसिसोवतहिनिकेता॥ नृपहिनारिपहसयन
कराई॥ हयगृहबांधेसिबाजिबनाई॥ दोहा॥ राजाकेउपरोहितहि। हरिलैगयेउ
बहोरि। लैराषेसिगिरिखोहमहं॥ मायाकरिमतिभोरि॥१७०॥ चौपई॥ आपुबिर
चिउपरोहितरूपा॥ पराजाइतेहिसेजअनूपा॥ जागेउनृपअनभयेउबिहाना
॥ देखिभवनअतिअचरजमाना॥ मुनिमहिमामनमहंअनुमानी॥ उठेगवहिंजे
हिजाननरानी॥ काननगयेउबाजिचढितेही॥ पुरनरनारिनजानेउकेही॥ गयेजे
यामयुगनृपतिआवा॥ घरघरउत्सबबाजुबधावा॥ उपरोहितहिदीषजबराजा
॥ चकितबिलोकिसुमिरसोइकाजा॥ युगसमनृपहिगयेदिनतीनी॥ कपटीमुनि

पद रह मति लीनी॥ समय जानि उपरोहित आवा॥ नृपहि मते सब कहि समुझाव॥ दोहा॥
नृप हरषे पहिचानि गुरु। भ्रम बस रहा न चेत॥ बरे तुरत प्रात सहस बर॥ बिप्र कुटंब समेत
॥१७२॥ चौपई॥ उपरोहित जेवनार बनाई॥ छरस चारि बिधि जस श्रुति गाई॥ मायाम
य तेहि कीन्ह रसोई॥ ब्यंजन बहु गनि सकै न कोइ॥ बिबिध मृगन कर आमिष राधा तेहि
महं बिप्र मांसु खल सांधा॥ भोजन कहु सब बिप्र बुलाये॥ पद पखारि सादर बैठाये॥ परस
न लागि जबहि महिपाला॥ भइ अकाल बाणी तेहि काला॥ बिप्रबृंद उठि उठि ग्रिह जा
हू॥ है बडि हानि अन्न जनि खाहू॥ भये रसोई भूसुर मांसू॥ सब द्विज उठे मानि बि
स्वासू॥ नृप बिकल मति मोह भुलानी॥ भावी बस न आव मुख बानी॥ दोहा॥ बोले बि
प्र सकोप तब॥ नहिं कछु कीन्ह बिचार॥ जाइ निसाचर होउ नृप॥ मूढ सहित परवार
॥१७३॥ चौपई॥ छत्रिय बंधु तैं बिप्र बुलाई॥ घालै लिये सहित समुदाई॥ ईश्वर राखा
धरम हमारा॥ जैहसि तैं समेत परिवारा॥ संवत मध्य नाश तब होऊ॥ जलदाता न र
हहि कुल कोऊ॥ नृप सुनि श्राप बिकल अति त्रासा॥ भइ बहोरि बर गिरा अका
सा॥ बिप्र ऊ श्राप बिचारि न दीना॥ नहिं अपराध नृप कछु कीन्हा॥ चकित बिप्र स
ब सुनि नभ बानी॥ नृप गये तहं भोजन खानी॥ तहं न अपान नहिं बिप्र सुआरा॥ फि

बाल०
५०

रेउ मन सोच अपारा॥ सब द्विज संग महि सुरन सुनाई॥ भ्रमित परेउ अवनी अकुलाई॥ दोहा
॥ नृपति भावी मिटै नहि॥ यदपि न दूषण तो॥ किये अन्यथा होइ नहि॥ बिप्र श्राप अति
घोर॥ १७२॥ चौपई॥ अस कहि सब महि देव सिधाये॥ समाचार पुरलोगन पाये॥ सोच
हि दूषण दैवहि देही॥ बिरचत हंस काक किये जेही॥ उपरोतहि तहि भवन पहुचाई॥
असुर तापसहि खबरि जनाई॥ तेहि खल जहं तहं पत्र पठाये॥ सजि सजि सेन नृप सब
आये॥ घेरिन्ह नगर निसान बजाई॥ बिबिधि भांति नित होति लराई॥ जूझे सकल सुभ
ट करि करणी॥ बंधु समेत परे नृप धरणी॥ सत्यकेतु कुल कोइ न बाचा॥ बिप्र श्राप कि
मि होइ असांचा॥ रिपु हि जीत नृप नगर बसाई॥ निज निज पुर गय जय जस पाई॥ दो
॥ हा॥ भरद्वाज सुनु जाहि जब॥ होत बिधाता बाम॥ धूरि मेरु सम जनक यम॥ ताहि ब्याल
सम दाम॥ १७३॥ चौप॥ काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा॥ भयउ निसाचर सहित समाजा
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा॥ रावण नाम बीर बरिबंडा॥ नृप अनुज अरिमर्दन नामा॥
भयेउ सो कुंभकरण बलधाना॥ सचिव जो रहा धर्मरुचि जासू॥ भयेउ बिमात्र बंधु लघु
तासू॥ नाम बिभीषण जेहि जग जाना॥ बिष्णु भक्त बिज्ञान निधाना॥ रहे जे सुत सेवक नृप
केरे॥ भये निसाचर घोर घनेरे॥ काम रूप खल जिनिस अनेका॥ कुटिल भयंकर बि

रि

राम
५०

गतबिवेका॥ कृपारहित हिंसक सब पापी॥ बरनि न जाय बिस्व परितापी॥ दोहा॥ उपजे यद
पि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप॥ तदपि महीसुर श्राप बस॥ भये सकल अघरूप
॥ १७४॥ चौपई॥ कीन्ह बिबिध तप तीनो भाई॥ परम उग्र सो बरणि न जाई॥ गयउ निक
ट तप देखि बिधाता॥ मांगहु बर प्रसन्न मैं ताता॥ करि बिनती पद गहि दससीसा॥ बोले
उ बचन सुनहु जगदीसा॥ हम काहू के मरहिं न मारे॥ बानर मनुज जाति दुइ बारे॥ ए
वमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा॥ मैं ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा॥ पुनि प्रभु कुंभकरण पहि गय
उ॥ तेहि बिलोकि मन बिस्मय भयऊ॥ जौं यह खल निति करब अहारा॥ होइहि स
ब उजारि संसारा॥ शारद प्रेरि तासु मति फेरी॥ मांगेसि नींद मास षट केरी॥ दोहा॥ गये बि
भीषण पास तब॥ कहा पुत्र बर मांगु॥ तेहि मांगेउ भगवत पद॥ कमल अमल अनुरा
ग॥ १७५॥ चौपई॥ तिनहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये॥ हर्षित ते अपने गृह आये॥ मय तनु
जा मंदोदरि नामा॥ परम सुंदरी नारि ललामा॥ सोइ मय दीन्ह रावणहि आनी॥ भई सो
यातुधानपति रानी॥ हर्षित भयेउ नारि भल पाई॥ पुनि दोउ बंधु बिवाहेसि जाई॥
गिरि त्रिकूट इक सिंधु मझारी॥ बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी॥ सोइ मयदानव बहु
रि सँवारा॥ कनक रचित मणि भवन अपारा॥ भोगवती जस अहिकुल बासा॥ अम

तिनतेंअधिकरम्यअतिबंका जगबिख्यातनामतेहिलंका १

रावतिजसशक्रनिवासा॥ दोहा॥ षाईसिंधुगंभीरअति। चारिउदिशिफिरिआवा॥
कनककोटमणिषचितदृढबरणिनजाइबनाव॥ हरिप्रेरितजेहिकल्पजोइ॥ जा
तुधानपतिहोइ॥ सूरप्रतापीअतुलबल। दलसमेतबससोइ॥ १७६॥ चौपई॥ रहेत
हांनिशिचरभटभारे॥ तेसबसुरनसमरसंहारे॥ अबतहंरहहिंशक्रकेप्रेरे॥ रक्ष
ककोटियक्षपतिकेरे॥ दशमुषकबहुंषवरअसपाई॥ सेनसाजगढघेरेसिजाई॥
॥ देषिबिकटभटबडिकटकाई॥ यक्षजीवलैगयेपराई॥ फिरिसबनगरदशाननं
देषा॥ गयेउसोचसुषभयेउबिशेषा॥ सुंदरसहजअगमअनुमानी॥ कीन्हतहांराव
णरजधानी॥ जेहिजसयोगबांटिगृहदीन्हे॥ सुषीसकलरजनीचरकीन्हे॥ एकबारकु
बेरपहधावा॥ पुष्पकयानजीतिलैआवा॥ दोहा॥ कौतुकहीकैलाशपुनि॥ लीन्हेसि
जाइउठाइ॥ मनहुंतौलिनिजबाहुबल। चलाअधिकसुषपाइ॥ १७७॥ चौपई॥ सु
षसंपतिसुतसेनसहाई॥ जयप्रतापबलबुद्धिबडाई॥ नितिनूतनसबबाढतजाई॥
जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई॥ अतिबलकुम्भकर्णअसभ्राता॥ जेहिकहंनहिप्र
तिभटजगजाता॥ करिमदपानसोवषटमासा॥ जागतहोहिंतिहूंपुरत्रासा॥ जौंदिन
प्रतिअहारकरुसोई॥ विश्वबेगिसबचौपटहोई॥ समरधीरनहिंजाइबषाना॥ तेहिस

मअधिकनकोउबलवाना॥वारिदनादजेठसुततासू॥भटमहप्रथमलीकजगजासू॥जे
हिनहोइरणसन्मुषकोई॥सुरपुरनितहिपरावनहोई॥दोहा॥कुमुषअकंपनकु
लिशरद॥धूम्रकेतुअधिकाय॥एकएकजगजीतिसक॥ऐसेसुभटनिकाय॥१७८
चौपई॥कामरूपजानहिंसबमाया॥सपनेहुजिनकेधर्मनदाया॥दशमुषबैठसभा
इकबारा॥देषिअमितआपनपरिवारा॥सुतसमूहजनपरिजननाती॥गनेकोपार
निशाचरजाती॥सेनविलोकिसहजअभिमानी॥बोलाबचनक्रोधमदसानी॥सुनहु
सकलरजनीचरयूथा॥हमरेबैरीविविधवरूथा॥तेसन्मुषनहिंकरहिंलराई॥देषि
सबरिपुजाहिंपराई॥तिनकरमरणएकविधिहोइ॥कहौंबुझाइसुनहुअबसो
ई॥द्विजभोजनमषहोमसराधा॥सबकरजाइकरहुतुमबाधा॥दोहा॥छुधाछीन
बलहीनसुर॥सहजहिंमिलिहहिंआइ॥तबमारिहौंकिछाडिहौं॥भलीभांतिअप
नाइ॥१७९॥चौपई॥नारदमिलेकहहिमुसुकाई॥देवकहामुनिदेवदिखाई॥सुन
तअनघनारदनहिनारा॥सेतदीपतेहितुरतपगावा॥सागरउतरपारसोइगयऊ
॥नारिवृंदतहदेषतभयऊ॥तिन्हसनकहेसिपतिन्हपरिजाहू॥कहेउकिआ
वानिशिचरनाहू॥जबमैंतिन्हैंजीतिसंग्रामा॥लैजैहौंतुमकहुंनिजधामा॥सुनत

बाल॰
५८

तवचनइकजरठगरिसानी॥धाइचरनगहिगगनउडानी॥गइअंबरधरिधरिफकझोरा॥डारिसिंधुमध्यअतिजोरा॥दोहा॥गयेउपतालअचेतहोइ॥मरेनविप्रप्रसाद सावधानउठिगर्जिपुनि॥हियेनहर्षविषाद॥१७०॥चौपई॥जीतेसिनागनआरुसबआरी॥गयेउबकुरिबलिलोकमुरारी॥बामनरावनआवतजाना॥कियेदेवक्रपिसनअभिमाना॥खेलतरहेनगरसिसुनाना॥निजबलतिन्हहिंदीनउगवाना॥धाइधरातिन्हउरलैआये॥नगरनारिनरदेखनधाये॥बीसवोउदसकंधरजाई॥बिधिहयगदनिकरहाकेआई॥राखेन्हिबांधिबजावहितारी॥नामनकहैसहैबऊमारी॥बामनदीखबकुतसकुचाना॥तबछुडायदियेकृपानिधाना॥चलातुरंतनिशाचरनाहा॥लाजशंककछुनहिमनमाहा॥तबतुरंतपंपापुरआवा॥बालिनामकपिपतिजेहिगावा॥दीखजाइकसरबरशोभा॥जेहिमनमहामुनिनकरछोभा तहांकपीसकरैनिजध्याना॥आदरसेसंध्यामनमाना॥जाइगदतहांनारजनीघा॥गेकेउबाउगर्जिउजबीसा॥तबकपीसचितबामुसुकाई॥ध्यानकेअवसररिसबिसराई॥तबरावनबोलाकरिक्रोधा॥बकध्यानीकपिशठमुनुबोधा॥दोहा॥मोहिजीतेतेबिनुसमरसुनु॥नकरहुंध्यानकपीस॥अंजलिदेइनपावऊ॥सपथकरौंअज

राम
५८

ईस॥१९८१॥चौपई॥तबबालीबोलामुसुकाई॥बलतुम्हारऐसेहेभाई॥रविअंजलिमैंदे
नसकीति॥बादहोऊजायेमोहिजीती॥तबनिशिचरपतिहैहेनरिसाई॥देकपिसुक
छाडुकदराई॥तबवहिकीसपतिमनहिबिचारा॥द्विजबरदीन्हमरहिनहिंमारा॥हेद
ष्टाकेधरजाकुंबिचारा॥अजयतुम्हारिछत्रभुजभारी॥बऊनांतिबालीसमुझावा
॥कौंनिऊंनांतिबोधनहिंआवा॥तबसकोपहोइनगकपीसा॥धरितेहिंकांषचाप
दष्टाशीसा॥अंजलिदीन्हरविहिमनबानी॥अंचेनसमनउदधिकेपानी॥जपेनआदि
त्यमंत्रमनजानी॥तेहिबिनसंध्याबंदिसिरानी॥दोहा॥आवाघरहिकपीसतब॥का
षरहेनलंकेपूा॥एहिविधिवीतेमासषट॥पावाबऊनकलेशा॥१९८२॥चौपई॥बऊ
बसेइकषरीमऊजामा॥अतिकुवासताकहूमैंधामा॥कलमलाइरिसदष्टानन्ह
काटा॥कचकरजीवमनऊनभछाटा॥एकदिवसरविअंजुलिसाजा॥काषलेनिस
रिमहाधुनिगाजा॥सोपुनिधरिकपीसतेबांधा॥लेआयेनअंगदकेसाधा॥बीसभु
जादष्टासीससुधारा॥बरनऊओपुनिधरिनरमारा॥धरिसमेटिऊमरिसमकीन्हा
बांधिसेजपरषिशोनादीन्हा॥अंगदखिलखिलातसिरमारा॥किलकिकिलाइकिलकै
किलकारा॥दोहा॥ताराबीन्हेनरावनहिं॥तेहिबिनदीन्हछोराइ॥जाऊतुरततलें

बाल०
पत्र

केष्टागरह॥बक्ररिधरहिंकपिराइ॥२९४॥चौपई॥तुमिरावनआयेनतेद्विगंई॥स
हसवाऊतहंरासबनाईं॥जलक्रीडाकरैसंगसबनारी॥त्रिविधभांतिप्रीमा॥
अतिभारी॥आइरचामंडलजलरेवा॥सुरनरनागकरहिंसबसेवा॥जाइदीष
रावनमुषनाना॥हर्षसमेतहृदयसुषमाना॥तहंलंकेषजाइश्रिवदेषा॥रचेकु
विरंचमनकुबकुरेषा॥तुलसीअर्कपत्रसबआना॥बिल्वपत्रअरुपुष्पप्र
माना॥जाइजलेछोनेनदप्रासीमा॥थांनेनमंत्रसुमिरिगोरीसा॥दोहा॥जबप्रवे
डजललछोनेनकु॥हर्फेनसबैसमाज॥सहसबाकुमनशंकअति॥लकलत्रियैनर
लाज॥२९५॥चौपई॥तबराजासनबोलहिनारी॥अतिसुंदरिसबराजकुमारी
सुननरपतिआयेनकोनगाढा॥आकसमातमहानदबाढा॥सुमिराजाहिंनाक्रो
धअपारा॥जसत्रिनेत्रत्रिपुरकहंजारा॥जाइदीपरावनतहंगाढा॥जासुमंत्रब
लजलनिधिबाढा॥धायाउबलमहाबलनारी॥लंकेश्वरकहेधरिसिषचारी
॥लेइभुजनिबांधिगयेनत्रियपासा॥गढनिदेषिसबपरमहुलासा॥करित्रसना
नहरजिगोरीसा॥हयषणलाबांधेदप्रासीसा॥दोहा॥कहंसुंडिबगपतसुमो॥अब
यहकथारसाल॥हयसालालेबांधन॥वीसभुजादप्रामाल॥२९६॥चौपई॥

५३

राम
५२

सकलत्राइदेषहिंनरनारी॥मारहिंलातहसैंदेतारी॥नामनकहैरहैसकुचाना
॥वक्रविधिरचतनृपहिसुजाना॥न्टत्यकरहिंरंभादिकनारी॥दशाक्रमाथ्यद
पूदीपकबारी॥कञ्चुकदिवसएहिभांतिगमावा॥सोपुलस्त्यमुनिजाइछुटा
वा॥चलातुरंतमहाअभिमानी॥नलकूबरकेआपनिरानी॥मारगजातदेषि
बिबुधारी॥अतिसुंदरीअनूपबरनारी॥चंदनपुष्पपत्रकरधारी॥सजनलीजा वे
पत्रिपुरारी॥देषिनवेषीमनसकुचानी॥तवरावनवोलेमृदुबानी॥ दोहा ॥ निक
टजाइदशाकंधतब॥गईअंकभरिलीन्ह॥पुत्रहिवधूकुवेरके॥नहिंविचारकछुकी
न्ह॥१०७ चौपई॥चिन्हित्रियहिमनबिस्मयनयऊ॥लंकेश्वरलंकामहंगयऊ॥च
लितवेवधूआईतहां॥अलकापुरिनलकूबरजहां॥समाचारसबपतिहिसुना
वा॥सुनीकथामनअतिदुषपावा॥दीन्हआपकरिक्रोधअपारा॥रावनबंशहोइद्त
यकारा॥चलीआपलंकामहंआई॥दशाकंदरबैठेजेहिगई॥आगेआइठा
ढ़ाआपा॥तवलंकेश्वरअतिभयकांपा॥सडरसकोपचितवतेहिओरा॥नल
कूबरकआपअतिघोरा॥दोहा॥आपहिअंगीकारकरि॥मनमहंकीन्हविचार
ऋषिनदंडनहिंदीन्हेउ॥राषेउलंककुआर॥१०८ चौपई॥इतचारतेहिपठव

नबानी ॥ भरद्वाज मुनि कथा बषानी ॥ आये दूत ऋषिन के गेहा । देषत सब डरू भये
संदेहा ॥ सबहि ऋषि यक हां पगु धारा ॥ अहहिं कुल लंके भानु अपारा ॥ तात कु
शल अब नहू बिपरीता ॥ तुम सन मांगहिं दंड अनीता ॥ देहो दंड अस कहे नरि
साई ॥ के गिरि कंदरन्हि जाहु पराई ॥ सुनि अस बचन सबहिं डर पावा ॥ तुरत बेगि
एक पात्र मंगावा ॥ सब मिलि कर बिचार एक ठाये ॥ नषि घट रुधिर ऋषि यले आये
॥ दूतन कहें सौंपो मुनि ग्यानी ॥ होइ स कोप बोले मृदु बानी ॥ दोहा ॥ घटन घरत द्व
यहो दूरी ॥ सकल सहित परिवार ॥ लेइ दूत जहं आयऊ ॥ तहं लंके शानु अपार
॥ १०९ ॥ चौपई ॥ आगे आय धरा घट भारी ॥ देष सकल लंकापति धारी ॥ बोलेन्हि
बचन कहा है नाई ॥ सकल कथा तिन्ह नृपहि सुनाई ॥ एहि घट ते लंकापति नासा ॥
॥ सब दूतन अस बचन प्रकासा ॥ यहि घट ते न तर दिषि जाहू ॥ जतन समेत देहू
लेकाहू ॥ सुनि नृप बचन चले सब कैसे ॥ जनक राय के देशहि पैसे ॥ हेतु कूंभ धरि
चले बिचारी ॥ तहां प्रगट भइ दिव्य कुमारी ॥ जगजननी को बरनै पारा ॥ राजा जनक
तहां पगु धारा ॥ कन्या देषि अ नृप न बानी ॥ सुता मांति राजा गृह आनी ॥ नाम जानु
की परम पुनीता ॥ नारद आनि कहेउ मुनि सीता ॥ दोहा ॥ सकल कथा नृप जनक सो

नारदकहाबखानि ॥ सकलसलछणलछिगुण ॥ जगदंबामनजानि ॥२०६॥ चौपई ॥ कहि
जेकथाअरुबिराधसिधाये ॥ बहुरिहूतलंकापुरआये ॥ कहिनजाइअपराधहमराखी सो
शंकरगिरिजासनभाषी ॥ यातेकन्यकामुनिकथारसाला ॥ साधुसाधुमुनिपरमकृपा
ला ॥ उनिमुनिकहेतुकथाउपदेसा ॥ जगजीतेसबलंकनरेसा ॥ चारिगननहारेसि
नयत्रासा ॥ सकलदेवकीन्हेनिजदासा ॥ मेघनादकहतुनिहंकारा ॥ दीन्हसीरव
बचखबदावा ॥ जेसुरसमरधारबलचाना ॥ जिनकेलरिवेकोअभिमाना ॥ तिन
हिजीतरणआनसिबांधी ॥ जविसुतपितुअनुशासनसांधी ॥ इहिविधिसबही
आसादीन्हा ॥ आपुनिचलेनगद्दाकरलीन्हा ॥ चलतदशाननडोलतअवनी ॥
गर्जतगर्भस्रवतसुररवनी ॥ रावणआवतसुनेकुंसकोहा ॥ देवनतकेनमेरुगि
रिघोहा ॥ हगपालनकेलोकसिधाये ॥ सलेसकलदशाननपाये ॥ उनिमुनिसिंघना
दकरिभारा ॥ देइदेवतनमारिप्रचारी ॥ रणमदमत्तफिरैजगधावा ॥ छतिमटखो
जतकतहूंनपावा ॥ रविशशिपवनबरुणधनुधारी ॥ अग्निकालयमसबअधि
कारी ॥ किंनरसिद्धमनुजसुरनागा ॥ हविसबहीकेपंथहिलागा ॥ ब्रह्मसृष्टिज
हलगितनुधारी ॥ दशमुषपैसबत्रीनरनारी ॥ आपमुकरहिंसकलनयभीता

ब

बाल०
५५

नवहिं आइ नित चरण विनीता ॥ दोहा ॥ भुजबल विश्व वश्य करि राखेसि कोउ न
स्वतंत्र ॥ मंडलीक मनि रावण ॥ राज करै निज मंत्र ॥ देव यक्ष गंधर्व नर ॥ किन्नर ना
गकुमार ॥ जीत वरी निज बाहुबल ॥ बहु सुंदर वर नार ॥ १८२ ॥ चौपई ॥ इंद्रजीत सन
जो कछु कहेऊ ॥ सो सब जनि पहिले करि रहेऊ ॥ प्रथम हिं जिन्ह कह आयसु दी
न्हा ॥ तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा ॥ देषत भीम रूप सब पापी ॥ निशाचर निकर दे
व परितापी ॥ करहिं उपद्रव असुर निकाया ॥ नाना रूप धरहिं करि माया ॥ जेहि वि
धि होइ धर्म निर्मूला ॥ सो सब करहिं वेद प्रतिकूला ॥ जेहि जेहि देश धेनु द्विज पाव
हिं ॥ नगर ग्राम पुर आगि लगावहिं ॥ शुभ आचरण कतहु नहिं होई ॥ वेद विप्र गु
रु मान न कोई ॥ नहिं हरि भक्ति यज्ञ जप दाना ॥ सपनेहु सुनिय न वेद पुराना ॥ छं
द ॥ जप योग विरागा तप मख भागा श्रवण सुनै दशशीसा ॥ आपुनि उठि धावै रहै न पा
वै धरि सब घालै खीसा ॥ अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना ॥ तेहि बहु
विधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना ॥ सोरठा ॥ वरणि न जाइ अनीति ॥ घोर नि
शाचर जो करहिं ॥ हिंसा पर अति प्रीति तिनके पापहि कवन मिति ॥ १८३ ॥ चौपई ॥
बाढे बहु खल चोर जुआरी ॥ जे लंपट पर धन पर नारी ॥ मानहिं मातु पिता नहिं देवा

ना

राम
५५

गईतहांजहांसुरमुनिझारी निजसंतापसुनाइसिरोई +

साधुनसोकरवावहिंसेवा॥जिनकेयहआचरणभवानी॥तेजानऊनिसाचरसमप्रानी
॥अतिशयदेखिधर्मकीहानी॥परमसभीतधराअकुलानी॥गिरिसरिसिंधुभारन
हिंमोही॥जसमोहिगरुअएकपरद्रोही॥सकलधर्मदेखहिंविपरीता॥कहिन
सकैरावणभयभीता॥धेनुरूपधरिहृदयविचारी॥काहूतेकछुकाजनहोइ॥छं
द॥सुरमुनिगंध्रवामिलिकरिसर्वागयेविरंचिकेलोका॥२०३॥संगगोतनुधारीभूमि
विचारीपरमविकलभयशोका॥ब्रह्मासबजानामनअनुमानामेरोकछुनबसाई
॥जाकरितेंदासीसोअविनासीहमरोतोरसहाई॥सोरठा॥धरणिधरऊमनधीर॥क
हविरंचिहरिपदसुमिरि॥जानतजनकीपीर॥प्रभुभंजहिदारुणविपति॥२०४॥चौपई॥
वैठेसुरसबकरहिंविचारा॥कहपाइयप्रभुकरियपुकारा॥पुरवैकुंठजानकहको
ई॥कोइकहपयनिधिमहंबसप्रभुसोई॥जाकेहृदयभक्तिजसप्रीती॥प्रभुतेहप्रगटस
दायहरीती॥तेहिसमाजगिरिजामैंरहेऊ॥अवसरपायबचनइककहेऊ॥हरि
व्यापकसर्वत्रसमाना॥प्रेमतेप्रगटहोहिंमैंजाना॥देशकालदिशिविदिशिहुंमाहीं॥
कहहुसोकहांजहांप्रभुनाहीं॥अगजगमयसबरहितविरागी॥प्रेमतेप्रभुप्रगटेजिमिआ
गी॥मोरबचनसबकेमनमाना॥साधुसाधुकरिब्रह्मबखाना॥दोहा॥सुनिबिरंचिमनह

र्तन॥पुलकनयनवहनीर॥अस्तूतिकरतसजोरकरि॥सावधानमतिधीर॥छंद॥
जयजयसुरनायकजनसुषदायकप्रणतपालभगवंता॥गोद्विजहितकारिजयअसु
रारीसिंधुसुताप्रियकंता॥पालकसुरधरणीअद्भुतकरणीमर्मनजानेकोई॥सोसह
जक्रपालादीनदयालाकरोअनुग्रहसोई॥जयजयअविनासीसबघटबासीव्याप
कपरमानंदा॥अविगतगोतीताचरितपुनीतामायारहितमुकुंदा॥जेहिलागिबि
रागीअतिअनुरागीबिगतमोहमुनिवृंदा॥निसवासरध्यावहिंहरिगुणगावहिं
जयसच्चिदानंदा॥जेहिसृष्टिउपाईत्रिविधबनाईसंगसहायनदूजा॥सोकरउं
अघारीचिंतहमारीजानियभक्तिनपूजा॥जोभवभयभंजनमुनिमनरंजनगंजन
बिपतिबरूथा॥मनबचक्रमबानीछाडिसयानीशरणसकलसुरयूथा॥शारदश्रु
तिशेषाऋषयअशेषाजाकहकोउनहिजाना॥जेहिदीनपियारेवेदपुकारेद्रवोसो
श्रीभगवाना॥भवबारिधिमंदरसबविधिसुंदरगुणमंदिरसुषपुंजा॥मुनिसिद्धस
कलसुरपरमभयातुरनमतनाथपदकंजा॥दोहा॥जानिसभयसुरभूमिमुनि
॥बचनसमेतसनेह॥गगनगिरागंभीरभइहरणिशोकसंदेह॥२०॥६॥चौपई॥
जनिडरपहुमुनिसिद्धसुरेशा॥तुमहिलागिधरिहौंनरवेषा॥अंशनसहित

मनुजअवतारा॥ लैहौंदिनकरबंसउदारा॥ कस्यपअदितिमहातपकीन्हा॥ तिनकहु
मैंपूरबबरदीन्हा॥ तेदसरथकौसल्यारूपा॥ कोसलपुरीप्रगटनरभूपा॥ तिनकेगृह
अवतरिहौंजाई॥ रघुकुलतिलकसोचारिउभाई॥ नारदबचनसत्यसबकरिहौं
॥ परमसक्तिसमेतअवतरिहौं॥ हरिहौंसकलभूमिगरुआई॥ निर्भयहोहुदेव
समुदाई॥ गगनब्रह्मबानीसुनिकाना॥ तुरतफिरेसुरहृदयजुडाना॥ तबब्रह्माधर
णिहिसमुझावा॥ अभयभईभरोसजियआवा॥ निजलोकहिबिरंचिगये॥ देवनह
हसिखाइ॥ बानरतनुधरिधरिमहि॥ हरिपदसेवहुजाइ॥२०७॥ चौपई॥ गयेदेव
सबनिजनिजधामा॥ भूमिसहितपायेबिश्रामा॥ जोकछुआयसुब्रह्मेदीना॥ हरषे
देवबिलंबनकीन्हा॥ बनचरदेहधरीछितिमाहीं॥ अतुलितबलप्रतापतिनपाहीं॥ गि
रितरुनखआयुधसबबीरा॥ हरिमार्गचितवहिंरणधीरा॥ गिरिकाननजहंतहंभर
पूरी॥ रहनिजनिजअनीकरचिरूरी॥ यहसबरुचिरचरितमैंभाषा॥ अबसोसुनहु
जोबीचहिराषा॥ अवधपुरीरघुकुलमणिराऊ॥ बेदबिदिततेहिदसरथनाऊ॥ ध
र्मधुरंधरगुणनिधिग्यानी॥ हृदयभक्तिमतिसारंगपानी॥ दोहा॥ कौशिल्यादिकनारिप्रि
य॥ सबआचरणपुनीत॥ पतिअनुकूलसप्रेमदृढ॥ हरिपदकमलविनीत॥२०८॥

बाल० ५१

चौपई ॥ एकबारभूपतिमनमाही ॥ भैगलानिमोरेसुतनाहीं ॥ गुरुग्रहगयेतुरतम
हिपाला ॥ चरणलागिकरिबिनयबिशाला ॥ निजदुषसुषन्रपगुरुहिसुनायेउ ॥
॥ कहिबशिष्टबहुबिधिसमुझायेउ ॥ धरहुधीरहोइहिंसुतचारी ॥ त्रिभुवनबिदि
तभक्तभयहारी ॥ शृंगीऋषिहिबशिष्टबुलावा ॥ पुत्रलागिशुभयज्ञकरावा ॥ भक्ति
सहितमुनिआहुतिदीन्हे ॥ प्रगटेअगिनिचरूकरलीन्हे ॥ जोबशिष्टकछुहृदय
बिचारा ॥ सकलकाजभासिद्धितुम्हारा ॥ यहहविबांटिदेहुनृपजाही ॥ यथायोग
जेहिभागबनाई ॥ दोहा ॥ तबअदृश्यभयेपावकसकलसभहिसमुझाइ ॥ परमानं
दमगननृप ॥ हर्षनहृदयसमाइ ॥ २०८ ॥ चौपई ॥ तबहिरायप्रियनारिबुलाई ॥ कौ
शल्यादितहांचलिआई ॥ अर्धभागकौशल्यहिदीन्हा ॥ उभयभागआधेकरकी
न्हा ॥ कैकयीकहैसोनृपलैदयेउ ॥ रहेउसोउभयभागपुनिभयेऊ ॥ कौशल्याकैक
यीहाथधरि ॥ दीन्हसुमित्रहिमनप्रसन्नकरि ॥ एहिबिधिगर्भसहितसबनारी ॥ भय
उहृदयहर्षितसुषभारी ॥ जादिनतेहरिगर्भहिआये ॥ सकललोकसुषसंपति
छाये ॥ मंदिरमेंसबराजहिंरानी ॥ शोभाशीलतेजकीषानी ॥ सुषयुतकछुककाल
चलिगयेऊ ॥ जेहिप्रभुप्रगटसोअवसरभयेऊ ॥ दोहा ॥ योगलगनग्रहवारतिथि

राम ५१

सकलनयेअनुकूल॥ चरअरुअचरहर्षयुत रामजन्मसुषमूल॥२०९॥ चौपई॥
नवमीतिथिमधुमासपुनीता॥ सुकलपक्षअभिजितहरिप्रीता॥ मध्यदिवसअति
सीतनधामा॥ पावनकाललोकविश्रामा॥ सीतलमंदसुरभिबहबाऊ॥ हर्षितसु
रसंतनमनचाऊ॥ बनकुसुमितगिरिगणमणिआरा॥ श्रवहिंसकलसरितामृत
धारा॥ सोअवसरबिरंचिजबजाना॥ चलेसकलसुरसाजिबिमाना॥ गगनविमल
संकुलसुरयूथा॥ गावहिंगुणगंधर्वबरूथा॥ बरषिसुमनसुरअंजुलिसाजी॥ गह
गहगगनदुंदुभीबाजी॥ अस्तुतिकरहिंनागमुनिदेवा॥ बहुविधलावहिंनिज
निजसेवा॥ दोहा॥ सुरसमूहबिनतीकरी॥ पहुंचेनिजनिजधाम॥ जगनिवासप्र
भुप्रगटे॥ अखिललोकबिश्राम॥२१०॥ चौपई॥ छंद॥ नयेप्रगटकृपालादीनद
यालाकौशल्याहितकारी॥ हर्षितमहतारीमुनिमनहारीअद्भुतरूपनिहारी॥ लो
चनअभिरामातनुघनश्यामानिजआयुधभुजचारी॥ भूषणबनमालानयनबि
शालाशोभासिंधुषरारी॥ कहदुइंकरजोरीअस्तुतितोरीकेहिबिधिकरौंअन
नंता॥ मायागुणज्ञानातीतअमानाबेदपुराणभनंता॥ करुणासुषसागरसब
गुणआकरजेहिगावहिंश्रुतिसंता॥ सोममहितलागीजनुअनुरागीप्रगटनये

श्रीकंता ॥ ब्रह्मांडनिकाया निर्मितमाया रोमरोमप्रतिबेदकहै ॥ ममउरसोवासीयह
उपहासीसुनतधीरमतिथिरनरहै ॥ उपजाजबग्यानाप्रभुमुसुकाना चरितबहु
तबिधिकीन्हचहैं ॥ कहिकथासुनाईमातुबुझाई जेहिप्रकारसुतप्रेमलहैं ॥ माता
पुनिबोलीसोमतिडोली तजहुंतातयहरूपा ॥ कीजैसिसुलीला अतिप्रियसीला
यहसुषपरमअनूपा ॥ सुनिबचनसुजाना रोदनठाना होयबालकसुरभूपा ॥ यह
चरितजोगावहिं हरिपदपावहिं तेनपरहिंभवकूपा ॥ दोहा ॥ बिप्रधेनुसुरसंत
हित ॥ लीन्हमनुजअवतार ॥ निजइच्छानिर्मिततनु ॥ मायागुणगोपार ॥ २११ ॥ चौ
पई ॥ ॥ सुनिसिसुरुदनपरमप्रियबानी ॥ संभ्रमचलीआईसबरानी ॥ हर्षित
जहंतहंधाईदासी ॥ आनंदमगनसकलपुरबासी ॥ दसरथपुत्रजन्मसुनि
काना ॥ मानहुंब्रह्मानंदसमाना ॥ परमप्रेममनपुलकसरीरा ॥ चाहतउठनक
रतमतिधीरा ॥ जाकरनामसुनतसुभहोई ॥ मोरेगृहआवाप्रभुसोई ॥ परमानंद
पूरिमनराजा ॥ कहाबुलाइबजावहुबाजा ॥ गुरुबसिष्टकहंगयउहंकारा ॥
आयेद्विजनसहितनृपद्वारा ॥ अनुपमबालकदेषिनजाई ॥ रूपरासिगुणक
हिनसिराई ॥ दोहा ॥ नंदीमुषश्राद्धकरि ॥ जातकर्मसबकीन्ह ॥ हाटकधे

हिमिलनआईजनुरातीदेषिभानुजनुमनस
कुचानि लद १०

नूबसनमणि॥नृपविप्रनकहंदीन्ह॥२१२॥चौपई॥ध्वजपताकतोरणपुरछावा
॥कहिंनजाइजेहिभांतिबनावा॥सुमनवृष्टिआकाशतेहोई॥ब्रह्मानंदमगनस
बकोई॥वृंदवृंदमिलिचलीलुगाई॥सहजसिंगारकरैंउठिधाई॥कनककलसमंगल
भरिथारा॥गावतपैठहिंभूपद्वारा॥करिआरतीनिछावरकरहीं॥बारबारशिशुच
रणनपरहीं॥मागधसूतबंदिगणगायक॥पावनगुणगावहिंरघुनायक॥सर्वस
दानदीन्हसबकाहू॥जेहिंपावाराखानहिंताहू॥मृगमदचंदनकुंकुमसीचा॥मे
चीसकलवीथिनविचकीचा॥दोहा॥गृहगृहबाजबधावसुभ॥प्रगटभयेसुष
कंद॥हर्षवंतसबजहंतहं॥नगरनारिनरवृंद॥२१३॥चौपई॥कैकयसुतासुमि
त्रादोऊ॥सुंदरसुतजनमतभेओऊ॥वहसुषसंपतिसमयसमाजा॥कहिनस
केशारदअहिराजा॥अवधपुरीसोहेइहिभांती॥प्रभूंपिवनीसंध्याअनुमानी
अगरधूमजनुबहुअंधियारी॥उडेअबीरमनहुअरुणारी॥मंदिरमणिसमू
हजनुतारा॥नृपगृहकलसप्रासोइंदुउदारा॥भवननबेदधुनिअतिमृदुबानी॥
जनुषगमुषरसमयसुषमानी॥कौतुकदेषिपतंगभुलाना॥एकमासतेहिजा
तनजाना॥दोहा॥मासदिवसकादिवसभा॥मरमनजानेकोइ॥रथसमेतरविथा

बाल० ५९

केऊ॥ निष्ठा कवन बिधि होई॥२१४॥ चौपई॥ यह रहस्य काहू नहिं जाना॥ दिनमनि
चले करत गुण गाना॥ देषि महोत्सव सुर मुनि नागा॥ चले भवन बरनत निज भाग
ा॥ औरौ एक कहौं निज चोरी॥ सुनु गिरिजा अति दृढ मति तोरी॥ काकभुसुंडि सं
ग हम दोऊ॥ मनुज रूप जानै नहिं कोऊ॥ परमानंद प्रेम सुष फूले॥ बीथिन फिरि
हिं मगन मन भूले॥ यह सब चरित जान पै सोई॥ कृपा राम की जापर होई॥ तेहि अ
वसर जो जेहि बिधि आवा॥ दीन्ह नृप जो जेहि मन भावा॥ गज रथ तुरग हेम गो हीरा॥
दीन्हे नृप नाना बिधि चीरा॥ सं[illegible] चिरजीअऊ॥ [illegible]के ईस॥ दोहा
मन संतोषे सबनि के। जहं तहं देहिं असीस॥ सकल तनय चिरजीअऊ॥ तुलसीदा
स ईस॥२१५॥ चौपई॥ कछुक दिवस बीते इहि भांती॥ जात न जानहि दिन अरु राती
॥ नामकरण कर अवसर जानी॥ नृप बोलि पठये मुनि ग्यानी॥ करि पूजा नृपति
अस भाषा॥ धरिय नाम जो मुनि गुनि राषा॥ इनके नाम अनेक अनूपा॥ मैं नृप क
हब स्वमति अनुरूपा॥ जो आनंद सिंधु सुषरासी॥ सीकर ते त्रैलोक प्रकासी॥ सो
सुषधाम राम अस नामा॥ अखिल लोक दायक बिश्रामा॥ बिश्व भरण पोषण क
र जोई॥ ता कर नाम भरत अस होई॥ जाके सुमिरत ते रिपु नासा॥ नाम शत्रुहन

राम ५९

बेदप्रकासा॥ दोहा॥ लछणधामरामप्रिय॥ सकलजगतआधार॥ गुरुबशिष्टतेहिराखा
॥लछमणनामउदार॥२१६॥ चौपई॥ धरेनामगुरुहृदयबिचारी॥ बेदतत्वन्रपसु
तचारी॥ मुनिजनधनसर्वसशिवप्राना॥ बालकेलिरसतेहिसुषमाना॥ बारहिते
निजहितपतिजानी॥ लछमणरामचरणरतिमानी॥ भरतशत्रुहनदोनोभाई॥ प्र
भुसेवकजसप्रीतिबडाई॥ श्यामगौरसुंदरदोउजोरी॥ निरषहिंछबिजननीत्रण
तोरी॥ चारिउशीलरूपगुणधामा॥ तदपिअधिकसुषसागररामा॥ हृदयअनुग्र
हइंदुप्रकासा॥ सूचतकिरणमनोहरहासा॥ कबहुउछंगकबहुंबरपालन॥ मा
तुदुलारहिकहिप्रियलालन॥ दोहा॥ ब्यापकब्रह्मनिरंजन॥ निर्गुणबिगतबिनो
द॥ सोअजप्रेमभक्तिबस॥ कौशल्याकीगोद॥२१७॥ चौपई॥ कामकोटिछबिश्या
मशरीरा॥ नीलकंजबारिदगंभीरा॥ अरुणचरणपंकजनखजोती॥ कमलदलन
बैठेजनुमोती॥ रेषकुलिशध्वजअंकुशसोहें॥ नूपुरधुनिसुनिमुनिमनमोहें॥ क
टिकिंकिणीउदरत्रयरेषा॥ नाभिगंभीरजानिजेहिदेषा॥ भुजबिशालभूषणजु
तभूरी॥ हियहरिनखशोभाअतिरूरी॥ उरमणिहारपदिककीशोभा॥ बिप्रचर
णदेषतमनलोभा॥ कंबुकंठअतिचिबुकसुहाई॥ आननअमितमदनछबिछा

बाल० ६०

ई॥ दुइदुइ दसन अधर अरुणारे॥ नासा तिलक को बरनै पारे॥ सुंदर श्रवन सुचारु
कपोला॥ अति प्रिय मधुर सु तोतरि बोला॥ नील कमल दोउ नयन बिशाला॥ बिक
ट भृकुटि लटकन बर माला॥ चिक्कण कच कुंचित गभुआरे॥ बहु प्रकार रचि मातु
सवाँरे॥ पीत झगुलिया तन पहिराये॥ जानु पाणि बिचरत मंहि भाये॥ रूप सकहिं न
कहि श्रुति शेषा॥ सो जानै सपनेहु जिन्ह देषा॥ दोहा॥ सुष संदोह मोह पर॥ ज्ञाना
गिरा गोतीत॥ दंपति परम प्रेम बस। कर शिशु चरित पुनीत॥ १९८॥ चौपई॥ इहि बि
धि राम जगत पितु माता॥ कोशलपुर बासिन सुषदाता॥ जिन रघुनाथ चरण रति मा
नी॥ तिन की यह गति प्रगट भवानी॥ रघुपति बिमुष यतन कर कोरी॥ कवन स
कै भव बंधन छोरी॥ जीव चराचर बस कै राषे॥ सो माया प्रभु सो भय भाषे॥ भृकुटि
बिलास नचावै ताहीं॥ अस प्रभु छाडि भजिय कहु काहीं॥ मन क्रम बचन छाडि
चतुराई॥ भजत कृपा करिहैं रघुराई॥ इहि बिधि शिशु बिनोद प्रभु कीन्हा॥ सक
ल नगर बासिन सुष दीन्हा॥ लै उछंग कबहुक हलरावै। कबहू पालन घालि फुला
वै॥ दोहा॥ प्रेम मगन कोशल्या॥ निशि दिन जात न जान॥ सुत सनेह बस मात॥ बाल
चरित कर गान॥ १९९॥ चौपई॥ एक बार जननी अन्हवाये। करि सिंगार पलना

राम ६०

पौढाये ॥ निजकुलइष्टदेवभगवाना ॥ पूजाहेतुकीन्हअस्नाना ॥ करिपूजानैवेद्यचढावा
॥ आपुगईजहँपाकबनावा ॥ बहुरिमातुतहँवाचलिआई ॥ भोजनकरतदीषरघु
राई ॥ गइजननीसिसुपहभयभीता ॥ देखाबालतहांपुनिसूता ॥ बहुरिआयदेखा
सुतसोई ॥ हृदयकंपमनधीरनहोई ॥ इहांउहांदुइबालकदेषा ॥ मतिभ्रममोरि
किआनबिसेषा ॥ देषिरामजननीअकुलानी ॥ प्रभुहंसिदीन्हमधुरमुसुकानी ॥
दोहा ॥ दिखरावामातहिनिज ॥ अद्भुतरूपअखंड ॥ रोमरोमप्रतिलागेकोटि
कोटिब्रह्मंड ॥ २२० ॥ चौपई ॥ अगणितरविशशिशिवचतुरानन ॥ बहुगिरि
सरितसिंधुमहिकानन ॥ कालकर्मगुणदोषसुभाऊ ॥ सोदेखासुनानकाहू ॥ दे
खीमायासबविधिगाढी ॥ अतिसभीतजोरेकरठाढी ॥ देषाजीवनचावैजाही ॥
देखिभक्तिजोछोरेताही ॥ तनपुलकितमुषबचननआवा ॥ नयनमूंदिचरण
नसिरनावा ॥ बिस्मयवंतिदेषिमहतारी ॥ भयेबहुरिशिशुरूपखरारी ॥ अस्तु
तिकरिनजायभयमाना ॥ जगतपितामैंसुतकरिजाना ॥ हरिजननीहिबहुवि
धिसमुझाई ॥ यहजनिकतहूंकहसिसुनुमाई ॥ दोहा ॥ बारबारकौशल्या ॥ बि
यकरैकरजोरि ॥ अबजनिकबहूंब्यापै ॥ प्रभुमोहिमायातोरि ॥ २२१ ॥ चौपई ॥

॥॥ बालचरितहरिबहुबिधिकीन्हा॥अतिँनंददासनकहदीन्हा॥कछुककालबी
तेसबभाई॥बडेभयेपरिजनसुषदाई॥चूडाकरमकीन्हगुरुआई॥बिप्रनपुनि
दछिणाबहुपाई॥परममनोहरचरितअपारा॥दसरथअजिरबिचरप्रभुसोई॥
भोजनकरतबुलावतराजा॥नहिंआवहितजिबालसमाजा॥कौशल्याजबबोलन
जाई॥ठुमुकिठुमुकिप्रभुचलहिंपराई॥निगमनेतिशिवअंतनपावा॥ताहिधरेज
ननीहठिधावा॥धूसरधूरभरेतनुआये॥भूपतिबिहंसिगोदबैठाये॥दोहा॥भोज
नकरतचपलचित॥इतउतअवसरपाइ॥भाजिचलेकिलकातमुष॥दधिओद
नलपटाइ॥२२२॥चौपई॥बालचरितअतिसरलसुहाये॥शारदशेषशंभुश्रु
तिगाये॥जिनकरमनइनसननहिंराता॥तेजनबंचितकियेबिधाता॥भयेकुमा
रजबहिंसबभ्राता॥दीन्हजनेऊगुरुपितुमाता॥गुरुगृहगयेपढनरघुराई॥अल
पकालविद्यासबपाई॥जाकेसहजश्वासाश्रुतिचारी॥सोहरिपढयहकौतुकभा
री॥विद्याविनयनिपुणगुणशीला॥षेलहिंषेलसकलनृपलीला॥करतलबाण
धनुषअतिसोहा॥देषतरूपचराचरमोहा॥जिनबीथिनबिहरहिंसबभाई॥थकि
तहोहिंसबलोगलुगाई॥दोहा॥कोशलपुरवासीहिनर॥नारिबृद्धअरुबाल॥।

त्राणकृतेप्रियलागते॥ सबककहरामकृपाल॥ २२३॥ चौपई॥ बंधुसखासबलेहिंबुला
ई॥ बनमृगयानितखेलनजांही॥ पावनमृगमारहिंजियजानी॥ दिनप्रतिनृपहिदि
खावहिंआनी॥ जोमृगरामबाणकेमारे॥ तेतनुतजिसुरलोकसिधारे॥ अनुजसखा
संगभोजनकरहीं॥ मातुपिताआज्ञाअनुसरहीं॥ जेहिविधिसुखीहोहिंपुरलोगा॥
करहिंकृपानिधिसोइसंयोगा॥ वेदपुराणसुनहिमनलाई॥ आपुकहहिंअनुज
हिसमुझाई॥ प्रातकालउठिकेरघुनाथा॥ मातपितागुरुनावहिंमाथा॥ आयसु
मागिकरहिंपुरकाजा॥ देषिचरितहरषहिंमनराजा॥ दोहा॥ व्यापकअकल
अनीहअज॥ निर्गुणनामनरूप॥ भक्तहेतुनानाविधि॥ करतचरित्रअनूप॥ २२४
चौपई॥ यहसबचरितकहामैंगाई॥ आगिलकथासुनहुमनलाई॥ विश्वामित्र
महामुनिज्ञानी॥ बसहिंविपिनशुभआश्रमजानी॥ जहंजपयज्ञयोगमुनिकर
हीं॥ अतिमारीचसुबाहुहिडरहीं॥ देषतयज्ञनिशाचरधावहिं॥ करहिंउपद्रव
मुनिदुखपावहिं॥ गाधितनयमनचिंताव्यापी॥ हरिबिनुमरहिंननिशिचरपापी
॥ तबमुनिबरमनकीन्हबिचारा॥ प्रभुअवतरेउहरणमहिभारा॥ इहिमिसुदे
षौंप्रभुपदजाई॥ करिबिनतीआनौदोउभाई॥ ज्ञानविरागसकलगुणअय

ना॥ सो प्रभु मै देखब भरि नयना॥ दोहा॥ बहु बिधि करत मनोरथ। जात न लागी बार
करि मज्जन सरजू हि जल। गये नृप दरबार॥ २२५। चौपई॥ मुनि आगमन सु
ना जब राजा॥ मिलन गये लै बिप्र समाजा॥ करि दंडवत मुनी सनमानी॥ निज
आसन बैठारिन आनी॥ चरण पखारि कीन्ह अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहि
दूजा॥ विविधि भांति भोजन करिवावा॥ मुनि बर हृदय हर्ष अति पावा॥ पुनि च
रणन मेले सुत चारी॥ राम देखि मुनि बिरति बिसारी॥ भये मगन देखत मुख सोभा
॥ जनु चकोर पूरण ससि लोभा॥ तब मन हर्षि बचन कह राऊ॥ मुनि अस कृपा की
न्ह नहिं काऊ॥ केहि कारण आगमन तुम्हारा॥ कहहुं सो करत न लावउं बारा॥
असुर समूह सतावहिं मोही॥ मैं याचन आये नृप तोही॥ अनुज समेत देऊं रघु
नाथा॥ निसिचर बध मैं होब सनाथा॥ दोहा॥ देहु नृप मन हर्षि सुत तजऊं मोह
अग्याना॥ धर्म सुयश प्रभु तुम कहं इन कहं अति कल्यान॥ २२६॥ चौपई॥ सुनि
राजा अति अप्रिय बानी॥ हृदय कंप मुख दुति कुंमिलानी॥ चौथेपन पाये सु
त चारी॥ विप्र बचन नहि कहेउ विचारी॥ मांगहुं भूमि धेनु धन कोषा॥ सर्व
स देऊं आजु सहरोषा॥ देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं॥ सोउ मुनि देउं निमिष ए

कुमारी ॥ सबसुतप्रियमोहिप्राणकिनाई ॥ रामदेतनहिंबनेगोसाईं ॥ कहनिशाचरअ
तिघोरकठोरा ॥ कहसुंदरसुतपरमकिशोरा ॥ सुनिनृपगिराप्रेमरससानी ॥ हृदयहर्ष
मानामुनिग्यानी ॥ तबबशिष्टबहुविधिसमुझावा ॥ नृपसंदेहनाशकहंपावा ॥ अ
तिआदरदोउतनयबुलाये ॥ हृदयलाइबहुभांतिसिखाये ॥ मेरेप्राणनाथसुतदोऊ ॥
तुमसुनिपिताआननहिंकोऊ ॥ दोहा ॥ सौंपेनृपतिरिषिहिसुत ॥ बहुविधिदेइअ
सीस ॥ जननीभवनगयेप्रभु ॥ चलेनाइपदसीस ॥ दोहा ॥ पुरुषसिंहदोउबीर
॥ हर्षिचलेमुनिभयहरण ॥ २२७ ॥ ॥ कृपासिंधुमतिधीर ॥ अखिलविश्वका
रणकरण ॥ २२८ ॥ चौपई ॥ अरुणनयनउरबाहुविशाला ॥ नीलजलदतन
श्यामतमाला ॥ कटिपटपीतकसेबरभाथा ॥ रुचिरचापशायकदुहुहाथा ॥ श्याम
गौरसुंदरदोउभाई ॥ विश्वामित्रमहानिधिपाई ॥ प्रभुब्रह्मण्यदेवमैंजाना ॥ मोहिल
गिपितातजेभगवाना ॥ चलेजातमुनिदीन्हदिखाई ॥ सुनिताडिकाक्रोधकरिधाई
॥ एकहिबानप्राणहरलीन्हा ॥ दीनजानतेहिनिजपददीन्हा ॥ तबऋषिनिजनाथ
हिजियचीन्हा ॥ विद्यानिधिकहविद्यादीन्हा ॥ जातेलागनछुधापियासा ॥ अतुलि
तबलतनतेजप्रकासा ॥ दोहा ॥ आयुधसकलसमर्पिके ॥ प्रभुनिजआश्रम

आनि॥ कंदमूल फल भोजन नहिं॥ दिये भक्ति हित जानि॥२२९॥ चौपई॥ प्रात कहा मु
नि सन रघुराई॥ निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई॥ होम करण लागे मुनि झारी॥
॥ आपु रहे मख की रखवारी॥ सुनि मारीच निशाचर क्रोही॥ लै सहाय धावा मुनि
द्रोही॥ बिनु फर बाण राम तेहि मारा॥ शत योजन गा सागर पारा॥ पावक शर सुबा
हु पुनि मारा॥ अनुज निशाचर कटक संघारा॥ मारि असुर द्विज निर्भयकारी॥
अस्तुति करहिं देव मुनि झारी॥ तहं पुनि कछुक दिवस रघुराया॥ रहे कीन्ह वि
प्रन पर दाया॥ भक्ति हेतु बहु कथा पुराना॥ कहं विप्र यद्यपि प्रभु जाना॥ तब मु
नि सादर कहा बुझाई॥ चरित एक देखिय प्रभु जाई॥ धनुषयज्ञ मुनि रघुकुल ना
था॥ हर्षि चले मुनिवर के साथा॥ आश्रम एक दीख मग माहीं॥ खग मृग जीव जंतु
तहं नाहीं॥ पूछा मुनिहि शिला प्रभु देखी॥ सकल कथा ऋषि कही विशेषी॥ दोहा॥
गौतम नारी श्राप वस॥ उपल देह धरि धीर॥ चरण कमल रज चाहती॥ कृपा करहु
रघुवीर॥२३०॥ छंद॥ परसत पद पावन शोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही॥ दे
खत रघुनायक जन सुखदायक सन्मुख होइ कर जोर रही॥ अति प्रेम अधीरा पु
लक शरीरा मुख नहिं आवे बचन कही॥ अतिशय बडभागी चरणन लागी युगल नय

इत्यादिकेशिनीतुनतिपियारी बहुप्रकारसंयतिपुरसीजा॥२

नजलधारवही॥धीरजमनकीन्हाप्रभुकहचीन्हारघुपतिक्रिपाभक्तिपाई॥अतिनि
र्मलवाणीअस्तुतिगनीज्ञानगम्यजयरघुराई॥मैंनारिअपावनिप्रभुजेपावनु
पावनरावणरिपुजनसुषदाई॥राजिवलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिसरनहि
आई॥मुनिश्रापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना॥देषेउंभरिलोच
नहरिभवमोचनयहैलाभसंकरजाना॥विनतीप्रभुमोरीमैमतिभोरीनाथन
वरमांगोआना॥पदकमलपरागारसअनुरागाममममनमधुपकरैपाना॥जेहि
पदसुरसरितापरमपुनीताप्रगटभईशिवसीसधरी॥सोइपदपंकजजेहिपद
पूजतअजममशिरधरेउक्रिपालहरी॥इहिभांतिसिधारीगोतमनारीवारंवार
हरिचरणपरी॥जोअतिमनभावासोवरपावागैपतिलोकअनंदभरी॥दोहा
॥असप्रभुदीनवंधुहरि।कारणरहितक्रिपाल॥तुलसिदाससठताहिभज।छाडिक
पटजंजाल॥२१२॥चौपई॥चलेरामलछमणमुनिसंगा॥गयेजहांजगपावनिगंगा
॥अनुजसहितप्रभुकीन्हप्रणामा॥वहुप्रकारसुषपायउरामा॥पुनसुरसरि
उतपतिरघुराई॥कौशिकसनपूछासिरनाई॥कहमुनिप्रभुतवकूलउडकरा।
जा॥नामसगरतिहूंलोकविराजा॥तिहिकेजुगनामिनिसुकुमारी॥वडकेशिनी

सुमति लघु पियारी॥ सब प्रकार संपति सुर आजा॥ सुत बिहीन मन बिस्मय राजा॥ ए
क समैं नामिनि दोउ साथा॥ गये बन तनय हेत रघुनाथा॥ सघन सुफल तरु सुंदर
नाना॥ तहां भृगु मुनि तप तेज निधाना॥ दोहा॥ सहित नारि नृप मुदित मन॥ रहे
बरष प्रात एक॥ कीन्हो तप बल देखि भृगु॥ अस्तुति कीन्ह अनेक॥ २२३॥ चौप०
कहि निज दुष प्रनाम नृप कीना॥ दै आसीस तब बर मुनि दीन्हा॥ नृप रानी सन मु
नि अस भाषा॥ लेहुं सू बर जो जिहि अभिलाषा॥ सुनि मुनि बचन सीस तिन नावा
देहु नाथ जो अति मन भावा॥ एकहि कहि इक सुत होना॥ दूसरि साठि सहस
गुन लोना॥ हरषित तनयो सुभग वरु पाई॥ पानि जोरि चरनन सिर नाई॥ सहित
भामिनी अवधहि आये॥ हरष सहित कछु दिवस गवाये॥ जानि सुघरि सुंदरे सुष
दाई॥ नाम केसिनी असमंजस जाई॥ सुमति प्रसव एक तुंबरि सोई॥ नय सुत प्र
गट कहे मुनि जोई॥ निरषे सुत्त हरषित सब होई॥ मंगलचार किये सब कोई॥ हरष
सहित दिये दान नरेसू॥ पूजि बिप्र गुरु गौरि गनेसू॥ घृत घट सुंदर बिबिध मंगाये
ते सब सुत नृपति नमकु नाये॥ दोहा॥ एहि बिधि नये जु सकल सुत॥ भजे सब म
न काम॥ जाइ दिवस निसि हरष बस॥ सुनहु राम घनस्याम॥ २२४॥ चौपई॥

पुरजिनसबघरघरलिनरेसू ॥ अतिअनंदतनमिटाअंदेसू ॥ बालकेलिकरनयेकु
मारा ॥ लीलाकरैंअगमसंसारा ॥ होइसोकाजसकलमनचीते ॥ एहिसुखबसतब
हुतदिनबीते ॥ सरजूनदीअवधिजोअहई ॥ बिमलसलिलउतरतटबहई ॥ प्रजा
लोककेबालकनाना ॥ नितउभितहांकरैंअस्नाना ॥ असमंजसतहंतरनीआनी
॥ तिनहिंचढायबोरनिजपानी ॥ नयेप्रजासबपरमदुखारी ॥ बालकवधसुनिमुन
दुखरारी ॥ सकलगयेजहांबेभिन्नपाला ॥ बोलेबचननायपदमाला ॥ तुमनृपच
होहिप्रजाप्रतिपाला ॥ सुततुम्हारभयासबककरकाला ॥ तजवदेससबसुनऊनरेसू
॥ बिनातजेनहिंमिटैकलेसू ॥ दोहा ॥ तबसुतकीनेउपापबकु ॥ मारेउबालकछं
द ॥ तुमकहप्राणसमानयह ॥ सकलप्रजनकेहमंद ॥ २५४ ॥ चौपई ॥ प्रजागिरा
सुनधीरजदीना ॥ सुतहिदेसतेबाहरकीना ॥ तासुतनयजगविदितप्रनाऊ ॥ गुन
निधअंसुमानतिहिनाऊ ॥ बसतहृदयनृपकेसेकैसे ॥ फुनिमनिमीनसलिलरहै
जैसे ॥ गयेप्रजासबनिजनिजधामा ॥ नयेविसोकमनगुणविश्रामा ॥ बहुरिनृपे
तमनकीनविचारा ॥ आइनयेनृपनबोधहमारा ॥ हितमंत्रीगुरुसुतऊबुलाये
॥ हिमगिरिविंध्यमध्यतबआये ॥ तबिरबेदिकाएकबनाई ॥ देवतबनइबरनि

नहिंजाई ॥ मखअरंभनछाडेतेलवतुरगा ॥ वेगिवंतजिमिदेषिपतुरगा ॥ दोहा ॥ सुर
पतिसुननयहारुणहि ॥ मनमहिकरअनुमान ॥ आयतुरगतबलीनेकुमर्म
नकोऊजान ॥ २२६ ॥ चौपई ॥ राखेतआनिकपिलमुनिपाही ॥ कोउनजानै
काऊहिगमनाही ॥ जगवतरहेजेसुभटसयाना ॥ लेतुरगरहेकिनजाना ॥ ति
नसबआनकहीनृपपाही ॥ महाराजहमकहतडराही ॥ लीनतुरगकेऊजान
नकोऊ ॥ कहाकरियसोआयसहोऊ ॥ सुनतवचननृपविस्मेपाये ॥ सकलसु
तनकहतुरतबुलाये ॥ जायतुरगतुमहेरऊजाई ॥ सकलचलेचरननसिरनाई
॥ तिनहिचलतधरनीअकुलाई ॥ वलिपसुजीवनयेसबआई ॥ सुमनवाटि
काउपबनबागा ॥ सरितकूपवापिकातडागा ॥ नगरगावमुनिआश्रमनाना
॥ गिरिकंदरकाननअस्थाना ॥ सुरपतिसमदेषिसबवीरा ॥ सकलधनुर्धरअति
रनधीरा ॥ दोहा ॥ एहिबिधिषोजततुरगतिन ॥ आयेनृपतिपाहि ॥ चरननमाथ
हनायकहि ॥ खोजअसकरनाहि ॥ २२७ ॥ चौपई ॥ खोदहुमहिसुतफेरपग
ये ॥ चलेसकलहरबदिसिनाये ॥ तिनकेकरजिमकुलिशसमाना ॥ जोजननि
रिखोदहिखलबाना ॥ देषिअतुलबलदेवडराने ॥ म[illegible]रनाहैबिरंचसनमाने ॥

सकल

सोधतमहीपतालसबआये ॥ दिग्गजदेषिएकसिरनाये ॥ तिनसभासबकथासुनाये
॥ बहुरिसकलदक्षणदिसिआये ॥ इहिविधिपुनिदूसरगजदेषा ॥ अतिउतंगगग
नबिमलविशेषा ॥ ताहूबहुप्रनामतिनकीने ॥ चलेछनतपछिमचितदीन्हे ॥ तीस
रदेषिप्रदक्षिनकीनी ॥ पुनिउतरदिसिसोधहिलीनी ॥ दिग्गजस्वेतनिरषिसुषपा
ये ॥ सकलकपिलमुनिपहिपुनिआये ॥ षोजतमहीपारनहिंपावा ॥ शोनाचकुंदि
शाजलधिसुहावा ॥ दोहा ॥ देषिनआपतुरंगतब ॥ बांधामुनिबरपास ॥ बोलेबचन
सकोपकरि ॥ नयावहसबकरनास ॥२५८॥ चौपई ॥ बोरामहिहमबारिउक्रोधा
॥ रेरेदुष्टबहुततोहिसोधा ॥ कोउकहिचोरदीषबहुकोई ॥ एहिसमछलीअव
रनहिंकोई ॥ परधनलैपतालमुनिआये ॥ तसकरमुनिबरभेषबनायो ॥ कोउक
हैयहमुनिबरनाहीं ॥ समुझदेखलक्षणमनमाहीं ॥ कोउकहबकतपकीन्हअपा
रा ॥ अहोदुष्टलैतुरंगहमारा ॥ सुनतबचनमुनिचितवातवही ॥ नयेनस्वछिनमें
सबजबहीं ॥ उमाबचनजिहसमुझनबोला ॥ सुधीहोयविपतिक्रमओला ॥ पाव
कजानिधरहिंकरप्रानी ॥ जरहिंकाहिननहिअतिअभिमानी ॥ जानगरलजेसंग्र
हकरहीं ॥ सुनहुरामतेकाहिनमरहीं ॥ क्रोधकरैबिनकियेविचारा ॥ नयेसकलतेहि

को

बाल० ६६

तेज रबि भारा॥ इहां नृपति असुमान बुलाये॥ नहि आये सब तिनहि पठाये॥ २२९॥ दो
हा॥ दीप नृपति आसीस तब॥ अति हित वार हि बार॥ वेगि फिरो ले तुरग सुत॥ मेरे
प्राण अधार॥ २२९॥ चौपई॥ चले नाइ पद सीस कुमारा॥ बिष्णु भक्ति तिह कुल उ
जियारा॥ जहां कहां निरखि मुनि न के धामा॥ करि प्रबर करि दंड प्रणामा॥ पन्नग
गन नाग सन पाइ असीसा॥ चक्रं दिग्गज कक्ष नावन सीसा॥ एहि विधि सोधत मग मक्ष
जाता॥ मिले गरुड सुमति कर भ्राता॥ चरन परस तब आशिष दयेऊ॥ जरे सकल जे
हि विधि सोक हेऊ॥ सुनत बचन सो चमयो भारी॥ लियेउ खगेस दिषाय लवारी॥ अं
सुमान तहं जन कीना॥ क्रम क्रम सब हित लांत लि दीना॥ वक्कु रि गरुड बोले सुन
भ्राता॥ मैं तोहि कहौं कारहि एक बाता॥ सोरठा॥ कर सुत सोइ उपाइ॥ गंगा आव
हिं अवनि मक्षु॥ दरसन ते अघ जाय॥ मज्जन कीने परम सुष॥ २४०॥ चौपई॥ ष
ष्टि सहस तरिहैं एही विधि॥ गंगा पाइ परम पावन निधि॥ सुन अस बचन हृदय म
न भाये॥ सहित गरुड सुन बरपहि आये॥ तब खगेश मुनि चरन नायेऊ॥ सब
कथा सकल मुन गायेऊ॥ आयसु देइ तुरग मुनि दीन्हा॥ हरषि हृदय निज अश्व
ह लीन्हा॥ नगर समीप गरुड पक्षुं चाई॥ गये भवन निज तव रघुराई॥ इहां तुरग

राम ६६

तैनृपश्रिरनाई॥ षट्सहस्रमुनकथासुनाई॥ बिस्मयहरखबिवसवसनृपभयेऊ
कीनोजज्ञदानबहुदयेऊ बहुबिधिनृपतिराजसुनिकीना॥ प्रजालोगकहअ
तिसुखदीना॥ दोहा॥ अंसुमानहितराजदे॥ निजमनहरिपदलागा॥ गयेउसमा
रतपकाजबन॥ हृद य अधिकअनुरागा॥२५१॥ चौपई॥ तासुतनयदिलीप
नृपभयऊ॥ मनुत पहेतनुतरदिग्गियेऊ॥ जहांअगमतपकीन्हनृपाला
॥ भयेकालबसगयेकछुकाला॥ कहहुकवनदिलीपउत्तताई॥ सेवैंसकल
नृपतिजिहआई॥ जुगवतनितजिहसुरपतिरहही॥ महिमातासुकविकिहबि
धिकहही॥ भागीरथअससुतभयोजासू॥ पितुसमनीतअधिकनरतासू॥ तिन्ह
हिबोलनृपदीनेराजू॥ आपचलेगवितपकेकाजू॥ मनमहंकरतपंथअनुमा
ना॥ सुरसरिआवतजगनतगाना॥ जिमभनुतनुदीनेगतिमिदेऊ॥ फिरनिजुनग
रकुनामनलेऊ॥ सोरठा॥ एहिबिधिकरतबिचार॥ नृपकीनेतवअबलतप॥ बी
तेकछुएककाल॥ देहतजीकोनप्रगटनहिं॥२५२॥ चौपई॥ ॥जेहिसुरस
रिलगतजेतननृपा॥ सोतजिमूढपियहजलकूपा॥ इहांभगीरथअससमनभये
ऊ॥ पितुनआवबहुदिनबलगयेऊ॥ कोकुस्थनामतनयएककरहेऊ॥ दीनारा

जनीतबक्रकहेऊ ॥ कहितबहुर्बकथा सुतपाहीं ॥ दीनअसीसचलेनरनाहीं ॥ नि
कसतनगरसगुनभलपाये ॥ अतहिनिबडबनतहांनृपआये ॥ देखिनगीरथबनसु
खपावा ॥ सुरसरिहिततपकरहुमनलावा ॥ एकचरनदोउभुजाउगाये ॥ रविसनमुखरा
खितबहिंमनलाये ॥ बरखसहसबीतेइहिभांति ॥ जातनजानेदिनअरुराती ॥ देखि
उतपअजिचलिआये ॥ बोलेबचननृपहिमनभाये ॥ बरहहिंनृपतिजोलेबरदाना
॥ बोलेनृपकरजोरिअजहिपुनामा ॥ जोमांगोसोजानतअहहू ॥ मोसनमागनयुतुकि
मकहहू ॥ दोहा ॥ तदपिकहेप्रभुदेहुबर ॥ ममसंतानकहहटछि ॥ हूसरमांगोजो
रिकर ॥ गंगाआवहिनिछि ॥ २४७ ॥ चौपई ॥ एवमस्तुकहिपुनिबिधिककहीं ॥ सु
रसरिदेहुंराखिको [illegible] सकहीं ॥ छूटजाहिपुनतुरतरसातल ॥ फिरहिनृपतिब
क्रिसुनिभूतल ॥ त [illegible] हितेकहौंएकतेहिपाहीं ॥ अतिदयालप्रभुकरमनमाहीं ॥
सोईप्रभुकोराखिदेवस [illegible] रिआजू ॥ उनहिजपेतबहोयहैकाजू ॥ असकहिबिधि
अंतरहितनये ॥ बक्रिनगीरथशिवपहंगये ॥ बिबुधबरषअंगुष्टअधारा ॥ बार
बारशिवकहुचारा ॥ शिवदयालप्रगटेतबआई ॥ हाथजोरिनृपबिनयसुनाई ॥ मैं
राखबसुरसरिकहईशा ॥ बक्रिउमापतिध्यानककरीषा ॥ दोहा ॥ उहांदेवसरि

२

जैसेरमनंतसिंधुतब हर्णकलालषचंद २४६९

शिवबचन॥सुनमनकीनबिचार॥जानरसातलशिवसहित॥जातनलावोबार॥२
४४॥चौपई॥अंतरजामीशिवहिनपाई॥निजसिरजटासोअगमबनाई॥रहांनगी
रथअस्तुतिकीनी॥सुनिमृदुगिराछाडिविधिदीनी॥छूटेसोरनयेनजगमारी॥
चकितदेवअरुदिग्गजचारी॥सुरसरिसुनिदरजटासमानी॥बर्षएकतहांरही
नवानी॥कौतुकदेषिसकलसुरहरषे॥कहिजयजयतिसुमनवकुबरषे॥बकुरि
नगीरथसुमिरनकीन्हा॥डारिजटाशिवबुंदकदीना॥तेहितेभईतीनसुनिधारी॥ए
कगईनभएकपतारी॥गईनभसोईअघकिनासनी॥देवनधरानाममंदाकिनी
दोहा॥इसरगईपतालमे॥नामभगावतिदरनकुप॥तीसरनदुगंगासोइ॥सब
संतनकूकरनसुष॥सलिलप्रवाहनिरषनृपति॥उरअतिनयेनअनंद॥२४५
चौपई॥आपनगीरथमुनिसिरनाये॥बोलीसुरसरिबचनसुहाये॥बेगवंतनृपर
थलेआनू॥तुरततुरगसुनगतिजिमिमानू॥तिहिरथचढिनृपचलभमआगे॥
चलिहौंतवपाछेलागे॥सुनिनृपदिव्यतुरगारथआना॥चलेहृदयसुमिरतभग
वाना॥चलीअग्रकरनृपहिसुरसरी॥देवहिमुदितसुमनझरकरी॥चलततेज
कछुबरनिनजाई॥टूटहिंगिरितरुसेलसुहाई॥करैकुलाहलविधिबकुभांती

कमठनक्रझषब्यालसोमाती ॥ मज्जनकरहिंदेवतहंआई ॥ मुनिगनसिद्धरहेसब
छाई ॥ सोरठा ॥ तरपनकरमनलाय ॥ हरषहृदयनहिंजायकहि ॥ दरसनतेअघ
जाय ॥ तरैसकलजनमुनकहै ॥ मज्जनकरहरपाइसुरअजादिसनकादिरिषि
पानकरतअघजाय ॥ असमतसबकोऊकहिं ॥ २६७ ॥ चौपई ॥ करैजोमज्जनज
पमनलाई ॥ तिहकीमहिमाकहिनसिराई ॥ संदनजानसोहैनृपकैसे ॥ तेजवंतर
विदेषियजैसे ॥ लाघितपोलसुहावनदेसा ॥ पाछेसुरसरिअयनरेसा ॥ हरद्वारस
मीपतबआये ॥ तीर्थदेषिसुरसरिमननाये ॥ तीरथनिरषमनभयासुखभा
री ॥ आइप्रयागपकुंचिअघहारी ॥ तहांमज्जनकीनेदुखजाई ॥ बहुरिदेवस
रिकापुरीआई ॥ सोशिवपुरीसहजसुखदाई ॥ बरनिनजायमनोहरताई ॥ अब
रैंतीर्थविविधिविधिजानी ॥ गईतहांकिमिकहुंबषानी ॥ मगलोगनकरुकरतस
नाथा ॥ जाइचलीएहिविधिरघुनाथा ॥ दोहा ॥ मिलीजायपुनितदधिमह ॥ उदधिहृ
दयसुषमान ॥ लगेकहननागीरथहि ॥ तुमसमधन्यनआन ॥ २६८ ॥ चौपई ॥ की
नोअसकरहीनहिकोई ॥ नपमहिमाबलकसनहिहोई ॥ सगरसुतनयतरेततत
काला ॥ हरषवंततवबनयोनृपाला ॥ अवरौंरहेहैंकुलमहिकोऊ ॥ तिनकेसंग

तरे अब ओऊ ॥ तुम समान नृप अबरन नयेऊ ॥ जग बिख्यात अचल जस लयेऊ ॥
सकल सुरन तहां संग विधाता ॥ नृप सन आय कही सब बाता ॥ धन्य नगीरथ जस
जग जयेऊ ॥ तुम समान नृप औरन नयेऊ ॥ अपनी सत्य प्रतिज्ञा कियेऊ ॥ संम
त बेद जनन सुख दियेऊ ॥ गंगा सागर सब कोउ कहहीं ॥ अघ नज लूक देषत तर
विडरहीं ॥ भागीरथी नाम और कहहीं ॥ सुन सुर सिद्ध नाग जस लहहीं ॥ अस वि
धि कहि निज लोक हि आये ॥ जहां नगीरथ अति सुख पाये ॥ छंद ॥ पायो अमि
त सुख बक्रि रिह जा सुरसरि हि मन लायके ॥ सब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृप
नवन सुख पायकै ॥ इह भांति मुनि गंगा कथा तब राम रिषि चरनन नये ॥ कहै
दास तुलसी राम लषन हि महा मुनि आशिष दिये ॥ दोहा ॥ कौशिक आशिय अ
मिय सम ॥ पाय हरष रघुराज ॥ प्रभु संप्राय सब इम गाई ॥ नेत्र निरषि जिमि बा
ज ॥ आशि षसुधा समान सुनि ॥ हरषे श्री रघुनाथ ॥ प्रभु सब पाइ कहे तु मुनि
॥ वेग चलिय मुन नाथ ॥ २४९ ॥ चौपई ॥ राम नाम तैं संप्राय जाइ ॥ देह धरे केयह
के यह फल पाई ॥ गाधि सुवन सब कथा सुनाई ॥ जेहि प्रकार सुरसरि महि आइ ॥
तब प्रभु ऋषिन समेत अन्हाये ॥ विविधि दान महिदेवन पाये ॥ हरषि चले मुनि

वृंदसहाया॥ वेगिविदेहनगरनियराया॥ पुररम्यतारामजबदेषी॥ हरषेअनुज
समेतविशेषी॥ वापीकूपसरितसरनाना॥ सलिलसुधासममणिसोपाना॥ गुंजत
मंजुमत्तरसभृंगा॥ कूजतकलबहुवरणविहंगा॥ दोहा॥ सुमनबाटिकाबागवन
॥विपुलविहंगनिवास॥ फूलतफलतसपल्लवित॥ सोहतपुरचहुंपास॥ २
१०॥ चौपई॥ बनैनबरनतनगरनिकाई॥ जहांजायमनतहांलुभाई॥ चारुब
जारबिचित्रअटारी॥ मणिमयविधिजनुस्वकरसंवारी॥ धनिकवणिकबर
धनदसमाना॥ वैठेसकलवस्तुलैनाना॥ चौहटसुंदरगलीसुहाई॥ संततरहहिं
सुगंधसिंचाई॥ मंगलमयमंदिरसबकेरे॥ चित्रितजनुरतिनाथचितेरे॥ पुरनर
नारिसुभगसुचिसंता॥ धर्मशीलज्ञानीगुणवंता॥ अतिअनूपजहंजनकनिवा
स॥ विथकहिंविबुधविलोकिविलास॥ होतचकितचितकोटविलोकी॥ सक
लभुवनशोभाजनुरोकी॥ दोहा॥ धवलधाममणिपुरटपट॥ सुघटितनाना
भांति॥ सियनिवाससुंदरसदन॥ शोभाकिमिकहिजाति॥ चौपई॥ सुभगद्वारस
बकुलिशकपाटा॥ भूपभीरनटमागधभाटा॥ बनीविशालबाजिगजसाला॥
हयरथगयसंकुलसबकाला॥ सूरसचिवसेनपबहुतेरे॥ नृपगृहसरिससदन

सबकेरे॥ पुरबाहिरसरसरितसमीपा॥ उतरेजहंतहं बिपुलमहीपा॥ देखिअनूपएक
अंबराई॥ सबसुपाससबभांतिसुहाई॥ कौशिककहेउमोरमनमाना॥ इहांरहिय
रघुबीरसुजाना॥ भलेहिनाथकहिकृपानिकेता॥ उतरेतहंमुनिबृंदसमेता॥ बिश्वा
मित्रमहामुनिआये॥ समाचारमिथिलापतिपाये॥ दोहा॥ संगसचिवसुचिभूरि
भट॥ भूसुरबरगुरुग्याति॥ चलेमिलनमुनिनायकहि॥ मुदितराउइहिभांति॥
२१४॥ चौपई॥ कीन्हप्रणामधरणिधरमाथा॥ दीनअसीसमुदितमुनिनाथा॥ बिप्र
बृंदसबसादरबंदे॥ जानिभाग्यबडराउअनंदे॥ कुशलप्रश्नकहिबारहिबारा
॥ बिश्वामित्रनृपहिबैठारा॥ तेहिअवसरआयेदोउभाई॥ गयेरहेदेखनफुल
वाई॥ श्यामगौरमृदुबयसकिशोरा॥ लोचनसुखदबिश्वचितचोरा॥ उठेसक
लजबरघुपतिआये॥ बिश्वामित्रनिकटबैठाये॥ भयेसबसुखीदेखिदोउ
भ्राता॥ बारिबिलोचनपुलकितगाता॥ मूरतिमधुरमनोहरदेखी॥ भयेउ
बिदेहबिदेहबिशेषी॥ दोहा॥ प्रेममगनमनजानिनृप॥ करिबिबेकधरि
धीर॥ बोलेउमुनिपदनाइसिर॥ गद्गदगिरागंभीर॥ २१५॥ चौपई॥ कहहु
नाथसुंदरदोउबालक॥ मुनिकुलतिलककिनृपकुलपालक॥ ब्रह्मजोनि

रामनेतिकहिगावा॥उभयबेषधरिसोइकिआवा॥सहजबिरागरूपमनमोरा
॥थकितहोतजिमिचंदचकोरा॥तातेप्रभुपूछौंसतभाऊ॥कहहुनाथजनिक
रहुदुराऊ॥इनहहिबिलोकतअतिअनुरागा॥बरबसब्रह्मसुखहिमनत्यागा॥क
हमुनिबिहंसिकहेहुनृपनीका॥बचनतुम्हारनहोयअलीका॥येप्रियसबहिजहां
लगिप्रानी॥मनमुसुकाहिरामसुनिबानी॥रघुकुलमणिदसरथकेजाये॥ममहि
तलागिनरेसपठाये॥ दोहा ॥रामलषनदोउबंधुबर॥रूपशीलबलधाम॥मष
राषेउसबसाषिजग॥जीतिअसुरसंग्राम॥२५४॥ चौपई ॥मुनितवचरणदेषिक
हराऊ॥कहिनसकौंनिजपुण्यप्रभाऊ॥सुंदरस्यामगौरदोउभ्राता॥आनंदहूके
आनंददाता॥इनकीप्रीतिपरस्परपावनि॥कहिनजायमननावसुहावनि॥सुनहु
नाथकहमुदितबिदेहू॥ब्रह्मजीवइवसहजसनेहू॥पुनिपुनिप्रभुहिचितयनरना
हू॥पुलकगातउरअधिकउछाहू॥मुनिहिप्रशंसिनायपदसीसा॥चलेलिवायन
गरअवनीसा॥सुंदरसदनसुखदसबकासा॥तहांवासलैदीनभुआवा॥करिपूजा
सबबिधिसेवकाई॥गयउराउग्रहबिदाकराई॥ दोहा ॥रिषयसंगरघुबंसमणि॥क
रिभोजनबिश्राम॥बैठेप्रभुभ्रातासहित॥दिवसरहाभरियाम॥२५५॥ चौपई ॥ल

षनहृदयलालसाविशेषी॥ जाइजनकपुरआइयदेषी॥ प्रभुभयबहुरिमुनिहिंसकु
चाहीं॥ प्रगटनकहहिंमनहिंमुसुकाहीं॥ रामअनुजमनकीगतिजानी॥ भक्तबछल
ताहियहुलसानी॥ परमविनीतसकुचिमुसुकाई॥ बोलेगुरुअनुशासनपाई॥ नाथ
लषनपुरदेषनचहहीं॥ प्रभुसकोचडरप्रगटनकहहीं॥ जोराउरआयसुमैंपाऊं
॥ नगरदेषाइतुरतलैआयऊं॥ सुनिमुनीसकहबचनसप्रीती॥ कसनरामराषहु
तुमनीती॥ धर्मसेतुपालकतुमताता॥ प्रेमविवससेवकसुषदाता॥ दोहा॥ जाइदेषि
ग आवहुनगर॥ सुषनिधानदोउभाई॥ करहुसुफलसबकेनयन॥ सुंदरबदनदिषा
२५६॥ चौपई॥ मुनिपदकमलबंदिदोउभ्राता॥ चलेलोकलोचनसुषदाता॥ बालक
बृंददेषिअतिशोभा॥ लगेसंगलोचनमनलोभा॥ पीतबसनपरिकरकटिभाथा क
॥ चारुचापशरसोहतहाथा॥ तनअनुहरतसुचंदनषोरी॥ स्यामलगौरमनोहरजो
री॥ केहरिकंधरबाहुबिशाला॥ उरअतिरुचिरनागमणिमाला॥ सुनगश्रव सुचंसब
णसरसीरुहलोचन॥ वदनमयंकतापत्रयमोचन॥ कान्हनकनकफूलछबि
देहीं॥ चितवतचितहिंचोरिजनुलेहीं॥ चितवनिचारुभृकुटिबरबांकी॥ तिलक
रेषशोभाजनुचाकी॥ दोहा॥ रुचिरचौतनीसुभगशिर॥ मेचककुंचितकेश॥ नखशिख

वाल० ७१

६

सुंदरबंधुदोउ॥ष्रोनामकलसुदेषु॥ चौपई॥ देषननगरनृपसुतआये॥समाचारपु
रवासिनपाये॥धायेधामकामसबत्यागे॥मनहुरंकनिधिलूटनलागे॥निरषिसह
जसुंदरदोउभाई॥होंहिसुषीलोचनफलपाई॥जुवतीभवनझरोषनिलागी॥
निरषहिंरामरूपअनुरागी॥कहहिंपरस्परबचनसप्रीति॥सषिइनकोटिकामछबि
जीति॥सुरनरअसुरनागमुनिमांही॥शोभाअसकहंसुनियतनांही॥बिष्णुचारि
भुजविधिमुखचारी॥बिकटभेषमुषपंचपुरारी॥अपरदेवअसकोजगआही॥
इहिछबिसषिपटतरियेजांही॥ दोहा॥ वयकिशोरसुषमासदन॥स्यामगौरसुष
धाम॥अंगअंगपरिवारियै॥कोटिकोटिशत॥२५८॥ चौपई॥ कहहुसखी
असकोतनुधारी॥जोनमोहयहरूपनिहारी॥कोउसप्रेमबोलीम्रदुबानी॥जो
मैंसुनासोसुनहुसयानी॥येदोउनृपदसरथकेढोटा॥बालमरालनिकेकलजो
टा॥मुनिकौशिकमषकेरषवारे॥जिनरणअजयनिशाचरमो॥स्यामगातकलकं
जबिलोचन॥जोमारीचसुभुजमदमोचन॥कौशल्यासुतसोसुषखानी॥रामना
मधनुसायकपानी॥गौरकिशोरभेषबरकाछे॥करशरचापरामकेपाछें॥लक्ष्म
णनामरामलघुभ्राता॥सुनुसषितासुसुमित्रामाता॥ दोहा॥ विप्रकाजकरिबंधु

काम

रे

राम
७१

होउ॥ मगमुनिवधु उधारि॥ आयेदेषन चांपमष॥ सुनि हरषी सब नारि॥ चौपई॥ देषि
रामछबि कोउ इक कहई॥ योग्य जानकी यह वर अहही॥ जौं सषि इन्ह हिं देषि नर
नाहू॥ पणपरिहरि हठि करै विवाहू॥ कोउ कह इन्ह भूपति पहिचाने॥ मुनि समे
तसादर सनमाने॥ सषि परंतु पणराउ न तजई॥ विधिवस हठि अविवेकहिं भज
ई॥ कोउ कह जौं भल अहै विधाता॥ सब कह सुनिय उचित फलदाता॥ जौं जान
किहि मिलिहि वर एहू॥ नाहिन आली यह संदेहू॥ जौं विधि अस अस बनै संजोगू
॥ जौं कृतकृत्य होइ सब लोगू॥ सषि हमरे अति आरति ताते॥ कबहुंक ये आवहि
इहि नाते॥ दोहा॥ नाहित हम कहं सुनहु सषि॥ इन्ह कर दर्शन दूरि॥ यह संघटत
वहोइ जव॥ पुण्य पुराकृत भूरि॥ २२२॥ चौपई॥ बोली अपर कहेउ सषि नीका॥
यह बिवाह अति हित सबही का॥ कोउ कह शंकर चाप कठोरा॥ ये स्यामल मृदु
गात किशोरा॥ सब असमंजस अहै सयानी॥ यह सुनि अपर कहै मृदु बानी॥ स
षि इन्ह कहं कोउ कोउ अस कहहीं॥ वड प्रभाव देषत लघु अहहीं॥ परसि जासु पद
पंकज धूरी॥ तरी अहल्या कृत अघ भूरी॥ सो कि रहैं बिनु शिवधनु तोरे॥ यह प्रती
ति परिहरिय न भोरे॥ जेहि बिरंचि रचि सिय संवारी॥ ते स्यामल वर रचेउ बिचारी

बा०कां० ७२

री॥ तासु बचन सुनि सब हरषानी॥ ऐसेइ हरषि हृदय कहि बानी॥ दोहा॥ हियँ हरषहिं [बरषहिं] सुमन॥ सुमुखि सुलोचनि बृंद॥ जाहिं जहां जहं बंधु दोउ॥ तहं तहं परमानंद॥ २२३॥ चौपई॥ पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई॥ जहां धनुमख हित भूमि बनाई॥ अति बिस्तार चारु गच ढारी॥ बिमल बेदिका रुचिर संवारी॥ चहुं दिसि कंचन मंच बिसाला॥ रचे जहां बैठहिं महिपाला॥ तेहि पाछे समीप चहुं पासा॥ अपर मंच मंडली बिलासा॥ कछुक ऊंच सब भांति सुहाई॥ बैठहिं नगर लोग सब आई॥ तिन के निकट बिसाल सुहाये॥ धवल धाम बहु बरण बनाये॥ जहं बैठी देषहिं सुर नारी॥ यथा योग्य कुल निज अनुहारी॥ पुर बालक कहि कहि मृदु बचना॥ सादर प्रभुहि दिषावहिं रचना॥ दोहा॥ सब सिसु इहि मिस प्रेम बस॥ परसि मनोहर गात॥ तन पुलकहिं अति हर्ष हिय॥ देषि देषि दोउ भ्रात॥ २२४॥ चौपई॥ सिसु सब राम प्रेम बस जाने॥ प्रीति समेत निकेत बषाने॥ निज निज रुचि सब लेहिं बुलाई॥ सहित सनेह जाहिं दोउ भाई॥ राम देषावहिं अनुजहि रचना॥ कहि मृदु मधुर मनोहर बचना॥ लव निमेष महं भुवन निकाया॥ रचै तासु अनुशासन माया॥ भक्ति हेतु सोई दीनदयाला॥ चितवत किचध धनुष मखसाला॥ कौतुक देषि चले गुरु पाहीं॥ जानि बिलंब त्रास

राम ७२

समनमाही॥ जासुत्रासडरकहुडरहोई॥ भजनप्रभावदेषावतसोही॥ कहिबातेंमृदुम
धुरसुहाई॥ कियेबिदाबालकबरिआई॥ दोहा॥ समयसप्रेमविनीतअति॥ सकु
चसहितदोउभाइ॥ गुरुपदपंकजनायशिर॥ बैठेआयसुपाइ॥ २६४॥ चौपई॥
निशिप्रवेशमुनिआयसुदीन्हा॥ सबहीसंध्याबंदनकीन्हा॥ कहतकथाइतिहासपुरा
णी॥ रुचिरजनीयुगयामसिरानी॥ मुनिबरशायनकीन्हतबजाई॥ लगेचरणचाप
नदोउभाई॥ जिनकेचरणसरोरुहलागी॥ करतविविधिजपयोगबिरागी॥ तेदो
उबंधुप्रेमजनुजीते॥ गुरुपदकमलपलोटतप्रीति॥ बारबारमुनिअज्ञादीन्ही॥ रघु
बरजाइशायनतबकीन्ही॥ चापतचरणलषनउरलाये॥ सभयप्रेमपरमसुषपा
ये॥ पुनिपुनिप्रभुकहसोवहुताता॥ पौढेधरिउरपदजलजाता॥ दोहा॥ उठे
लषननिशाबिगतसुनि॥ अरुणशिषाधुनिकान॥ गुरुतेपहिलेजगपति॥ जागेराम
सुजान॥ २६५॥ चौपई॥ ॥ सकलशौचकरिजायनहाये॥ नितनिवाहिगुरुहि
सिरनाये॥ समयजानिगुरुआयसुपाई॥ लेनप्रसूनचलेदोउभाई॥ नृपबागबरदे
षेउजाई॥ जहंबसंतऋतुरहेलुभाई॥ लागेविटपमनोहरनाना॥ बरणबरणब
रबेलिबिताना॥ नवपल्लवफलसुमनसुहाये॥ निजसंपतिसुरतरुहिलजाये॥ चा

तककोकिलकीरचकोरा॥कूजतविहंगनचतकलमोरा॥मध्यबागसरसोहसुहावा
॥मणिसोपानविचित्रबनावा॥बिमलसलिलसरसिजबहुरंगा॥जलखगकूंज
तगुंजतभ्रंगा॥ दोहा॥ बागतडागबिलोकिप्रभु॥हरखेबंधुसमेत॥परमरम्यआ
रामयह॥जोरामहिसुषदेत॥२२६॥ चौपई॥ ॥चहुदिसिचितैपूछिमालीगा
न॥लगेलेनदलफूलमुदितमन तेहिअवसरसीतातहंआई॥गिरिजापूजन
जननिपठाई॥संगसषीसबसुभगसयानी॥गांवहिंगीतमनोहरबानी॥सरसमी
पगिरिजाग्रहसोहा॥बरणिनजाइदेषिमनमोहा॥मज्जनकरिसरसषीसमेता
॥गईमुदितमनगौरिनिकेता॥पूजाकीन्हअधिकअनुरागा॥निजअनुरूपसुभग
बरबागा॥एकसषीसियसंगबिहाय॥गयीरहीदेषनफुलवाई॥तेदोउबंधुबि
लोकेउजाई॥प्रेमबिवससीतापहंआई॥ दोहा॥ ॥तासुदसादेषीसाषन॥पुलक
गातजलनयन॥कहूकारणनिजहर्षकर॥पूछहिंसबमृदुबयन॥२२७॥ चौप
ई॥देषनबागकुवरदोउआय॥बयकिशोरसबभांतिसुहाये॥स्यामगोरकिमिक
होबषानी॥गिरअनयननयनबिनुबानी॥सुनिहरषीसबसषीसयानी॥सियहि
अतिउतकंठाजानी॥एककहहिंनृपसुततेआली॥सुनेजेमुनिसंगआयका

ली॥निजनिजरूपमोहिनीडारी॥कीन्हेस्वबशनगरनरनारी॥बरणतछबिजहंतहं
सबलोगू॥अवसिदेषियेदेषनजोगू॥तासुबचनअतिसियहिसुहाने॥दरसलगा
गिलोचनअकुलाने॥चलीअग्रकरिप्रियसषिसोई॥प्रीतिपुरातनलषैनकोई
॥दोहा॥ ॥सुमरिसीयनारदबचन॥उपजीप्रीतपुनीत॥चकितविलोकतसक
लदिशि॥जनशिशुमृगीसभीत॥२२८॥चौपई॥ ॥कंकणकिंकिणिनूपुरधुनि
सुनि॥कहतलषनसनरामहृदयगुनि॥मानहुमदनदुंदुभीदीन्ही॥मनसाविश्व
विजयकहकीन्ही॥असकहिफिरिचितएतेहिओरा॥सियमुषशशिभयेनयनच
कोरा॥नयेविलोचनचारुअचंचल॥मनहुसकुचिनिमितजेदृगंचल॥देषिसी
यशोभासुषपावा॥हृदयसराहतबचननआवा॥जनुबिरंचिसबनिजनिपुणाई
॥बिरचिविश्वकहंप्रगटदिषाई॥सुंदरताकहंसुंदरकरई॥छबिगृहदीपशिषा
जनुबरई॥सबउपमाकविरहेजुठारी॥कहिपटतरियविदेहकुमारी॥दोहा॥सि
यशोभाहियबरणिप्रभु॥आपनिदशाविचारि॥बोलिसुचिमनअनुजसन॥बचन
समयअनुहारि॥२२९॥चौपई॥ ॥तातजनकतनयायहसोई॥धनुषयज्ञजेहि
कारणहोइ॥पूजनगौरिसषीलैआई॥करतिप्रकाशफिरतिफुलवाई॥जासुवि

लोकिअलौकिकशोभा॥ सहजपुनीतमोरमनछोभा॥ सोसबकारणजानविधाता
फरकहिंशुभअंगसुनुभ्राता॥ रघुबंशिनकरसहजसुभाऊ॥ मनकुपंथपगध
रैनकाऊ॥ मोहिअतिशयप्रतीतिजियकेरी॥ जेहिसपनेऊंपरनारिनहेरी॥ ति
नकेलहहिंनरिपुरणपीठी॥ नहिंलावहिंपरतियमनडीठी॥ मंगललहहिंनजि न
नकेनाहीं॥ तेनरबरथोरेजगमाहीं॥ दोहा॥ करतबतकहीअनुजसन॥ मनसि
यरूपलुभान॥ मुषसरोजमकरंदछवि॥ करतमधुपइवपान॥२३०॥ चौपई॥
चितवतिचकितचहूंदिशिसीता॥ कहगयेनृपकिशोरमनजीता॥ जहंविलोकि
मृगसावकनयनी॥ जनुतहंबरषकमलशितसेयनी॥ लताओटतबसषिन
लषाये॥ श्यामलगौरकिशोरसुहाये॥ देषिरूपलोचनललचाने॥ हरषेजनु
निजनिधिपहिचाने॥ थकेनयनरघुपतिछविदेषी॥ पलकनहूंपरिहरीनिमे
षी॥ अधिकसनेहदेहभइभोरी॥ शरदशशिहिजनुचितवचकोरी॥ लोचनमगु
रामहिउरआनी॥ दीन्हेपलककपाटसयानी॥ जबसियसषिनप्रेमबसजानी॥
कहिनसकहिकछुमनसकुचानी॥ दोहा॥ लताभवनतेप्रगटभे॥ तेहिअवसरदो
उभाई॥ निकसेजनुजुगविमलविधु॥ जलदपटलबिलगाइ॥२३२॥ चौपई॥ ॥

शोभासींवसुभगदोउबीरा॥नीलपीतजलजातशरीरा॥काकपक्षसिरसोहतनीके
गुच्छेबिचबिचकुसुमकलीके॥भालतिलकश्रमबिंदुसुहाये॥श्रवनसुभगभूष
णछबिछाये॥बिकटभृकुटिकचघूंघरवारे॥नवसरोजलोचनरतनारे॥चारिचि
बुकनासिकाकपोला॥हासबिलासलेतजनुमोला॥मुषछबिकहिनजायमोहि
पाहीं॥जोबिलोकिबहुकामलजाहीं॥उरमणिमालकंबुकलग्रीवा॥कामकल
भकरभुजबलसींवा॥सुमनसमेतबामकरदोना॥सांवरकुंवरसषीसुठिलोना॥
दोहा॥केहरिकटिपटपीतधर॥सुषमाशीलनिधान॥देषिभानुकुलभूषणहिं॥
बिसरासषिन्हअपान॥२२२॥चौपई॥धरिधीरजइकसषीसयानी॥सीतासनबोली
गहिपानी॥बहुरिगौरिकरध्यानकरेहू॥भूपकिशोरदेषिकिनलेहू॥सकुचि
सीयतबनयनउघारे॥सन्मुषदोउरघुवंशनिहारे॥नषशिषदेषिरामकीशो
भा॥सुमिरिपिताप्रणमनअतिछोभा॥परबससषिन्हलषीजबसीता॥भयोगहरुस
बकहहिंसभीता॥पुनिआउबइहिबिरियांकाली॥असकहिमनबिहसीइकआ
ली॥गूढगिरासुनिसियसकुचानी॥भयोबिलंबमातुभयमानी॥धरिबडिधीररामउ
रआनी॥फिरिआपनप्रणपितुबसजानी॥दोहा॥देषनमिसुमृगबिहंगतरु॥

हाथीको
बबोरू
८

फिरै बहोरि बहोरि ॥ निरखि निरखि रघुबीर छबि ॥ बाढी प्रीति न थोरि ॥ २७३ ॥ चौपई ॥ जानि कठिन शिवचाप बिसूरति ॥ चली राखि उर स्यामल मूरति ॥ प्रभु जब जात जानकी जानी ॥ सुख सनेह शोभा गुण खानी ॥ परम प्रेम मय मृदु मसि कीन्ही ॥ चारु चित्र भीतर लिखि लीन्ही ॥ गई भवानी भवन बहोरी ॥ बंदि चरण बोली कर जोरी ॥ जय जय जय गिरराज किशोरी ॥ जय महेश मुख चंद चकोरी ॥ जय गजबदन षडानन माता ॥ जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥ नहि तव आदि मध्य अवसाना ॥ अमित प्रभाव बेद नहिं जाना ॥ भव भव बिभव पराभव कारिणि ॥ विश्व विमोहनि स्वबश विहारिणी ॥ दोहा ॥ पतिदेवता सुतीय महं ॥ मातु प्रथम तव रेष ॥ महिमा अमित न कहि सकहिं ॥ सहस शारदा शेष ॥ २७४ ॥ चौपई ॥ सेवत तोहि सुलभ फल चारी ॥ बरदायिनि त्रिपुरारि पियारी ॥ देवि पूजि पद कमल तुम्हारे ॥ सुर नर मुनि सब होहिं सुषारे ॥ मोर मनोरथ जानहु नीके ॥ बसहु सदा उरपुर सबही के ॥ कीन्हेउ प्रगट न कारण तेही ॥ अस कहि चरण गहे बैदेही ॥ विनय प्रेम सब भई भवानी ॥ खसी माल मूरति मुसुकानी ॥ सादर सिय प्रसाद सिर धरेउ ॥ बोली गौरि हर्ष हिय भरेउ ॥ सुनु सिय सत्य असीस हमारी ॥ पूजिहि मन

कामनातुम्हारी॥ नारदबचनसदासुचिसांचा॥ सोबरमिलिहिजायमनराचा॥ छंद॥ म
नजाहिराचोमिलिहिसोबरसहजसुंदरसांवरो॥ करुणानिधानसुजानशीलसनेहजान
रावरो॥ इहिभांतिगौरिअसीससुनिसियसहितहियहर्षितअली॥ तुलसीभवानिहि
पूजिपुनिपुनिमुदितमनमंदिरचली॥ सोरठा॥ जानिगौरिअनुकूल॥ सियहियहर
र्षनजायकहि॥ मंजुलमंगलमूल॥ बामअंगफरकनलगे॥ २७५॥ चौपई॥ हृदयस
राहतसीयलुनाई॥ गुरुसमीपगवनेदोउभाई॥ रामकहासबकौशिकपाही॥ स
रलसुभावछुअछलनाही॥ सुमनपाइमुनिपूजाकीन्ही॥ पुनिअसीसदोउभाइदु
दीन्ही॥ सुफलमनोरथहोउतुम्हारे॥ रामलखनसुनिभयेसुषारे॥ करिभोजन
मुनिबरबिग्यानी॥ लगेकहनकछुकथापुरानी॥ बिगतदिवसमुनिआयसुपाई
॥ संध्याकरणचलेदोउभाई॥ प्राचीदिशिशशिउगेउसुहावा॥ सियमुषसरिसदे
षिसुषपावा॥ बहुरिबिचारकीन्हमनमाही॥ सीयबदनसमहिमकरनाही॥ दो
हा॥ जन्मसिंधुपुनिबंधुबिष॥ दिनमलीनसकलंक॥ सियमुषसमतापावकिमि
चंदबापुरोरंक॥ २७६॥ चौपई॥ घटैबढैबिरहिनिदुषदाई॥ ग्रसैराहुनिजसंधि
हिपाई॥ कोकशोकप्रदपंकजद्रोही॥ अवगुणबहुतचंद्रमातोही॥ बैदेहीमु

बपरतरदीन्हे॥होइ दोषबड अनुचितकीन्हे॥सियमुषछविविधुव्याजबषानी
॥गुरुपहंचलेनिशाबडिजानी॥करिमुनिचरणसरोजप्रणामा॥आयसुपाइ
कीन्हविश्रामा॥विगतनिशारघुनायकजागे॥वंधुविलोकिकहनअसलागे
उगेउअरुणअवलोकोताता॥पंकजलोककोककसुषदाता॥वोलेलषनजो
रियुगपाणी॥प्रभुप्रभावसूचकमृदुवाणी॥दोहा॥अरुणोदयसकुचेकुमुद
॥उडुगणज्योतिमलीन॥जिमितुम्हारआगमनसुनि॥भयेनृपतिवलहीन॥
२७७॥चौपई॥नृपसबनखतकरहिंउजियारी॥टारिनसकहिंचापतमभारी॥क
मलकोकमधुकरखगनाना॥हरषेसकलनिशाअवसाना॥ऐसेहिंप्रभुसबभ
क्ततुम्हारे॥होइहहिंटूटेधनुषसुषारे॥उदयभानुविनुश्रमतमनासा॥दुरेनख
तजगतेजप्रकासा॥रविनिजउदयव्याजरघुराया॥प्रभुप्रतापसबप्रगटजनाया
॥तवभुजवलमहिमाउदघाटी॥प्रगटीधनुविघटनपरिपाटी॥वंधुवचनसुनिप्र
भुमुसुकाने॥होइशुचिसहजपुनीतअन्हाने॥नित्यक्रियाकरिगुरुपहंआये॥
चरणसरोजसुभगसिरनाये॥सतानंदतबजनकवुलाये॥कौशिकमुनिपहं
तुरतपठाये॥जनकविनयतिनआयसुनाई॥हरषेवोलिलियेदोउभाई

दोहा॥ सतानंदपदवंदिप्रभु॥ बैठेगुरुपहंजाइ॥ चलेतुतातमुनिकहेउतब॥ पठ
वाजनकबुलाइ॥२३८॥ चौपई॥ सीयस्वयंबरदेषियजाई॥ ईशुकाहिधौंदेहि
बडाई॥ लषनकहायशभाजनसोई॥ नाथक्रुपातवजापरहोई॥ हरषेमुनिसब
सुनिबरबानी॥ दीन्हअसीससबहिसुषमानी॥ पुनिमुनिब्रंदसमेतक्रपाला॥ देषन
चलेधनुषमखसाला॥ रंगभूमिआयेदोउभाई॥ असमुधिसबपुरबासिनपाई॥
॥ चलेसकलग्रहकाजबिसारी॥ बालकजुवाजरठनरनारी॥ देषीजनकभीरभै
भारी॥ सुचिसेवकसबलियेहंकारी॥ तुरतसकललोगनपहंजाहू॥ आसनउ
चितदेहुसबकाहू॥ दोहा॥ कहिम्रदुबचनबिनीततिन॥ बैठारेनरनारि॥ उतममध्य
नीचलघु॥ निजनिजथलअनुहारि॥२३९॥ चौपई॥ ॥राजकुवरतेहिअवसर
आये॥ मनहुमनोहरताछबिछाये॥ गुणसागरनागरबरबीरा॥ सुंदरस्यामलगोर
शरीरा॥ राजसमाजबिराजतरूरे॥ उडुगणमहंजनुजुगबिधुपूरे॥ जिनकेरहीभाव
नाजैसी॥ प्रभुमूरतिदेषीतिनतैसी॥ देषहिंनृपमहारणधीरा॥ मनहुबीररस
धरेशरीरा॥ डरेकुटिलनृपप्रभुहिनिहारी॥ मनहुभयानकमूरतिभारी॥ रहेअ
सुरछलजोन्रुपबेषा॥ तिनप्रभुप्रगटकालसमदेषा॥ पुरबासिनदेषेदोउभाई॥ न

ग

भूषणलोचनसुषदाई ॥ दोहा ॥ नारिबिलोकहिंहरषिहिय ॥ निजनिजरुचिअ
नूकूल ॥ जनुसोहतशृंगारधरि ॥ मूरतिपरमअनूप ॥ २४० ॥ चौपई ॥ ॥ विदु
षन्हप्रभुबिराटमयदीसा ॥ बहुमुषकरपगलोचनसीसा ॥ जनकजातिअबलोक
हिंकैसें ॥ सजनसगेप्रियलागहिंजैसें ॥ सहितबिदेहबिलोकहिंरानी ॥ शिशुसम
प्रीतिनजातबषानी ॥ योगिनपरमतत्वमयभासा ॥ संतशुद्धमनसहजप्रकासा
॥ हरिभक्तनदेषेदोउभ्राता ॥ इष्टदेवइवसबसुषदाता ॥ रामहिंचितवभाव
जेहिंसीया ॥ सोसनेहसुषनहिंकथनीया ॥ उरअनुभवतिनकहिसकसोऊ
॥ कवनप्रकारकहेकविकोऊ ॥ इहिविधिरहाजाहिजसभाऊ ॥ तेइतसदेषे
उकोशलराऊ ॥ दोहा ॥ राजतराजसमाजमह ॥ कोशलराजकिशोर ॥ सुदरस्याम
लगोरतन ॥ विश्वबिलोचनचोर ॥ चौपई ॥ सहजमनोहरमूतिदोउ ॥ कोटिकामउ
पमालघुसोऊ ॥ शारदचंदनिंदकमुषनीके ॥ नीरजनयनभावतेजीके ॥ चितव
निचारुमारमदहरणी ॥ भावतहृदयजायनहिंबरणी ॥ कलकपोलश्रुतिकुंडल
लोला ॥ चिबुकअधरसुंदरमृदुबोला ॥ कुमुदबंधुकरनिंदकहासा ॥ भृकुटीबिकट
मनोहरनासा ॥ भालबिशालतिलकझलकाही ॥ कचबिलोकिअलिअवलि

वृषभकंधकेहरिठवनि

लजाहीं ॥ पीतचौतनी सिरन सुहाई ॥ कुसुमकली बिचबीच बनाई ॥ रेषा रुचिर कंबुक
लग्रीवा ॥ जनु त्रिभुवन सुषुमा की सींवा ॥ दोहा ॥ कुंजरमणि कंठाकलित ॥ उरतु
लसीकी माल ॥ बलनिधि बाहु बिशाल ॥ २८२ ॥ चौपई ॥ कटि तूनीर पीतपट बांधे ॥ क
र शर धनुष वाम कर कांधे ॥ पीत यज्ञ उपवीत सुहाई ॥ नखशिख मंजु महा छवि छा
ई ॥ देखि लोग सब भये सुखारे ॥ इकटक लोचन टरहि न टारे ॥ हर्षे जनक देखि दोउ
भाई ॥ मुनिपदकमल गहे तब जाई ॥ करि बिनती निज कथा सुनाई ॥ रंगअवनि स
ब मुनिहि दिषाई ॥ जहं तहं जाहिं कुवर बर दोऊ ॥ तहं तहं चकित चितव सब कोऊ
॥ निज निज रुख रामहि सब देखी ॥ कोउ न जान कछु मर्म बिशेषी ॥ भलि रचना नृ
प सन मुनि कहेऊ ॥ राजा मुदित महासुष लहेऊ ॥ दोहा ॥ सब मंचन ते मंच इक ॥
॥ सुंदर बिशद बिशाल ॥ मुनिसमेत दोउ बंधु तहं ॥ बैठारे महिपाल ॥ २८३ ॥ चौप
ई ॥ प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे ॥ जनु राकेश उदय भये तारे ॥ अस प्रतीति तिन
के मन माहीं ॥ राम चाप तोरब सक नाहीं ॥ बिनु भंजेहु भव धनुष बिशाला ॥ मेलिहि
सीय राम उर माला ॥ अस बिचारि गवन घर भाई ॥ जय प्रताप बल तेज गवांई ॥ बि
हसे अपर भूप सुनि बानी ॥ जे अबिबेक अंध अभिमानी ॥ तोरेहु धनुष ब्याह अ

अवगाहा॥ बिनुतोंरौंकोकुवरिबिवाहा॥ एकबारकालउकिनहोऊ॥ सियहितसम
रजितबहमसोऊ॥ यहसुनिअपरभूपमुसुकाने॥ धर्मशीलहरिभक्तिसयाने॥ दोहा
सीयबिवाहबराम॥ गर्वदूरिकरिनृपनकर॥ जीतिकोसकेसंग्राम॥ दशरथकेर
णबांकुरे॥ २४८॥ चौपई॥ ब्रथामरहुजनिगालबजाई॥ मनमोदकनभूषनहि
जाई॥ शिषहमारसुनुपरमपुनीता॥ जगदंबाजानहुजियसीता॥ जगतपितार
घुपतिहिबिचारी॥ भरिलोचनछबिलेहुनिहारी॥ सुंदरसुषदसकलगुणरासी
॥ येदोउबंधुशंभुउरबासी॥ सुधासमुद्रसमीपबिहाई॥ मृगजलनिरषिमरहुकत
धाई॥ करहुजाइजाकहंजोइभावा॥ हमतोआजुजन्मफलपावा॥ असकहि
भलेभूपअनुरागे॥ रूपअनूपबिलोकनलागे॥ देषहिंसुरनभचढेबिमाना॥ बर
षहिंसुमनकरहिंकलगाना॥ दोहा॥ जानिसुअवसरसीयतब॥ पठवाजनकबु
लाइ॥ चतुरसषीसुंदरसकल॥ सादरचलीलिवाइ॥ २४९॥ चौपई॥ सियशोभान
हिंजायबषानी॥ जगदंबिकारूपगुणषानी॥ उपमासकलमोहिलघुलागी॥ प्राकृ
तनारिअंगअनुरागी॥ सीयबरणतेहिउपमादेई॥ कोकबिकहैअयशकोलेई
॥ जौपटतरियतीयसमसीया॥ जगअसजुवतिकहाकमनीया॥ गिरामुषरतन

अईनवानी ॥ रतिअतिदुषितअतनपतिजानी ॥ विषवारुणीबंधुप्रियजेही ॥ कहि
परमासमकिमिवैदेही ॥ जौंछबिसुधापयोनिधिहोई ॥ परमरूपमयकछपसोई ॥ शो
भारजुमंदरसृंगारू ॥ मथैपाणिपंकजनिजमारू ॥ दोहा ॥ इहिविधिउपजैलछिज
ब ॥ सुंदरतासुषमूल ॥ तदपिसकोचसमेतकबि ॥ कहहिंसीयसमतूल ॥ २४७ ॥ चौप
ई ॥ चलीसंगलैसषीसयानी ॥ गावतिगीतमनोहरबानी ॥ सोहनवलतनसुंदरिसा
री ॥ जगतजननिअतुलितछबिभारी ॥ भूषणसकलसुदेसुसुहाये ॥ अंगअंगर
चिसषिनबनाये ॥ रंगभूमिजबसियपगुधारी ॥ देषिरूपमोहेनरनारी ॥ हरषिसु
रन्हदुंदुभीबजाई ॥ बरषिप्रसूनअपसरागाई ॥ पाणिसरोजजमाला ॥ अवचकचितेस
कलमहिपाला ॥ सीयचकितचितरामहिचाहा ॥ भयेमोहबससबनरनाहा ॥ मुनि
समीपदेषेदोउभाई ॥ लगेललकिलोचननिधिपाई ॥ दोहा ॥ गुरुजनलाजसमाज
बडि ॥ देषिसीयसकुचानि ॥ लगीबिलोकनसषिनतन ॥ रघुबीरहिउरआनि ॥ २
४८ ॥ चौपई ॥ रामरूपअरुसियछबिदेषी ॥ नरनारिनपरहरीनिमेषी ॥ सोचहिंस
कलकहतसकुचाही ॥ विधिसनबियकरहिंमनमाही ॥ हरिबिधिबेगिजनकजडु
ताई ॥ मतिहमारअसदेहुसुहाई ॥ बिनुविचारप्रणतजिनरनाहू ॥ सीयरामकर

बाल० १९

करे विवाहू ॥ जानत लोक कहहिं नाव सब काहू ॥ हठि कीने उर अंतर दाहू ॥ यह लाल
सा मगन सब लोगू ॥ बर सांवरो जानकी योगू ॥ तब बंदीजन जनक बुलाये ॥ विरदा
वली कहत चलि आये ॥ कह नृप जाइ कहहु प्रण मोरा ॥ चले भाट हिय हर्ष न थो
रा ॥ दोहा ॥ बोले बंदी बचन बर ॥ सुनहु सकल महिपाल ॥ प्रण विदेह कर कहहिं ह
म ॥ भुजा उठाइ बिशाल ॥ २८२ ॥ चौपई ॥ नृप भुजबल विधु शिवधनु राहू ॥ गरुव
कठोर बिदित सब काहू ॥ रावण बाण महाभट भारे ॥ देखि शरासन गवहिं सिधारे
॥ सोइ पुरारि कोदंड कठोरा ॥ राजसमाज आजु जोइ तोरा ॥ त्रिभुवन जय समेत बै
ही ॥ बिनय विचार बरे हठि तेहि ॥ सुनि प्रण सकल नृप अभिलाषे ॥ भटमानी अ
तिशय मन माषे ॥ परिकर बांधि उठे अकुलाई ॥ चले इष्टदेवन सिर नाई ॥ तमकि
ताकि तकि शिवधनु धरही ॥ उठइ न कोटि भांति बल करहीं ॥ जिनके कछु
विचार मन माहीं ॥ चाप समीप महीप न जाहीं ॥ दोहा ॥ तमकि धरहिं धनु मूढ नृप

नु

उठइ न चलहिं लजाइ ॥ मनहुं पाइ भट बाहुबल ॥ अधिक अधिक गरुआइ
२८३ ॥ चौपई ॥ नृप सहस दस एकहि बारा ॥ लगे उठावन टरहि न टारा ॥ डिगै न
शंभु शरासन कैसे ॥ कामी बचन सती मन जैसे ॥ सब नृप भये योग उपहासी ॥ जे

राम
१९॥

सिविनुबिरागसंन्यासी॥कीरतिबिजयवीरता नारी॥चलेचापकरसर्वसहारी॥श्रीहत
नयेहारिहियराजा॥बैठेनिजनिजजाइसमाजा॥बैठेनिजनिजजाइसमाजा॥नृपन
बिलोकिजनकअकुलाने॥बोलेबचनरोषजनुमाने॥दीपदीपकेनृपति नाना॥आ
येसुनिहमजोप्रणगना॥देवदनुजधरिमनुजसरीरा॥बिपुलवीरआयेरणधीरा॥
दोहा॥कुवरिमनोहरिविजयबड़ि॥कीरतिअतिकमनीय॥पावनहाबिरंचिजनु
॥रचेउनधनुदमनीय॥२८४॥चौपई॥कहहुकाहियहलाभनभावा॥काहुनशं
करचापचढावा॥रहोचढाउबतोरबनाई॥तिलभरिभूमनसकेछुडाई॥अबजनि
कोउमाषेनटमानी॥वीरविहीनमहीमैंजानी॥तजहुआसनिजनिजगृहजाहू
॥लिखानविधिबेदेहिविवाहू॥सुकृतजाइजोंप्रणपरिहरऊ॥कुवरकुमारि
रहोकाकरऊ॥जौंजनितोंबिनुभटभुइनाई॥तौंप्रणकरिहोंस्यौंनहंसाई॥ज
नकबचनसुनिसबनरनारी॥देखिजानकीभयेदुखारी॥सुनतहिंलषनकुटि
लभैभौंहें॥रदपटफरकतनयनरिसौंहें॥दोहा॥कहिनसकतरघुवीरडर॥लगे
बचनजनुबाण॥नाइरामपदकमलशिर॥बोलेगिराप्रमाण॥२८५॥चौपई॥रघु
वंशिनमहंजहंकोउहोई॥तेहिसमाजअसकहइनकोई॥कहीजनकजसअनुचि

तबानी॥ विद्यमानरघुकुलमणिजानी॥ सुनहुभानुकुलपंकजभानू॥ कहौंसुभा
वनकछुअभिमानू॥ जौंराउरअनुशासनपाऊं॥ कंदुकइवब्रह्मांडउठाऊं॥ कां
चेघटजिमिडारौंफोरी॥ सकौंमेरुमूलकइवतोरी॥ तवप्रतापमहिमाभगवाना
॥ कोबापुरोपिनाकपुराना॥ नाथजानिअसआयसुहोई॥ कौतुककरौंबिलो
कियसोई॥ कमलनालइमिचापचढावौं॥ शतयोजनप्रमाणलेधाऔं॥ दो०
तोरौंछत्रकदंडजिमि॥ तवप्रतापबलनाथ॥ जौंनकरौंप्रभुपदसपथ॥ पुनि
नधरौंधनुहाथ॥२८६॥ चौपई॥ लषनसकोपबचनजबबोले॥ डगमगानिमहि
दिग्गजडोले॥ सकललोकसबभूपडराने॥ सियहियहर्षजनकसकुचाने॥ गु
रुरघुपतिसबमुनिमनमाहीं॥ मुदितभयेपुनिपुनिपुलकाहीं॥ सैनहिरघुपति
लषननिहारे॥ प्रेमसमेतनिकटबैठारे॥ विश्वामित्रसमयशुभजानी॥ बोलेअ
तिसनेहमइबानी॥ उठहुरामभंजहुभवचापू॥ मेटहुतातजनकपरितापू॥ सु
निगुरुबचनचरणसिरनावा॥ हर्षविषादनकछुउरआवा॥ ठाढभयेउठिसहज
सुभाये॥ ठवनियुवामृगराजलजाये॥ दोहा॥ उदितउदयगिरिमंचपर॥ रघुबर
बालपतंग॥ विकसेसंतसरोजसब॥ हरषेलोचनभृंग॥२८७॥ चौपई॥ नृप

नकेरिआसानिशिनासी॥ बचननखतअवलीनप्रकासी॥ मानिमहीपकुमुदसकुचा
ने॥ कपटीनृपउलूकलुकाने॥ भयेबिसोककोकमुनिदेवा॥ बरषहिंसुमनजनाव
हिंसेवा॥ गुरुपदबंदिसहितअनुरागा॥ राममुनिनसनआयसुमागा॥ सहजहिंचले
सकलजगस्वामी॥ मत्तमंजुकुंजरबरगामी॥ चलतरामसबपुरनरनारी॥ पुलक
पूरितनभयेसुखारी॥ बंदिपितरसुरसुकृतसभारे॥ जौंकछुपुन्यप्रभावहमारे॥ तौ
शिवधनुमृनालकिनाई॥ तोरहिरामगणेशगुसांई॥ दोहा॥ रामहिप्रेमसमेतल
खि॥ सखिनसमीपबुलाइ॥ सीतामातुसनेहबस॥ बचनकहैबिलखाइ॥ २८८॥ चौ
पई॥ सखिसबकौतुकदेखनहारे॥ जोउकहावतहितुहमारे॥ कोउनबु[illegible]इक
फा
हइनृपपाहीं॥ येबालकअसहठभलनाहीं॥ रावणबाणछुयानहिंचांपा॥ हारे
सकलनृपकरिदाया॥ सोधनुराजकुवरकरदेहीं॥ बालमरालकिमंदरलेहीं॥ भू
पसयानपसकलसिरानी॥ सखिबिधिगतिकछुजायनजानी॥ बोलीचतुरसखीमृ
दुबानी॥ तेजवंतलघुगणिअनरानी॥ कहंकुम्भजकहंसिंधुअपारा॥ सोखेउसुय
शसकलसंसारा॥ रविमंडलदेखतलघुलागा॥ उदयतासुत्रिभुवनतमभागा॥ दो
हा॥ मंत्रपरमलघुजासुबस॥ बिधिहरिहरसुरसर्ब॥ महामत्तगजराजकहं॥ बस

करहु अनुग्रह सर्व॥ २५९॥ चौपई॥ कामकुसुम धनु सायक लीन्हे॥ सकल भुवन अ
पने बस कीन्हे॥ देवि तजिय संसय जिय जानी॥ भंजब धनुष राम सुनु रानी॥ सखी
बचन सुनि भइ परतीती॥ मिटा बिषाद बढ़ी अति प्रीती॥ तब रामहिं बिलोकि बैदे
ही॥ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही॥ मनहीं मन मनाय अकुलानी॥ होहु प्रस
न्न महेस भवानी॥ करहुं सुफल आपनि सेवकाई॥ करि हित हरहु चाप गरुआ
ई॥ गणनायक बरदायक देवा॥ आजु लगे कीन्ही तव सेवा॥ बार बार बिनती सु
नि मोरी॥ करहु चाप गरुता अति थोरी॥ दोहा॥ देखि देखि रघुबीर तन॥ सुर मना
व धरि धीर॥ भरे बिलोचन प्रेम जल॥ पुलकावली सरीर॥ २६०॥ चौपई॥ नीके नि
रखि नयन भरि सोभा॥ पितु प्रण सुमिरि बहुरि मन छोभा॥ अहह तात दारुण ह
ठ ठानी॥ समुझत नहिं कछु लाभ न हानी॥ सचिव सभय सिख देइ न कोई॥ बुध समाज
बड़ अनुचित होई॥ कहं धनु कुलिसहु चाहि कठोरा॥ कहं स्यामल मृदु गात किसो
रा॥ बिधि केहि भांति धरौं उर धीरा॥ सिरस सुमन कन बेधिय हीरा॥ सकल सभा की मति
भई भोरी॥ अब मोहि संभु चाप गति तोरी॥ निज जड़ता लोगन पर डारी॥ होहु हरु
अ रघुपतिहि निहारी॥ अति परताप सीय मन माहीं॥ लव निमेष जुग सय सम जाहीं

॥दोहा॥प्रभुहिचितैपुनिचितैमहि॥राजतलोचनलोल॥खेलतमनसिजमीनजु
गा॥जनुविधुमंडलडोल॥२५८॥चौपई॥गिराअलिनिमुखपंकजरोकी॥प्रगट
नलाजनिसाअवलोकी॥लोचनजलरहलोचनकोना॥जैसेपरमकृपणक
रसोना॥सकुचीव्याकुलताबडिजानी॥धरिधीरजप्रतीतिउरआनी॥तनम
नबचनमोरपनसांचा॥रघुपतिपदसरोजमनराचा॥तौभगवानुसकलउर
वासी॥करिहहिमोहिरघुपतिकीदासी॥जेहिकेजेहिपरसत्यसनेहू॥सोते
हिमिलतनकछुसंदेहू॥प्रभुतनचितैप्रेमप्रणठाना॥कृपानिधानरामसबजा
ना॥सियहिबिलोकितकेउधनुकैसे॥चितवगरुडलघुव्यालहिजैसे॥दोहा॥ल
खनलखेउरघुवंसमणि॥ताकेउहरकोदंड॥पुलकिगातबोलेबचन॥चरणचा
पब्रह्मांड॥२५९॥चौपई॥दिसाकुंजरकंकमठअहिकोला॥धरहुधरणिधरधी
रनडोला॥रामचहहिंशंकरधनुतोरा॥होहुसजगसुनिआयसुमोरा॥चापसमीपरा
मजबआये॥नरनारिनसुरसुकृतमनाये॥सबकरसंशयअरुअग्यानू॥मंदमहीपन
करअभिमानू॥भृगुपतिकेरिगर्वगरुआई॥सुरमुनिवरनकेरिकदराई॥सियक
रसोचजनकपछतावा॥राणिनकरदारुणदुखदावा॥संभुचापबडवोहितपाई॥

बाल० ८२

चढेजाइसबसंगाबनाई॥रामबाहुबलसिंधुअपारा॥चहतपारनहिकोउकढहारा॥
दोहा॥रामबिलोकेलोगसब॥चित्रलिखेसेदेषि॥चितयीसीयकृपायतन॥जानीबि
कलबिशेषि॥२५९॥चौपई॥देषीबिकलविपुलबैदेही॥निमिषबिहातकलप
समतेही॥तृषितवारिबिनुजौंतनुत्यागा॥मुयेकरैकहासुधातडागा॥कावर्षाज
बकृषीसुषाने॥समयचूकपुनिकापछताने॥असजियजानजानकीदेषी॥प्र
भुपुलकेलषिप्रीतिबिशेषी॥गुरहिप्रणाममनहिमनकीना॥अतिलाघवउग
यधनुलीन्हा॥दमकेदामिनिजिमिधनुलयऊ॥पुनिधनुनभमंडलसमभयऊ
॥लेतचढावतखैंचतगाढे॥काहुनलखादेषसबठाढे॥तेहिछिणमध्यरामधनु
तोरा॥भरेभुवनधुनिघोरकठोरा॥छंद॥भरिभुवनघोरकठोररवरबिबाजितजि
मारगचले॥चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिअहिकोलकूरमकलमले॥सुरअसु
रमुनिकरकानदीन्हेसकलविकलविचारही॥कोदंडषंडेउरामतुलसीजयति
बचनउचारही॥सोरठा॥शंकरचापजहाज॥सागररघुबरबाहुबल॥बूडेस
कलसमाज॥चढेजेप्रथमहिंमोहबस॥२६१॥चौपई॥प्रभुदोउखंडचापमहिडा
रे॥देषिलोगसबभयेसुषारे॥कौशिकरूपपयोनिधिपावन॥प्रेमवारिअवगा

राम ८२

हसुहावन॥ रामरूपकेप्रानिहारी॥ बंदीबीचिपलकाबलिनारी॥ बाजेनभगहगहे
निसाना॥ देववधूनांचहिंकरिगाना॥ ब्रह्मादिकसुरसिद्धमुनीसा॥ प्रभुहिप्रसंसहिंदे
हिंअसीसा॥ बरषहिंसुमनरंगबहुमाला॥ गावहिंकिंनरगीतरसाला॥ रहीभुव
नभरिजयजयबानी॥ धनुषभंजधुनिजातनजानी॥ मुदितकहहिंजहंत
हंनरनारी॥ भंजेउरामसंभुधनुभारी॥ दोहा॥ बंदीमागधसूतगण॥ बिरदबदहिं
मतिधीर॥ करहिंनिछावरिलोगसब॥ हयगयधनमणिचीर॥ २८५॥ चौपई॥ झां
झमृदंगसंखसहनाई॥ भेरिढोलदुंदुभीसुहाई॥ बाजहिंबहुबाजनेसुहाये॥ ज
हंतहंजुवतिनमंगलगाये॥ सषिनसहितहर्षितअतिरानी॥ सूषतधानपराजनु
पानी॥ जनकलहेउसुषसोचबिहाई॥ पैरतथकेथाहजनुपाई॥ श्रीहतभयेभूप
धनुटूटे॥ जैसेदिवसदीपछबिछूटे॥ सियहियसुषबरणियकेहिभांति॥ जनुचात
कपायेजलस्वामी॥ रामहिलषनविलोकतकैसे॥ ससिहिकिसोरचकोरकजैसें
सतानंदतबआयसुदीना॥ सीतागमनरामपहकीना॥ दोहा॥ संगसषीसुंदरच
तुरि॥ गांवहिंमंगलचार॥ गवनीबालमरालगति॥ सुषमाअंगअपार॥ २८६॥
चौपई॥ सषिनमध्यसियसोहतकैसी॥ छबिगणमध्यमहाछबिजैसी॥ करसरोजज

यमाल सुहाई॥ विस्व विजय शोभा जनु छाई॥ तन सकोच मन परम उछाहू॥ गूढ प्रेम
लषि परै न काहू॥ जाइ समीप राम छबि देषी॥ रहि जनु कुंवर चित्र अवरेषी॥ चतुर स
षी लषि कहा बुझाई॥ पहिरावहु जयमाल सुहाई॥ सुनत जुगल कर माल उठाई॥ प्रे
म विवस पहिराइ न जाई॥ सोहत जनु जुग जलज सनाला॥ ससिहि सभीत देत ज-
यमाला॥ गावहि छबि अवलोकि सहेली॥ सिय जयमाल राम उर मेली॥ सोरठा
॥ रघुबर उर जयमाल॥ देषि देव बरषहि सुमन॥ सकुचे सकल भुआल॥ जनु बिलो
कि रवि कुमुद गण॥२६७॥ चौपई॥ पुर अरु ब्योम बाजने बाजे॥ खल भये मलि-
न साधु सब राजे॥ सुर किंनर नर नाग मुनीसा॥ जय जय जय कहि देहि असीसा॥
॥ नाचहिं गावहिं विबुध बधूटी॥ बार बार कुसमावलि छूटी॥ जहं तहं विप्र बेदधुनि
करही॥ बंदी विरदावलि उच्चरही॥ महि पाताल नाक यश व्यापा॥ राम बरी सिय
भंजेउ चापा॥ करहि आरती पुर नर नारी॥ देहिं निछावरि वित्त बिसारी॥ सोहत सीय
राम की जोरी॥ छबि शृंगार मनहु इक ठोरी॥ सषी कहहि प्रभु पद गहु सीता॥ कर
ति न चरण परस अति भीता॥ दोहा॥ गोतम तीय गति सुरत करि॥ नहि परसति पद
पानि॥ मन बिहसे रघुबंसमणि॥ प्रीति अलोकिक जानि॥२६८॥ चौपई॥ तब

सियदेखिरूपअभिलाषे॥कूरकपूतमूढमनमाषे॥उठिउठिपहरिसनाहअभागे॥
॥जहंतहंगालबजावनलागे॥लेहुछुडाइसीयकहंकोऊ॥धरिबांधहुनृपबाल
दोऊ॥तोरेधनुषचाडनहिंसरई॥जीवतहमहिंकुवरिकोबरई॥जोबिदेहकछु
करैसहाई॥जीतहुसमरसहितदोउभाई॥साधुभूपबोलेसुनिबानी॥राजसमा
जहिंलाजलजानी॥बलप्रतापवीरताबडाई॥नाकपिनाकहिसंगसिधाही॥सो
इसूरताकिअबकहुंपाई॥असबुधितोबिधिमुहमसिलाई॥दोहा॥देषहुरामहि
नयननरि॥तजिईर्षामदमोहु॥लषनरोषपावकप्रबल॥जानिशलभजनिहो
हु॥२६६॥चौपई॥बेनतेयबलिजिमिचहकागू॥जिमिशशचहहिंनागअरिभा
गू॥जिमिचहकुशलअकारणकोही॥सुषसंपदाचहहिंशिवद्रोही॥लोभीलोलुप
कीरतिचहहीं॥अकलंकिताकिकामीलहहीं॥हरिपदविमुषपरमगतिचाहा
॥असतुम्हारलालचनरनाहा॥कोलाहलसुनिसीयसकानी॥सषीलिवायगईं
जहांरानी॥रामसुभायचलेगुरुपाहीं॥सियसनेहबरणतमनमाहीं॥रानीन
सहितसोचबससीया॥अबधौंबिधिहिकहाकरनीया॥नृपबचनसुनिइतउतत
कहीं॥लषनरामडरबोलिनसकहीं॥दोहा॥अरुणनयनभ्रकुटीकुटिल॥

चितवत नृपन सकोप ॥ मनउ मत्त गजगण निरषि ॥ सिंह किशोरहि चोप ॥ २७० ॥
॥ चौपई ॥ खर भर देखि विकल नर नारी ॥ सब मिलि देहि महीपन गारी ॥ तेहि अ
वसर मुनि शिव धनु भंगा ॥ आये भृगुकुल कमल पतंगा ॥ देषि महीप सकल सकुचा
ने ॥ बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥ गौर शरीर भूति भल भ्राता ॥ भाल विशाल त्रिपु
ड बिराजा ॥ सीस जटा शशि बदन सुहावा ॥ रिसि वस कछुक अरुण होइ आवा ॥ भृ
कुटी कुटिल नयन रिसि राते ॥ सहजहि चितवत मनहु रिसाते ॥ वृषभ कंध उर बाहु
विसाला ॥ चारु जनेउ माल मृग छाला ॥ कटि मुनि बसन तूण दुइ बांधे ॥ धनु शर कर
कुठार कल कांधे ॥ दोहा ॥ सांत बेष करणी कठिन ॥ बरणि न जाइ सरूप ॥ धरि
मुनि तनु वीर रस ॥ आये जहं सब भूप ॥ २७१ ॥ चौपई ॥ देषत भृगुपति बेष कराला ॥
॥ उठे सकल भय विकल भुआला ॥ पितु समेत कहि कहि निज नामा ॥ लगे करण स
ब दंड प्रणामा ॥ जेहि सुभाय चितवहि हित जानी ॥ सो जानै जनु आयु खुटानी ॥ जन
क बहोरि आय सिर नावा ॥ सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥ आशिष दीन्ह सषी हर
षानी ॥ निज समाज लै गई सयानी ॥ बिश्वामित्र मिले पुनि आई ॥ पद सरोज मेले दो भा
ई ॥ राम लषन दशरथ के ढोटा ॥ दीन्ह असीस जानि भल जोटा ॥ राम हि चितय रहे

थकित लोचन ॥ रूप अपार मार मद मोचन ॥ दोहा ॥ बहुरि बिलोकि बिदेह सन ॥ क
हहु कहा अति भीर ॥ पूछत जानि अजान जिमि ॥ ब्यापेउ कोप शरीर ॥ २०२ ॥ चौ
पई ॥ समाचार कहि जनक सुनाये ॥ जेहि कारण महीप सब आये ॥ सुनत बचन
फिरि अनत निहारे ॥ देखे चाप खंड महि डारे ॥ अति रिस बोले बचन कठोरा
॥ कहु जड़ जनक धनुष के तोरा ॥ बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू ॥ उलटौं महि
जहं लगि तव राजू ॥ अति डर उतर देत नृप नाहीं ॥ कुटिल भूप हरषे मन मा
हीं ॥ सुर मुनि नाग नगर नर नारी ॥ सोचहिं सकल त्रास उर भारी ॥ मन पछिता
ति सीय महतारी ॥ बिधि सवांरि सब बात बिगारी ॥ भृगुपति कर सुभाव सुनि सी
ता ॥ अर्द्ध निमेष कल्प सम बीता ॥ दोहा ॥ सभय बिलोके लोग सब ॥ जानि जान
की भीर ॥ हृदय न हर्ष बिषाद कछु ॥ बोले श्री रघुबीर ॥ २०३ ॥ चौपई ॥ ना
थ शंभु धनु भंजनिहारा ॥ होइहि कोउ एक दास तुम्हारा ॥ आयसु कहा कहि
य किन मोही ॥ सुनि रिसाय बोले मुनि कोही ॥ सेवक सो जो करै सेवकाई ॥ अरि
करणी कर करिय लराई ॥ सुनहु राम जेहि शिवधनु तोरा ॥ सहसबाहु सम सो
रिपु मोरा ॥ सो बिलगाउ बिहाइ समाजा ॥ नतु मारे जैहैं सब राजा ॥ सुनि मुनि

बचन लषन देषा ने॥ बोले परसुधरहि अपमाने॥ बहु धनुहीं तोरे लरिकाई
॥कबहु न असि रिसि कीन्ह गोसाई॥ इहि धनु पर ममता केहि हेतू॥ सुनि रिसा
इ कह भृगुकुलकेतू॥ दोहा॥ रे नृप बालक काल बस॥ बोलत तोहि न संभार
धनुही सम त्रिपुरारि धनु॥ बिदित सकल संसार॥२०४॥ चौपई॥ लषन कहा हं
सि हमरे जाना॥ सुनहु देव सब धनुष समाना॥ कां छति लाभ जीर्ण धनु तोरे॥
देषा राम नये के भोरे॥ छुवत टूट रघुपति हि न दोसू॥ मुनि बिनु काज करिय
कत रोसू॥ बोले चितय परसु की ओरा॥ रे सठ सुनेहि सुभाव न मोरा॥ बाल
क बोलि बधौं नहि तोही॥ केवल मुनि जड जानेसि मोही॥ बाल ब्रह्मचारि अ
ति कोही॥ बिस्व बिदित क्षत्रीकुल द्रोही॥ भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही॥ बिपु
ल बार महिदेवन दीन्ही॥ सहसबाहु भुज छेदन हारा॥ परसु बिलोकु महीपकु
मारा॥ दोहा॥ मातु पितहि जनि सोचबस॥ करसि महीपकिशोर॥ गर्भन के अ
र्भक दलन॥ परसु मोर अति घोर॥२०५॥ चौपई॥ बिहंसि लषन बोले म्रदु बा
नी॥ अहो मुनीस महा भटमानी॥ पुनि पुनि मोहि दिषाव कुठारा॥ चहत उडा
वन फूंकि पहाडा॥ इहां कुम्हडबतिया कोउ नाहीं॥ जो तरजनि देषत मरि जाहीं॥

देखिकुठारसरासनबाना॥मैंकछुकहासहितअभिमाना॥भृगुकुलसमुझिजने
उबिलोकी॥जोकछुकहहुसहौंरिसरोकी॥सुरमहिसुरहरिजनअरुगाई॥ह
मरेकुलइनपरनसुराई॥बधेपापअपकीरतिहारे॥मारतहूंपापरियतुम्हारे॥
कोटिकुलिशसमबचनतुम्हारा॥ब्रिथाधरहुधनुबाणकुठारा॥दोहा॥जोबि
लोकिअनुचितकहेउ॥छमहुमहामुनिधीर॥सुनिसरोषभृगुबंशमणिबोले
गिरागंभीर॥२७३॥चौपई॥कौशिकसुनहुमंदयहबालक॥कुटिलकालब
सनिजकुलघालक॥भानुबंशराकेसकलंकू॥निपटनिरंकुशअबुधअसंकू॥
कालकवलहोइहिछणमाहीं॥करौंपुकारिखोरिमोहिनाहीं॥तुमहटकहुजौं
चहहुउबारा॥कहिप्रतापबलरोषहमारा॥लखनकहेउमुनिसुयशतुम्हारा॥
तुमहिअछतकोबरनैपारा॥अपनेमुखतुमआपनिकरणी॥बारअनेकभां
तिबहुबरणी॥नहिंसंतोषतौपुनिकछुकहहूं॥जनिरिसरोकिदुसहदुखसह
हू॥बीरब्रतीतुमधीरअछोभा॥गारीदेतनपावहुशोभा॥दोहा॥सूरसमरकर
णीकरहिं॥कहिनजनावहिंआपु॥बिद्यमानरणपायरिपु॥कायरकरहिंप्रला
पु॥२७४॥चौपई॥तुमतौकालहांकिजनुलावा॥बारबारमोहिलागिबुलावा॥

बाल०
८६

सुनतलषनकेबचनकठोरा॥परसुसुधारिधरेउकरघोरा॥अबजनिदेउंदोष
मुहिलोगू॥कटुबादीबालकबधजोगू॥बालबिलोकिबहुतमैंबांचा॥अबय
हमरणहारभासांचा॥कौशिककहाछमियअपराधू॥बालदोषगुणगणहिंन
साधू॥करकुठारमैंअकरणकोही॥आगेअपराधीगुरुद्रोही॥उतरदेतछो
डौंबिनुमारे॥केवलकौशिकशीलतुम्हारे॥नतुइहिंकाटिकुठारकठोरे॥गु
रहिंउरिणहोतेउंश्रमथोरे॥दोहा॥गाधिसुअनकहहृदयहंसि॥मुनिहिह
रिअरिसूझ॥अयमयखंडेनऊषमयजिमि॥अजहुंनबूझअबूझ॥२७८॥चौ
पई॥कहेउलषनमुनिशीलतुम्हारा॥कोनहिंजानबिदितसंसारा॥मातुहिंपि
तहिंअरिणभयेनीके॥गुरुरिणरहासोचबडजीके॥सोजनुहमरेमाथेकाढा
दिनचलिगयेब्याजबडबाढा॥अबआनियबवहरियाबोली॥तुरतदेव
मैंथैलीखोली॥सुनिकटुबचनकुठारसुधारा॥हाहाकहिसबलोगपुकारा॥
भृगुबरपरसुदेषावहिमोही॥बिप्रबिचारिबचौंनृपद्रोही॥मिलेनकबहुं
सुभटरण॥द्विजदेवताघरहिकेबाढे॥अनुचितकहिसबलोगपुकारे॥रघुपति
सैनहिंलषननिवारे॥दोहा॥लषनउतरआहुतिसरिस॥भृगुबरकोपकृशा

जमदग्नित
पोमूर्तिराम
परशुधा
रिणंरिण
को
राम
८६

तु ॥ बदत देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु ॥ २७७ ॥ चौपई ॥ नाथ करहु बाल
क र छोहू ॥ सूध दूधमुष करिय न कोहू ॥ जो पै प्रभु प्रभाव कछु जाना ॥ तो कि बराब
रि करत अयाना ॥ जौ लरिका कछु अनुचित करहीं ॥ गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं ॥
करिय कृपा सिसु सेवक जानी ॥ तुम सम सील धीर मुनि ग्यानी ॥ राम बचन सुनि कछुक
जुडाने ॥ कहि कछु लषन बहुरि मुसुकाने ॥ हंसत देषि नष सिष रिस ब्यापी ॥ राम
तोर भ्राता बड पापी ॥ गोर सरीर स्याम मन माहीं ॥ कालकूट मुष पयमुष नाहीं ॥ स
हज टेढ अनुहरै न तोही ॥ नीच मीच सम लखे न मोही ॥ दोहा ॥ लषन कहेउ हंसि सु
नहु मुनि ॥ क्रोध पाप कर मूल ॥ जेहि बस जन अनुचित करहिं ॥ चरहिं बिस्व प्रतिकू
ल ॥ २७८ ॥ चौपई ॥ मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया ॥ परिहरि कोप करिय अब दाया ॥ टू
ट चाप नहिं जुरहिं रिसाने ॥ बैठिय होइहि पाय पिराने ॥ जो अति प्रिय तो करिय उपाई
जोरिय कोउ बड गुणी बुलाई ॥ बोलत लषनहिं जनक डराहीं ॥ मष्ट करहु अनुचित न
भल नाहीं ॥ थर थर कांपहिं पुर नर नारी ॥ छोट कुमार षोट अनुति भारी ॥ भृगुपति सुनि सु
नि निर्भय बानी ॥ रिस तनु जरै होय बल हानी ॥ बोले रामहिं देइ निहोरा ॥ बचौ बिचा
रि बंधु लघु तोरा ॥ मन मलीन तनु सुंदर कैसे ॥ बिष रस भरा कनक घट जैसे ॥ दोहा

॥दोहा॥सुनिलक्ष्मणविहंसेवहुरि।नयनतरेरेराम॥गुरुसमीपगवनेसकुचि॥परि
हरिबाणीबाम॥२७७॥चौपई॥अतिबिनीतमृदुसीतलबाणी॥बोलेरामजोरिजुगपा
णी॥सुनहुनाथतुमसहजसुजाना॥बालकबचनकरियनहिंकाना॥बररैबालक
एकसुभाऊ॥इन्हहिनसंतविदूषहिंकाहू॥तिननाहींकछुकाजबिगारा॥अपरा
धीमैंनाथतुम्हारा॥कृपाकोपबधबंधुगुसाईं॥मोपरकरियदासकीनाईं॥कहिय
बेगिजेहिबिधिरिसजाई॥मुनिनायकसोकरियउपाई॥कहमुनिरामजाइरिसकै
से॥अजहुंबंधुतवचितवतऐसे॥इहिकेकंठकुठारनदीन्हा॥तौमैंकहाकोपकरि
कीन्हा॥दोहा॥गर्भस्रवहिंअवनिपरहि॥सुनिकुठारगतिघोर॥परसुअछत
देखौंजिअत॥बैरीभूपकिशोर॥२७८॥चौपई॥बहैनहाथदहैरिसछाती॥भाकु
ठारकुंठितनृपघाती॥भयेउबामविधिफिरेउसुभाऊ॥मोरेहृदयकृपाकसकाऊ
॥आजुदैवदुखदुसहसहावा॥सुनिसोमित्रिबिहसिसिरनावा॥बाउकृपामूर
तिअनुकूला॥बोलतबचनझरतजनुफूला॥जौंपैकृपाजरैमुनिगाता॥क्रोधभयेत
नुराखुबिधाता॥देखजनकहठिबालकएहू॥कीन्हचहतजडयमपुरगेहू॥बेगि
करहुकिनआंखनओटा॥देखतछोटखोटनृपढोटा॥बिहंसेलखनकहामनमा

हीं॥ मूंदिआंखिकतहूंकोउनाहीं॥ दोहा॥ परसुरामतबरामप्रति॥ बोलेबचनस
क्रोध॥ शंभुशरासनतोरिसठ करसिहमारप्रबोध॥ २२३॥ चौपई॥ बंधुकहैकट
संमततोरे॥ तूछलबिनयकरसिकरजोरे॥ करुपरितोषमोरसंग्रामा॥ नाहितछाँ
डुकहावबरामा॥ छलतजिकरहुसमरशिवद्रोही॥ बंधुसहितनतुमारौंतोही॥ भृ
गुपतिबकहिंकुठारउठाये॥ मनमुसुकाहिंरामसिरनाये॥ गुणहलखनकरहम
पररोषू॥ कतहुंसुधाइहुतेबडदोषू॥ टेढजानिशंकासबकाहू॥ बक्रचंद्रमहिग्रसै
नराहू॥ रामकहेउरिसितजियमुनीसा॥ करकुठारआगेयहसीसा॥ जेहिरिसि
जाइकरियसोइस्वामी॥ मोहिजानआपनअनुगामी॥ दोहा॥ प्रभुसेवकहिसम
रकस॥ तजहुविप्रबररोष॥ भेषबिलोकिकहेसिकछु॥ बालकहूंनहिदोष॥ २
२४॥ चौपई॥ देखिकुठारबाणधनुधारी॥ भैलरिकहिंरिसिबीरबिचारी॥ नाम
जानपैतुमहिनचीन्हा॥ बंशसुभावउतरतेहिदीन्हा॥ जौंतुमऔतेहुमुनिकीना
ई॥ पदरजशिरसिसुधरतगुसाईं॥ छमहुचूकअनजानतकेरी॥ चहियविप्रउरकृ
पाघनेरी॥ हमहिंतुमहिंसरबरिकसनाथा॥ कहहुतौकहांचरणकहमाथा॥
राममात्रलघुनामहमारा॥ परसुहितबडनामतुम्हारा॥ देवएकगुणधनुषहम

बाल० ८८

मारे॥नवगुणपरमपुनीततुम्हारे॥सबप्रकारहमतुमसनहारे॥छमहुविप्रअ
पराधहमारे॥ दोहा ॥बारबारमुनिविप्रबर॥कहारामसनराम॥बोलेभृगुप
तिसरुषहोइ तुहूंबंधुसमबाम॥२८५॥चौपई॥ निपटहिद्विजकरिजानेहुमो
ही॥मैंजसविप्रसुनाऊंतोही॥चापश्रुवासरआहुतिजानू॥कोपमोरअतिघो
रकृसानू॥समिधसेनचतुरंगसुहाई॥महामहीपभयेपसुआई॥मैंइहिपरसु
काटिबलिदीन्हा॥समरजग्यजगकोटिनकीन्हा॥मोरप्रभावबिदितनहिंतोरे॥
॥बोलेसिनिदरिविप्रकेभोरे॥भंजेउचापदापबडबाढा॥अहमितिमनहुजी
तिजगठाढा॥रामकहामुनिकहहुबिचारी॥रिसअतिबडिलघुचूकहमारी॥
छुवतहिटूटपिनाकपुराना॥मैंकेहिहेतुकरौंअभिमाना॥दोहा॥जौंहमनिदर
हिविप्रबदि॥सत्यसुनहुभृगुनाथ॥तौअसकोजगसुभटजेहि॥भयबसनावहिं
माथ॥२८६॥चौपई॥ देवदनुजभूपतिभटनाना॥समबलअधिकहोउबलवाना
॥जौंरणहमहिंप्रचारयकोऊ॥लरहिंसुखेनकालकिनहोऊ॥छत्रियतनुधरिस
मरसकाना॥कुलकलंकतेहिपावरआना॥कहौंसुभावनकुलहिप्रसंसी॥काल
हिडरहुनरणरघुबंसी॥विप्रबंसकीअसिप्रभुताई॥अभयहोइजोतुमहि

म ८८

डराई॥ सुनि म्रदु गूढ बचन रघुपति के॥ उघरे पटल परसुधर मति के॥ राम रमापति क
र धनु लेहू॥ खैंचहु मोर मिटै संदेहू॥ देत चापु आपुहि चलि गयऊ॥ परसुराम म
न बिसमय भयऊ॥ दोहा॥ जाना राम प्रभाव तब॥ पुलक प्रफुलित गात॥ जोरि
पाणि बोले बचन॥ प्रेम न हृदय समात॥ २८७॥ चौपई॥ जय रघुबंस बनज बन भा
नू॥ गहन दनुज कुल दहन क्रिसानू॥ जय सुर बिप्र धेनु हितकारी॥ जय मद मो
ह क्रोध भ्रम हारी॥ बिनय शील करुणा गुण सागर॥ जयति बचन रचना अति नाग
र॥ सेवक सुखद सुभग सब अंगा॥ जय शरीर छबि कोटि अनंगा॥ करौं कहा
मुख एक प्रशंसा॥ जय महेश मन मानस हंसा॥ अनुचित बहुत कहेउ अग्याता
॥ छमहु छमा मंदिर दोउ भ्राता॥ कहि जय जय रघुकुल केतू॥ भ्रगुपति गये उ
बन हित प हेतू॥ अप भय कुटिल मही पडराने॥ जहि तहि कायर गवहि पराने
॥ दोहा॥ देवन्ह दीन्ही दुंदुभी॥ प्रभु पर बरषहिं फूल॥ हरषे पुर नर नारि सब
॥ मिटा मोह मय सूल॥ २८८॥ चौपई॥ अति गहगहे बाजने बाजे॥ सबहि
मनोहर मंगल साजे॥ जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी॥ करहिं गान कल को
किलबयनी॥ सुष बिदेह कर बरणि न जाई॥ जन्म दरिद्र मनहु निधि पाई॥

बाल० ८९

बिगतत्रासभइसीयसुषारी॥जनुबिधुउदयचकोरकुमारी॥जनककीन्हकोशि
कहिप्रणामा॥प्रभुप्रसादधनुभंजेउरामा॥मोहिक्रितक्रित्यकीन्हदुइभाई
॥अबजोउचितसोकहियगुसाईं॥कहमुनिसुननरनाहप्रबीना॥रहाविवाह
चापआधीना॥टूटतहिधनुजबभयउविवाहू॥सुरनरनागबिदितसबकाहू
॥दोहा॥तदपिजाइतुमकरहुअब॥यथावंशव्यवहार॥बूझिविप्रकुल
बृद्धगुरु॥बेदविदितआचार॥२८६॥चौपई॥दूतअवधपुरपठवहु
जाई॥आनैनृपदशरथहिबुलाई॥मुदितराउकहिभलेहिंकृपाला
॥पठयेदूतअवधतेहिकाला॥बहुरिमहाजनसकलबुलाये॥आई
सबनिसादरसिरनावा॥हाटबाटमंदिरसुरवासा॥नगरसवारिहुचारिहुपासा
॥हरषिचलेनिजनिजगृहआये॥पुनिपरिचारबोलिपठाये॥रचहुविचित्रबि
तानबनाई॥सिरधरिवचनचलेसचुपाई॥पठयेबोलिगुणीतिन्हनाना॥जो
बितानविधिकुशलसुजाना॥विधिहिबंदितिन्हकीन्हअरंभा॥बिरचेकनकक
दलीकेखंभा॥दोहा॥हरितमणिनकेपत्रफल॥पद्मरागकेफूल॥रचनादेखिबि
विचित्रअति॥मनविरंचिकेभूल॥२८७॥चौपई॥वेणुहरितमणिमयसबकीन्हे

जालमति

राम ८९

सरल सीधा पाना महत जाए पान जाते — कलि — नागर बेलि — पाना सहत

सरल सपर हिं नहिं चीन्हे ॥ कनक कलित अहिबेलि बनाई ॥ लखि नहिं परै सपर्ण सुहाई ॥ तेहि के रचि पचि बंध बनाये ॥ बिच बिच मुकुता दाम सुहाये ॥ मानिक मरकत कुलिश पिरोजा ॥ चीर कोर पचि रचे सरोजा ॥ किये भृंग बहु रंग बिहंगा ॥ गुंजहिं कुंजहिं पवन प्रसंगा ॥ सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि काढे ॥ मंगल द्रव्य लिये सब ठाढे ॥ चौकें भांति अनेक पुराये ॥ सिंधुर मणिमय सहज सुहाये ॥ सौरभ पल्लव सुभग सुठि किये नीलमणि कोर ॥ हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोर ॥ २८८ ॥ चौपई ॥ रचे रुचिर बर बंदनवारे ॥ मनहु मनोभव फंद संवारे ॥ मंगल कलश अनेक बनाये ॥ ध्वज पताक पट चवर सुहाये ॥ दीप मनोहर मणिमय नाना ॥ जाइ न बरणि विचित्र विताना ॥ जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही ॥ सो बरणै अस मति कवि केही ॥ दूलह राम रूप गुण सागर ॥ सो बितान तिहुं लोक उजागर ॥ जनक भवन की शोभा जैसी ॥ गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥ जेहि तिरहुति तेहि समय निहारी ॥ तेहि लघु लगे भुवन दश चारी ॥ जे संपदा नीच गृह सोहा ॥ सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥ दोहा ॥ बसै नगर जेहि लक्षि करि कपट नारि बर भेष ॥ तेहि पुर की शोभा कहत सकुचै शारद शेष ॥ २८९ ॥ चौपई ॥ पहुंचे दूत राम पुर पावन ॥ हर्षे नगर बिलोकि सुहावन ॥ भूप द्वार तिन्ह खबर जनाई ॥ दशरथ नृप सुन लिये बुलाई ॥ करि प्रणाम तिन्ह पा

कमल

नाक

लंसनीया कु

हस्ती २

सोनु मंजरी लाल मणि फूल ८

बा०का०
९०

तीन्ही॥ मुदित महीप आपु उठि लीन्ही॥ बारि बिलोचन बाचत पाती॥ पुलक गात आ
ई भरि छाती॥ राम लषन उर कर बर चीठी॥ रहि गये कहत न षाटी मीठी॥ पुनि धरि धी
र पत्रिका बांची॥ हरषी सभा बात सुनि सांची॥ खेलत रहे तहां सुधि पाई॥ आये भर
त सहित हित भाई॥ पूछत अति सनेह सकुचाई॥ तात कहां ते पाती आई॥ दोहा॥ कु
शल प्राण प्रिय बंधु दोउ॥ अहहि कहहु केहि देश॥ सुनि सनेह साने बचन॥ बांची ब
हुरि नरेश॥ २९०॥ चौपई॥ सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता॥ अधिक सनेह समात न
गाता॥ प्रीति पुनीत भरत की देषी॥ सकल सभा सुष लहेउ बिशेषी॥ तब नृप दूत निक
ट बैठारे॥ मधुर मनोहर बचन उचारे॥ भैया कुशल कहहु दोउ बारे॥ तुम नीके निज
नयन निहारे॥ श्यामल गौर धरे धनु भाथा॥ बय किशोर कौशिक मुनि साथा॥ पहिचा
नेउ तौ कहहु सुभाऊ॥ प्रेम बिबश पुनि पुनि कह राऊ॥ जा दिन ते मुनि गये लिवाई॥ त
ब ते आजु सांच सुधि पाई॥ कहहु बिदेह कवन बिधि जाने॥ सुनि प्रिय बचन दूत मुसु
काने॥ दोहा॥ सुनहु महीपति मुकुटमणि॥ तुम सम धन्य न कोउ॥ राम लषन जिनके
तनय॥ बिश्व बिभूषण दोउ॥ २९१॥ चौपई॥ पूछत योग न तनय तुम्हारे॥ पुरुषसिंह ति
हुं पुर उजियारे॥ जिनके यश प्रताप के आगे॥ शशि मलीन रबि सीतल लागे॥ तिनक

राम
९०

हंकहियनाथकिमिचीन्हे॥देखियरबिहिकिदीपकलीन्हे॥सीयस्वयंबरभूपअनेका॥सि
मिटेसुभटएकतेएका॥संभुसरासनकाहूनटारा॥हारेसकलबीरबरियारा॥तीनि
लोकमहंजेभटमानी॥सबकीसक्तिसंभुधनुभानी॥सकैउठाइसुरासुरमेरू॥सोऊ
हियहारिगयउकरफेरू॥जेहिकौतुकशिवसैलउठावा॥सोउतेहिसभापराभवपा
वा॥ दोहा॥तहांरामरघुबंसमनि॥सुनियमहामहिपाल॥भंजेउचापप्रयासबिनु॥जि
मिगजपंकजनाल॥२२५॥ चौपई॥ सुनिसरोषभृगुनायकआये॥बहुतभांतिति
न्हआंखिदेखाये॥देखिरामबलनिजधनुदीन्हा॥करिबहुबिनयगवनबनकीन्हा॥
राजनरामअतुलबलजैसे॥तेजनिधानलषनपुनितैसे॥कंपहिंभूपबिलोकतजाके
जिमिहरिगजकिशोरकेताके॥देवदेषितवबालकदोऊ॥अबनिआंखितरआवनको
ऊ॥दूतबचनरचनाप्रियलागी॥प्रेमप्रतापबीररसपागी॥सभासमेतराउअनुरागे॥दू
तन्हदेननिछावरिलागे॥कहिअनीतितेमूंदेनकाना॥धर्मबिचारिसबहिसुषमाना
॥दोहा॥तबउठिभूपबसिष्टकहदीन्हपत्रिकाजाइ॥कथासुनाईगुरुहिसब॥सादर
दूतबुलाइ॥२२६॥ चौपई॥ सुनिबोलेमुनिअतिसुषपाई॥पुण्यपुरुषकहमहि
सुषछाई॥जिमिसरितासागरमहजाई॥यद्यपिताहिकामनानांई॥जिमिसुषसंपतिबि

बाल०
९१

नहिं बुलाये॥ धर्मशील पहं जाहिं सुभायें॥ तुम गुरु विप्र धेनु सुर सेवी॥ तस पुनीत कौ-
शल्या देवी॥ सुकृती तुम समान जग माहीं॥ भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं॥ तुम ते अधि
क पुण्य बड काके॥ राजन राम सरस सुत जाके॥ वीर विनीत धर्म ब्रत धारी॥ गुण साग
र बालक बर चारी॥ तुम कह सर्व काल कल्याना॥ सजहु बरात बजाइ निसाना॥ दोहा
॥ चलेउ बेगि सुनु गुरु बचन। भलेहिं नाथ शिर नाइ॥ नृपति गवने भवन तब दूतहि
वास दिवाइ॥ २९६॥ चौपई॥ राजा सब रनिवांस बुलाई॥ जनक पत्रिका बांच सुना
ई॥ सुनि संदेश सकल हरषानी॥ अपर कथा सब नृप बषानी॥ प्रेम प्रफुल्लित राजे रानी
॥ मनहु शिषिन सुनि बारद बानी॥ मुदित असीस देहिं गुरु नारी॥ अति आनंद मग
न महतारी॥ लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती॥ हृदय लगाइ जुडावहिं छाती॥ राम लषन की
कीरति करणी। बारहि बार भूप बर बरणी॥ मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये। रानिन्ह तब म
हिदेव बुलाये॥ दिये दान आनंद समेता। चले बिप्र बर आशिष देता॥ सोरठा॥ याचक
लिये हंकारि। दीन्ह निछावर कोटि विधि॥ चिरजीवहु सुत चारि। चक्रवर्ति दशरथ हि
के॥ २९७॥ चौपई॥ कहत चले पहिरें पट नाना॥ हरषि हने गहगहे निसाना॥ समा
चार सब लोगन पाये॥ लागे घर घर होन बधाये॥ भुवन चारि दश भरेउ उछाहू॥ जन

राम
९१

सुनिकलरवकंठलजानी नृपभवनकिमिजाइबषानी बिस्वबिमोहनरचेउबिताना मंगलद्रव्यमनोहरनाना ७

कहुतातरघुबीरबिबाहू ॥ सुनिसुभकथालोगअनुरागे ॥ मगगृहगलीसवांरनलागे ॥ जद्य
पिअवधसदैवसुहावनि ॥ रामपुरीमंगलमयपावनि ॥ तदपिप्रीतिकीरीतसुहाई ॥ मंग
लरचनारचीबनाई ॥ ध्वजपताकपटचामरचारू ॥ छावापरमबिचित्रबजारू ॥ कनकक
लसतोरणमणिजाला ॥ हरददूबदधिअछतमाला ॥ दोहा ॥ मंगलमयनिजनिजभव
गु
न ॥ लोगनरचेबनाइ ॥ बीथीसींचीअंजन ॥ चौकेचारुपुराइ ॥ २९६ ॥ चौपई ॥ जहंत
हंजूथजूथमिलिभामिनि ॥ सजिनवसप्तसकलदुतिदामिनी ॥ बिधुबदनीमृगसावकलो
चनि ॥ निजसरूपरतिमानबिमोचनि ॥ गावहिंमंगलमंजुलबानी ॥ राजतबाजतबिपु
लनिसाना ॥ कतहुंबिरदबंदीउच्चरहीं ॥ कतहुंबेदधुनिभूसुरकरहीं ॥ गावहिंसुंदरमंग
लगीता ॥ लैलैरामनामअरुसीता ॥ बहुतउछाहभवनअतिथोरा ॥ मानहुंउमगिच
लाचहुंओरा ॥ दोहा ॥ सोभादसरथभवनकी ॥ कोकबिबरनेपार ॥ जहांसकलसुरसी
समणि ॥ रामलीन्हअवतार ॥ २९७ ॥ चौपई ॥ नृपभरतपुनिलयेबुलाई ॥ हयगयस्यं
दनसाजहुजाई ॥ चलहुबेगिरघुबीरबराता ॥ सुनतपुलकपूरेदोउभ्राता ॥ भरतसक
लसाहनीबुलाये ॥ आयसुदीन्हमुदितउठिधाये ॥ रुचिरुचिजीनतुरगतिनसाजे ॥ बर्णब
र्णबरबाजिबिराजे ॥ सुभगसकलसुठिचंचलकरणी ॥ अयजिमिजरतधरतपगधरणी ॥

बांधे बिरद बीर रण गाढे निकसि भये पुर बाहिर ठाढे फेरहिं चतुर तुरंग गति नाना हरषहिं सुनि सुनि पणव निसाना रथ सार
थिन बिचित्र बनाये ध्वज पताक मणि भूषण लाये २

नाना भांति न जाहिं बषाने॥ निदरि पवन जनु चहत उडाने॥ तिन सब छयल भये असवारा॥ भरत
सरिस सब राजकुमारा॥ सब सुंदर सब भूषणधारी॥ कर सर चाप तूण कटि भारी॥ दो० छरे
छबीले छयल सब॥ सूर सुजान नबीन॥ जुग पदचर असवार प्रति॥ जे असि कला प्रबीन॥ २२०॥
चवर चारु किंकिणि धुनि करही॥ भानु यान सोभा अपहरहीं॥ श्यामकरण अगणित हय
होते॥ ते तिन्ह रथन सारथिन जोते॥ सुंदर सकल अलंकृत सोहैं॥ जिनहि बिलोकित मुनि
मन मोहैं॥ जे जल चलहिं थलहि की नाई॥ टाप न बूड बेग अधिकाई॥ अस्त्र शस्त्र सब सा
ज सजाई॥ रथी सारथिन लिये बुलाई॥ दोहा॥ चढि चढि रथ बाहिर नगर॥ लागी जुरन ब
रात॥ होत सगुन सुंदर सबहिं॥ जो जेहि कारज जात॥ २२१॥ चौपई॥ कलित करिन्ह पर
परी अंबारी॥ कहि न जाय जेहि भांत सवारी॥ चले मत्त गज घंट बिराजे॥ मनहु सुभग
सावन घन गाजे॥ बाहन अपर अनेक बिधाना॥ शिबिका सुभग सुषासन याना॥ तिन चढि
चले बिप्र बर बृंदा॥ जनु तनु धरे सकल श्रुति छंदा॥ मागध सूत बंदि गुण गायक॥ चले यान
चढि जो जेहि लायक॥ बेसर ऊंट बृषभ बहु जाती॥ चले बस्तु भरि अगणित भांती॥ कोटि
न कांवरि चले कहारा॥ बिबिध बस्तु को बरनै पारा॥ चले सकल सेवक समुदाई॥ निज नि
ज साज समाज बनाई॥ दोहा॥ सब के उर निर्भर हरष॥ पूरित पुलक शरीर॥ कबहि

देखिकहैंनरनारि॥रामलषनदोउवीर॥३०२॥चौपई॥गरजहिंगजघंटाधुनिघोरा र
थरववाजिहिंसचहुओरा॥निदरिघनहिंघुर्म्मरहीनिसाना॥निजपराइकछुसुनियन
काना॥महाभीरभूपतिकेद्वारे॥रजहोइजाइपषानपवारे॥चढीअटारिनदेखहिंना
री॥लयेआरतीमंगलथारी॥गावहिंगीतमनोहरनाना॥अतिआनंदनजाइवखा
ना॥तबसुमंतदुइस्पंदनसाजी॥जोतेरविहयनिंदकवाजी॥दोउरथरुचिरभूपप
हिआने॥नहिंसारदपहिंजाहिंवखाने॥राजसमाजएकरथसाजा॥दूसरतेजपुंजअति
राजा॥दोहा॥तेहिरथरुचिरवसिष्टकहं॥हरषिचढाइनरेस॥आपुचढेउस्पंदनसु
मिरि॥हरगुरगौरिगणेस॥३०३॥चौपई॥सहितवसिष्टसोहनृपकैसे॥सुरगुरसंगपु
रंदरजैसे॥करिकुलरीतिवेदविधिराऊ॥देखिसवहिंसवभांतिवनाऊ॥सुमिरिरामगु
रआयसुपाई॥चलेमहीपतिसंखवजाई॥हरषेविवुधविलोकिवराता॥वरषहिं
सुमनसुमंगलदाता॥भयेउकोलाहलहयगयगाजे॥व्योमवरातवाजनेवाजे॥सुरन
रनारिसुमंगलगाई॥सरसरागवाजहिंसहनाई॥घंटघंटिधुनिवरणिनजाई॥सरौं
करैंपायकफहराई॥करहिंविदूषककौतुकनाना॥हांसकुशलकलगानसुजाना
॥दोहा॥तुरगनचावहिंकुंवरवर॥अकनिमृदंगनिसान॥नागरनटचितवहिंचकि

बाल ९३

त ॥ डगहि न ताल बिधान ॥ ३०४ ॥ चौपई ॥ बनै न बरनत बनी बराता ॥ होइ सगुन सुं
दर सुभ दाता ॥ चारा चाष बाम दिसि लेई ॥ मनहु सकल मंगल कहि देई ॥ दाहिन काग
सुखेत सुहावा ॥ नकुल दरस सब काहू पावा ॥ सानुकूल बह त्रिबिध बयारी ॥ सघट
सवाल आव बर नारी ॥ लोवा फिरि फिरि दर्स दिखावा ॥ सुरभी सन्मुख सिसुहि पि
आवा ॥ मृगमाला दाहिन दिसि आई ॥ मंगल गण जनु दीन दिखाई ॥ छेमकरी कह छे
म विसेषी ॥ स्यामा वाम सुतरु पर देषी ॥ सन्मुष आयेउ दधि अरु मीना ॥ कर पुस्त
क दुइ विप्र प्रवीना ॥ दोहा ॥ मंगलमय कल्याणमय अभिमत फल दातार ॥ ज
नु सब सांचे होन हित भये सगुन एक बार ॥ ३०५ ॥ चौपई ॥ मंगल सगुन सुगम
सब ताके ॥ सगुण ब्रह्म सुंदर सुत जाके ॥ राम सरिस वर दुलहिनि सीता ॥ समधी दस
रथ जनक पुनीता ॥ सुनि अस ब्याह सगुन सब नाचे ॥ अब कीन्हे विरंचि हम सांचे ॥
इहि विधि कीन्ह बरात पयाना ॥ हय गय गाजहिं हने निसाना ॥ आवत जानि भानु
कुल केतू ॥ सरितन जनक बधाये सेतू ॥ बीच बीच बर वास बनाये ॥ सुरपुर सरिस
संपदा छाये ॥ असन सयन बर बसन सुहाये ॥ पावहिं सब निज निज मन भाये ॥ निति
नूतन सुष लखि अनुकूले ॥ सकल बरातिन मंदिर भूले ॥ दोहा ॥ आवत जानि बरा

राम ९३

गा

तबर।सुनिगहगहेनिसान॥सजिगजरथपदचरतुरंग॥लेनचलेभगवान॥२२६॥चौपई॥कनककलसपुनिकलसकोपरथारा॥भोजनललितअनेकप्रकारा॥भरेसुधासमसबपकवाना॥भांतिभांतिनहिंजाइबखाना॥फलअनेकबरबस्तुसुहाई॥हरखिभेटहितभूपपगाई॥भूषणबसनमहामणिनाना॥खगमृगहयगयबहुबिधियाना॥मंगलसगुनसुगंधसुहाये॥बहुतभांतिमहिपालपगाये॥दधिचिउवानुपहारअपारा॥नरिनरिकांवरिचलेकहारा॥भगवाननजबदीखबराता॥उरआनंदउउनेकतनरांता॥देखिबनावसहितभगवाना॥मुदितबरातिनहनेनिसाना॥दोहा॥हरखिपरसपमिलनहित।कञ्चुकचलेबगमेल॥जनुआनंदसमुदउदु॥मिलतबिहादसुबेल॥२२७॥चौपई॥बरखिसुमनसुरसुंदरिगावहिं॥मुदितदेवदुंदुभीबजावहिं॥बस्तुसकलराखीनृपआगे॥बिनयकीनतिन्हअतिअनुरागे॥प्रेमसमेतराउसबलीन्हा॥नेवकसीसयाचकनदीन्हा॥करिसजामानताबडाई॥जनवांसेकहचलेलवाई बसनविचित्रपावडेपरहीं॥नृपदसारथतापरपाधरहीं॥देखिधनदधनमदपरिहरहीं॥बरखिसुमनसुरजयजयकरहीं॥अतिसुंदरकीन्हेउजनवांसा॥जहंसबकहंसबभांतिसुपासा॥जानिसियबरातपुरआई॥कछुनिजमहिमाप्रगटिजनाई॥हद

बाल० ८४

यसुमिरिसबसिद्धबुलाईं॥भूपपक्षनईकरणपगाई॥दोहा॥सियआयसुसिरसिद्ध
धरिगाईजहांजनवांस॥लयेसंपदासकलसुर॥सुरपुरभोगबिलास॥३०७॥चौप
ई॥निजनिजवासबिलोकिबराती॥सुरसुखसकलसुलभसबभांती॥बिनवभेदक
छुकाहुनजाना॥सकलजनकरकरहिंबखाना॥सियमहिमारघुनायकजानी॥हर
षेहृदयहेतुपहिचानी॥पितुआगमनसुनतदोउभाई॥हृदयनअतिआनंदसमा
ई॥सकुचतकहिंनसकतगुरुपाहीं॥पितुदर्शनलालचमनमांहीं॥विश्वामित्रबिन
यबडिदेषी॥उपजाउरसंतोषबिशेषी॥हरषिबंधुदोउहृदयलगाये॥पुलकअंग
लोचनजलछाये॥चलेजहांदशरथजनवांसे॥मनहुंसरोबरतकेउपियासे॥दो॥
हा॥नृपबिलोकेजबहिंमुनि॥आवतसुतनसमेत॥उठेउहरषिसुखसिंधुमहं॥चले
थाहसीलेत॥३०८॥चौपई॥मुनिहिंदंडवतकीन्हमुनीसा॥बारबारपदरजधरसी
सा॥कौशिकराउलियेउरलाई॥कहिअसीसपूछीकुशलाई॥पुनिदंडवतकरतदो
उभाई॥देखिनृपतिउरसुखनसमाई॥सुतहियलाइदुसहदुखमेटे॥मृतकशरी
रप्राणजनुभेटे॥पुनिबशिष्टपदशिरतिननाये॥प्रेममुदितमुनिबरउरलाये॥विप्र
वृंदबंदेदुहुंभाई॥मनभावतीअसीसनपाई॥भरतसहानुजकीन्हप्रणामा॥लि

राम ८४

ये जग मङ्गलादइक रामा ॥ हरषे लषन देखि दोउ भ्राता ॥ मिले प्रेम परिपूरत गाता ॥ दोहा
॥ पुरजन परिजन जाति जन । याचक मंत्री मीत ॥ मिले यथा बिधि सबहि प्रभु ॥ पर
म कृपाल बिनीत ॥ ३०७ ॥ चौपई ॥ रामहि देखि बरात जुडानी ॥ प्रीति कि रीति न
जाइ बषानी ॥ नृप समीप सोहहिं सुत चारी ॥ जनु धन धर्मादिक तनुधारी ॥ सुतन्ह
सहित दशरथ कहं देषी ॥ मुदित नगर नर नारि बिशेषी ॥ सुमन बरषि सुर हनहि
निसाना ॥ नाकनटी नांचहिं करि गाना ॥ सतानंद अरु बिप्र सचिव गण ॥ मागध सू
त विडष बंदीजन ॥ सहित बरात राउ सनमाना ॥ आयसु मांगि फिरे अगवाना ॥ प्र
थम बरात लगन ते आई ॥ ताते पुर प्रमोद अधिकाई ॥ ब्रह्मानंद लोग सब लह
हीं बढउ दिवस निशि विधि सन कहहीं ॥ दोहा ॥ राम सीय शोभा अवधि ॥ सुकृ
त अवध दोउ राज ॥ जहं तहं पुरजन कहहिं अस ॥ मिल नर नारि समाज ॥ ३०८ ॥ चौ
पई ॥ जनक सुकृत मूरति बैदेही ॥ दशरथ सुकृत राम धरि देही ॥ इन सम का
हुन शिव अवराधे ॥ काहुन इन समान फल साधे ॥ इन सम कोउ न भये उ जग
माहीं ॥ है नहिं कतहूं होने उ नाहीं ॥ हम सब सकल सुकृत की रासी ॥ भये जग
जन्मि जनकपुर वासी ॥ जिन जानकी राम छबि देषी ॥ को सुकृती हम सरिस बिशे

नी॥ सुनि देखब रघुबीर बिबाहू॥ लेब भली बिधि लोचन लाहू॥ कहहिं परस्पर
कोकिलबयनी॥ यह बिबाह बड़ लाभु सुनयनी॥ बड़े भाग्य बिधि बात बनाई
॥ नयन अतिथि होइहैं दोउ भाई॥ दोहा॥ बारहि बार सनेह बस॥ जनक बुला
उब सीय॥ लेन आइहहिं बंधु दोउ॥ कोटि काम कमनीय॥ २४२॥ चौपई॥ बिबिध भां
ति होइहि पहुनाई॥ प्रिय न काहि अस सासुर माई॥ तब तब राम लषनहि निहारी॥
॥ होइहहिं सब पुर लोग सुखारी॥ सखि जस राम लषन कर जोटा॥ तैसेइ नृप संग
दुइ ढोटा॥ स्याम गौर सब अंग सुहाये॥ ते सब कहहिं देखि जे आये॥ कहा एक मैं
आजु निहारे॥ जनु बिरंचि निज हाथ सवांरे॥ भरत राम एकहि अनुहारी॥ सहसा
लखि न सकहिं नर नारी॥ लषन शत्रुसूदन इक रूपा॥ नख शिख ते सब अंग अनू
पा॥ मन भावहिं मुख बरणि न जांहीं॥ उपमा कह त्रिभुवन कोउ नाहीं॥ छंद॥ उप
मान कोउ कह दास तुलसी कतहुं कवि कोबिद कहै॥ बल बिनय विद्या शील सोभा सिं
धु इन सम ये अहै॥ पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावही॥ ब्याहियहु
चारिउ भाइ इहि पुर हम सुमंगल गावहिं॥ सोरठा॥ कहहिं परस्पर नारि॥ वारि बिलो
चन पुलक तन॥ सखि सब करब पुरारि॥ पुण्य पयोनिधि नृप दोउ॥ २४३॥ चौपई॥ इ

हिबिधिसकलमनोरथकरहीं॥ आनंदउमगिउमगिउरभरहीं॥ जेन्टपसीयस्वयंब रआ
ये॥ देखिबंधुसबतिनसुखपाये॥ कहतरामयशबिशदबिशाला॥ निजनिजभव
नगयेमहिपाला॥ गयेबीतकछुदिनयहभांती॥ प्रमुदितपुरजनसकलबराती
॥ मंगलमूललगनदिनआवा॥ हिमऋतुअगहनमाससुहावा॥ ग्रहतिथिनख
तयोगबरबारू॥ लगनसोधिबिधिकीनबिचारू॥ पठेदीन्हनारदसनसोई॥ गणी
जनककेगणकनजोई॥ सुनीसकललोगनयहबाता॥ कहहिंज्योतिषीअहहिं
बिधाता॥ दोहा॥ धेनुधूलिबेलाबिमल॥ सकलसुमंगलमूल॥ बिप्रकहेउबिदे
कार हसन॥ जानिसगुनअनुकूल॥ ३४४॥ चौपई॥ उपरोहितहिकहेउनरनाहा
॥ अबबिलंबकरणकाहा॥ सतानंदतबसचिवबुलाये॥ मंगलकलशसाजिसब
ल्याये॥ शंखनिशानपनवबहुबाजे॥ मंगलकलशसगुनसबसाजे॥ सुभगसुआ
सिनिगावहिंगीता॥ करहिंबेदधुनिबिप्रपुनीता॥ लेनचलेसादरयहिभांती॥ गयेज
हांजनवासबराती॥ कोशलपतिकरदेखसमाजू॥ अतिलघुलगेतिनहिसुरराजू
॥ भयउसमयअबधारियपाऊं॥ यहसुनिपरानिसाननिघाऊ॥ गुरुहिपूछिकरिकु
लविधिराजा॥ चलेसंगमुनिसाजसमाजा॥ दोहा॥ भाग्यबिभवअवधेशकर॥ देखि

बाल०
९६

देवब्रह्मादि ॥ जोगेसराहन सहसमुष जानिजन्म निजबादि ॥ ३१४ ॥ चौपई ॥ सुर सु
मंगल अवसर जाना ॥ बरषहिं सुमन बजाइ निसाना ॥ शिव ब्रह्मादिक बिबुध बरू
था ॥ चढे बिमानन्ह नाना यूथा ॥ प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू ॥ चले बिलोकन राम बि
वाहू ॥ देखि जनकपुर सुर अनुरागे ॥ निज निज लोक सबहिं लघु लागे ॥ चितवहिं चकि
त बिचित्र बिताना ॥ रचना सकल अलौकिक नाना ॥ नगर नारि नर रूप निधाना ॥ सुघ
र सुधर्म सुशील सुजाना ॥ तिनहिं देषि सब सुर सुरनारी ॥ भये नखत जनु बिधु उजिया
री ॥ बिधिहिं भयेउ आश्चर्य बिशेषी ॥ निज करणी कछु कतहुं न देषी ॥ दोहा ॥ शिव
समुझाये देव सब ॥ जनि आश्चर्य भुलाहु ॥ हृदय बिचारहु धीर धरि ॥ सिय रघुबीर
बिवाहु ॥ ३१५ ॥ चौपई ॥ जिनकर नाम लेत जग माहीं ॥ सकल अमंगल मूल नसाहीं
॥ करतल होहिं पदारथ चारी ॥ तेइ सिय राम कहेउ कामारी ॥ इहि बिधि शंभु सुरन समुझा
वा ॥ पुनि आगे बर बसह चलावा ॥ देवन देखे दशरथ जाता ॥ महा मोद मन पुलकित
गाता ॥ साधु समाज संग महिदेवा ॥ जनु तनु धरे करहिं सुख सेवा ॥ सोहत साथ सुभग सु
त चारी ॥ जनु अपबर्ग सकल तनुधारी ॥ मरकत कनक बरण बर जोरी ॥ देखि सुरन भै
प्रीति न थोरी ॥ पुनि रामहि बिलोकि हिय हरषे ॥ नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे ॥ दो

राम
९६

॥दोहा॥रामरूपनखसखसुभगा॥बारहिंबारनिहारि॥पुलकगातलोचनसजल॥उ
मासमेतपुरारि॥२४७॥चौपई॥केकिकंठदुतिश्यामलअंगा॥तडितबिनिंदिकबस
नसुरंगा॥ब्याहबिभूषणविविधिबनाये॥मंगलमयसबभांतिसुहाये॥शरदबिम
लबिधुवदनसुहावन॥नयननवलराजीवलजावन॥सकलअलौकिकसुंदरताई
॥कहिनजायमनहीमनभाई॥बंधुमनोहरसोहहिंसंगा॥जातनचावतचपलतुरं
गा॥राजकुवरबरबाजिनचावहिं॥बंशप्रसंसकविरदसुनावहिं॥जेहितुरंगपररा
मबिराजे॥गतिबिलोकिखगनायकलाजे॥कहिनजातसबभांतिसुहावा॥बाजिभे
षजनुकामबनावा॥छंद॥जनुबाजिभेषबनायमनसिजरामहितअतिसोहही॥
आपनेबयबलरूपगुणगतिसकलभुवनबिमोहही॥जगमगतजीनजडावज्यो
तिसुमोतिमानिकतेहिलगे॥किंकिणिललामलगामललितबिलोकिसुरनरमुनि
ठगे॥दोहा॥प्रभुमनसहिलयलीनमन॥चलतबाजिछबिपाव॥भूषणउडुगणत
डितघन॥जनुबरबरहिनचाव॥२४८॥चौपई॥जेहिबरबाजिरामअसवारा॥ते
हिसारदऊनबरनैपारा॥शंकररामरूपअनुरागे॥नयनपंचदशअतिप्रियलागे
हरिहितसहितरामजबजोहे॥रमासमेतरमापतिमोहे॥निरखिरामछबिबिधिहर

बाने॥ आठैनयनजानिपछिताने॥ सुरसेनपउरबहुतउछाहू॥ बिधितेडेवढलोचन
लाहू॥ रामहिंचितवसुरेससुजाना॥ गौतमश्रापपरमहितमाना॥ देवसकलसुरप
तिहिसिहाहीं॥ आजुपुरंदरसमकोउनाहीं॥ मुदितदेवगणरामहिदेषी॥ नृपसमा
जदुहुहरषविशेषी॥ छंद॥ अतिहरषराजसमाजदुहुंदिशिदुंदुभीबाजहिंघनी
॥ बरषहिंसुमनसुरहरषिकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी॥ इहिभांतिजानिब
रातआवतबाजनेबहुबाजहीं॥ रानीसुआसिनिबोलिपरिछनहेतुमंगलसाजहीं
॥ दोहा॥ सजिआरतीअनेकविधि॥ मंगलसकलसंवारि॥ चलीमुदितपरिछनक
रनगजगामिनिबरनारि॥ ३४५॥ चौपई॥ विधुबदनीमृगसावकलोचनि॥ सबनि
जतनुछबिरतिमदमोचनि॥ पहिरेबरनबरनबरचीरा॥ सकलबिभूषणसजेसरीरा
॥ सकलसुमंगलअंगबनाये॥ करहिंगानकलकंठलजाये॥ कंकणकिंकिणिनूपु
रबाजहिं॥ चालबिलोकिकामगजलाजहिं॥ बाजहिंबाजनबिविधिप्रकारा॥ नभअरु
नगरसुमंगलचारा॥ शचीसारदारमाभवानी॥ जेसुरतियसुचिसहजसयानी॥ क
पटनारिबरभेषबनाई॥ मिलीसकलरनिवासहिंआई॥ करहिंगानकलमंगल
बानी॥ हरषविवससबकाहुनजानी॥ छंद॥ कोजानकेहिआनंदबससबब्रह्मब

ती

रपरिछनचली॥कलगानमधुरनिसानबरषहिंसुमनसुरशोभानली॥आनंदकंदबिलो
किदूलहसकलहियहर्षितभई॥अंभोजअंबकअंबुउमगिसुअंगपुलकावलिछई
॥दोहा॥जोसुषभासियमातुमन॥देषिरामबरबेष॥सोनसकहिंकहिकल्पसत॥स
हससारदासेष॥३५०॥चौपई॥नयननीरहठिमंगलजानी॥परिछनिकरहिंमुदित
मनरानी॥बेदबिदितअरुकुलब्यवहारू॥कीन्हभलीबिधिसबपरवारू॥पंचशब्द
धुनिमंगलगाना॥पटपांवडेपरहिंबिधिनाना॥करिआरतीअर्घतिन्हदीन्हा॥राम
गवनमंडपतबकीन्हा॥दशरथसहितसमाजबिराजे॥बिभवबिलोकलोकपतिलाजे॥
॥समयसमयसुरबरषहिंफूला॥शांतिपढहिंमहिसुरअनुकूला॥नभअरुनगरको
लाहलहोई॥आपनपरकछुसुनैनकोई॥इहिबिधिराममंडपहिंआये॥अर्घदेइ
आसनबैठाये॥छंद॥बैठारिआसनआरतीकरिनिरषिबरसुषपावहीं॥म
निबसनभूषणभूरिवारहिंनारिमंगलगावहीं॥ब्रह्मादिसुरबरबिप्रबेषबना
इकौतुकदेषहीं॥अवलोकिरविकुलकमलरविछबिसुफलजीवनलेषहीं॥
दोहा॥नाऊबारीभाटनट॥रामनिछावरिपाइ॥मुदितअसीसहिंनाइसिर॥हर्ष
नहृदयसमाइ॥३५१॥चौपई॥मिलेजनकदशरथअतिप्रीति॥करिबैदिकलौ

३

किकसबरीती । मिलतमहादोउराजबिराजे उपमाखोजिखोजिकबिलाजे ॥ लहीनक
तकहुंहारिहियमानी ॥ इनसमयेउपमाउरआनी ॥ समधीदेखिदेवअनुरागे ॥ सुमन
बरषियशुगाबनलागे ॥ जगबिरंचिउपजाबाजबते ॥ देखेसुनेब्याहबहुतबजे ॥ सक
लभांतिसमसाजसमाजू ॥ समसमधीहमदेखेआजू ॥ देवगिरासुनिसुंदरसांची ॥ प्री
तिअलौकिकदुहुंदिशिमाची ॥ देतपांवडेअर्घसुहाये ॥ सादरजनकमंडपहिल्या
ये ॥ छंद ॥ मंडपबिलोकिबिचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे ॥ निजपाणिजनक
सुजानसबकहंआनिसिंहासनधरे ॥ कुलइष्टसरिसबशिष्टपूजेबिनयकरिआशि
षलही ॥ कौशिकहिपूजतपरमप्रीतितिरीतिनपरैकही ॥ दोहा ॥ बामदेवआदिकऋषि
यपूजेमुदितमहीश । दियेदिव्यआसनसबहि । सबसनलहीअसीस ॥ ३२० ॥ चौपई
॥ बहुविधिकीन्हकोशलपतिपूजा ॥ जानिईशसमभावनदूजा ॥ कीन्हजोरिकर
बिनयबडाई ॥ कहिनिजभाग्यबिभवबहुताई ॥ पूजेभूपतिसकलबराती ॥ समधी
समसादरसबभांति ॥ आसनउचितदयेसबकाहू ॥ कहौंकहामुखएकउछाहू ॥ स
कलबरातजनकसनमानी । दानमानबिनतीबरबानी ॥ बिधिहरिहरदिशिपति
दिनराऊ ॥ जेजानहिंरघुबीरप्रभाऊ । कपटबिप्रबरबेषबनाये ॥ कौतुकदेखहिंअ

तिसछुपाये ॥ २जेजनकदेवसमजाने ॥ दयेसुआसनबिनपहिचाने ॥ छंद ॥ पहिचान
कोकेहिंजानसबहिंअपानसुधिभोरीभई ॥ आनंदकंदबिलोकिदूलहहृनयदि
खिआनंदमई ॥ २५४ ॥ चौपई ॥ सुरलखेरामसुजानहरजेमानसिकआसनदये ॥
अबलोकिसरलसुभावप्रभुकोबिबुधमनप्रमुदितनये ॥ दोहा ॥ रामचंद्रमुषचंद
छबि। लोचनचारुचकोर। करतपानसादरसकल ॥ प्रेमप्रमोदनथोर ॥ २५५ ॥ चौ
पई ॥ समयबिलोकिबशिष्टबुलाये। सादरसतानंदमुनिआये ॥ बेगिकुवरिअ
बआनहुजाई ॥ चलेमुदितमुनिआयसुपाई ॥ रानीसुनिउपरोहितबानी ॥ प्रमु
दितसषिनसमेतसयानी ॥ बिप्रबधूकुलबृद्धबुलाई ॥ करिकुलरीतिसुमंगलगाई
॥ नारिबेषजेसुरबरबामा। सकलसुभायसुंदरीस्यामा ॥ तिन्हिंदेषिसुषपावहिंना
री ॥ बिनपहिचानप्रानतेप्यारी ॥ बारबारसनमानहिरानी ॥ उमारमासादरसमजा
नी ॥ सीयसवारिसमाजबनाई ॥ मुदितमंडपहिंचलीलिवाई ॥ छंद ॥ चलिल्याइसीत
हिसषीसादरसजिसुमंगलभामिनी ॥ नवसत्तसाजेसुंदरीसबमत्तकुंजरगामिनी ॥
॥ कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिंकामकोकिललाजहीं। मंजीरनूपुरकलित
कंकणतालगतिबरबाजहीं ॥ दोहा ॥ सोहतिबनितावृंदमहं ॥ सहजसुहावनिसी

बाल०
९९

य ॥ छबि ललित नागगण मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय ॥ ३५५ ॥ चौपई ॥ सिय सुंदरता
बरनि न जाई ॥ लघुमति बहुत मनोहरताई ॥ आवति देखि बरातिन सीता ॥ रूपरास
सब भांति पुनीता ॥ सबहि मनहि मन कीन्ह प्रणामा ॥ देखि राम भये पूरण कामा ॥ ह
रषे दशरथ सुतन समेता कहि न जाय उर आनंद जेता ॥ सुर प्रणाम करि बर्षहिं फू
ला ॥ मुनि असीस धुनि मंगल मूला ॥ गान निशान कुलाहल भारी ॥ प्रेम प्रमोद मग
न नर नारी ॥ इहि विधि सीय मंडपहि आई ॥ प्रमुदित शांति पढै मुनिराई ॥ तेहि अ
वसर कर विधि व्यवहारू ॥ दुहुं कुल गुरु सब कीन्ह अचारू ॥ छंद ॥ आचार क
रि गुरु गोरि गणपति मुदित विप्र पुजावही ॥ सुर प्रगट ह्वै जा होहिं देहिं असीस सुनि
सुष पावहीं ॥ मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन मे चहैं ॥ भरे कनक को
पर कलश सो सब लिये परिचारक रहैं ॥ कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देत स
ब सादर किये ॥ इहि भांति देव पुजाय सीतहिं सुभग सिंहासन दये ॥ सिय राम अ
वलोकन परस्पर प्रेम काहुन लष परै ॥ मन बुधि बर बाणी अगोचर प्रगट कवि
कैसे करै ॥ दोहा ॥ होम समय तन धरि अनल अति हित आहुति लेहि ॥ विप्र
वेष धरि बेद सब कहि विवाह विधि देहि ॥ ३५६ ॥ चौपई ॥ सीय मातु किमि जा

य
राम
९९

पबषानी॥ जनकपाटमहिषीजगजानी॥सुयशसुकृतसुषसुंदरताई॥सबसमेटिबिधि र
चीबनाई॥समयजानिमुनिबरनबुलाई॥सुनतसुआसिनिसादरल्याई॥जनकबामदि
शिसोहसुनयना॥हिमगिरिसंगबनीजनुमयना॥कनककलशमणिकोपररूरे॥सुचि
सुगंधमंगलजलपूरे॥निजकरमुदितराउअरुरानी॥धरेरामकेआगेआनी॥पढहिं
बेदमुनिमंगलबानी॥गगनसुमनझरिअवसरजानी॥बरबिलोकिदंपतिअनुरागे
॥पायपुनीतपखारनलागे॥३५७॥छं द॥लागेपखारनपायपंकजप्रेमतनुपुल
कावली॥नभनगरगाननिशानजयधुनिउमगिजनुचहुंदिशिचली॥जेपदसरोज
मनोजअरिउरसरसदैवबिराजहीं॥जेसुकृतसुमरतबिमलतामनसकलकलिम
लभाजहीं॥जेपरसमुनिबनितालहीगतिरहीजोपातकमई॥मकरंदजिनकोशंभुसिर
सुचिताअवधिसुरबरनई॥करिमधुपमुनिमनयोगिनजेसेइअभिमतगतिलहैं॥ते
पदपखारतभागभाजनजनकजयजयसबकहैं॥बरकुवरिकरतलजोरिशाखा
चारदोउकुलगुरुकरैं॥भयोपाणिग्रहणबिलोकिबिधिसुरमनुजमुनिआनंदभरैं
॥सुषमूलदूलहदेखिदंपतिपुलकतनुहुलसेहियो॥करिलोकबेदबिधानकन्या
दाननृपभूषणदियो॥हिमवंतजिमिगिरिजामहेसहि हरि श्रीसागरदई॥तिमिजनक

विष्णु ल
क्ष्मीसमु
द्र

बा०कां०
२००

करामहिसियसमर्पी। विश्वकलकीरतिनई॥ कैयोंकरैबिनयबिदेहकियोबिदेहमूरति
सांवरी॥ करिहोमबिधिवतगांठजोरी होनलागीभांवरी॥ दोहा॥ जयधुनिबंदी बेदधु
नि॥ मंगलगाननिसान॥ सुनिहरषैंबरषैंविबुध॥ सुरतरुसुमनसुजान ॥ ३५८॥
चौपई॥ कुवरकुवरिकलभांवरिदेही॥ नयनलाभसबसादरलेहीं॥ जाइनबरणिम
नोहरजोरी॥ जोउपमाकछुकहियसोथोरी॥ रामसीयसुंदरपरिछांहीं॥ जगमगाहि
मणिखंभनमाहीं॥ मनहुमदनरतिधरिबहुरूपा॥ देखहिंरामविवाहअनूपा॥ दर
सलालसासकुचनथोरी॥ प्रगटतदुरतबहोरिबहोरी॥ भयेमगनसबदेषनहारे
॥ जनकसमानअपानबिसारे॥ प्रमुदितमुनिनभांवरीफेरी॥ नेगसहितसबरीति
निबेरी॥ रामसीयसिरसिंदुरदेहीं॥ शोभाकहिनजातविधिकेही॥ अरुणपरागज
लजभरिनीके॥ शशिहिभूषिअहिलोभअमीके॥ बहुरिबशिष्टदीन्हअनुशास
न॥ बरदुलहिनिबैठेइकआसन॥ छंद॥ बैठेबरासनरामजानकिमुदितमनद
शरथनये॥ तनपुलकिपुनिपुनिदेषिअपनेसुकृतसुरतरुफलनये॥ भरिभुव
नरहाउछाहरामबिवाहभासबहीकहा॥ केहिभांतिबरणिसिरातरसनाएकय
हमंगलमहा॥ तबजनकपाइबशिष्टआयसुब्याहसाजसवारिके॥ मांडवीश्रुतिकी

राम
२००

र्तिन उर्मिला कुवरि लई हंकारि के ॥ कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुष शोभामयी
॥ सब रीति प्रीति समेत करि सो व्याहि नृप भरतहि दयी ॥ जानकी लघु भगिनि सकल सुं
दरि शिरोमणि जानि के ॥ सो जनक दीन्ही व्याहि लषणहि सकल विधि सनमानि के ॥ जे
हि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुण आगरी ॥ सो दई रिपुसूदनहि पति रूप
शील उजागरी ॥ अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिया ॥ हर्षही सब मुदि
त सुंदरता सराहहिं सुमन सुरगण वर्षही ॥ सुंदरी सुंदर बरण सह सब एक मंडफ राज
ही ॥ जनु जीव उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं ॥ दोहा ॥ मुदित अवधपति
सकल सुत ॥ बधुन समेत निहारि ॥ जनु पाये महिपाल मणि ॥ क्रियन सहित फल चा
रि ॥ २५४ ॥ चौपई ॥ जस रघुवीर व्याह विधि बरणी ॥ सकल कुवर व्याहे तेहि करणी
कहि न जाय कछु दाइज भूरी ॥ रहा कनक मणि मंडफ पूरी ॥ कामल बसन विचित्र प
टोरा ॥ भांति भांति बहु मोल न थोरे ॥ गज रथ तुरग दास अरु दासी ॥ धेनु अलंकृत काम
दुहा ली ॥ बस्तु अनेक करिय किमि लेषा ॥ कहि न जाय जानहि जिन देषा ॥ लोकपा
ल अवलोकि सिहाने ॥ लीन्ह अवधपति सब सुष माने ॥ दीन्ह याचकन जो जेहि भावा
॥ उबरा सो जनवासहि आवा ॥ तब कर जोरि जनक मृदु बानी ॥ बोले सब बरात सन

बाल० २०२

नी॥ छंद॥ सनमानिसकलबरातआदरदानबिनयबडाइकै॥ प्रमुदितमहामुविदं
दबंदेपूजिप्रेमलडाइकै॥ सिरनाइदेवमनाइसबसनकहतकरसंपुटकियें॥ सुर
साधुचाहतभावसिंधुकितोषजलअंजलिदियें॥ करजोरिजनकबहोरिबंधुसमे
तकोशलरायसों॥ बोलेमनोहरबयनसानिसनेहशीलसुभावसों॥ संबंधराजनरा
वरेंहमबडेअबसबविधिभये॥ यहराजसाजसमाजसेवकजानिबोबिनुगंथलये॥
येदारकापरिचारकाकरिपालवीकरुणामयी॥ अपराधक्षमिवोबोलिपठयेब
हुतहौंढीठीदई॥ पुनिभानुकुलभूषणसकलसनमानविधिसमधीकिये॥ कहि
जातनहिंबिनतीपरस्परप्रेमपरिपूरणहिये॥ बृंदारिकागणसुमनबरषहिंराउ
जनवासेचले॥ दुंदुभीजयधुनिवेदधुनिनभनगरकौतूहलभले॥ तबसखिनमंग
लगानकरतिमुनीशआयसुपाइकै॥ दूलहदुलहिन्हसहितसुंदरिचलीकुहव
रिल्याइकै॥ दोहा॥ पुनिपुनिरामहिचितवसिय॥ सकुचतिमनसकुचैन॥ हरति
मनोहरमीनछबि॥ प्रेमपियासेनयन॥ ३२६॥ चौपाई॥ श्यामशरीरसुभायसुहाब
न॥ शोभाकोटिमनोजलजावन॥ जावकयुतपदकमलसुहाये॥ मुनिमनमधुपर
हतजहंआये॥ पीतपुनीतमनोहरधोती॥ हरतबालरविदामिनिज्योती॥ कलकिं

राम २०१

किणिकटिसूत्रमनोहर ॥ बाहुबिशालबिभूषणसुंदर ॥ पीतजनेउमहाछबिदेई ॥ करि
मुद्रिकाचोरचितलेई ॥ सोहतब्याहसाजसबसाजे ॥ उरआयतउरभूषणराजे ॥ पीत
उपरनाकाखासोती ॥ दुहुंआचरणलगेमणिमोती ॥ नयनकमलकलकुंडलका
ना ॥ बदनसकलसौंदर्य्यनिधाना ॥ सुंदरभृकुटिमनोहरनासा ॥ भालतिलकसुचिरु
चिरनिवासा ॥ सोहतमौरमनोहरमाथे । मंगलमयमुकुतामणिगाथे ॥ छं ८ ॥ गाथेम
हामणिमौरमंजुलअंगसबचितचोरही ॥ पुरनारिसुंदरसुंदरिबिलोकहिंनिरपिछ
वितृणतोरही ॥ मणिवसनभूषणवारिआरतिकरहिंमंगलगावही ॥ सुरसुमनबर
षहिंसूतमागधबंदिसुयशसुनावही ॥ कुहबरहिंआनेकुंवरकुंवरिसुआसहिनसु
खपायके ॥ अतिप्रीतिलौकिकरीतिलागीकरणमंगलगाइकै ॥ लहकोरिगोरिसिखा
वरामहिसीयसबसादरकहैं ॥ रनिवासहासबिलासरसबसजनमकोफलसबलहैं
॥ निजपाणिमणिमहंदेखिप्रतिमूरतिसरूपनिधानकी ॥ चालितिननुजबल्लीबि
लोकनिबिरहबसभइजानकी ॥ कौतुकविनोदप्रमोदप्रेमजायकहिजानहिंअ
ली ॥ बरकुंवरिसुंदरसकलसबिनलवाइजनवांसहिंचली ॥ तेहिसमयसुनियअ
सीसजंहतहंनगरनभआनंदमहा ॥ चिरजियहुजोरीचारचारिउमुदितम

बालं०
१०२

सबहीकहा॥योगीइसिद्धमुनीप्रादेवबिलोकिप्रभुदुंदुभिहनी॥चलेहरषिब
रषिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी॥दोहा सहितबधूटिनकुंवरसब
॥तबआयेपितुपास॥शोभामंगलमोदभरि॥उमगीउजनुजनवास॥२८८॥
चौपई पुनिजेवनारभयेबहुभांती॥पठयेजनकबुलायबराती॥परतपांवडे
बसनअनूपा॥सुतनसमेतगवनकियेभूपा॥सादरसबकेपांवपखारे॥यथायो
ग्यपीढनबैठारे॥धोयेजनकअवधपतिचरणा॥सीलसनेहजायनहिंबरणा॥
॥बहुरिरामपदपंकजधोये॥जेहरहृदयकमलमहंगोये॥तीनोभाइरामसम
जानी॥धोयेचरणजनकनिजपानी॥आसनउचितसबहिनृपदीन्हे॥बोलिसू
पकारीसबलीन्हे॥सादरलगेपरनपनवारे॥कनककीलमणिपरणसवांरे॥
॥चौपई सूपोदनसुरभीसरपि॥सुंदरस्वादुपुनीत॥छणमहसबकेपरुसिगे
॥चतुरसुआरविनीत॥२८९॥चौप० पंचकोरकरिजेवनलागे॥गारिगानसुन
अतिअनुरागे॥भांतिअनेकपरेपकवाना॥सुधासरिसनहिंजायबखाना॥पर
सनलगेसुआरसुजाना॥बिंजनविविधनामकोजाना॥चारिभांतिभोजनविधि
गाई॥एकएकविधिबरणिनजाई॥छरसरुचिरबिंजनबहुभांति॥एकएकर

चावल

पंचगास

राम
१०२

निति नूतन मंगल पुर माहीं ॥ निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं ॥ बडे भोर भूपति मन जागे ॥ याचक गु
णगण गावन लागे ॥ देखि कुंवर बर बधुन समेता ॥ किमि कहि जात मोद मन जेता ॥ प्रातक्रिया करि गे गुरु
पाही ॥ महाप्रमोद प्रेम मन माही ॥ ५ ॥
स अगणित जाती ॥ जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी ॥ लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥ समय सुहाव
नि गारि बिराजा ॥ हसत राउ सुनि सहित समाजा ॥ इहि बिधि सबहीं भोजन कीन्हा ॥ आ
दर सहित आचमन लीन्हा ॥ दोहा ॥ देइ पान पूजे जनक ॥ दशरथ सहित समाज ॥ ज
नवांसे गवने मुदित ॥ सकल नृप सिरताज ॥ ३२९ ॥ चौपई ॥ करि प्रणाम पूजा करि
जोरी ॥ बोले गिरा अमिय जनु बोरी ॥ तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा ॥ भयउं आजु मैं पू
रणकाजा ॥ अब सब बिप्र बुलाय गुसांई ॥ देहु धेनु सब भांति बनाई ॥ सुनि गुरु करि
महिपाल बडाई ॥ पुनि पठये मुनिबृंद बुलाई ॥ दोहा ॥ बामदेव अरु देवऋषि ॥
बालमीक जाबालि ॥ आये मुनिबर निकर तब ॥ कौशिकादि तपसालि ॥ ३३० ॥
चौपई ॥ दंड प्रणाम सबहिं नृप कीन्हा ॥ पूजि सप्रेम बरासन दीन्हा ॥ चारि लक्ष बर धेनु
मंगाई ॥ कामसुरभि सम शील सुहाई ॥ सब बिधि सकल अलंकृत कीन्ही ॥ मुदित मही
प ऋषिन कंह दीन्ही ॥ करत बिनय बहु बिधि नरनाहू ॥ लहेउं आजु जय जीवन ला
हू ॥ पाइ असीस महीप अनंदा ॥ लिये बोलि पुनि याचकबृंदा ॥ कनक बसन मणि
हय गय स्पंदन ॥ दये बूझि रुचि रविकुलनंदन ॥ चले पढत गावत गुणगाथा ॥ जय

भातिब

दिनउठिबिदाअवधिपतिमागा राखहिंजनकेसहितअनुरागा ४

जयजयदिनकरकुलनाथा॥इहिविधिरामबिवाहउछाहू॥सकैनबरनिसहसमुष
जाहू॥दोहा॥बारबारकौशिकचरण॥सीसनाइकहराउ॥यहसबसुषमुनिराजतव
कृपाकटाछप्रभाउ॥३३१॥चौपई॥जनकसनेहशीलकरतूती॥नृपसबभांत
सराहबिभूती॥दिननूतनआदरअधिकाई॥दिनप्रतिसहसभांतिपहुनाई॥नितनि
वनगरअनंदउछाहू॥दशरथगवनसोहाइनकाहू॥बहुतदिवसबीतेइहिभांति
॥जनुसनेहरजुबंधेबराती॥कौशिकसतानंदतबजाई॥कहीबिदेहनृपहिसमुझा
ई॥अबदशरथकहंआयसुदेहू॥यद्यपिछाडिनसककुसनेहू॥भलेहिनाथक
हिसचिवबुलाये॥कहिजयजीवसीसतिननाये॥दोहा॥अवधनाथचाहतचल
न॥भीतरकरहुजनाव॥भयेप्रेमबससचिवसुनि॥विप्रसभासबराव॥३३२॥चौ
पई॥पुरवासीसुनिचलीबराता॥पूछतविकलपरस्परबाता॥सत्यगवनसुनिसब
बिलखाने॥मनहुंसांझसरसिजसकुचाने॥जहंतहंआवतबसेबराती॥तहंतहं
सिद्धचलीबहुभांती॥विविधिभांतिमेवापकवाना॥भोजनसाजनजाइबखाना॥भ
रिभरिबसहअपारकहारा॥पठयेजनकअनेकसुआरा॥तुरंगलाषरथसहसपची

सा।सकलसवारेनखअरुसीसा॥मत्तसहसदससिंधुरसाजे॥जिनहिंदेखिदिसिकुंजरला
जे॥कनकबसनमणिभरिभरिजाना॥महिषीधेनुबस्तुबिधिनाना॥दोहा॥दाइजअमितन
सकियकहि॥दीन्हबिदेहबहोरि॥जोअबलोकतलोकपति॥लोकसंपदाथोरि॥३६६
॥चौपई॥सबसमाजइहिभांतिबनाई॥जनकअवधपुरदीन्हपठाई॥चलिहिबरात
सुनतसबरानी॥बिकलमीनगणजनुलघुपानी॥पुनिपुनिसीयगोदकरिलेहीं॥देइ
असीससिखावनदेहीं॥होइहुसंततपियहिपियारी॥चिरुअहिबातअसीसहमारी
॥सासुससुरगुरुसेवाकरहू॥पतिरुखलखिआयसुअनुसरहू॥अतिसनेहबसस
खीसयानी॥नारिधर्मसिखवहिंम्रदुबानी॥आदरसकलकुवरिसमुझाई॥रानिनबा
रबारउरलाई॥बहुरिबहुरिभेटहिंमहतारी॥कहहिंबिरंचिरचीकतनारी॥दो
हा॥तेहिअवसरभाइनसहित॥रामभानुकुलकेतु॥चलेजनकमंदिरमुदित॥बि
दाकरावनहेतु॥३६७॥चौपई॥चारिउभाइसुभायसुभाये॥नगरनारिनरदेखन
धाये॥कोउकहचलनचहतहहिंआजू॥कीन्हबिदेहबिदाकरसाजू॥लेहुनयनभ
रिरूपनिहारी॥प्रियपाहुनेभूपसुतचारी॥कोजानैकेहिसुकृतसयानी॥नयनअ
तिथिकीन्हेबिधिआनी॥मरणशीलजिमिपावपियूषा॥सुरतरुलहैजन्मकरभूषा

बाल० २०४

पावनारकी हरिपद जैसें ॥ इनकर दरसन हम कहं तैसें ॥ निरषि राम सोभा उर धरहू
॥ निज मन फणि मूरति मणि करहू ॥ इहि बिधि सबहि नयन फल देता ॥ गये कु
वर सब राजनिकेता ॥ दोहा ॥ रूप सिंधु सब बंधु लखि ॥ हरषि उठे रनिवांसु ॥ कर
हिं निछावर आरती महा मुदित मन सासु ॥ ३४९ ॥ चौपई ॥ देखि राम छबि अति अ
नुरागी ॥ प्रेम बिबस पुनि पुनि पद लागी ॥ रही न लाज प्रीति उर छाई ॥ सहज सनेह
बरणि किमि जाई ॥ भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाये ॥ छरस असन अति हेतु जेंवा
ये ॥ बोले राम सु अवसर जानी ॥ सील सनेह सकुच मय बानी ॥ राउ अवध पुर च
हत सिधाये ॥ बिदा होन हित हमहि पठाये ॥ मातु मुदित मन आयसु देहू ॥ बालक
जानि करब नित नेहू ॥ सुनत बचन बिलषे उर रनिवांसू ॥ बोलि न सकहिं प्रेम बस सा
सू ॥ हृदय लगाइ कुंवरि सब लीन्ही ॥ पतिन सौंपि बिनती अति कीन्ही ॥ छंद ॥ क
रि बिनय सिय रामहि समर्पी जोरि कर पुनि पुनि कहैं ॥ बलि जाउं तात सुजान तुम क
हैं बिदित गति सब की अहैं ॥ परिवार पुरजन मोहि राजहिं प्राण प्रिय सिय जानिबी ॥
तुलसी सुशील सनेह लषि निज किंकिरी करि मानिबी ॥ सोरठा ॥ तुम परिपूरण
काम ॥ जान शिरोमणि भाय प्रिय ॥ जन गुण गाहक राम ॥ दोष दलन करुणायतन

राम २०४

२९९ ॥ चौपई ॥ असकहरहीचरणगहरानी ॥ प्रेमपंकजनुगिरासमानी ॥ सुनिसनेहसानीब
रबानी ॥ बहुविधिरामसासुसनमानी ॥ रामविदामांगतकरजोरी ॥ कीन्हप्रणामबहोरि
बहोरी ॥ पाइअसीसबहुरिसिरनाई ॥ भाइनसहितचलेरघुराई ॥ मंजुमधुरमूरतिउर
आनी ॥ भईसनेहशिथिलसबरानी ॥ पुनिधीरजधरिकुंवरिहंकारी ॥ बारबारभेटहिम
हतारी ॥ पहुंचावहिंफिरिमिलहिंबहोरी ॥ बढीपरस्पप्रीतिनथोरी ॥ पुनिपुनिमिल
तिसखिनबिलगाई ॥ बालबत्सजनुधेनुलवाई ॥ दोहा ॥ प्रेमविवसनरनारिसब ॥ स
खिनसहितरनिवास ॥ मानहुकीन्हविदेहपुर ॥ करुणाबिरहनिवास ॥ ३०१ ॥ चौ ॥
प० शुकसारिकाजानकीजिआये ॥ कनकपिंजरनराखिपढाये ॥ व्याकुलकहहि
कहांबैदेही ॥ सुनिधीरजपरिहरैनकेही ॥ भयेबिकलखगमृगइहिभांती ॥ मनुज
दशाकैसेकहिजाती ॥ बंधुसमेतजनकतबआये ॥ प्रेमउमगिलोचनजलछाये ॥
सीयबिलोकिधीरतानागी ॥ रहेकहावतपरमबिरागी ॥ लीन्हरायउरलायजानकी
॥ मिटीमहामर्यादज्ञानकी ॥ समझावतसचिवसयाने ॥ कीन्हविचारनअवसरजाने
॥ बारहिबारसुतालरलाई ॥ सजिसुंदरपालकीमंगाई ॥ प्रेमविवसपरिवारसब ॥
जानिसुलगननरेश ॥ कुवरिचढाईपालकी ॥ सुमिरेसिद्धिगणेश ॥ ३०२ ॥ चौपई ॥

बाल० १०५

बहुबिधिभूपसुतासमुझाई ॥ नारिधर्मकुलरीतिसिखाई ॥ दासीदासदियेबहुतेरे ॥ सुचिसेवकजेप्रियसियकेरे ॥ सीयचलतब्याकुलपुरवासी ॥ होहिंसगुणमंगलशुभरासी ॥ भूसुरसचिवसमेतसमाजा ॥ संगचलेपहुंचावनराजा ॥ रथगजवाजिबरातिनसाजे ॥ समयबिलोकिवाजनेवाजे ॥ दशरथविप्रबोलिसबलीन्हे ॥ दानमानपरिपूरणलीन्हे ॥ चरणसरोजधूरिधरसीसा ॥ मुदितमहीपतिपाइअसीसा ॥ सुमिरिगजाननकीन्हपयाना ॥ मंगलमूलशकुनभयेनाना ॥ दोहा ॥ सुरप्रसूनबरषहिंहरषि ॥ करहिंअपसरागान ॥ चलेअवधपतिअवधपुर ॥ मुदितबजाइनिसान ॥ ३०४ ॥ चौपई ॥ नृपकरिबिनयमहाजनफेरे ॥ सादरसकलमांगनटेरे ॥ भूषणबसनवाजिगजदीन्हे ॥ प्रेमपोषिठाढेसबकीन्हे ॥ बारबारबिदावलिभाषी ॥ फिरेसकलरामहिंउरराखी ॥ बहुरिबहुरिकोशलपतिकहही ॥ जनकप्रेमबसफिरानचहही ॥ पुनिकहभूपतिबचनसुहाये ॥ फिरियमहीपदूरिबडिआये ॥ राउबहोरिउतरिभयेठाढे ॥ प्रेमप्रबाहबिलोचनबाढे ॥ तबबिदेहबोलेकरजोरी ॥ बचनसनेहसुधाजनुबोरी ॥ करौंकवनविधिबिनयसुहाई ॥ महामोहिदीनबडाई ॥ दोहा ॥ कोशलपतिसमधीसजन ॥ सनमानेसबभांति ॥ मिले

राम १०५

सबहि सुलभ न जग जीव कहं। नयेई प्रान अनुकूल। २७५ चौ० ॥ १

नपरस्पर बिनय अति। प्रीति न हृदय समाति ॥ २७४ ॥ चौपई ॥ मुनि मंडली जनक सिर ना
वा ॥ आसिर्बाद सबहि सन पावा ॥ सादर पुनि भेटे जामाता ॥ रूप सील गुण निधि सब भ्राता
॥ जोरि पंकरुह पाणि सुहाये ॥ बोले बचन प्रेम जनु जाये ॥ राम करौं केहि भांति प्रसंसा ॥
मुनि महेश मन मानस हंसा ॥ करहि योग योगी जेहि लागी ॥ क्रोध मोह ममता मद त्यागी
॥ व्यापक ब्रह्म अलख अबिनासी ॥ चिदानंद निर्गुण गुणरासी ॥ मन समेत जेहि जान
न बानी ॥ तरकि न सकहिं सकल अनुमानी महिमा निगम नेति करि कहहीं जो तिहुं
काल एकरस रहहीं ॥ दोहा ॥ नयन बिषय मो कहं नयन ॥ सो समस्त सुख मूल। सबहि
भांति मोहि दीन बडाई ॥ निज जन जानि लीन्ह अपनाई ॥ होइ सहस दश सारद शेषा क
रहिं कल्प कोटिक नरि लेखा ॥ मोर भाग्य राउर गुण गाथा ॥ कहि न सिराहिं सुनिय रघुना
था ॥ मैं कछु कहौं एक बल मोरे ॥ तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥ बार बार मांगो कर जोरे
मन परिहरै चरण जनि भोरें ॥ सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे ॥ पूरणकाम राम परितोषे
॥ करि बर बिनय ससुर सनमाने ॥ पितु कौशिक बशिष्ट सम जाने ॥ बिनती बहुरि भर
त सन कीनी ॥ मिलि सप्रेम पुनि आशिष दीनी ॥ दोहा ॥ मिले लषन रिपुसूदनहिं ॥ दीन्ह
असीस महीश ॥ नये परस्पर प्रेमबस ॥ फिरि फिरि नावहिं सीस ॥ २७६ ॥ चौपई ॥ बार बा

बाल०
२०६

एकरिषिबिनयबडाई॥रघुपतिचलेसंगसबभाई॥जनकगेहकौसिकपदजाई
॥चरणरेणसिरनयननलाई॥सुनमुनिससबदर्शनतोरे॥अगमनकछु
प्रतीतिमनमोरे॥जोसुषसुयशलोकपतिचहही॥करतमनोरथसकुचतअ
हही॥जोसुषसुयशसुलभमोहिस्वामी॥सबसिधितवदर्शनअनुगामी॥कीन्ह
बिनयपुनिपुनिसिरनाई॥फिरेमहीपतिआशिषपाई॥चलीबरातनिसानबजा
ई॥मुदितछोटबडसबसमुदाई॥रामहिनिरषिग्रामनरनारी॥पाइनफलहोहि
सुषारी॥दोहा॥बीचबीचबरबासकरि॥मगलोगनसुषदेत॥अवधसमीपपुनि
तदिन॥पहुंचीआयजनेत॥२७०॥चौपई॥हनेनिसानपणवबरबाजे॥भेरि
शंखधुनिहयगयगाजे॥झांझमृदंगडिमडिमीसुहाई॥सरसरागबाजैंसहनाई
॥पुरजनआवतअकनिबराता॥मुदितसकलपुलकावलिगाता॥निजनि
जसुंदरसदनसंवारे॥हाटबाटचौहटपुरद्वारे॥गलीसकलअरगजासिंचाई ज
हंतहंचौकेचारुपुराई॥बनाबजारनजातबषाना॥तोरणकेतुपताकबिताना
॥सुफलपुंगफलकदलिरसाला॥रोपेबकुलकदंबतमाला॥लगेसुभगतरुपर
सतधरणी॥मणिमयआलबालकलकरणी॥दोहा॥बिबिधभांतिमंगलकल

सुपारी

राम
२०६

रा॥ ग्रहग्रहरचेसंवारे॥ सुरब्रह्मादिसिहांहिंसब रघुबरपुरीनिहारि॥ २१८॥ चौपई
॥ नृपग्रहनतेहिअवसरसोहा॥ रचनादेखिमदनमनमोहा॥ मंगलशगुनमनोहर
ताई॥ रिधिसिधिसुखसंपदासुहाई॥ जनुउछाहसबसहजसुहाये॥ तनुधरधरिदशा
ग्रहआये॥ देखनहेतुरामबैदेही॥ कहहुलालसाहोइनकेही॥ जूथजूथमिलिच
लीसुआसिनि॥ निजछबिनिदरहिंमदनबिलासिनि॥ कलशसुमंगलसजीआरती॥
॥ गांवहिंजनुबहुबेषभारती॥ नृपतिभुवनकुलाहलहोई॥ जाइनबरणिसमयसुख
सोई॥ कौशल्यादिराममहतारी॥ प्रेमबिबसतनुदशाबिसारी॥ दोहा॥ दियेदानबिप्रन
बिपुल॥ पूजिगणेशपुरारि॥ प्रमुदितपरमदरिद्रजनु॥ पाइपदारथचारि॥ २१९॥ चौ
पई॥ प्रेमप्रमोदबिबससबमाता॥ चलहिंनचरणशिथिलसबगाता॥ रामदरसहितअ
तिअनुरागी॥ परिछनसाजसजनसबलागी॥ बिबिधबिधानबाजनेबाजे॥ मंगलमुदि
तसुमित्रासाजे॥ हरदढूबदधिपल्लवफूला॥ पानपुंगफलमंगलमूला॥ अछतअं
कुररोचनलाजा॥ मंजुलमंजरितुलसिबिराजा॥ छुयेपुरटघटसहजसुहाये॥ मदनश
कुनजनुनीडबनाये॥ शगुनसुगंधनजाइबषानी॥ मंगलसकलसजहिंसबरानी॥ रची
आरतीबिबिधबिधाना॥ मुदितकरहिंकलमंगलगाना॥ दोहा॥ कनकथारभरिमंग

बालं० २०७

लन्ह ॥ कमलकरनिलियेमात ॥ चलीमुदितपरिछनकरन ॥ पुलकपल्लवितगातू ॥ २८० ॥ चौपई ॥ धूपधूमननभमेचकभयऊ ॥ सावनघनघमंडजनुठयऊ ॥ सुरतरुसुमनमालसुरबर्षहिं ॥ मनहुबलाकअवलिमनकर्षहिं ॥ मंजुलमणिमयबंदनवारे ॥ मनहुपाकरिपुचाँपसंवारे ॥ प्रगटहिंदुरहिंअटन्हपरभामिनि ॥ चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि ॥ दुंदुभिधुनिघनगरजहिंघोरा ॥ जाचकचातकदादुरमोरा ॥ सुचिसुगंधबहुबर्षहिंवारी ॥ सुखीसकलससिपुरनरनारी ॥ समयजानिगुरुआयसुदीन्हा ॥ पुरप्रवेसुरघुकुलमणिकीन्हा ॥ सुमिरिसंभुगिरिजागणराजा ॥ मुदितमहीपतिसहितसमाजा ॥ दोहा ॥ होहिंसगुनबरषहिंसुमन ॥ सुरदुंदुभीबजाइ ॥ बिबुधबधूनाचहिंमुदित ॥ मंजुलमंगलगाइ ॥ २८१ ॥ चौपई ॥ मागधसूतबंदिनटनागर ॥ गावहिंयशतिहुंलोकउजागर ॥ जयधुनिबिमलबेदबरवानी ॥ दसदिसिसुनियसुमंगलसानी ॥ बिपुलवाजनेवाजनलागे ॥ नभसुरनगरलोगअनुरागे ॥ बनेबरातीबर्णिनजाहीं ॥ महामुदितमनसुखनसमाहीं ॥ पुरबासिनतबरायजोहारे ॥ देखतरामहिभयेसुखारे ॥ करहिंनिछावरमणिगणचीरा ॥ वारिबिलोचनपुलकसरीरा ॥ आरतिकरहिंमुदितपुरनारी ॥ हरषहिंनिरषिकुवरबरचारी ॥ शिवि

राम २०७

कासुनगाओहारनधारी ॥ देषिउलहिंतिन्हहोहिंसुषारी ॥ दोहा ॥ इहिबिधिसबहीदे
तसुष ॥ आयेराजदुआर ॥ मुदितमातुपरिछनकरहिं ॥ बधुनसमेतकुमार ॥ ३
५३ ॥ चौपई ॥ करहिंआरतीबारहिंबारा ॥ प्रेमप्रमोदकहैकोपारा ॥ भूषणमणि
पटनानाजाती ॥ करहिंनिछावरअगणितभांती ॥ वंधुनसमेतदेषिसुतचारी ॥
परमानंदमगनमहतारी ॥ पुनिपुनिसीयरामछबिदेषी ॥ मुदितसुफलजगजी
वनलेषी ॥ सषीसीयमुषपुनिपुनिचाहीं ॥ गानकरहिंनिजसुकृतसराहीं ॥ बरष
हिंसुमनछणछणदेवा ॥ नांचहिंगावहिंलावहिंसेवा ॥ देषिमनोहरचारिजो
री ॥ शारदउपमासकलढंढोरी ॥ देतनबनहिंनिपटलघुलागी ॥ इकटककरहीरूप
अनुहारी ॥ दोहा ॥ निगमनीतिकुलरीतिकरि ॥ अरघपावडेदेत ॥ बधुनसहितसु
तपरिछिसब ॥ चलीलिवाइनिकेत ॥ ३५४ ॥ चौपई ॥ चारिसिंहासनसहजसुहाये
॥ जनुमनोजनिजहाथबनाये ॥ तिनपरकुंवरकुवरिबैठारे ॥ सादरपायपुनीत
पषारे ॥ धूपदीपनैवेद्यबेदबिधि ॥ पूजेबरदुलहिनिमंगलनिधि ॥ बारहिंबारआ
रतीकरहीं ॥ व्यजनचारुचांमरसिरढरहीं ॥ बस्तुअनेकनिछावरिहोहीं ॥ भरी
प्रमोदमातुसबसोहीं ॥ पावापरमतत्वजनुयोगी ॥ अमृतलहिजनुसंततरोगी ॥

जनमरंकजनुपारसपावा॥ अंधहिलोचनलाभसुहावा॥ मूकवदनजनुसारदछा
ई॥ मानहुसमरसूरजयपाई॥ दोहा॥ इहिसुखतेसतकोटिगुण॥ पावहिंमातुअ
नंद॥ भाइनसहितविवाहघर॥ आयेरघुकुलचंद॥ लोकरीतिजननीकरहिं॥ ब
रदुलहिनिसकुचाहि॥ मोदबिनोदबिलोकिबड॥ राममनहिंमुसुकाहि॥ ३८५
॥ चौपई॥ देवपितरपूजेविधिनीकी॥ पूजीसकलवासनाजीकी॥ सबहिबंदिमां
गेबरदाना॥ भाइनसहितरामकल्याना॥ अंतरहितसुरआशिषदेहीं॥ मुदितमा
तुअंचलभरिलेहीं॥ नृपतिबोलिबरातिन्हलीन्हे॥ यानवसनमणिभूषणदीन्हे
॥ आयसुपाइराखिउररामहि॥ मुदितगयेसबनिजनिजधामहि॥ पुरनरना
रिसकलपहिराये घरघरबाजहिंअनंदबधाये॥ जाचकजनयाचहिंजोइजो
ई॥ प्रमुदितराउदेहिसोइसाई॥ सेवकसकलबजनियांनाना॥ पूरणकियेदा
नसनमाना॥ दोहा॥ देहिंअसीसजुहारिसब॥ गावहिंगुणगणगाथ॥ तबगुरु
भूसुरसहितगृह॥ गवनकीन्हनरनाथ॥ ३८६॥ चौपई॥ जोवसिष्टअनुशासन
दीन्हा॥ लोकबेदविधिसादरदीन्हा॥ भूसुरभीरदेखिसबरानी॥ सादरउठीभा
ग्यबडजानी॥ पायपखारिसकलअन्हवाये॥ पूजिभलीविधिनृपजेवाये॥ आ

दाइदानप्रेमपरिपोषे॥देतअसीसचलेमनतोषे॥बहुविधिकीन्हगाधिसुतपूजा॥
नाथमोहिसमधन्यनदूजा॥कीन्हप्रसंसाभूपतिभूरी॥रानिनसहितलीन्हपगधूरी
॥भीतरभवनदीन्हबरबासू॥मनजुगवतरहनृपरनिवासू॥पूजेगुरुपदकमलब
होरी॥कीन्हबिनयमनप्रीतिनथोरी॥दोहा॥बधुनसमेतकुमारसब॥रानि
नसहितमहीश॥पुनिपुनिबंदतगुरुचरण॥देतअसीसमुनीश॥३५१॥चौपई॥बि
नयकीन्हउरअतिअनुरागे॥सुतसंपदाराखिसबआगे॥नेगमांगिमुनिनायकलीन्हा
॥आशिर्बादबहुतविधिदीन्हा॥उरधरिरामहिसीयसमेता॥हरषिकीन्हगुरुगव
ननिकेता॥विप्रबधूसबभूपबुलाई॥चीरचारुभूषणपहिराई॥बहुरिबुलाइसुआ
सिनिलीन्हा॥रुचिबिचारिपहिरावनदीन्हा॥नेगीनेगयोगसबलेहीं॥रुचिअनु
रूपभूपमणिदेहीं॥प्रियपाहुनपूज्यजेजाने॥नृपतिभलीभांतिसनमाने॥देवदेखि
रघुवीरबिवाहू॥बरषिप्रसूनप्रसंसिउछाहू॥दोहा॥चलेनिसानबजाइसुर॥नि
जनिजपुरसुखपाइ॥कहतपरस्परराममयश॥हर्षनहृदयसमाइ॥३५२॥चौपई॥
सबविधिसबहिसमदिनरनाहू॥रहाहृदयभरिपूरिउछाहू॥जहंरनिवासतहांपगु
धारे॥सहितबधूटिनकुंवरिनिहारे॥लियेगोदकरिमोदसमेता॥कोकहिसकैभयउ

सुषजेता॥ बधूसप्रेमगोदबैठारी॥ बारबारहियहरषिदुलारी॥ देषिसमाजमुदित
रनिवांसू॥ सबकेउरआनंदकियवासू॥ कहेउनूपजिमिभयेउविवाहू॥ सुनिसु
निहर्षहोतसबकाहू॥ जनकराजगुणशीलबडाई॥ प्रीतिरीतिसंपदासुहाई॥
॥ बहुविधिनूपभाटजिमिबरणी॥ रानिनसबप्रमुदितसुनिकरणी॥ दोहा॥ सु
तनसमेतनहाइनूप॥ बोलिलियेगुरुजाति॥ भोजनकीन्हअनेकविधि॥ घरीपां
चगइराति॥ ३८९॥ चौपई॥ मंगलगानकरहिंबरभामिनि॥ भइसुषमूलमनो
हरयामिनि॥ अचैंपानसबकाहूनपाये॥ स्रगसुगंधभूषितछविछाये॥ राम
हिदेषिरजायसुपाई॥ निजनिजभवनचलेसिरनाई॥ प्रेमप्रमोदविनोदबडाई
॥ समयसमाजमनोहरताई॥ कहिनसकैंहिंश्रुतिशारदशेसू॥ वेदबिरंचिम
हेशगणेसू॥ सोमैंकहौंकवनविधिबरणी॥ भूमिनागशिरधरैकिधरणी॥ नृ
पसबभांतिसबहिसनमानी॥ कहिमृदुबचनबुलाईरानी॥ बधूलरकिनीप
रघरआई॥ राखेउनयनपलककीनाई॥ दोहा॥ लरिकाश्रमितउनीदबस॥
शयनकराबहुजाइ॥ असकहिगेबिश्रामग्रह॥ रामचरणचितलाइ॥ ३९०॥
॥ चौपई॥ नृपबचनसुनिसहजसहाये॥ जटितकनकमणिपलंगडसाये॥ सु

नगसुरभिपयफेनसमाना॥कोमलकलितसुपेटीनाना॥उपबरहनबरबरनिनजाहीं॥
स्रगसुगंधमणिमंदिरमाहीं॥रतनदीपसुठिचारुचंदोवा॥कहतनबनैजानजेहिंजोवा॥
सेजरुचिररचिरामउठाये॥प्रेमसमेतपलंगपौढाये॥आज्ञापुनिपुनिभाइनदीन्ही॥
॥निजनिजसेजशयनतिन्हकीन्ही॥देखिस्यामम्रदुमंजुलगाता॥कहहिंसप्रेमबचनस
बमाता॥मारगजातभयावनभारी॥केहिबिधितातताडिकामारी॥दोहा॥घोरनिशा
चरबिकटभट॥समरगनेनहिंकाहु॥मारेसहितसहायकिमि॥खलमारीचसुबाहु
२५१॥चौपई॥मुनिप्रसादबलिताततुम्हारे॥ईशअनेककरबरेंटारे॥मखरख
वारीकरिदोउभाई॥गुरुप्रसादसबविद्यापाई॥मुनितियतरीलगतपगधूरी॥कीर
तिरहीभुवनभरिपूरी॥कमठपीठपबिकूटकठोरा॥नृपसमाजमहंशिवधनुतोरा
॥बिश्वबिजयजसजानकिपाई॥आयेभवनब्याहिसबभाई॥सकलअमानुषकर्म
तुम्हारे॥केवलकौशिककृपासुधारे॥आजुसुफलजगजन्महमारे॥देखितातबि
धुबदनतुम्हारे॥जोदिनगयेतुमहिंबिनुदेखे॥सोबिरंचिजनुपारहिंलेखे॥दोहा
रामप्रतोषीमातुसब॥करिबिनतीबरबयन॥सुमिरिशंभुगुरुविप्रपद॥कियेनी
दबसनयन॥२५२॥चौपई॥नीदउबदनसोहसुठिलोना॥मनहुंसांझसरसी

बाल०
२१०

रहसोना॥ घरघरकरहिंजागरणनारी॥ देहिंपरस्परमंगलगारी॥ पुरीबिराजतिरा
जतरजनी॥ रानीकहहिंबिलोकहुसजनी॥ सुंदरबधुनसासुलैसोई॥ फणिकणि
जनुशिरमणिउरगोई॥ प्रातपुनीतकालप्रभुजागे॥ अरुणचूडबरबोलनला
गे॥ वंदीमागधगुणगणगाये पुरजनद्वारजुहारनआये॥ वंदिविप्रसुरगुरुपि
तुमाता॥ पाइअसीसमुदितसबभ्राता॥ जननिन्हसादरबदननिहारे॥ नृपतिसंग
द्वारपगुधारे॥ दोहा॥ कीन्हशौचसबसहजशुचि॥ सरितपुनीतनहाइ॥ प्रातक्रि
याकरितातपहं॥ आयेचारिउभाइ॥ ३५४॥ चौपई॥ नृपबिलोकिलियेउ
रलाई॥ बैठेहरषिरजायसुपाई॥ देषिरामसबसभाजुडानी॥ लोचनलाभअ
वधिअनुमानी॥ पुनिबशिष्टमुनिकोशिकआये॥ सुभगआसनन्हमुनिबैठाये
॥ सुतनसमेतपूजिपदलागे॥ निरषिरामदोउगुरुअनुरागे॥ कहबशिष्टधर्म
इतिहासा॥ सुनहिमहीपसहितरनिवासा॥ मुनिमनअगमगाधिसुतकरणी॥ मु
दितबशिष्टबिपुलबिधिबरणी॥ बोलेवामदेवसबसांची॥ कीरतिकलितलोक
तिहुंमाची॥ सुनिआनंदभयेउसबकाहू॥ रामलषनउरअधिकउछाहू॥ दोह
॥ मंगलमोदउछाहनित॥ जाहिंदिवसइहिभांति॥ उमगीअवधअनंदभरि॥

२

राम
२१०

अधिक अधिक अधिकाति ॥ ३५४ ॥ चौपई ॥ सुदिन साधि कर कंकण छोरे ॥ मं
गल मोद बिनोद न थोरे ॥ नित नव सुष सुर देषि सिहांहीं ॥ अवध जन्म याचहिं बि
धि याहीं ॥ बिश्वामित्र चलत नित चहहीं ॥ राम सप्रेम बिनय बस रहहीं ॥ दिन दि
न सद गुण भूपति भाऊ ॥ देषि सराह महा मुनिराऊ ॥ मांगत बिदा राउ अनुरागे ॥
॥ सुतन समेत ठाढ भये आगे ॥ नाथ सकल संपदा तुम्हारी ॥ मैं सेवक समेत सुत ना
री ॥ करब सदा लरिकन पर छोहू ॥ दरशन देत रहब मुनि मोहू ॥ अस कहि रा
उ सहित सुत रानी ॥ परे चरण मुष आव न बानी ॥ दीन्ह असीस बिप्र बहु
भांती ॥ चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥ राम सप्रेम संग सब भाई ॥ आयसु पाइ
फिरे पहुंचाई ॥ दोहा ॥ राम रूप भूपति भगति ब्याह उछाह अनंद ॥ जात स
राहत मनहिं मन ॥ मुदित गाधिकुल चंद ॥ ३५५ ॥ चौपई ॥ बामदेव रघुकु
ल गुरु ज्ञानी ॥ बहुरि गाधि सुत कथा बखानी ॥ सुनि मुनि सुयश मनहिं मन
राऊ ॥ बरणत आपन पुण्य प्रभाऊ ॥ बहुरे लोग रजायसु भयऊ ॥ सुतन समेत
नृपति गृह गयऊ ॥ जहं तहं राम ब्याह यश गाया ॥ सुयश पुनीत लोक तिहुं
छाया ॥ आय ब्याहि राम घर जब ते ॥ बसै अनंद अवध सब तब ते ॥ प्रभु बिबाह

यष्ठान यन्न उछाहा॥ सकहिं न बरणि गिरा अहि नाहा॥ कबिकुल जीवन पावन जानी॥ राम सीय यशु मंगल खानी॥ तेहि ते मैं कछु कहा बखानी॥ करण पुनीत हेतु निज वानी॥ छंद॥ निज गिरा पावन करण कारण राम यशु तुलसी कह्यो॥ रघुबीर चरित अपार वारिधि पार कबि कवने लह्यो॥ उपबीत व्याह उछाह मंगल सुन ह्विं सादर गांवहीं॥ वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं॥ सुन गायक हैं गिरीशा कन्या धन्य अधिकारी सही॥ नित प्रीति नूतन सुनत हरि गुण नक्ति अनुपम तें लही॥ रघुबीर पद अनुराग जललो नाग बेग बुझावहीं॥ यह जान तुलसीदास मन क्रम बचन हरि गुण गांवहीं॥ दोहा॥ कबिन काल मल ग्रसित तनु साधन कछु कन होइ॥ यह बिचारि विश्वास करि॥ हरि सुमिरें बुध सोइ॥ सोरठा॥ मन हरि पद अनुराग॥ करहु त्याग नाना कपट॥ महा मोह निशि जाग॥ सोवत बीते काल बहु॥ सिय रघुबीर विवाह॥ जे सप्रेम सादर सुनहिं॥ तिन कहं सदा उछाह॥ मंगलायतन राम यश॥ २९६॥ इति श्री रामचरितमानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान वैराग्य संतोष संपादनी नाम तुलसीकृत बालकाण्ड प्रथम सोपानः समाप्तः १ समत १८६४ का

अ॰जो॰
१

॥श्रीगणेशाय नमः अथ अयोध्याकाण्ड लिख्यते ॥ श्लोक ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलां
गं॥ सीतासमारोपितवामभागं ॥ पाणौ महाशायकचारुचापं ॥ नमामि रामं रघुबंशना
थम् ॥१॥ वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके ॥ भाले बालविधुर्गले च गरलं
यस्योरसि व्यालराट ॥ सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ॥ शर्वः सर्वगतः
शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥२॥ प्रसन्नतां यो न गतो भिषेकतस्तथा न मम्ले
बनबासदुःखतः ॥ मुखाम्बुजश्रीरघुनंदनस्य मे ॥ सदास्तु तन्मंजुलमंगलप्रदम्
॥३॥ अथाग्रे भाषापद्य व्याख्यायते ॥ दोहा चौपई छंद मे ॥ दोहा ॥ श्रीगुरुचरण
सरोरज ॥ निजमनमुकुरसुधारि ॥ वरणौ रघुबरबिमलयश ॥ जो दायक फल चा
रि ॥१॥ चौपई ॥ जब ते राम ब्याहि घर आये ॥ नित नव मंगल मोद बधाये ॥ भुवन चा
रिदश भूधर भारी ॥ सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ॥ ऋधि सिधि संपति नदी सुहाई ॥ उम
गि अवधि अंबुधि कहं आई ॥ मणिगण पुर नर नारि सुजाती ॥ शुचि अमोल सुंदर
सब भांति ॥ कहि न जाय कछु नगर विभूती ॥ जनु इतनी बिरंचि करतूती ॥ सब बि
धि सब पुर लोग सुखारी ॥ रामचंद मुख चंद निहारी ॥ मुदित मातु सब सखी सहेली
॥ फलत बिलोकि मनोरथ बेली ॥ राम रूप गुण शील सुभाऊ ॥ प्रमुदित होहिं देखि

राम
१

सुनराऊ॥दोहा॥सबकेउरअभिलाषअस॥कहहिमनाइमहेश॥आपुअछतजुबरा
जपद॥रामहिंदेहिंनरेश॥१॥चौपई॥एकबारजानकीसमेता॥बैठेप्रभुनिजरुचि
रनिकेता॥भुजप्रलंबउरनयनबिशाला॥पीतबसनतनश्यामतमाला॥कोटिम
नोजदेखिछबिमोहा॥सीताकरचामरबरसोहा॥तिहिअवसरनारदऋषि आये॥सुर
हितलागिबिरंचिपगाये॥तेजपुंजतनुकरतलबीना॥हरिगुणगणगावतलय
लीना॥देखिरामसहसाउठिधाये॥करिदंडवतहृदयमुनिलाये॥सादरनिजआ
सनबैठारे॥जनकसुतातबचरणपखारे॥तेहिचरनोदकनवनासिचावा॥जगपा
वनहरिसीसचढावा॥सुनिमुनिबिषयनिरतजेप्रानी॥हमसारिखेदेहअभिमा
नी॥तिहकौसतसंगतितबहोई॥करहुकृपाजाकहंप्रभुसोई॥ताकहमुनिना
हिंनवआगे॥जेहिबिनुहेतुसंतप्रियलागे॥तातेनारदमैंबडभागी॥यद्यपिगृह
कटुंबअनुरागी॥दोहा॥सुनहरिबचनमधुरप्रिय॥करिबिचारमुनिधीर॥प्रभु
कृपालसदलोकहित॥लागिकहतरघुबीर॥२॥चौपई॥कहिमुनितबमहिमा
रघुराया॥मैंजानउंकछुतुमरीदाया॥बचनकहेउप्राकृतकीनाई॥तातेनहिंक
छुघटेउगुसाई॥प्रभुयहतुमहिसदाबनिआई॥निजलघुताजनकेरिबडाई॥स

हजसुनावप्रणतअनुरागी॥नरतनधरेउदासहितलागी॥मायागुणगोतीतअतीता
॥अजितनामसोदासनजीता॥जेहिसमप्रभुअतिप्रियकोउनाहीं॥व्यापकअजसम
मानसबमांही॥उदरचराचरमेलजोसोवा॥अन्नपानलागिसोरोवा॥नामरूप
बहुबरननभेदा॥अविगतअलखनेतिकहबेदा॥निर्ममयुक्तनिरामयजोई॥द
शरथसुतकहगाइयसोई॥जपतपयोगयज्ञब्रतदाना॥विमलबिरागज्ञानबि
ज्ञाना॥करहियतनमुनिपावहिंकोऊ॥देखाप्रगटनकऊबससोऊ॥हठबससठ
साधनबहुकरहीं॥भक्तिहीनभवसिंधुनतरहीं॥दोहा॥जानसकऊंतेजानभक्ति
॥निर्गुणसगुणस्वरूप॥ममहियपंकजभृंगइव॥बसहुरामनरभूप॥२॥चौप
ई॥ब्रह्मनवनमैंरहेकृपाला॥गावततवगुणदीनदयाला॥असइच्छाउपजी
मनमांही॥देखौंचरणबहुतदिननाही॥यद्यपिप्रभुसर्वज्ञसमाना॥अगुणरू
पमोरेमननमाना॥अवधिचलतबिरंचिमोहिजाना कीनीबियलागिममकाना॥
॥प्रभुजानतसबअंतरजामी॥भक्तबच्छुबिनतीयहस्वामी॥जेहिहेतलीन्हेम
नुजअवतारा॥नाथबेगिसोइकरियसंभारा॥सुनतबचनरघुपतिमुसुकाने॥
॥मुनिअजऊंबिरंचिनयमाने॥कहहुंतातब्रह्महिसमुझाई॥कछुदिनबीते

तेदेखोआई॥बारबारचरणनसिरनाई॥ब्रह्मानंदनहृदयसमाई॥रामरूपमनधरिमुनि
नारद। चलेकरतगुनगानबिशारद॥तबरघुपतिसीतहिसमुझावा॥बहुतकरनसोच
रितबनावा॥सुरहितलागिकरियेसोउपाई॥जइयेबनपरिहरनकुराई॥दोहा जगसं
भवअस्थितिलय॥जाकीभ्रकुटिबिलास॥सोप्रभुजतनबिचारते॥केहिविधिनि
शिचरनास॥४॥चौपई॥एकसमयसबसहितसमाजा॥राजसभारघुराजबिराजा॥
सकलसुकृतिमूरतिनरनाहू॥रामसुयशसुनअतिहिउछाहू॥नृपसबरहहिंकृपा
अभिलाषे॥लोकपरहहिंप्रीतिरुखराखे॥त्रिभुवनतीनिकालजगमाहीं॥भूरिभा
गदशरथसमनाहीं॥मंगलमूलरामसुतजासू॥जोकछुकहियथोरसबतासू॥रा
जसुभावमुकरकरलीन्हा॥बदनबिलोकिमुकुटसमकीन्हा॥श्रवणसमीपभयेसित
केसा॥मनहुंजरठपनअसउपदेसा॥लागिश्रवणजनुकहतबुढाई॥रामहिराजदेहो
किनजाई॥नृपजुवराजरामकहंदेहू॥जीवनजन्मसुफलकरिलेहू॥दोहा॥अस
बिचारिउरआनिनृप॥सुदिनसुअवसरपाइ॥तनपुलकितमनमुदितअति॥गुरु
हिसुनायउजाइ॥५॥चौपई॥ कहेउंआलसुनियमुनिनायक॥भयेरामसबबि
धिसबलायक॥सेवकसचिवसकलपुरवासी॥जेहमारअरिमित्रउदासी॥सब

मु

हिराम प्रिय जेहि विधि मोही ॥ प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥ विप्र सहित परिवार गुसां
ई ॥ करहिं छोह सब रौरी नांही ॥ जो गुरु चरण रेणु सिर धरहीं ॥ ते जनु सकल विभव वस
करहीं ॥ मुहि सम यह अनभयउ न दूजे ॥ सब पायउं रज पावन पूजे ॥ गुण सागर ना
गर श्रुति गाये ॥ बडे भाग्य मेरे गृह आये ॥ जेठे राम सकल हितकारी ॥ सकल सराह
त पुर नर नारी ॥ अब अभिलाष एक मन मोरे ॥ पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥ मन प्रस
न लखि सहज सनेहू ॥ कहेउ नरेश रजायस देहु ॥ दोहा ॥ राजन राउर नाम यश ॥ सब
अभिमत दातार ॥ फल अनुगामी महिप मणि ॥ मन अभिलाष तुह्मार ॥ ३ ॥ चौपई ॥
सब विधि गुरु प्रसन्न जिय जानी ॥ बोले राउ विहंसि मृदु वानी ॥ नाथ राम करिये जु
वराजू ॥ कहिय कृपा करि करिय समाजू ॥ मोहि अछत अस होय उछाहू ॥ लहहिं
लोग सब लोचन लाहू ॥ प्रभु प्रसाद शिव सबै निवाही ॥ यह लालसा इक मन माहीं ॥
पुनि न सोच तनु रहै कि जाऊ ॥ जेहि न होइ पाछे पछताऊ ॥ सुनि मुनि दशरथ बचन सु
हाये ॥ मंगल मूल मोद अति पाये ॥ सुनु नृप जासु विमुख पछताहीं ॥ जासु भजन बिनु जर
नि न जाहीं ॥ भये तुह्मार तनय सो स्वामी ॥ राम पुनीत प्रेम अनुगामी ॥ दोहा ॥ वेगि विलंब
न करिय नृप ॥ साजिये सबै समाज ॥ सुदिन सुमंगल तबहि जब ॥ राम होहिं जुवराज ॥ ४

॥चौपई॥ मुदितमहीपतिमंदरआये॥ सेवकसचिवसुमंतबुलाये॥ कहिजयजीवसी
सतिननाये॥ नृपसुमंगलबचनसुनाये॥ प्रमुदितमोहकहागुरुआजू॥ रामहिराजदे
हुजुवराजू॥ जौंपांचहिंमतलागेनीका॥ करहुंहरखहियरामहिटीका॥ मंत्रीमुदितसु
नतप्रियबानी॥ अभिमतबिरविपरेजनुपानी॥ बिनतीसचिवकरहिंकरजोरी॥ जिय
हुजगतपतिबरखकरोरी॥ जगमंगलभलकाजबिचारा॥ बेगहिनाथनलाइयबारा॥
॥नृपहिमोदसुनिसचिवसुभाषा॥ बढतबिटपजनुलहीसुसाषा॥ दोहा॥ कहेउभूप
मुनिराजकर॥ जोजोआयसुहोइ॥ रामराजअभिषेकहित॥ बेगकरहुसोइसोइ॥ ह
रषिमुनीशकहेउमृदुबानी॥ आनहुसकलसुतीरथपानी॥ औषधमूलफूलफलपा
ना॥ कहेनामगणिमंगलनाना॥ चामरचरमबसनबहुभांती॥ रोमपाटपटअगणितजा
ती॥ मणिगणमंगलबस्तुअनेका॥ जोजगयोगनृपअभिषेका॥ वेदविहितकहिसक
लबिधाना॥ कहेउरचहुपुरबिबिधिबिताना॥ सफलरसालपुंगफलकेरा॥ रोपहुबिथि
नहिचहुंफेरा॥ रचहुमंजुमणिचौकेचारू॥ कहहुंबनावनबेगिबजारू॥ पूजहुगण
पतिगुरुकुलदेवा॥ सबबिधिकरहुंभूमिसुरसेवा॥ दोहा॥ ध्वजपताकतोरणकलश
सजहुंतुरगरथनाग॥ सिरधरिमुनिबरबचनसब॥ निजनिजकाजहिलाग॥ ६॥ चौप ६॥

अ॰जो॰६
४

सुनसुमंतमनअतिहरषाना॥जीवनजन्मसुफलकरिजाना॥जहांतहांधावनकोटिपग
ये॥मंगलद्रव्यसकललेआये॥कनककलसप्रासजधरेऊआरे॥गजरथतुरगअनेकसवां
रे॥बऊबिधबांधेबंदनवारा॥धजपताकमणिबसनअपारा॥बनेऊनगरनहिंबरनिन
जाई॥सकललोकशोभाउरछाई॥जेहिमुनीशाजोआयसुदीन्हा॥सोजनुकाजप्रथम
तेइकीन्हा॥मुनिमनइछाकरननपावा॥सोसुमंतपहिलैलेआवा॥विप्रसाधुसुरपूज
तराजा॥करतरामहितमंगलकाजा॥सुनतरामअभिषेकसुहावा॥बाजुगहागहअव
धबधावा॥रामसीयतनुशाकुनजनाये॥फरकहिंमंगलअंगसुहाये॥पुलकिसप्रेमप
रस्परकहहीं॥भरतआगमनसूचकअहहीं॥नयेबऊतदिनअतिअवसेरी॥सगुन
प्रतीतिभेटप्रियकेरी॥भरतसरिसप्रियकोजगमाहीं॥यहैशाकुनफलदूसरनाहीं
॥रामहिसोचबंधुदिनराती॥अंडन्कमठहृदयजेहिभांती॥ दोहा॥ तेहिअवसर
मंगलपरम॥सुनिहरषीरनिवास॥शोभितलखिविधुबढतजनु॥बारिधवीचुविलास
ए॥ चौपई॥ प्रथमजाइजिन्हखबरिजनायो॥भूषणबसनभूरितिनपाये॥प्रेम
पुलकतनुमनअनुरागी॥मंगलसाजसजनसबलागी॥चौकेचारुसुमित्रापूरी॥म
णिमयविविधिभांतिअतिरूरी॥आनंदमगनराममहतारी॥दियेदानबऊविप्रहंकारि

राम
ध

री॥कहेउबहोरिदेवबलिभागा॥सजेउयामदेवसुरनागा॥वारबारगणपतिहिनिहो
रा॥कीजियसफलमनोरथमोरा॥नृपहृदयप्रभुप्रेरेहोजाई॥मतहृदहोइजोजिमें
आई॥जोकछुइछ्छाकरिमनमाहीं॥सोऊरहोयआनकछुनाहीं॥जेहिविधिहो
इरामकल्याना॥देहुंदयाकरिसोबरदाना॥गांवहिंमंगलकोकिलवयनी॥विधु
बदनीमृगशावकनयनी॥दोहा॥रामराजअभिषेकसुनि॥हियहरषीनरनारि
॥लगीसुमंगलसजनसब॥विधिअनुकूलविचारि॥२०॥चौपई॥तबनरनाहबं
शिष्टबुलाये॥रामधामसिषदेनपगये॥गुरुआगमनसुनतरघुनाथा॥द्वारआइना
येउपदमाथा॥सादरअर्घदेइघरआने॥सोरहभांतिपूजिसनमाने॥गहेचरणसि
यसहितबहोरी॥बोलेरामकमलकरजोरी॥सेवकसदनस्वामिआगमनू॥मंगलमू
लअमंगलदमनू॥तदपिउचितअसबोलिसप्रीती॥पठइयनाथकाजअसनीती
॥प्रभुतातजिप्रभुकीन्हसनेहू॥नयेनपुनीतआजुममगेहू॥आयसुहोइसोक
रियगुसाईं॥सेवकलैहैस्वामिसेवकाई॥दोहा॥सुनिसनेहसानेबचन॥मुनिर
घुबरहिप्रशंस॥रामकसनतुमकहहुंअस॥हंसबंशअवतंस॥२१॥चौपई॥
बरणिरामगुणशीलसुभाऊ॥बोलेप्रेमपुलकिमुनिराऊ॥नृपसजेउअभिषेक

समाजू॥ चाहत देन तुमहि जुवराजू॥ राम करहु सब संयम आजू॥ जौं विधि कु
सल निबाहै काजू॥ गुरु सिख देइ राय पहं गयऊ॥ राम हृदय अस विस्मय भ
यऊ॥ जनमे एक संग सब भाई॥ भोजन शयन केलि लरिकाई॥ कर्णवेध उप
वीत बिवाहा॥ संग संग सब भय उछाहा॥ बिमल वंश यह अनुचित एका॥ अ
नुज विहाइ बडे हि अभिषेका॥ प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई॥ हरेउ भक्त मन की
कुटिलाई॥ दोहा॥ तेहि अवसर आये लषन॥ मगन प्रेम आनंद॥ सनमाने प्रि
य बचन कहि॥ रविकुल कैरव चंद॥ १०॥ चौपई॥ बाजहिं बाजन विविध बिधा
ना॥ पुर प्रमोद नहिं जाय बखाना॥ भरत आगमन सकल मनावहिं॥ आवहि
वेगि नयन फल पावहिं॥ हाट बाट घर गली अथाई॥ कहहिं परस्पर लोग लुगा
ई॥ कालि लगन भल केतिक बारा॥ पूजिहि विधि अभिलाष हमारा॥ कनक सिं
हासन सीय समेता॥ बैठहिं राम होइ चित चेता॥ सकल कहहिं कब होइहि काली
॥ विघ्न मनावहिं देव कुचाली॥ तिनहिं सोहात न अवध बधावा॥ चोरहि चांदिनि रा
ति न भावा॥ सादर बोलि बिनय सुर करहीं॥ बारहि बार पांव लै परहीं॥ दोहा॥ बि
पति हमारि बिलोकि बडि॥ मातु करिय सोइ आज॥ राम जाहिं बन राज तजि॥ हो

इसकलसुरकाज ॥२४॥ चौपई॥ सुनिसुरबिनयगढिपछताती ॥ नयिनसरोजबि
पिनहिमराती ॥ देखिदेवपुनिकहहिंनिहोरी ॥ मातुतोहिनहिंथोरिउखोरी ॥ बि
स्मयहर्षरहितरघुराऊ ॥ तुमजानहुरघुबीरसुभाऊ ॥ जीवकर्मबसदुखसुखभ
गी ॥ जाइयअवधदेवहितलागी ॥ बारबारगहिचरणसंकोची ॥ चलीबिचार
बिबुधमतिपोची ॥ ऊंचनिवासनीचकरतूती ॥ देखिनसकहिंपराइबिभूती ॥ आ
गिलकाजबिचारिबहोरी ॥ करिहैंचाहकुशलकविनोरी ॥ हरषेहृदयदशरथपुर
आइ ॥ जनुग्रहदशादुसहदुखदाई ॥ दोहा॥ नाममंथरामंदमंद ॥ चेरीकेकयिकेरि
अयशपिटारीताहिकरि ॥ गईगिरामतिफेरि ॥२५॥ चौपई॥ देखिमंथरानगरबना
वा ॥ मंगलमंजुलबाजुबधावा ॥ पूछसिलोगनकाहउछाहू ॥ रामतिलकसुनिभाउ
रदाहू ॥ करैबिचारकुबुद्धिकुजाती ॥ होइअकाजकवनबिधिराती ॥ देखिलागुमधु
कुटिलकिराती ॥ जिमिगवतकैलेउंकेहिभांती ॥ भरतमातुपहंगइबिलखाती ॥ का
अनमनीरहंसिकहरानी ॥ उतरदेइनलेइउसांसू ॥ नारिचरितकरिढारतिआंसू
॥ हंसिकहरानिगालबडतोरे ॥ दीनलषनसिषअसमनमोरे ॥ तबहुनबोलिचेरि
बडपापनि ॥ छाडैस्वांसकारिजनुसापिन ॥ दोहा॥ सभयरानिकहकहसिकिन ॥

अजो०
६

कुशलराममहिपाल॥भरतलषनरिपुदवनसुनि॥भाकुबरीउरशाल॥२६॥चौपई॥
कासोवतसुहागअभिमानी॥निकटमहानयनतूंनडरानी॥कतसिषदेइहमहिकोउ
माई॥गालकरबकेहिकरबलपाई॥रामहिछाडिकुशलकेहिआजू॥जांहिनरेशु
देतजुवराजू॥भाकौशल्यहिबिधिअतिदाहिन॥देषतगर्वरहतउरनाहिन॥देखहु
कसनजाइसोइशोभा॥जोअबलोकिमोरमनछोभा॥पूतविदेसनसोचतुम्हारे॥जा
नतिहौंबसनाहुहमारे॥नीदबहुतप्रियसेजतुराई॥लषहुनभूपकपटचतुराई॥सु
निप्रियबचनकुटिलमनजानी॥झुकिरानीअबरहुअरगानी॥पुनिअसकबहुंकह
सिघरफोरी॥तौधरिजीहकटावौंतोरी॥दोहा॥कानेखोरेकुबरे॥कुटिलकुचाली
जानि॥तियबिशेषपुनिचेरिकहि॥भरतमातुमुसुकानि॥२७॥चौपई॥प्रियबादिनि
सिखदीन्हेउतोही॥सपनेहुतोपरकोपनमोही॥सुदिनसुमंगलदायकसोई॥तोर
कहाफुरजादिनहोई॥जेठस्वामिसेवकलघुभाई॥यहदिनकरकुलरीतिसुहाई
॥रामतिलकजौंसांचेहुकाली॥मांगुदेउमनभावतिआली॥कौशल्यासमसबमह
तारी॥रामहिसहजसुभावपियारी॥मोपरकरहिसनेहबिशेषी॥मैंकरिप्रीतिपरीछा
देषी॥जोविधिजन्मदेइकरिछोहू॥होहिंरामसियपूततपतोहू॥प्राणतेअधिकराम

राम
६

प्रियमोरे ॥ तिनकेतिलकक्षोभकसतोरे ॥ अतिप्रियबचनसुनायेमोही ॥ कहोमंथरा
देउंकातोही ॥ दोहा ॥ भरतसपथतोहिसत्यकहुं ॥ परिहरिकपटदुराव ॥ हर्षसमय
बिस्मयकरसि ॥ कारणमोहिसुनाव ॥ २८ ॥ चौपई ॥ सुनतबचनमंथरारिसानी ॥ बोली
बचनकपटछलसानी ॥ एकहिबारआससबपूजी ॥ अबकछुकहबजीहकरदूजी ॥
॥ फोरैयोगकपारअभागा ॥ भलौकहतदुखरौरेहुलागा ॥ कहइगूढफुरबातबना ॥
ई ॥ तेप्रियतुमहिंकरूइमैंमाई ॥ हमहुंकहबअबठकुरसुहाती ॥ नाहितमौंनरहब
दिनराती ॥ करिकुरूपबिधिपरबसकीन्हा ॥ बाचासालहमैबिधिदीन्हा ॥ कोउनृपहो
उहमैकाहानी ॥ चेरिछाडिअबहोबकिरानी ॥ जारेयोगसुभावहमारा ॥ अनभलदे
खिनजायतुम्हारा ॥ तातेकछुकबातअनुसारी ॥ छमबदेबिबडिचूकहमारी ॥ दो
हा ॥ गूढकपटप्रियबचनसुनि ॥ तीयअधरबुधिरानि ॥ सुरमायाबसबैरिणिहि ॥ सु
हृदजानिपतिआनि ॥ चौपई ॥ २९ ॥ सादरपुनिपुनिपूछतओयी ॥ शबरीगानमृगी
जनुमोही ॥ तसमतफिरीअहैजसभावी ॥ रहसीचेरिघातजनिफावी ॥ तुमपूछहुमैं
कहतडराऊं ॥ धरेउमोरघरफोरीनाऊं ॥ सजीप्रतीतिगढिबहुबिधिछोली ॥ अवधि
साढसातीजनुबोली ॥ प्रियासियरामकहातुमरानी ॥ रामहितुमप्रियसोफुरबानी ॥

रहेउ प्रथम अब सो दिन बीते ॥ समय पाइ रिपु होहिं पिरीते ॥ भानु कमल कुल पोषनिहारा
॥ बिनु जल जारि करै सोइ छारा ॥ जरि तुम्हारि चह सवति उपारी ॥ रूंधहु करि उपाय बर बा
री ॥ दोहा ॥ तुमहि न सोच सुहाग बल ॥ निज बस जानहु राउ ॥ मन मलीन मुह मीठ नृप
॥ राउर सरल सुभाव ॥ २० ॥ चौपई ॥ चतुर गंभीर राम महतारी ॥ बीच पाइ निज काज सवा
री ॥ पठये भरत भूप ननिऔरे ॥ राम मातु मत जानव रौरे ॥ सेवत सकल सवति मोहि नी
के ॥ गर्वित भरत मातु बल पी के ॥ शाल तुम्हार कौशिलहि माई ॥ चतुर कपट नहिं परत ल
खाई ॥ राजहिं तुम पर प्रीति बिशेषी ॥ सवति सुभाव सकै नहिं देखी ॥ रचि प्रपंच भूपहि
अपनाई ॥ राम तिलक हित लगन धराई ॥ इह कुल उचित राम कहु टीका ॥ सबहि सु
हाइ मोहि सुठि नीका ॥ आगिल बात समुझि डर मोही ॥ देउ दैव फिरि सो फल ओही ॥
दोहा ॥ रचि पचि कोटिक कुटिलपन ॥ कीन्हेसि कपट प्रबोध ॥ कहेसि कथा सत सौति कर
॥ जातें बढै बिरोध ॥ २१ ॥ चौपई ॥ भावी बस प्रतीति उर आई ॥ पूछि रानि निज सपथ
दिवाई ॥ का पूछहु तुम अजहु न जाना ॥ हित अनहित निज पशु पहिचाना ॥ भये पाख
दिन सजत समाजू ॥ तुम सुधि पायेहु मो सन आजू ॥ खाइय पहिरिय राज तुम्हारे ॥ सत्य
कहे नहिं दोष हमारे ॥ जौ असत्य कछु कहब बनाई ॥ तौ बिधि देइहि मोहि सजाई ॥ रा

व.

मरहिं तिल क कालि जो नयऊ ॥ तुम कहु विपति बीज विधि बयऊ ॥ रेखा खैंचि कहौं बल ना
बी ॥ भामिनि भयहु दूध की माषी ॥ जो सुत सहित करौं सेवकाई ॥ तौ घर रहहु न आन
उपाई ॥ दोहा ॥ कद्रू बनतहि दीन दुख ॥ तुमहि कौशिल्या देव ॥ भरत बंदिगृह सेइ
हैं ॥ राम लषन कर सेव ॥ २२ ॥ चौपई ॥ केकयसुता सुनत कटु बानी ॥ कहि न सकै क
छु सहमि सुषानी ॥ तनु पसेउ कदलि जिमि कांपी ॥ कुवरी दसन जीह तब चांपी ॥ कहि
कहि कोटिक कपट कहानी ॥ धीरज धरहु प्रबोध सिरानी ॥ कीन्हसि कठिन पढाइ कु
पाठु ॥ जिमि न नवै फिरि उकट कुकाठू ॥ फिरा करम प्रिय लागु कुचाली ॥ बकिहि सरा
हति मनु मराली ॥ सुनु मंथरा बात फुरु तोरी ॥ दाहिन आंख नित फरकत मोरी ॥ दि
न प्रति देखौं राति कुसपना ॥ कहौं न तोहि मोह वस अपना ॥ काह करौं सखि सूध सु
भाऊ ॥ दाहिन वाम जानौं नहिं काऊ ॥ दोहा ॥ अपने चलत आजु लगि ॥ अनभला
काहु न कीन्ह ॥ केहि अघ एकहि वार मोहि ॥ देव दुसह दुख दीन्ह ॥ २३ ॥ चौपई ॥
नैहर जनम भरव वरु जाई ॥ जिअत न करव सवति सेवकाई ॥ अरि वस दैव जिआ
वै जाही ॥ मरण नीक तेहि जीवन चाही ॥ दीन वचन कहि बहु विधि रानी ॥ सुनि
कुवरी तिय माया ठानी ॥ अस कस कहहु मानि मन ऊना ॥ सुष सुहाग तुम कह

अजो० ८

दिनहूना। जोरावरअसअननलताका। सोपाइहियहफलपरिपाका॥ जबतेंकुमति
सुनामैंस्वामिनि॥ भूषनबासरनींदनयामिनि॥ पूछागुणिन्हरेखतिनखांची॥ भरत
भुआलहोवयहसांची॥ भामिनिकरहुतोकहौंउपाऊ॥ हैतुम्हारिसेवाबसराऊ॥ दो
हा॥ परौंकूपतबबचनलगि॥ सकोंपुतपतित्यागि॥ कहेसिमोरदुषदेखिबड॥ कस
नकरबहितलागि॥ २४॥ चौपई॥ कुबरिकरकसउसुकैकेयी॥ कपटछुरीउरपाह
नटेई॥ लखैनरानिनिकटदुखकैसे॥ चरैहरिततृणबलिपशुजैसे॥ सुनतबातमृ
दुअंतकठोरी॥ देतिमनहुमधुमाहुरघोरी॥ कहैचेरिसुधिअहैकिनाहीं॥ स्वामि
निकहेउकथामोहिपाहीं॥ दुइबरदाननृपसनथाती॥ मागहुआजुजुडावहु
छाती॥ सुतहिराजरामहिबनवासू॥ देहुलेहुसबसवतिहुलासू॥ नृपतिरामसप
थजबकरई॥ तबमांगहुजेहिबचननटरई॥ होइअकाजआजुनिसबीते॥ बचन
मोरप्रियमानहुजीते॥ दोहा॥ बडकुघातकरिपातकिनि॥ कहेसिकोपग्रहजाहु
॥ काजसवारहुसजगसब॥ सहसाजनिपतिआहु॥ २५॥ चौपई॥ कुबरिहिरानिप्रा
णप्रियजानी॥ बारबारबडिबुद्धिबखानी॥ तहिसमहितुनमोरसंसारा॥ बहेजातक
रनयसिअधारा॥ जौंबिधिपुरबमनोरथकाली॥ करौंतोहिचखपुतरिआली॥ ब

राम ८

दो॰

कविधिवेरिरहिआदरदेई ॥ कोपभवनगवनीकैकेयी ॥ बिपतिबीजबर्षाऋतुचेरी
भुंइभइकुमतिकेकयीकेरी ॥ पाइकपटजलुअंकुरजामा ॥ बरदोउदलफलदुखपरिणा
मा ॥ कोपसमाजसाजिसजिसोई ॥ राजकरततेहिकुमतिबिगोई ॥ राउरनगरकुलाहल
होई ॥ यहकुचालकछुजाननकोई ॥ प्रमुदितपुरनरनारिसब ॥ साजिसुमंगलचार ॥ इ
कप्रविशहिंइकनिकसही ॥ भीरभूपदरबार ॥ चौपई ॥ २६ ॥ बालसखासुनिहियह
रषाही ॥ मिलिदशपांचरामपहजाही ॥ प्रभुआदरहिंप्रेमपहिचानी ॥ पूछहिंकुशल
छेममृदुबानी ॥ फिरहिंभवनप्रभुआयसुपाई ॥ करतपरस्पररामबडाई ॥ कोरघुबी
रसरससंसारा ॥ शीलसनेहनिबाहनिहारा ॥ जेहिजेहियोनिकर्मबसभ्रमहीं ॥ तहं
तहंईशदेहियहहमहीं ॥ सेवकहमस्वामीसियनाहू ॥ होउनातयहओरनिबाहू
॥ असअभिलाखनगरसबकाहू ॥ केकयसुताहृदयअतिदाहू ॥ कोनकुसंगति
पाइनसाई ॥ रहैननीचमतेचतुराई ॥ अतिहिसुशीलकेकयीरानी ॥ दुष्टसंगतेम
तिबौरानी ॥ दोहा ॥ सांझसमयसानंदनृप ॥ गयेकेकयीगेह ॥ गवननिठुरतानिक
टकियजनुधरिदेहसनेह ॥ २७ ॥ चौपई ॥ कोपभवनसुनिसकुचेराऊ ॥ भयबसअगो
परैनपाऊ ॥ सुरपतिबसैबाहुबलताके ॥ नरपतिरहहिंसकलरुखताके ॥ सोसुनि

अजो॰ ए

तियरिससुनायेसुभाई॥ देखहुकामप्रतापबडाई॥ सूलकुलिसअसिअंगनिहारे॥
तेरतिनाथसुमनसरमारे॥ सभयनरेसप्रियापहंगयेऊ॥ देखिदसादुषदारुणभ
येऊ॥ भूमिसयनपटमोटपुराना॥ दियेडारितनुभूषणनाना॥ कुमतिहिकसकु
बेषताफाबी॥ अनअहिवातसूचजनुभावी॥ जाइनिकटनृपकहमृदबानी॥ प्रा
णप्रियाकेहिहेतुरिसानी॥ छंद॥ केहिहेतुरानिरिसानिपरसतपाणिपतिहिनि
वारहीं॥ मानहुंसरोषभुअंगभामिनिविषमभांतिनिहारही॥ दुइबासनारस
नादसनबरमर्मठाहरदेखई॥ तुलसीनृपतिभवतव्यतावसकामकौतुकलेखई॥
सोरठा॥ बारबारकहराउ॥ सुमुषिसुलोचनिपिकबचनि॥ कारणमोहिसुनाउ॥
गजगामिनिनिजकोपकर॥ २८॥ चौपई॥ अनहिततोरप्रियाकेइंकीन्हा॥ केहिदुइ
कऊ सिरकेहियमचहलीन्हा॥ कऊकेहिरंककहिंकरौंनरेसू॥ केहिनृपहिनिकारौंदेसू॥
सकौंतोरअरिअमरऊमारी॥ कहाकीटबपुरेनरनारी॥ जानसिमोरसुभावब
रोरू॥ तवमुषमनदृगचंदचकोरू॥ प्रियाप्राणसुतसर्बसमोरे॥ परिजनप्रजासकल
बसतोरे॥ जौंकछुकहौंकपटकरितोही॥ भामिनिरामसपथशतमोही॥ बिहंसिमां
गुमनभावतिबाता॥ भूषणसाजुमनोहरगाता॥ घरीकुघरीसमुझिजियदेषो॥ बे

राम ए

गित्रियापरिहरहुकुबेषो ॥ दोहा ॥ यहसुनिमनगुणिसपथबड़ि ॥ बिहसिउठिमतिमं
द ॥ भूषणसजतिबिलोकिमृग ॥ मनहुकिरातिनिफंद ॥ २५ ॥ चौपई ॥ पुनिकहरा
उसुहृदजियजानी ॥ प्रेमपुलकिमृदमंजुलबानी ॥ भामिनिभयउतोरमनभावा
॥ घरघरनगरअनंदबधावा ॥ रामहिंदेउकालिजुवराजू ॥ सजहुसुलोचनिमंगल
साजू ॥ दलकिउठीसुनिबचनकठोरा ॥ जनिछुइगयउपाकबरतोरा ॥ ऐसीउपी
रबिहसिलेगोई ॥ चोरनारिजिमिप्रगटनरोई ॥ लखीनभूपकपटचतुराई ॥ कोटि
कुटिलमतिगुरुपढाई ॥ यद्यपिनीतनिपुणनरनाहू ॥ नारिचरितजलनिधिअव
गाहू ॥ कपटसनेहबढायबहोरी ॥ बोलीबिहसनयनमुखमोरी ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दोहा ॥ मांगमांगयेकहहुपिय ॥ कबहुंदे
हुंनलेहु ॥ देनकहेबरदानदुय ॥ सोपावतसंदेहु ॥ २६ ॥ चौपई ॥ देहतुजियेतजों
नतप्राना ॥ बचनसुनतनृपतिमुसुकाना ॥ जानामरमरावहंसिकहई ॥ तुमहिंकु
हावपरमप्रियअहई ॥ थापीराखिनमांगहुकाऊ ॥ बिसरिगयेउमोहिभोरसुभा
ऊ ॥ झूठेहमहिंदोषजिनदेहू ॥ दुयकेचारमांगकिनलेहू ॥ रघुकुलरीतिसदा
चलिआई ॥ प्राणजाहिंबरबचननजाई ॥ नहिंअसतसमपातकपुंजा ॥ गिरिस

रामराज
भरतनपा
राढ राजको
देनहीं

महोहिंकिकोटिकुजा॥समसमूलसबसुकृतसुहाये॥बेदपुराणबिदितमुनिगाये
॥तेहिपररामसपथकरआई॥सुकृतसनेहअवधरघुराई॥बातदृढायकुमतिहं
सिबोली॥कुमतिबिहगकुलहजनुखोली॥दोहा॥नृपमनोरथसुभगबन॥सुखसु
बिहंगसमाज॥भिल्लनिजिमछाडनचहत॥बचननयंकरबाज॥२८॥चौपई॥
सुनहुप्राणपतिभावतजियका॥देहुएकबरभरतहिटीका॥मांगहुंदूसरबरक
रजोरी॥पुरवोनाथमनोरथमोरी॥तापसबेषबिशेषउदासी॥चोदहबरषराम
बनबासी॥सुनमृदुबचननृपहियशोकू॥शशिकरछुवतबिकलजनुकोकू॥
संभ्रममूर्छिपडानृपकैसे॥काटेपंखपडेषगजैसे॥गयेसहमिकछुकहिनहिजा
वा॥जनुसचानबनझपटेउलावा॥बिबरणभयउनिकटमहिपालू॥दामिनिहने
उमनउतरुतालू॥अतिव्याकुलतनुबिगलतकेसा॥धरिधीरजपुनिउठेउनरे
सा॥आगेसोइबाघिनिजिमिगाढी॥पुनिपुनिसांसलेतअतिगाढी॥माथेहाथमूं
दिदोउलोचन॥तनुधरिसोचलागुजनुसोचन॥मोरमनोरथसुरतरुफूला॥फर
तकरिणिजहतेउसमूला॥गयोसहमसुनबचनकठोरा॥मृगबिलोकजनुदे
वउचौरा॥अवधउजारिकीन्हकैकेयी॥दीन्हेसिअचलबिपतिकेनेही॥दोहा॥

कवनेअवसरकाभयेउगयेउनारिबिश्वास॥ योगसिद्धफलसमयजिमि॥ यँतिहिअ ति
विद्यानास॥ २२॥ चौपई॥ इहिबिधिराउमनहिमनझांपा॥ देषिकुभांतिकुमतिम
नमाषा॥ भरतकिराउरपूतनहोहीं॥ आनेउमोलबेसाहिकिमोही॥ जोसुनिश
रसमलागतुह्मारे॥ काहेनबोलेउबचनसंभारे॥ देउउतरअसकहउकिनाहीं
॥ सत्यसिंधुतुमरघुकुलमाहीं॥ देनकहेउबरअबजनिदेहू॥ तजउसत्यजगअ
पजसलेहू॥ सत्यसराहिकहेउबरदेना॥ जानेउलेइहिमांगिचबेना॥ शिबिदधी
चिबलिजोकछुभाषा॥ तनुधनतजेउबचनपनराषा॥ अतिकटुबचनकह
तकैकेयी॥ मानहुलौनजरेपरदेही॥ दोहा॥ धर्मधुरंधरधीरधरि॥ नयननउघारे
राउ॥ शिरधुनिलीन्हेउस्वांसअस॥ मारेसिमोहिकुगाउ॥ २९॥ चौपई॥ आगेदेषि
बरतिरिसिनारी॥ मनहुरोषतरवारिउघारी॥ मूठकुबुद्धिधारनिठुराई॥ धरिकू
बरीषर्सानबनाई॥ लखेउमहीपकरालकठोरा॥ सत्यकिजीवनलेइहिमोरा
॥ बोलेराउकठिनकरछाती॥ बाणीबिनयनताहिसोहाती॥ मोरेभरतरामदो
उआंषी॥ सत्यकहौंकरिशंकरसाखी॥ प्रियाबचनकसकहसिकुभांति॥ भी
रुप्रतीतिप्रीतिकरिहांती॥ अबलगिकहसिरामप्रियमोरे॥ अबकाकुमति

बसी जिय तोरे ॥ अब सिखु तुम मैं पठउ प्राता ॥ ऐहैं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥ सुदिन साधि सब
साज सजाई ॥ देहौं भरतहि राज बजाई ॥ तव सुत राज करहु सुनु रानी ॥ राम रहहु सि
गरह कहो यह बानी ॥ दोहा ॥ लोभ न रामहि राज कर ॥ बहुत भरत पर प्रीति ॥ मैं बड
छोट बिचारि कर ॥ करत रहेउ नृपनीति ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ बिनु रघुपति मम जीवन न
नाही ॥ त्रिया विचार देखि यमन मांही ॥ राम सपथ सत कहौं सुभाऊ ॥ राम मातु मो
हि कहा न काऊ ॥ मैं सब कीन्ह तोहि बिनु पूछे ॥ ताते परेउ मनोरथ छूछे ॥ रिस प
रिहर अब मंगल साजू ॥ कछु दिन गाये भरत जुवराजू ॥ एकहि बात मोहि दुष
लागा ॥ बर दूसर असमंजस मांगा ॥ अजहूं हृदय दहत तेहि आंचा ॥ रिस परि
हास कि सांचेहु सांचा ॥ कहु तजि रोष राम अपराधू ॥ सब कोउ कहत राम सुवि
साधू ॥ तुहूं सराहसि करसि सनेहू ॥ अब सुनि मोह परम संदेहू ॥ जासु सुभाव अ
रिहु अनुकूला ॥ सो किमि करहिं मातु प्रतिकूला ॥ दोहा ॥ प्रिया हास रिस परि
हरहु ॥ मांग विचार बिबेक ॥ जेहि देखहुं अब नयन भरि ॥ भरत राज अभिषेक ॥
३५ ॥ चौपई ॥ जिये मीन बरु बारि विहीना ॥ मणि बिनु फणिक जिये दुषदीना ॥
॥ कहौं सुभाव न छल मन माही ॥ जीवन मोर राम बिनु नाही ॥ चेति देख चित

त्रिया प्रबीना॥ जीवन राम दरस आधीना॥ यद्यपि नृप अति कीन निहोरा॥ मानै न
हिं अति हृदय कठोरा॥ सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई॥ मनहु अनल आ
हुति घृत परई॥ कहहिं करो किन कोटि उपाया॥ इहां न लागहि राउरि माया॥ देहु
कि लेहु अयस करनाही॥ मोहि न बहुत प्रपंच सुहाहीं॥ राम साधु तुम साधु सया
ने॥ राम मातु भल सब पहिचाने॥ जस कौशल्या मोर भल ताका॥ तस फल उनहिं दे
हुं करसाका॥ दोहा॥ होत प्रात मुनिबेष धरि। जो न राम बन जाहिं॥ मोर मरण रा
वर अजस। नृप समझहु मन मांहिं॥ २६॥ चौपई॥ असकहि कुटिल भई उठि ठा
ढ़ी॥ मानहुं रोष तरंगिनि बाढी॥ पाप पहार प्रकट भइ सोई॥ भरी क्रोध जल जा
इ न जोई॥ दोउ बर कूल कठिन हठ धारा॥ भवर कूबरी बचन प्रचारा॥ ढाहत भू
परूप तरु मूला॥ चली बिपति बारिधि अनुकूला॥ लखी नरेस बात सब सांची॥ त्रि
य मिस मीच सीस पर नाची॥ गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी॥ जिन दिनकर कुल
होसि कुठारी॥ मांग माथ अबही देउं तोही॥ राम बिरह जिन मारसि मोही॥ राखहु रा
म कहुं जेहि तेहि भांती॥ नांहि त जरहि जनम भर छाती॥ दोहा॥ देखी ब्याधि असा
ध नृप॥ परेउ धरणि धुनि माथ॥ कहत परम आरत बचन॥ राम राम रघुनाथ॥

॥२८॥ चौपई॥ ब्याकुलराउसिथिलसबगाता॥ करणिकल्पतरुमनहुँनिपाता॥
कंठसूषमुषआवनबानी॥ जिमिपाठीनदीनबिनुपानी॥ पुनिकहकटुकठोर
कैकेयी॥ मर्मपाछिजनुमाहुरदेयी॥ ज्यौंअंतहुअसकरतबरहेऊ॥ मांगुमां
गुकेहिकेबलकहेऊ॥ दुइकिहोइएकसमयभुआला॥ हंसबठठाइफुलाइब
गाला॥ दानिकहाउबअरुकृपणाई॥ चाहियखेमकुशलरौताई॥ छाडहुबचन
किधीरजधरेहू॥ जनुअबलाइवकरुणाकरहू॥ तनतियतनयधामधनधर
णी॥ सत्यसंधकहंतृणसमबरणी॥ दीनदानफिरमांगसिराजा॥ परिहरिवेदलो
ककीलाजा॥ होतभ्रातसुतबनहिंनजाई॥ चौथेपनन्रपसुजसनसोई॥ दोहा॥
मर्मबचनसुनिराउकह॥ कछुदोषनहितोर॥ लागेउमोहिपिशाचजनु॥ काल
कहावतमोर॥२९॥ चौपई॥ चहतनभरतन्रपपदभोरे॥ विधिवसकुमतिबसीउ
रतोरे॥ सोसबमोरपापपरिनामू॥ कछुनबसाइनयोविधिवामू॥ सुवसबसि
हिफिरिअवधसुहाई॥ सबगुणधामरामप्रभुताई॥ करिहैंभाइसकलसेवका
ई॥ होइहैंतिहुंपुररामबडाई॥ तोरकलंकमोरपछिताऊ॥ मुयेहुंमेटिनजा
इहिकाऊ॥ अबतोहिनीकलागुकरसोई॥ लोचनवोटवैठुमुषगोई॥ जौंलौं

जियों कहौं कर जोरी॥ तौलौ जनि कछु कहहु सिव होरी॥ फिरि पछितैहसि अंत अ-
भागी॥ मारसि गाय नहारू लागी॥ दोहा॥ परेउ राउ कहि कोटि बिधि॥ काहे क-
रसि निदान॥ कपट सयानि न कहति कछु॥ जागति मनहु मसान॥ ३७॥ चौपई॥
रामराम रटि बिकल भुआलू॥ जनु बिनु पंख बिहंग बिहालू॥ हृदय मनाव भोर ज-
नि होई॥ रामहि जाय कहै जनि कोई॥ उदय करहु जनि रबिकुलगुरु॥ अवध बि-
लोकि शूल होयहै उरू॥ नृपप्रीति कैकइ कठिनाई॥ उभय अवधि बिधि रची बना-
ई॥ बिलपत नृपतन भयेउ भिनुसारा॥ बीणा बेणु शंख धुनि द्वारा॥ पढहि भाट गु-
ण गावहि गायक॥ सुनत नृपहि लागत जनु सायक॥ मंगल सकल सोहाहि न कैसे
॥ सहगामिनी बिभूषण जैसे॥ तेहि निशि नीद परी नहि काहू॥ राम दरस लालसा
उछाहू॥ कबहि उदय रबि होय बिहाना॥ देषिय नयन नरूपनिधाना॥ गज आरू-
ढ अनुज सियसंगा॥ शोभित तनु छबि कोटि अनंगा॥ करत मनोरथ राति सिरानी॥ प्रा-
त भयेउ जागे मुनि ज्ञानी॥ तबहि बशिष्ठ सुमंत बुलाये॥ हृदय हरष आतुर चलि
आये॥ दोहा॥ द्वार भीर सेवक सचिव॥ कहहिं उदय रबि देषि॥ जागे अजहु न अव-
धपति॥ कारण कवन बिशेष॥ ३८॥ चौपई॥ पिछिले पहर नृप नित जागा॥ आजु

अजो०
४२

हमहिंबड अचरजलागा॥ जाऊ सुमंत जगावऊ जाई॥ कीजिय काज रजायसु पाई
॥ गये सुमंत नृप राउर माही॥ देखि भयानक जात डराही॥ धाइ खाइ जनु जात न हेरा॥
मानऊ विपति विषाद वसेरा॥ पूछत कोउ न उत्तर देही॥ गये जेहि भुवन नृप कैकेई
॥ कहि जयजीव बैठ सिर नाई॥ देख नृप गति गयउ सुखाई॥ सोच विकल विवरण
महि परेऊ॥ मानऊ कमल मूल परिहरेऊ॥ सचिव सभीत सकै नहिं पूछी॥ बोली
असुभ भरी सुभ छूछी॥ दोहा॥ परी न राजहिं नीद निसि॥ मर्म जानु जगदीस॥ राम
राम रटि भोर किये॥ हेतु न कहै महीस॥ ४२॥ चौपई॥ आनऊ रामहि वेग बुलाई
॥ समाचार तब पूछेऊ आई॥ चल्यो सुमंत राउ रुष जानी॥ लखी कुचाल की
न्ह कछु रानी॥ सोच विकल मग परै न पाऊ॥ रामहिं बोलि कहहि का राऊ॥ उ
र धरि धीर जगयउ दुवारे॥ पूछहिं सकल देखि मन मारे॥ समाधान मन करि सव
हीका॥ गये जहां दिनकर कुलटीका॥ राम सुमंतहि आवत देखा॥ आदर कीन्ह पि
ता सम लेखा॥ निरखि वदन कहि नृप रजाई॥ रघुकुल दीपहि चले लेवाई॥ राम कु
भांति सचिव संग जाई॥ देखि लोग जहं तहं बिलखाई॥ दोहा॥ आइ दीख रघुवंसम
णि॥ नरपति निपट कुसाज॥ सहमि परे लखि सिंघिनिहि मनऊ बृद्ध गजराज

राम
४२

॥४१॥ चौपई॥ सूखे अधर जरे सब अंगा॥ मनहु दीन मणिहीन भुअंगा॥ सरुष समीप
देखि कैकेई॥ मानहु मृत्यु घरी गणि लेई॥ करुणामय रघुनाथ सुभाऊ॥ प्रथम दीख
दुख सुना न काऊ॥ तदपि धीर धरि समय बिचारी॥ पूछी बचन मधुर महतारी॥ चरण
नाय सिर दोउ कर जोरी॥ बोले बचन सुधा जनु बोरी॥ मोहि कहु मातु तात दुख कार
ण॥ करिय यत्न जेहि होय निवारण॥ सुनहु राम सब कारण एहू॥ राजहिं तुम पर ब
हुत सनेहू॥ देन कहेउ मोहि दुइ बरदाना॥ मांगेउ जो कछु मोहि सुहाना॥ सो सुनि भ
येउ भूप उर सोचू॥ छाडि न सकहि तुम्हार सकोचू॥ दोहा॥ सुत सनेह इत बचन उत
॥ संकट परेउ नरेस॥ सकहु तो आयसु सीस धरि॥ मेटहु कठिन कलेस॥४२॥ चौपई
॥ निधरक बैठि कहति कटु बानी॥ सुनत कठिनता अति अकुलानी॥ जीभ कमान ब
चन सर नाना॥ मनहु महिप मृदु लच्छ समाना॥ जनु कठोरपन धरेउ शरीरा॥ सीखइ धनु
ति
ष विद्या बर बीरा॥ सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई॥ बैठी जनु तनु धरि निठुराई॥ मन मुसु
काहि भानु कुल भानू॥ राम सहज आनंद निधानू॥ बोले बचन बिगत सब दूषण
॥ मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषण॥ सुनु जननी सोइ सुत बडभागी॥ जो पितु मात बच
न अनुरागी॥ तनय मातु पितु पोषनहारा॥ दुर्लभ जननी यह संसारा॥ दोहा॥ मुनिग

एमिलनबिषेषबन। सबहिभांतिहितमोर॥ तेहिमैंपितुआयसुबहुरि॥ संमतज
नीतोर॥५५॥चौपई॥ भरतप्राणप्रियपावहिराजू॥ बिधिसबबिधिमोहिसन्मुष
आजू॥ जौंनजाउंबनऐसेहुकाजा॥ प्रथमगणियमोहिमूढसमाजा॥ सेवहिंअ
रंडुकल्पतरुत्यागी॥ परिहरिअमियलेहिंबिषमांगी॥ तेउनपायअससमयचु
काहीं॥ देषुबिचारिमातुमनमाहीं॥ अबएकेदुषमोहबिषेषी॥ निपटबिकल
लनरनायकदेषी॥ थोरहिबातपितुहिदुषभारी॥ होतप्रतीतिनमोहिमहतारी
॥राउधीरगुणउदधिअगाधू॥ भामोतेकछुबडअपराधू॥ जातेमोहिनकहतक
छुराऊ॥ मोरसपथतोहिकहुसतभाऊ॥ दोहा॥ सहजसरलरघुबरबचन। कुम
तिकुटिलकरिजान॥ चलैंजोंकजिमिबक्रगति॥ यद्यपिसलिलसमान॥५६॥दो
हा॥ रहसीरानिरामरुषपाई॥ बोलीकपटसनेहजनाई॥ सपथतुम्हारभरतकै
आना॥ हेतुनदूसरमैंकछुजाना॥ तुमअपराधयोगनहिंताता॥ जननीजनक
बंधुसुषदाता॥ रामसत्यतुमजोकछुकहहू॥ तुमपितुमातुबचनअरहहू॥ पितुहि
बुझाइकहोबलसोई॥ चौथेपनअघअयशनहोई॥ तुमसमसुबनसुकृतजेहि
दीने॥ उचितनतासुनिरादरकीने॥ लागहिकुमुषिबचनशुभकैसे॥ मगहगयां

दिकतीरथुजेसे॥ रामहिमातुबचनसबभाषे॥ जिमिसुरसरिगतिसलिलसुहाये
॥ दोहा॥ गैमूर्छारामहिसुमरि॥ न्रपफिरिकरवटलीन्ह॥ सचिवरामआगमनक
हि॥ विनयसमयसमकीन्ह॥ ४७॥ चौपई॥ जबन्रपआकनिरामपगुधारे॥ धरिधी
रजतवनयनउघारे॥ सचिवसंभारिराउबैठारे॥ चरणपरतन्रपरामनिहारे॥ लि
येसनेहविकलउरलाई॥ गईमणिफणिकबहुरिजिमिपाई॥ रामहिचितैरहे
नरनाहू॥ चलाविलोचनवारिप्रबाहू॥ शोकविकलकछुकहैनपारा॥ हृदय
लगावतबारहिवारा॥ विधिहिमनाउराउमनमांही॥ जेहिरघुनाथनकानन
जाही॥ सुमिरिमहेशहिकहहिंबहोरी॥ बिनतीसुनहुसदाशिवमोरी॥ आसुतो
षतुमऔसरदानी॥ आरतहरहुदीनजनजानी॥ दोहा॥ तुमप्रेरकसबकेहृद
य॥ सोमतिरामुबिदेहु॥ बचनमोरतजिरहहिंघर॥ परिहरिशीलसनेह॥ ४८
नसाऊ चौपई॥ अपजैसहोउबकेसुजस॥ नाकपरौवरुसुरपुरजाऊ॥ सबदुषदुसह
सहावहुमोही॥ लोचनओटरामजनिहोंही॥ असमनगुणतराउनहिंबो
ला॥ पीपरपातसरसमनडोला॥ रघुपतिपितहिप्रेमबसजानी॥ पुनिकछु
कहेंगेमातुअनुमानी॥ देशकालअवसरअनुसारी॥ बोलेबचनविनीतविचा

अजो॰
२५

री॥ तात कहौं कछु करौं ढिठाई॥ अनुचित छमब जानु लरिकाई॥ अति लघु बात
लागि दुष पावा॥ काहु न कहि मोहि प्रथम जनावा॥ देखि गुसांईहि पूछेउ माता
॥ सुनि प्रसंग भा सीतल गाता॥ दोहा॥ मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिय
तात॥ आयसु देइय हरष हिय॥ कहि पुलके प्रभु गात॥४९॥ चौपई॥ धन्य जन्म
जगतीतल तासू॥ पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू॥ चारि पदारथ करतल ता
के॥ प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके॥ आयसु पालि जन्म फल पाई॥ ऐहौं बेगि
हि होउ रजाई॥ बिदा मातु सन आवौं मांगी॥ चलिहौं बनहि बहुरि पा लागी
॥ अस कहि राम गवन तब कीन्हा॥ नृप शोक बस उतर न दीन्हा॥ नगर व्यापि
गइ बात सुतीछी॥ छुअत चढी मनु सब तनु बीछी॥ सुनि भये बिकल सकल
नर नारी॥ बेलि बिटप जनु लागु दवारी॥ जो जहं सुनै धुनै सिर सोई॥ बड बिषा
द नहिं धीरज होई॥ दोहा॥ मुष सुषहि लोचन श्रवहिं॥ शोक न हृदय समाइ
॥ मानहु करुणा रस कटक॥ उतरा अवध बजार॥५०॥ चौपई॥ मिलेहि मा
झ बिधि बात बिगारी॥ जहं तहं देइ केकइहि गारी॥ इहि पापनिहिं बूझि का परे
उ॥ छाय भवन पर पावक धरेउ॥ निज कर नयन काढि चह दीषा॥ डारि सु

राम
२५

धाबिषचाहतचीखा॥कुटिलकठोरकुबुद्धिअभागी॥भइरघुबंसबेणुबनआगी॥
पल्लवबैठिपेडइनकाटा॥सुखमहंसोकठाटधरिठाटा॥सदारामइहिप्राणसमा
ना॥कारणकवनकुटिलपनठाना॥सत्यकहहिंकबिनारसुभाऊ॥सबबिधिअ
गमअगाधदुराऊ॥निजप्रतिबिंबमुकरगहिजाई॥जानिनजाइनारिगतिनाई॥
॥दोहा॥कानदहिंपावकजरसिकै॥कानसमुद्रसमाई॥कानकरैअबलाप्रबल॥केहिजग
कालनखाइ॥४७॥चौपई॥कासुनाइबिधिकाहसुनावा॥कादिखाइचहकाहदेखावा
॥एककहैंनलखनृपनकीना॥बरबिचारनहिंकुमतिहिदीना॥जोहठिभयेउसकलदु
षभाजन॥अबलाबिबसज्ञानगुणगाजन॥एकधर्मपरमितिपहिचाने॥नृपहिंदोष
इसयाने॥सिबिदधीचिहरिचंदकहानी॥एकएकसनकहहिंबखानी॥एकभरतकर
सम्मतकहहीं॥एकउदासभावसुनिरहहीं॥काननमूंदिकररदगहिजीहा॥एककह
हियहबातअलीहा॥सुकृतजाइअसकहततुम्हारे॥भरतरामकहंप्राणपियारे
॥दोहा॥चंदुचवैबरुअनलकण॥सुधाहोइबिषतूल॥सपनेहुंकबहिंनकरहिंक
छु॥भरतरामप्रतिकूल॥४८॥चौपई॥एकबिधातुहिदूषणदेहीं॥सुधादिखाइदीन्ह
बिषजेही॥घरघरनगरसोचसबकाहू॥दुसहदाहउरमिटाउछाहू॥बिप्रबधू

अजो
२६

कुलमानजठेरी॥ जेप्रियपरमकेकयीकेरी॥ लगीदेनशिखसीलसराही॥ वच
नबाणसमलागहिंताही॥ भरतनप्रियमोहिरामसमाना॥ सदाकहहुयहसबजग
जाना॥ करहुंरामपरसहजसनेहू॥ केहिअपराधआजुबनदेहू॥ कबहुंनकीन्ह
सबतिअवरेसू॥ प्रीतिप्रतीतिजानसबदेसू॥ कौशल्याअबकहाबिगारा॥ तुम
जेहिलागिवज्रपुरमारा॥ दोहा॥ सीयकिपियसंगपरिहरिहि॥ लषनकिरहहि ह
हिंधाम॥ भरतकिभूजवराजपुर॥ नृपकिजियहिंबिनुराम॥ ५५॥ चौपई॥ असबि
चारिजियछाडहुकोहू॥ शोककलंककोठिजनुहोहू॥ भरतहिअवसिदेहुंजुवरा
जू॥ काननकवनरामकरकाजू॥ नाहिनरामराजकरभूषे॥ धर्मधुरीणबिषयरस
रूखे॥ गुरुगृहबसहिंरामतजिगेहू॥ नृपसनअसबरदूसरलेहू॥ रामसरिससुत
काननयोगू॥ कहाकहहिसुनितुमकहंलोगू॥ जौंनमानिहौंकहेहमारे॥ नहिलाग
गिहिकछुहाथतुम्हारे॥ जौंपरिहासकीन्हकछुहोई॥ तौकहिप्रगटजनावहिसोई
॥ अवकुंबेगिसोइकरहुंउपाई॥ जेहिविधिशोककलंकनसाई॥ छंद॥ जेहिनाति
शोककलंकजाइउपाइकरिकुलपालहू॥ हठिफेरुरामहिजातबनिजनिबातदूसर
चालहू॥ ४४॥ जिमिभानुबिनुदिनप्राणबिनतनुचंदबिनुजिमिजामिनि॥ तिमिअवध

राम
२६

तुलसीरामसप्रेमबिनुसमुझिधोमननामिनि॥दोहा॥सखिनसिखावनदीन्ह॥सुनत
मधुरपरिणामहित॥तेइकछुकान्हनकीन्ह॥कुटिलप्रबोधीकूबरी॥५५॥चौपई॥
उतरनदेइदुसहरिसरूखी॥मृगहिचितवजनुबाघिनिभूखी॥ब्याधिअसाधिजा
नितिनत्यागी॥चलीकहतिमतिमंदअभागी॥राजकरतइहिकुमतिदैवबिगोई
॥कीन्हेसिअसजसकरैनकोई॥इहिबिधिबिलपहिपुरनरनारी॥देहिंकुचालि
हिकोटिकगारी॥जरहिबिषमज्वरलेहिंउसासा॥कवनरामबिनुजीवनआसा॥
॥बिकलबियोगप्रजाअकुलानी॥जिमिजलचरगणसूखतपानी॥अतिबिषा
दसबलोगलुगांई॥गयेमातुपहंरामगुसांई॥मुखप्रसन्नचितचौगुणचाऊ॥इ
हैसोचजनिराखहिराऊ॥दोहा॥नवगयंदरघुबंशमणि॥राजअलानसमान॥छु
टजानबनगवनसुनि॥उरआनंदअधिकान॥५६॥चौपई॥रघुकुलतिलकजो
रिदोउहाथा॥मुदितमातुपदनायउमाथा॥दीन्हअसीसलाइउरलीन्हे॥भूषण
बसननिछावरकीन्हे॥बारबारमुखचुंबतिमाता॥नयननेहजलपुलकितगाता
॥गोदराखिपुनहृदयलगाई॥श्रवतप्रेमरसपयदसुहाई॥प्रेमप्रमोदकछु
कहिजाई॥रंकधनदपदवीजनुपाई॥सादरसुंदरबदननिहारी॥बोलीमधु

अजो० ५७

रखवचनमहतारी॥ कहहुंतातजननीबलिहारी॥ कबहिलगनमुदमंगलकारी॥ सुकृ
तसीलसुखसीमसुहाई॥ जन्मलाभनलहिअवधीअघाई॥ दोहा॥ जेहिचाहतनर
नारिसब॥ अतिआरतिइहिभांति॥ जिमिचातकचातकित्रषित॥ बृष्टिसरद
ऋतुस्वांति॥ ५७॥ चौपई॥ तातजाउंबलिबेगअन्हाऊ॥ जोमनभावमधुरकछु
खाऊं॥ पितुसमीपतबजायेऊभैआ॥ भैबडिबारजायबलमैआ॥ मातुबचन
सुनिअतिअकुला॥ जनुसनेहसुरतरकेफूला॥ सुखमकरंदभरेश्रीमूला॥ नि
रखिराममननेवरनभूला॥ धर्मधुरीणधर्मगतिजानी॥ कहेउमातुसनअति
मृदुबानी॥ पितादीन्हमोहिकाननराजू॥ जहंसबभांतिमोरबडकाजू॥ आय
सुदेहुमुदितमनमाता॥ जेहिमुदमंगलकाननजाता॥ जनिसनेहबसडरपतिभो
रे॥ आनंदमातुअनुग्रहतोरे॥ दोहा॥ बर्षचारदशविपिनबस॥ करिपितुबच
नप्रमान॥ आयपायपुनिदेखिहौं॥ मनजनिकरसिमिलान॥ ५८॥ चौपई॥ बच
नबिनीतमधुररघुबरके॥ सरसमलगेमातुउरकरके॥ सहमसूखिसुनिसीतल
बानी॥ जिमिजवासुपरेपावसपानी॥ कहेनजायकछुहृदयबिषादू॥ मनहुंमृ
गीसुनिकेहरिनादू॥ नयनसजलतनथरथरकांपी॥ माजहिखाइमीनजनुपानी

राम ५७

धरिधरिजसुतबदननिहारी॥गदगदबचनकहतिमहतारी॥तातपितहितुमप्रा
नपियारे॥देखिमुदितनितचरिततुम्हारे॥राजुदेनकहंसुनदिनसाधा॥कहेउजा
नबनकेहिअपराधा॥तातसुनावहुमोहिनिदानु॥कोदिनकरकुलभयेउकृसा
नु॥दोहा॥निरखिरामरुखसचिवसुत॥कारणकहेउबुझाइ॥सुनिप्रसंगरहि
मूकगति॥दशाबरणिनहिंजाइ॥५५॥चौपई॥राखिनसकइनकहिसकजाहु
दुहूंभांतिउरदारुणदाहू॥लिखतसुधाकरलिखिगाराहू॥बिधिगतिबामस
दासबकाहू॥धर्मसनेहउभयमतिघेरी॥भइगतिसांपछुछुंदरकेरी॥राखौंसु
तहिंकरौंअनरोधू॥धर्मजायअरुबंधुबिरोधू॥कहौंजानबनतौबडिहानी॥सं
कटसोचबिकलभइरानी॥बहुरिसमुझितियधर्मसयानी॥रामभरतदोउसुत
समजानी॥सरलसुभावराममहतारी॥बोलीबचनधीरधरिभारी॥तातजाउंब
लिकीन्हेउनीका॥पितुआयसुसबधर्मकटीका॥दोहा॥राजदेनकहदीन्हबन
॥मुहिनसोचदुखलेस॥तुमबिनुभरतहिभूपतिहि॥प्रजहिप्रचंडकलेस॥६
चौपई॥जोकेवलपितुआयसुताता॥तौजननिजाउजानबडिमाता॥जोपितुमा
तुकहेबनजाना॥तौकाननसतअवधसमाना॥पितुबनदेवमातुबनदेवी॥ष

अजो॰
२८

गम्हग चरण सरोरुह सेवी॥ अंत हुं नृपहि बन बासु॥ बय बिलोकि हिय होत हिरास॥ बडभागी बन अवध अभागी॥ जो रघुबंस तिलक तुम त्यागी॥ जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू॥ तुम्हरे हृदये होइ संदेहू॥ पूत परम प्रिय तुम सब ही के॥ प्रान प्रान के जीवन जी के॥ ते तुम कहहु मात बन जाऊं॥ मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊं॥

॥दोहा॥ यह बिचार नहिं करौं हठ झूठ सनेह बढाइ॥ मानि मातु के नात बलि॥ सुरति बिसरि जनि जाइ॥५६॥ चौपई॥ देव पितर सब तुम हि गुसांई॥ राखहु पलक नयन की नाई॥ अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना॥ तुम करुणाकर धर्म धुरीणा॥ अस बिचारि सोइ करहु उपाई॥ सबहि जिअत जेहि भेटहु आई॥ जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊं॥ करि अनाथ जन परिजन गाऊं॥ सब कर आजु सुकृत फल बीता॥ भयेउ कराल काल बिपरीता॥ बहु बिधि बिलपि चरण लपटानी॥ परम अभागिनि आपहि जानी॥ दारुण दुसह दाह उर ब्यापा॥ बरणि न जाय बिलाप कलापा॥ राम उठाइ मातु उर लावा॥ कहि मृदु बचन बहुत समुझावा॥

॥दोहा॥ समाचार तेहि समय सुनि॥ सीय उठी अकुलाइ॥ जाइ सासु पग कमल जुग॥ बंदि बैठि सिर नाई॥५७॥ चौपई॥ दीन्ह असीस सासु मृदु बानी॥ अति सुकुमारि देखि अकुलानी॥ बै

राम
२८

बिनिमितमुखसोचतिसीता॥ रूपरासिपतिप्रेमपुनीता॥ चलनचहतबनजीवननाथा
॥केहिसुकृतीसनहोइहिसाथा॥कीतनुप्राणकिकेवलप्राना॥बिधिकरतबक-
छुजातनजाना॥चारुचरणनखलेखतिधरणी॥नूपुरमुखरमधुरकबिबरणी
॥मनहुंप्रेमबसबिनतीकरहीं॥हमहिसीयपदजनिपरहरहीं॥मंजुबिलोचनमोच
तिबारी॥बोलीदेखिराममहतारी॥तातसुनहुसियअतिसुकुमारी॥सासुससुर
परिजनहिपियारी॥दोहा॥पिताजनकभूपालमणि॥ससुरभानुकुलभानु॥पतिर-
बिकुलकैरवबिपिन॥बिधुगुणरूपनिधानु॥६२॥चौपई॥मैंपुनिपुत्रबधुप्रियपा
ई॥रूपराशिगुणशीलसुहाई॥नयनपुतरिकरिप्रीतिबढाई॥राखेउप्राणजान-
किहिलाई॥कल्पबेलिजिमिबहुबिधिलाली॥सींचिसनेहसलिलप्रतिपाली॥फू
लतफलतभयेबिधिबामा॥जानिनजाइकाहपरिणामा॥पलंगपीठितजिगोद
हिंडोरी॥सियनदीनपगुअवनिकठोरी॥जिवनमूरिजिमिजुगवतरहेऊ॥सोसि
यचलनचहतिबनसाथा॥आयसुकाहहोयरघुनाथा॥चंदकिरणरसरसिकचक
कोरी॥रबिरुखनयनसकैकिमिजोरी॥दोहा॥करिकेहरिनिशिचरचरहिं॥
दुष्टजंतुबनभूरि॥बिषबाटिकाकिसोहसुत॥सुभगसजीवनमूरि॥६३॥चौपई॥

अजो०
२९

बनहितकोलकिरातकिशोरी॥रचीबिरंचिबिषयरसभोरी॥पाहनकृमिजिमिक
ठिनसुभाऊ॥तिनहिकलेशनकाननकाऊ॥कैतापसतियकाननयोगू॥जिन्ह
तपहेतुतजासबभोगू॥सियबनबसिहितातकेहिभांति॥चित्रलिखितकपिदे
खिडराती॥सुरसरसुभगबनजबनचारी॥डाबरयोगकिहंसकुमारी॥असबि
चारजसआयसुहोई॥मैंसिखदेउंजानकिहिसोई॥जौंसियभवनरहैकहअं
बा॥मोकहंहोइप्राणअवलंबा॥सुनिरघुवीरमातुप्रियबानी॥शीलसनेहसुधा
जनुसानी॥दोहा॥कहिप्रियबचनबिबेकमय॥कीन्हमातुपरितोष॥लगेप्रबो
धनजानकिहि॥प्रगटिबिपिनगुणदोष॥६५॥चौपई॥मातुसमीपकहतसकुचाहीं
॥बोलेसमयसमुझिमनमाहीं॥राजकुमारिसिखावनसुनहू॥आनभांतिजियजनि
कछुगुणहू॥आपनमोरनीकजोचहहू॥बचनहमारमानिघररहहू॥आयसुमो
रसासुसेवकाई॥सबबिधिभामिनिभवनभलाई॥इहितेअधिकधर्मनहिंदूजा॥सा
दरसासुससुरपदपूजा॥जबजबमातुकरिहिसुधिमोरी॥होइहिप्रेमबिकलमतिभो
री॥तबतबतुमकहिकथापुराणी॥सुंदरिसमुझायेउमृदुबानी॥कहौंसुभावसपथशत
मोही॥समुखिमातुहितराखौंतोही॥दोहा॥गुरुश्रुतिसंमतधर्मफल॥पाइयबिन

राम
२९

हा

हिकलेश॥हठबससबसंकटसहे॥गालवनऋुषनरेश॥६६॥चौपई॥मैंपुनिकरिप्रमा
नपितुबानी॥बेगफिरबसुनसुमुषिसयानी॥दिवसजातिनहिंलागिहिबारा॥सुंदरि
सिषवनसुनऊहमारा॥जोहठकरऊप्रेमबसबामा॥तोतुमदुषपाउबपरिणामा॥का
ननकठिनभयंकरभारी॥घोरघामहिमवारिबयारी॥कुशकंटकमगकंकरनाना॥चल
बपयादेहिंबिनुपदत्राना॥चरणकमलमृदुमंजुतुम्हारे॥मारगअगमभूमिधरभारे॥
कंदरखोहनदीनदनारे॥अगमअगाधिनजायनिहारे॥भालुबाघबृककेहरिना
गा॥करहिंनादसुनिधीरजभागा॥दोहा॥भूमिशयनबलकलबसन॥असनकं
दफलमूल॥तेकिसदासबदिनमिलहिं॥सबसमयअनुकूल॥६७॥चौपई॥नर
अहाररजनीचरचरही॥कपटबेषबिधिकोटिनधरही॥लागैअतिपहारकेपानी
॥बिपनबिपतिनहिंजातबषानी॥ब्यालकरालबिहंगबनघोरा॥निशिचरनिक
रनारिनरचोरा॥डरपहिंधीररहनसुधिआये॥मृगलोचनितुमभीतसुभाये॥हंस
गवनितुमनहिंबनयोगू॥सुनिअपयशदेहहिंमोहिलोगू॥मानससलिलसुधा
प्रतिपाली॥जियइकिलवणपयोधिमराली॥नवरसालबनविहरणशीला॥
सोहहिंकोकिलबिपनकरीला॥रहऊभवनअसहृदयबिचारी॥चंद्रबदनिदु

षकानननारी॥दोहा॥सहजसुहृदगुरुस्वामिसिष॥जोनकरैसिरमानि॥सोपछताइ
अघाइउर॥अवसिहोइहितहानि॥छं॰॥चौपई॥सुनिमृदुबचनमनोहरपीके॥लोचन
ललितभरेजलसीयके॥सीतलसिषदाहकभइकैसे॥चकईशरदचांदनीजैसे॥उतरन
आवबिकलबैदेही॥तजनचहतमोहिपरमसनेही॥बरबसरोकिबिलोचनबारी॥ध
रिधीरजउरअवनिकुमारी॥लागिसासुपदकहकरजोरी॥छमबदेविबडअविन
मोरी॥दीन्हप्राणपतिमोहिसिषसोही॥जेहिबिधिमोरपरमहितहोही॥मैंपुनिसमुझि
दीखमनमाही॥पियबियोगसमदुषजगनाही॥दोहा॥प्राणनाथकरुणायतन॥सुंद
रसुषदसुजान॥तुमबिनुरघुकु[illegible]मुदविधु॥सुरपुरनरकसमान॥छं॰॥चौपई॥मातु
पितानगिनीप्रियभाई॥प्रियपरिवारसुहृदसमुदाई॥सासुससुरगुरुसुजनसहाई॥सु
तसुंदरसुशीलसुषदाई॥जहलगिनाथनेहअरुनाते॥पियबिनुतियहितरणिहुतेता
ते॥तनधनधामधरणिपुरराजू॥पतिबिहीनसबशोकसमाजू॥भोगरोगसमभूषणभारू
॥यमजातनासरससंसारू॥प्राणनाथतुमबिनुजगमाही॥मोकहसुखदकतहुंकोउ
नाहीं॥जियबिनुदेहनदीबिनुबारी॥तैसहिनाथपुरुषबिनुनारी॥नाथसकलसुष
साथतुम्हारे॥शारदविमलविधुवदननिहारे॥दोहा॥खगमृगपरिजननगरबन॥वल

ले

कलविमलदुकूल॥नाथसाथसुरसदनसम॥परणशालसुषमूल॥७१॥चौपई॥बनदेवीब
नदेवउदारा॥करिहैंसासुससुरसमसारा॥कुशाकिशलयसाथरीसुहाई॥प्रभुसंगमंजु
मनोजतुराई॥कंदमूलफलअमियअहारू॥अवधसौधसतसरसपहारू॥छणछण
प्रभुपदकमलबिलोकी॥रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी॥बनदुषनाथकहेबहुते
रे॥भयबिषादपरितापघनेरे॥प्रभुबियोगलवलेससमाना॥सबमिलहोहिंनकृपानि
धाना॥असजियजानिसुजानशिरोमनि॥लेइयसंगमोहिछाडियजनि॥बिनतीब
हुतकरौंकास्वामी॥करुणामयउरअंतरजामी॥दोहा॥राखियअवधजोअवधल
गि॥रहतजानियेप्राण॥दीनबंधुसुंदरसुखद॥शीलसनेहनिधान॥७२॥चौपई॥मोहिम
गचलतनहोइहिहारी॥छणछणचरणसरोजनिहारी॥सबहिभांतिपियसेवाकरि
हौं॥मारगजनितसकलश्रमहरिहौं॥पांवपखारिबैठितरुछांहीं॥करिहौंपवनमुदि
तमनमांही॥श्रमकणसहितस्यामतनुदेखे॥काडुखसमयप्राणपतिपेखे॥सममहितृण
तरुपल्लवडासी॥पायपलोटिहिसबनिसिदासी॥बारबारमृदुमूरतजोही॥लागिहि
तापबयारनमोही॥कोप्रभुसंगमोहिचितवनिहारा॥सिंहवधूहिजिमिशशकसिआरा
॥मैंसुकुमारिनाथबनयोगू॥तुमहिंउचितपतमोकहंभोगू॥दोहा॥ऐसेउबचनकठो

रमुनि॥ जौंनहृदयबिलगात॥ तौप्रभुबिषमबियोगदुख॥ सहिहैंपामरप्रान॥ ७०॥
चौपई॥ असकहिसीयबिकलभइभारी॥ बचनबियोगनसकीसंभारी॥ देखिदसारघु
पतिजियजाना॥ हठिराखेराषिहिंनहिंप्राना॥ कहेउकृपालभानुकुलनाथा॥ परिह
रिसोचचलहुबनसाथा॥ नहिबिषादकरअवसरआजू॥ बेगिकरहुबनगमनसाजू॥ मा
॥ कहिप्रियबचनप्रियहिसमुझाई॥ लगेमातुपदआशिषपाई॥ बेगिप्रजादुषमेटें
आई॥ जननीनिठुरबिसरिजनिजाई॥ फिरिहिदसाबिधिबहुरिकिमोरी॥ देखिहौं
नयनमनोहरजोरी॥ सुदिनसुघरीताततबहोई॥ जननीजिअतबदनबिधुजोई॥ दोहा
॥ बहुरिबछकहिलालकहि॥ रघुपतिरघुबरतात॥ कबहिंबुलाइलगाइहिअ॥ हरषिनि
रषिहौंगात॥ ७१॥ चौपई॥ लखिसनेहकातरिमहतारी॥ बचननआवबिकलभइभा
री॥ रामप्रबोधकीन्हबिधिनाना॥ समयसनेहनजाइबषाना॥ तबजानकीसासुपदला
गी॥ सुनियमाययमैंपरमअभागी॥ सेवासमयदैवबनदीन्हा॥ मोरमनोरथसुफलनकी
ना॥ तजबछोभनजनिछाडिअछोहू॥ कर्मकठिनकछुदोषनमोहू॥ सुनिसियबचनसा
सुअकुलानी॥ दसाकवनबिधिकहौंबषानी॥ बारहिबारलाइउरलीन्ही॥ धरिधीरजसि
षआशिषदीन्ही॥ अचलहोउअहिबाततुम्हारा॥ जबलगिगंगजमुनजलधारा॥

॥दोहा॥ सीतहि सासु आसीस सिख। दीन्ह अनेक प्रकार। चली नाय पद पदम सिर॥ अति हि-
त बारहि बार॥७४॥ चौपई॥ समाचार जब लछमण पाये। ब्याकुल बिलखि बदन उठि
धाये॥ कंप पुलक तन नयन सनीरा॥ गहे चरण अति प्रेम अधीरा॥ कहि न सकत कछु
चितवत ठाढे॥ मीन दीन जनु जल ते काढे॥ सोच हृदय बिधि का होनिहारा॥ सब सुख सुकृ-
त सिरान हमारा॥ मो कहु काह कहब रघुनाथा॥ रखिहैं भवन कि लेहहिं साथा॥ राम बि-
लोकि बंधु कर जोरे॥ देह गेह सब सन तृण तोरे॥ बोले बचन राम नय नागर॥ सील सने-
ह सरल सुख सागर॥ तात प्रेम बस जनि कदराऊ। समुझि हृदय परिणाम उछाहू॥ दोहा
मातु पिता गुरु स्वामि सिख॥ सिर धरि करहिं सुभाय॥ लहेउ लाभ तिन जन्म को॥ नतरु ज-
न्म जग जाय॥ ९॥ चौपई॥ अस जिय जानि सुनहु सिख भाई॥ करौ मातु पितु पद सेविका-
ई॥ भवन भरत रिपुसूदन नाहीं॥ राउ बृद्ध मम दुख मन माहीं॥ मैं बन जाउ तुमहि लै साथा॥
होइ सबहि बिधि अवध अनाथा॥ गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुं परै दुसह दु-
ख भारू॥ रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड दोषू॥ जासु राज प्रिय
प्रजा दुखारी॥ सो नृप अवसि नर्क अधिकारी॥ रहहु तात असि नीति बिचारी॥ सुन-
त लषन भये ब्याकुल भारी॥ सियरे बचन सूखि गौ कैसे॥ परसत तुहिन तामरस जैसे॥

॥ दोहा ॥ उतरु न आवत प्रेम बस ॥ गहे चरन अकुलाइ ॥ नाथ दास मैं स्वामि तुम तजहु त काह बसाइ ॥ ७२ ॥ चौपई ॥ दीन्हि मोहि सिख नीकि गुसांई ॥ लागत अगम अपनि कदराई ॥ नरबर धीर धर्म धुर धारी ॥ निगम नीति के ते अधिकारी ॥ मैं सिसु प्रभु सनेह प्रतिपाला ॥ मंदर मेरु कि लेहि मराला ॥ गुरु पितु मातु न जानौ काहू ॥ कहौ सुभाव नाथ पतिआहू ॥ जहँ लगि जगत सनेह सगाई ॥ प्रीति प्रतीति निगम निज गाई ॥ मोरे सबै एक तुम स्वामी ॥ दीनबंधु उर अंतरजामी ॥ धर्म नीति उपदेसिय ताही ॥ कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥ मन क्रम बचन चरन रति होई ॥ कृपासिंधु परिहरिय कि सोई ॥ दोहा ॥ करुनासिंधु सुबंधु के ॥ सुनि मृदु बचन बिनीत ॥ समझाये उर लाइ प्रभु ॥ जानि सनेह सभीत ॥ ७३ ॥ चौपई ॥ मांगहु बिदा मातु सन जाई ॥ आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥ मुदित भये सुनि रघुबर बानी ॥ भयेउ लाभ बड गै बडि हानी ॥ हर्षित हृदय मातु पहँ आये ॥ मनहु अंध फिरि लोचन पाये ॥ जाय जननि पग नायेउ माथा ॥ मन रघुनंदन जानकि साथा ॥ पूछेउ मातु मलिन मन देखी ॥ लषन कहे सब कथा बिसेषी ॥ गई सहमि सुनि बचन कठोरा ॥ मृगी देखि जनु दव चहुँ ओरा ॥ लषन लषेउ भा अनरथ आजू ॥ इन सनेह बस करब अकाजू ॥ मांगत बिदा सभय सकुचाही ॥ जाइ संग बिधि कहहि कि नाहीं ॥

समुझि सुमित्रा राम सिय ॥ रूप सुशील सुभाव नृप सनेह लखि धुनेउ शिर ॥ पापिनि कीन्ह कुदाव ॥ ७८

॥दोहा॥ धीरज धरेउ कुअवसर जानी ॥ सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥ तात तुम्हार मातु बैदेही ॥ पिता राम सब भांति सनेही ॥ अवध तहां जहां राम निवासू ॥ तहां दिवस जहं भानु प्रकासू ॥ जो पै सीय राम बन जाहीं ॥ अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ॥ गुरु पितु मातु बंधु सुर सांईं ॥ सेइय सकल प्राण की नांईं ॥ राम प्राणप्रिय जीवन जी के ॥ स्वारथ रहित सखा सबही के ॥ पूजनीय प्रिय परम जहां ते ॥ मानिय सबहि राम के नाते ॥ अस जिय जानि संग बन जाहू ॥ लेहु तात जग जीवन लाहू ॥ दोहा ॥ भूरि भाग भाजन भये हु मोहि समेत बलि जाहु ॥ जौं तुम्हरे मन छाडि छल ॥ कीन्ह राम पद ठाउं ॥ ७९ ॥ चौपई ॥ पुत्रीवती युवती जग सोई ॥ रघुबर भक्त जासु सुत होई ॥ नतरु बांझ भलि बादि बियानी ॥ राम बिमुख सुत ते हित हानी ॥ तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं ॥ दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥ सकल सुकृत कर फल सुत येहू ॥ राम सीय पद सहज सनेहू ॥ राग रोष ईर्षा मद मोहू ॥ जनि सपनेहु इन के बस होहू ॥ सकल प्रकार बिकार बिहाई ॥ मन क्रम बचन करेहु सेवकाई ॥ तुम कहं बन सब भांति सुपासू ॥ संग पितु मातु राम सिय जासू ॥ जेहि न राम बन लहहिं कलेसू ॥ सुत सोइ करेहु इहै उपदेसू ॥ छंद ॥ उपदेश यह जेहि तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं ॥ पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिस

अजो० २२

रावंही॥ तुलसीसुतहिसिखदेइआयसुदेइसुतनअसिषदई॥ रतिहोउअविरलअमल सियरघुवीरपदनितनितनई॥ सोरठा॥ मातुचरणसिरनाइ॥ चलेतुरतसंकितहियेवागुरुबिषमतुराय॥ मनहुंमागसुमृगभागबस॥ ८०॥ चौपई॥ गयेलषनजहांजानकिनाथा॥ भेमनमुदितपायप्रियसाथा॥ बंदिरामसियचरणसुहाये॥ चलेसंगनृपमंदिरआये॥ कहहिंपरस्परपुरनरनारी॥ भलिबनाइबिधिबातबिगारी॥ तनुकृशमनदुखबदनमलीना॥ बिकलमनहुमाखीमधुछीना॥ करमीजहिंसिरधुनिपछताहीं॥ जनुबिनुपंखबिहंगअकुलाहीं॥ भइबडिभीरभूपदरबारा॥ बरणिनजायबिषादअपारा॥ सचिवउठायराउबैठारे॥ कहिप्रियबचनरामपगुधारे॥ सियसमेतदोउतनयनिहारी॥ ब्याकुलभयेभूमिपरिनारी॥ दोहा॥ सीयसहितसुतसुभगदोउ॥ देखिदेखिअकुलाइ॥ बारहिबारसनेहबस॥ राउलियेउरलाइ॥ ८१॥ चौपई॥ सकेनबोलिबिकलनरनाहू॥ शोकविवसउरदारुणदाहू॥ नाइसीसपदअतिअनुरागा॥ उठिरघुनाथबिदातबमांगा॥ पितुअसीसआयसुमोहिदीजे॥ हर्षसमयबिस्मयकतकीजे॥ तातकियेप्रियप्रेमप्रमादू॥ यसजगजाइहोइअपबादू॥ सुनिसनेहबसउठिनरनाहू॥ बैठारेरघुपतिगहिबाहू॥ सुनहुताततुमकहमुनिकहहीं॥

राम २२

रामचराचरनायकअहहीं॥सुभअरुअसुभकर्मअनुहारी॥ईस्वरदेइफलहृदयबिचारी
॥करैजोकर्मपावफलसोई॥निगमनीतिअसकहसबकोई॥दोहा॥अपरकरैअपरा

३

धकौं॥अपरपावफलभोग॥अतिबिचित्रभगवंतगति॥कोजगजानैयोग॥७८॥चौपई॥
राउरामराखनहितलागी॥बहुतउपायकीनछलत्यागी॥लखीरामरुषरहतनजाने
॥धर्मधुरंधरधीरसयाने॥तबन्रपसीयलायउरलीनी॥अतिहितबहुतभांतिसिखदी
नी॥कहिबनकेदुखसहसुनाये॥सासुससुरपितुसुखसमुझाये॥सियमनरामचरण
अनुरागा॥घरनसुगमबनअगमनलागा॥औरौसबहिसीयसमुझाई॥कहिकहिबि
पिनविपतिअधिकाई॥सचिवनारिगुरुनारिसयानी॥सहितसनेहकहिंमृदुबानी॥तुम
कहंतौनदीनबनबासू॥करहुजोकहहिंससुरगुरुसासू॥दोहा॥सिखसीतलहितम
धुरमृदु॥सुनिसीतहिनसुहानि॥शरदचंदचांदनिलगत॥जनुचकईअकुलानि॥७९॥चौ
पई॥सीयसकुचबसउतरनदेई॥सोसुनितमकिउठीकैकेयी॥मुनिपटभूषणभाजनजा
नी॥आगेधरिबोलीमृदुबानी॥नृपहिप्राणप्रियतुमरघुबीरा॥शीलसनेहनछाडहिंनी
रा॥सुकृतसुयशपरलोकनसाऊ॥तुमहिंजानबनकहहिनराऊ॥असबिचारिहो
इकरौजुभावा॥रामजननिसिषसुनिसुषपावा॥नृपहिवचनबाणसमलागे॥करहिन

प्राणपयान न अ नागे॥ शोक बिकल मूर्छित नर नाहू॥ काहु करिय कछु सूझ न काहू॥ रा
म तुरत मुनि बेष बनाई॥ चले जनक जननी सिर नाई॥ दोहा॥ सजि बन साज समाज सब
॥ बनिता बंधु समेत॥ बंदि विप्र गुरु चरण प्रभु॥ चले कर सबहि अचेत॥ ८४॥ चौपई॥ नि
कसि बशिष्ट द्वार भये गाढे॥ देखे लोग बिरह दव डाढे॥ कहि प्रिय बचन सबहि समुझा
ये॥ विप्र वृंद रघुबीर बुलाये॥ गुरु सन कहि बरषाशन दीन्हे॥ आदर दान बिनय बश
कीन्हे॥ याचक दान मान संतोषे॥ मीत पुनीत प्रेम परितोषे॥ दासी दास बुलाय बहोरी
॥ गुरुहि सौंप बोले कर जोरी॥ सब कर सार सभार गुसांई॥ करब जनक जननी की ना
ई॥ बारहि बार जोरि युग पाणी॥ कहत राम सब सन मृदु बाणी॥ सोई सब भांति मोर हित
कारी॥ जेहि तर है भुआल सुखारी॥ दोहा॥ मातु सकल मोरे बिरह॥ जेहि न होहिं दुख दी
न॥ सो उपाय तुम करब सब॥ पुरजन परम प्रवीन॥ ८५॥ चौपई॥ इहि बिधि राम सबहि
समुझावा॥ गुरु पद पदम हरषि सिर नावा॥ गणपति गौरि गिरीश मनाई॥ चले असी
स पाय रघुराई॥ राम चलत अति भये बिषादू॥ सुनि न जाइ पुर आरत नादू॥ कुसगुन
लंक अवध अति शोकु॥ हर्ष बिषाद बिबस सुरलोकू॥ गै मूर्छा तब नृपति जागे॥ बोलि
सुमंत कहन अस लागे॥ राम चले बन प्राण न जाहीं॥ केहि सुख लागि रहे तन मांहीं॥

इहितेकवनव्यथाबलवाना॥जोदुखपाइतजहितनप्राना॥पुनिधरधीरकहहिंनरनाहू
॥लैरथसंगसखातुमजाहू॥दोहा॥सुठिसुकुमारिकुमारदोउ॥जनकसुतासुकुमारि
॥रथचढाइदिखराइबन॥फिरहुगयेदिनचारि॥८१॥चौपई॥जौंनहिंफिरहिंधीरदो
उभाई॥सत्यसिंधुदृढब्रतरघुराई॥तौतुमबिनयकरहुकरजोरी॥फेरियप्रभुमिथि
लेशकिशोरी॥जबसियकाननदेखिडराई॥कहेउमोरसिखअवसरपाई॥सासुसस
रअसकहेउसंदेसू॥पुत्रिफिरियबनबहुतकलेसू॥पितुगृहकबहुंकबहुससुरा
री॥रहेउजहांरुचिहोयतुम्हारी॥इहिविधिकहेउउपायकदंबा॥फिरइतोहोइप्राण
अवलंबा॥नहितोमोरमरणपरिणामा॥कछुनबसाइभयोविधिवामा॥असकहिमू
र्छिपरेमहिराऊ॥रामलषनसियआनदेखाऊ॥दोहा॥पायरजायसुनायशिर॥रथ
अतिबेगबनाइ॥गयेजहांबाहरनगर॥सीयसहितदोउभाइ॥८२॥चौपई॥तबसुमं
त्रनृपबचनसुनाये॥करिबिनतीरथरामचढाये॥चढिरथसीयसहितदोउभाई॥च
लेहृदयअवधिहिसिरनाई॥चलतरामलखिअवधअनाथा॥विकललोगलागेस
बसाथा॥कृपासिंधुबहुविधिसमझावहिं॥फिरहिंप्रेमबसपुनिफिरआवहिं॥लाग
तअवधभयानकभारी॥मानहुकालरातिअंधियारी॥घोरजंतुसमपुरनर

सहितसकेरघुबरबिरहागीचलेलोगसबव्याकुलभागी

अ॰ जो॰
२५

नारी॥उरुपहिंएकहिएकनिहारी॥घरमसानपरिजनजनुभूता॥सुतहितमीतमनहु
यमदूता॥बागनबिटपबेलिकुम्हिलाहीं॥सरितसरोवरदेखिनजाहीं॥दोहा॥हयगा
यकोटिककेलिमृग पुरपशुचातकमोर॥पिकरथांगशुकसारिका॥सारसहंसचको
र॥८८॥चौपई॥रामवियोगविकलसबगढे॥जहं तहं मनहुचित्रलिखिकाढे॥नगर
सफलबनगह्वरभारी॥खगमृगविकलसकलनरनारी॥विधिकैकयिकिरातिनी
कीनी॥जेइदवदुसहदशहुंदिशिदीनी॥सबहिविचारकीन्हमनमाहीं॥रामलषनसि
यबिनुसुषनाहीं॥जहांरामतहांसकलसमाजू॥बिनुरघुबीरसकलकेहिकाजू॥च
लेसाथअसमंत्रदृढाई॥सुरदुर्लभसुषसदनविहाई॥रामचरणपंकजप्रियजिन
हीं॥विषयभोगबसकरैकितिनहीं॥दोहा॥बालकबृद्धविहाइगृह॥लगेलोगस
बसाथ॥तमसातीरनिवासकिय॥प्रथमदिवसरघुनाथ॥८९॥चौपई॥रघुपतिप्र
जाप्रेमवसदेषी॥सदयहृदयदुखभयेविशेषी॥करुणामयरघुनाथगुसांई॥वेगि
पाइयहिपीरपराई॥कहिसप्रेममृदुबचनसुहाये॥बहुविधिरामलोगसमुझाये
॥कियेधर्मउपदेशघनेरे॥लोगप्रेमबसफिरहिंनफेरे॥शीलसनेहछाडिनहिजा
ई॥असमंजसबसभेरघुराई॥लोगशोकश्रमबसगेसोई॥कछुकदेवमायामति

राम
२५

सोई॥ जबहि याम जुग यामिनि बीती॥ राम सचिव सन कहेउ सप्रीती॥ खोज मारि रथ
हांकहु ताता॥ आन उपाय बनिहि नहिं बाता॥ दोहा॥ राम लषन सिय यान चढि
॥ शंभु चरण सिर नाइ॥ सचिव चलायेतु रत रथ इत उत खोज दुराई॥ ८०॥ चौपई॥ जागे
सकल लोग भे भोरू॥ गे रघुबीर भयो अति सोरू॥ रथ कर खोज कतहुं नहिं पावहिं॥ रा
म राम कहि चहुं दिशि धावहिं॥ मनहु बारिनिधि बूड जहाजू॥ भये बिकल बड बणिक
समाजू॥ एकहि एक देहि उपदेसू॥ तजे राम हम जानि कलेसू॥ निंदहि आपु सराहहि
मीना॥ धृग जीवन रघुबीर बिहीना॥ जो पै प्रिय बियोग बिधि कीना॥ तौ कस मरण न मागे
दीन्हा॥ इहि बिधि करत प्रलाप कलापा॥ आये अवध भरे परितापा॥ बिषम बियोग न
जाय बखाना॥ अवधि आस राखहि सब प्राना॥ दोहा॥ राम दरस हित नेम ब्रत॥ लगे क
रन नारि॥ मनहु कोक कोकी कमल॥ दीन बिहीन तमारि॥ ८१॥ चौपई॥ सीता सचिव स
हित दोउ भाई॥ श्रृंगबेरपुर पहुंचे जाई॥ उतरे राम देवसरि देषी॥ कीन्ह दंडवत हरष बि
शेषी॥ लषन सचिव सिय कीन्ह प्रणामा॥ सबहि सहित सुख पायेउ रामा॥ गंग सकल मुद मं
गल मूला॥ सब सुख करणि हरणि सब सूला॥ कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा॥ राम बिलो
कत गंग तरंगा॥ सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई॥ बिबुध नदी महिमा अधिकाई॥ मज्ज

अजो०
२६

नकीन्ह पंथश्रमगयेऊ॥ शुचिजलपियतमुदितमनभयेऊ॥ सुमिरतजाहिंमिटहिंनवभारू
॥ तेहिश्रमयहलौकिकव्यवहारू॥ दोहा॥ शुद्धसच्चिदानन्दमय॥ रामभानुकुलकेतु॥ च
रितकरतनरअनुहरत॥ संसृतिसागरसेतु॥ ८७॥ चौपई॥ यहसुधिगुहनिषादजबपाई
मुदितलियेप्रियबंधुबुलाई॥ लैफलमूलभेटभरिभारा॥ मिलनचलेहियहर्षअपारा
करिदंडवतभेटधरिआगे॥ प्रभुहिबिलोकतअतिअनुरागे॥ सहजसनेहविवसरघु
राई॥ पूछीकुशलनिकटबैठाई॥ नाथकुशलपदपंकजदेषे॥ भयेउभागभाजनजन
देषे॥ देवधरणिधनधामतुम्हारा॥ मैंजननीचसहितपरिवारा॥ कृपाकरियपुरधारि
यपाऊ॥ थापियजनसबलोगसिहाऊ॥ कहेहुसत्यसबसखासुजाना॥ मोहिदीन्हपि
तुआयसुआना॥ दोहा॥ बर्षचारिदशबासबन मुनिब्रतभेषअहारि॥ ग्रामबासनहिं
उचितसुनि॥ गुहहिभयोदुखभारि॥ ८८॥ चौपई॥ रामलषनसियरूपनिहारी॥ कहहिं
सप्रेमनगरनरनारी॥ तेपितुमातुकहहुसखिकैसे॥ जिनपठयेबनबालकऐसे॥ ए
ककहैंनृपतिभलकीन्हा॥ लोचनलाहुहमहिंनिजदीन्हा॥ तबनिषादपतिउरअनुमा
ना॥ तरुशिंशिपामनोहरजाना॥ लैरघुनाथहिठामबतावा॥ कहेउरामसबभांतिसु
हावा॥ पुरजनकरिजुहारिगृहआये॥ रघुबरसंध्याकरनसिधाये॥ गुहसँवारिसाथरी

बसो

राम
२६

बनाई॥कुशकिशलयमृदुपरमसुहाई॥सुचिफलमूलमृदुलमयजानी॥दोनाभरिभ
रिराखेसिआनी॥दोहा॥सियसुमंतभ्राताँसहित।कंदमूलफलखाइ॥शयनकीन्हर
घुबंशमणि॥पायपलोटतभाइ॥एंधा॥चौपई॥उठेलषनप्रभुसोवतजानी कहि
सचिवहिसोवनमृदुबानी।कछुकदूरिसजिबाणसरासन।जागनलगेबैठिबीरास
न॥गुहबुलाइपाहरूप्रतीती॥ठांवठांवराखेअतिप्रीती॥आपुलषनपहंबैठेजाई
॥कटिभाथासरचापचढाई॥सोवतप्रभुहिनिहारिनिषादा॥भयेप्रेमबसहृदय
निषादा॥तनपुलकितलोचनजलबहई॥बचनसप्रेमलषनसनकहई॥नृपतिभुव
नसुभायसुहावा॥सुरपतिसदननपटतरपावा॥मणिमयरचितचारुचौबारे।जनुर
तिपतिनिजहाथसवांरे॥दोहा॥सुचिसुबिचित्रसुभोगमय।सुमनसुगंधसुबास।पलं
गमंजुमणिदीपजहं।सबविधिसकलसुपास॥एंपा॥चौपई॥बिबिधबसनउपधा
नतुराई॥छीरफेनमृदुबिशदसुहाई॥तहंसियरामशयननिसिकरहीं॥निजछबिरति
मनोजमदहरहीं॥तेसियरामसाथरीसोये॥श्रमितबसनबिनजाहिंनजोये॥मातु
पितापरिजनपुरबासी॥सखासुशीलदासअरुदासी॥जुगवहिंजिनहिप्राणकीना
ई॥महिसोवतसोरामगुसांई॥पिताजनकजगविदितप्रभाऊ।ससुरसुरेशसखारघु

अजो॰ २७

राऊ॥ रामचंद्र पति सो बैदेही॥ मरहि मीन बिधि बाम न केही॥ सिय रघुबीर कि कानन यो
गू॥ कर्म प्रधान सत्य कह लोगू॥ दोहा॥ केकयि नंदनि मंद मति कुटिल कठिन पन
कीन्ह॥ जे रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुख दीन॥ ९६॥ चौपई॥ भइ दिनकर कु
ल बिटप कुठारी॥ कुमति कीन्ह सब बिश्व दुखारी॥ राम सीय महि शयन निहारी॥ भये
उ बिषाद निषादहि भारी॥ बोले लषन मधुर मृदु बानी॥ ज्ञान बिराग भक्ति रस सानी॥
कोउ न काहू दुख सुख कर दाता॥ निज कृत कर्म भोग सब भ्राता॥ योग वियोग भोग भल
मंदा॥ हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा॥ जनम मरण जहं लगि जग जालू॥ संपति बिप
ति कर्म अरु कालू॥ धरणि धाम धन पुर परिवारू॥ स्वर्ग नरक जहं लगि ब्यवहारू॥ दे
खिय सुनिय गुनिय मन माही॥ मोह मूल परमारथ नाही॥ दोहा॥ सपने होइ भिखारि
नृप रंक नाकपति होइ॥ जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपंच जिमि जोइ॥ ९७॥ चौप
ई॥ अस बिचारि नहि कीजिय रोसू॥ बादि काहु नहि दीजिय दोसू॥ मोह निशा सब सो
वनिहारा॥ देखहि स्वप्न अनेक प्रकारा॥ इहि जग यामिनि जागहि योगी॥ परमारथ
परिपंच वियोगी॥ जानिय तबहि जीव जग जागा॥ सब तज बिषय बिलास बिरागा॥
॥ होइ बिवेक मोह भ्रम भागा॥ तब रघुबीर चरण अनुरागा॥ सखा परम परमारथ

राम २७

एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू। राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अ
नूपा। सकल बिकार रहित गत भेदा। कह नित नेति निरूपहिं बेदा॥ दोहा॥ भक्ति भूमि भू
सुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल। करत चरित धरि मनुज तनु॥ सुनत मिटै जग जाल॥ ९८
॥ चौपई॥ सखा समुझि अस परिहरि मोहू। सिय रघुबीर चरण रति होहू॥ कहत राम गु
ण भा भिनुसारा। जागे जग मंगल दातारा॥ सकल सौच करि राम अन्हाये॥ सुचि सुजान ब
ट छीर मंगाये॥ अनुज सहित सिर जटा बनाये॥ देखि सुमंत नयन जल छाये॥ हृदय दाह
अति बदन मलीना। कह कर जोरि बचन अति दीना। नाथ कहेउ अस कोशलनाथा
॥ लै रथ जाहु राम के साथा। बन दिखाय सुरसरि अन्हवाई॥ आनेहु बेगि फेरि दोउ भा
ई॥ लषन राम सिय आनेहु फेरी॥ संशय सकल सकोच निबेरी॥ दोहा॥ नृप अस कहे
उ गुसांइ जस कहियै करौ बलि सोई॥ करि बिनती पायन परेउ॥ दीन बालि जिमि रोइ॥
९९॥ चौपई॥ तात कृपा करि कीजिय सोई॥ जाते अवध अनाथ न होई॥ मंत्रिहि राम उठ
य प्रबोधा॥ तात धर्म मत तुम सब सोधा॥ शिव दधीचि हरिचंद नरेशा॥ सहे धर्म हित कोटि
कलेशा॥ रंतिदेव बलि नृप सुजाना॥ धर्म धरेउ सहि संकट नाना॥ धर्म न दूसर सत्य समा
ना॥ आगम निगम पुराण बखाना॥ मैं सोई धर्म सुलभ करि पावा॥ तजे तिहुं पुर अप

अजो० २८

यषा छावा। संभावित कहु अपयश लाहू। मर्न कोटिसम दारुण दाहू। तुम सन तात बहुत का कहऊं॥ दियेउतरि फिरि पातक लहऊं॥ दोहा॥ पितु पद गहि कहि कोटि बिधि। विनय करब कर जोरि। चिंता कवनउ बात की॥ तात करिय जनि मोरि॥ २००॥ चौपई॥ तुम पुनि पितु सम अति हित मोरे। बिनती करौं तात कर जोरे॥ सब बिधि सोइ कर्तव्य तुम्हारे॥ दुष न पाव नृप सोच हमारे॥ सुनि रघुनाथ सचिव संवादू॥ भयेउ सपरिजन बिकल निषादू॥ पुनि कछु लषन कहेउ कटु बानी॥ प्रभु बरजेउ बड अनुचित जानी॥ सकुचि राम निज सपथ दिवाई॥ लषन संदेश कहव जनि जाई। कह सुमंत पुनि नृप संदेसू। सहि न सकहिं सिय बिपिन कलेसू॥ जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया॥ सोइ रघुनाथ तुमहिं करणीया॥ नतरु निपट अवलंब बिहीना॥ मैं न जियब जिमि जल बिनु मीना॥ दोहा॥ मैके ससुरे सकल सुष। जब जहां मन मान॥ तब तहं रहव सुषेन सिय॥ जब लगि बिपति बिहान॥ २०१॥ चौपई॥ बिनती कीन्ह भूप जेहि भांती॥ आरति प्रीति न सो कहि जाती॥ पितु संदेश सुनि कृपानिधान॥ सियहि दीन्ह सिष कोटि बिधाना॥ सासु ससुर गुरु प्रिय परवारू॥ फिरहु तो सब कर मिटै षंभारू॥ सुनि पति बचन कहति बैदेही॥ सुनहु प्राणपति परम सनेही॥ प्रभु करुणामय परम विवेकी॥ तनु तजि छांह रहति किम छेकी॥ प्रभा जाइ कहं भानु बिहाई

राम २८

करह्वंडिकावंडतजिजाई॥ पतिहिप्रेममयबिनयसुनाई। कहतसचिवसनगिरासुहाई॥
तुमपितुससुरसरसहितकारी। उतरदेकुंफिरिअनुचितभारी॥ दोहा॥ आरतबससन्मुष
भई॥ बिलगनमानवतात॥ आरजसुतपदकमलबिनु। बादिजहांलगनात॥ ९७॥ चौ
पई॥ पितुहिबिभवबिलासमैंदीठा॥ नृपमणिमुकुटमिलितपदपीठा॥ सुखनिधानअस
पितुग्रहमोरे। पतिबिहीनमनभावनभोरे॥ ससुरचक्कवयकोशलराऊ॥ भुवनचारिदश
प्रगटप्रभाऊ॥ भुवनचारिदशप्रगटप्रभाऊ॥ आगेहोइजेहिसुरपतिलेही॥ अर्धसिंहास
आसनदेई॥ ससुरएतादृशअवधनिवासू। प्रियपरिवारमातुसमसासू॥ बिनुरघुपति
पदपदमपरागा॥ मोहिकोउसपनेकुसुखदनलागा॥ अगमपंथबनभूमिपहारा॥ करि
केहरिसरसरितअपारा॥ कोलकिरातकुरंगबिहंगा॥ मोहिसबसुषदप्राणपतिसंगा
दोहा॥ सासुससुरसनमोरिहुंति॥ बिनयकरबपरिपाय॥ मोरसोचजनिकरियकछु
मैंबनसुखीसुभाय॥ ९८॥ चौपई॥ प्राणनाथप्रियदेवरसाथा॥ बीरधुरीणधरेधनुभाथा॥
नहिंमगश्रमभ्रमदुखमनमोरे॥ मोहिलगिसोचकरियजनुभोरे॥ सुनिसुमंत्रसियसी
तलबानी॥ भयेविकलजनुफणिमणिहानी॥ नयननसूझसुनैनहिंकाना॥ कहिनसकै
कछुअतिअकुलाना॥ रामप्रबोधकीन्हबहुभांति॥ तदपिहोयनहिंसीतलछाती॥ य

तन अनेक साथ हित कीना॥ उचित उतर रघुनंदन दीन्हा॥ फेरि जाय नहिं राम रजाई॥ क
ठिन करम गति कछु न बसाई॥ राम लषन सिय पद सिर नाई॥ फिरे बणिक जिमि मूर गा
वांई॥ दोहा॥ रथ हांके हय राम तन॥ हेरि हेरि हिहिनाहिं॥ देखि निषाद विषाद बस॥ सि
र धुनि धुनि पछताहिं॥ ९९॥ चौपई॥ जासु वियोग बिकल पसु ऐसे॥ प्रजा मातु पितु जी
वहिं कैसे॥ बरबस राम सुमंत पठाये॥ सुरसरि तीर आपु चलि आये॥ मांगि नाव केव
ट नै आना॥ कहै तुम्हार मरम मैं जाना॥ चरण कमल रज कह सब कहही॥ मानुष क
रणि मूरि कछु अहही॥ छुअत शिला भइ नारि सुहाई॥ पाहन ते न काठ कठिनाई॥
तरणि उ मुनि घरनी होइ जाई॥ बाट परे मोरि नाव उडाई॥ एह प्रतिपालौं सब परिवा
रू॥ नहिं जानौं कछु और कवारू॥ जौं प्रभु अवसि पार गा चहहू॥ तौ पद पदम पषारण
कहहू॥ छंद॥ पद पद्म धोइ चढाइ नाव न नाथ उतराई चहौं॥ मोहि राम राउरि आनि द
शरथ सपथ सब सांची कहौं॥ ब
रु तीर मारहिं लषन पै जब लगि न पांव पषारिहैं॥ तौ लगि न तुलसीदास नाथ कृपा
लु पार उतारिहौं॥ सोरठा॥ सुनि केवट के बैन॥ प्रेम लपेटे अटपटे॥ बिहंसे करुणाऐ
न॥ चितै जानकी लषन तन॥ १००॥ चौपई॥ कृपासिंधु बोले मुसुकाई॥ सोइ करु जेहि नाव

नजाई ॥ बेगि आनि जल पांव पखारू ॥ होत बिलंब उतारहुं पारू ॥ जासु नाम सुमि
रत एक बारा ॥ उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥ सो कृपाल केवटहि निहोरा ॥ जे किय जग
तिहूं पगहु ते थोरा ॥ पद नख निरखि देवसरि हरषी ॥ सुनि प्रभु बचन मोह मति करषी
षी ॥ केवट राम रजायसु पावा ॥ पानि कठवता भरि लै आवा ॥ अति आनंद उमगि अनु
गा ॥ चरण सरोज पखारन लागा ॥ बर्षि सुमन सुर सकल सिहाहीं ॥ इहि सम पुन्य पुंज
कोउ नाहीं ॥ दोहा ॥ पद पखारि जल पान करि ॥ आपु सहित परिवार ॥ पितर पार करि
प्रभुहि पुनि ॥ मुदित गयेउ लै पार ॥ १०० ॥ चौपई ॥ उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता ॥ सीय रा
म गुह लखन समेता ॥ केवट उतरि दंडवत कीन्हा ॥ प्रभु सकुचे इहि कछु नहिं दीन्हा ॥ पिय
हिय की सिय जाननिहारी ॥ मणि मुंदरी मन मुदित उतारी ॥ कहेउ कृपाल लेहु उतराई ॥
केवट चरण गहे अकुलाई ॥ नाथ आजु हम काह न पावा ॥ मिटे दोष दुख दारिद दावा
॥ अमित काल मैं कीन्ह मंजूरी ॥ आजु दीन्ह बिधि बनि भरि भूरी ॥ अब कछु नाथ न चा
हिय मोरे ॥ दीनदयाल अनुग्रह तोरे ॥ फिरति बार जो कछु मोहि देवा ॥ सो प्रसाद मैं सि
र धरि लेवा ॥ दोहा ॥ बहुत कीन्ह हठ लखन प्रभु ॥ नहिं कछु केवट लेइ ॥ बिदा कीन्ह क
रुणायतन ॥ भक्ति बिमल बर देइ ॥ १०१ ॥ चौपई ॥ तब मज्जन करि रघुकुलनाथा ॥ ह

अजो०
२०

जिपारथीनायेन्हमाथा।सियसुरसरिहिकहाकरजोरी।मातुमनोरथपुरउबमोरी॥
पतिदेवरसंगकुसलबहोरी॥आइकरौंजिहिपूजातोरी॥सुनिसियबचनप्रेमरससानी
।भइतवविमलवारिबरबानी॥सुनुरघुबीरप्रियाबैदेही॥तवप्रभावजगविदितनके
ही॥लोकपहोहिंबिलोकततोरे॥तोहिसेवहिंसबसिधिकरजोरे॥तुमजोहमहिंब
डबिनसुनाई॥कृपाकीन्हमोहिदीन्हबडाई॥तदपिदेविमैंदेवअसीसा।सुफलहोनहि
तनिजबागीसा॥दोहा॥प्राणनाथदेवरसहित॥कुशलकोशलाआइ॥पूरिहिसब
मनकामना।सुयशरहिहिजगछाइ॥२०८॥चौपई॥गंगबचनसुनिमंगलमूला॥मु
दितसीयसुरसरिअनुकूला॥तबप्रभुगुहहिकहाघरजाऊं।सुनतसूखमुखभाउ
रदाहू॥दीनबचनगुहकहकरजोरी।बिनयसुनियरघुकुलमणिमोरी॥नाथसाथ
रहिपंथदिखाई।करिदिनचारिचरणसिविकाई॥जेहिवनजाहिंरहबरघुराई।प
र्णकुटीमैंकरबसुहाई॥तबमोकहजसुदेवरजाई॥सोकरिहौंरघुबीरदुहाई॥सह
जसनेहरामलखितासू॥संगलीन्हगुहहृदयहुलासू॥पुनिगुहज्ञातिबोलिसबली
न्हे॥करिपरितोषबिदातबकीन्हे॥दोहा॥तबगणपतिशिवसुमिरिप्रभु॥नाइसुर
सरिहिमाथ।सखाअनुजसियसहितबन।गवनकीन्हरघुनाथ॥२०९॥चौपई॥जेहि

३

राम
२०

दिननयेग्रविटपतरबासू॥ लषनसषासबकीन्हसुपासू॥ प्रांतप्रातकृतकरिरघुरा
ई॥तीरथराजदीषप्रभुजाई॥सचिवसत्यश्रद्धाप्रियनारी॥ माधवसरिसमीतहितका
री॥चारिपदारथभराभंडारू॥पुण्यप्रदेसदेसअतिचारू॥ छेत्रअगमगढगाढसु
हावा॥सपनेहुंजिनप्रतिपक्षनपावा॥सेनसकलतीरथबरबीरा॥कलुषअनीक
दलनरणधीरा॥संगमसिंहासनसुठिसोहा॥छत्रअक्षयबटमुनिमनमोहा॥ चं
वरजमुनजलगंगतरंगा॥देषिहोंहिदुषदारिदभंगा॥दोहा॥ सेवहिंसुकृतीसा
धुसुचि॥पावहिंसबमनकाम॥ बंदीबेदपुराणगण॥ कहहिंबिमलगुनग्राम॥१२०॥
चौपई॥कोकहिसकैप्रयागप्रभाऊ॥कलुषपुंजकुंजरमृगराऊ॥ असतीरथपति दे
षिसुहावा॥ सुषसागररघुबरसुषपावा॥ कहिसियअनुजहिसषहिसुनाई॥ श्रीमु
षतीरथराजबडाई॥ करिप्रणामदेषतबनबागा॥ कहतमहातमअतिअनुरागा॥ इ
हिबिधिआइबिलोकेउबेनी॥ सुमिरतसकलसुमंगलदेनी॥मुदितअन्हाइकीन्हशिव
सेवा॥पूजियथाविधितीरथदेवा॥तबप्रभुभरद्वाजपहआये॥करतदंडवतमुनिउरला
ये॥मुनिमनमोदनकहिकछुजाई॥ब्रह्मानंदरासिजनुपाई॥दोहा॥दीन्हअसीसमुनी
सउर॥अतिअनंदअसजानि॥लोचनगोचरसुकृतफल॥मनहुकियेविधिआनि॥

अजो०
३२

॥२०॥ चौपई॥ कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हे॥ पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हे॥ कंद मूल फल अंकुर नीके॥ दिये आन मुनि मनहुँ अमी के॥ सीय लषन जन सहित सुहाये॥ अति रुचि राम मूल फल खाये॥ भये बिगत श्रम राम सुखारे॥ भरद्वाज मृदु बचन उचारे॥ आजु सुफल तप तीरथ जोगू॥ भया सुफल जप योग विरागू॥ सुफल सकल शुभ साधन साजू॥ ॥राम तुमहि अवलोकत आजू॥ लाभ अवधि सुष अवधि न दूजी॥ तुम्हरे दरस आस सब पूजी॥ अब करि कृपा देहु बर एहू॥ निज पद सरसिज सहज सनेहू॥ दोहा॥ कर्म बचन मन छाडि छल॥ जब लगि जन न तुम्हार॥ तब लगि सुष सपनेहु नहि॥ किये कोटि उपचार॥ २१॥ चौपई॥ सुनि मुनि बचन राम सकुचाने॥ भाव भक्ति आनंद अघाने॥ तब रघुबर मुनि सुयश सुहावा॥ कोटि भांति कहि सबहि सुनावा॥ सो बड सो सब गुणगण गेहू॥ जेहि मुनीश तुम आदर देहू॥ मुनि रघुबीर परस्पर नवहीं॥ बचन अगोचर सुख अनुभवहीं॥ यह सुधि पाय प्रयाग निवासी॥ बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी॥ भरद्वाज आश्रम सब आये॥ देखन दशरथ सुअन सुहाये॥ राम प्रणाम कीन्ह सब काहू॥ मुदित भये लहि लोचन लाहू॥ देहिं असीस परम सुष पाई॥ फिरे सराहत सुंदरताई॥ दोहा॥ राम कीन्ह विश्राम निशि॥ प्रात प्रयाग नहाइ॥ चले सहित सिय लषन जन॥ मुदित मुनिहि सिर नाइ॥२२

राम
३२

श्री चौपई॥ राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं॥ नाथ कहिय हम केहि मग जाहीं॥ मुनि मुनि बिहंसि राम सन कहहीं॥ सुगम सकल मग तुम कह अहहीं॥ साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये॥ सुनि मन मुदित पचाशक आये॥ सबहि राम पद प्रेम अपारा॥ सब हि कहहिं मग दीख हमारा॥ मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे॥ जिन्ह बहु जन्म सुकृत बड कीन्हे॥ करि प्रणाम मुनि आयसु पाई॥ प्रमुदित हृदय चले रघुराई॥ ग्राम निकट जब निसरहिं जाई॥ देखहिं दर्श नारि नर धाई॥ होहिं सनाथ जन्म फल पाई॥ फिरहिं दुखित मन संग पठाई॥

दोहा॥ बिदा कीन्ह बटु बिनय करि॥ फिरे पाइ मन काम॥ उतरि अन्हाने यमुन जल॥ जो शरीर सम श्याम॥ २२४॥

चौपई॥ सुनत तीरवासी नर नारी॥ धाये निज निज काज बिसारी॥ लषन राम सिय सुंदरताई॥ देखि करहिं निज भाग्य बडाई॥ अति लालसा सबहि मन माहीं॥ नाँव गाँव पूछत सकुचाहीं॥ जे तिन महं वय वृद्ध सयाने॥ तिन्ह करि जुक्ति राम पहिचाने॥ सकल कथा कहि तिनहि सुनाई॥ बनहि चले पितु आयसु पाई॥ सुनि सविषाद सकल पछिताई॥ रानी राय कीन्ह भल नाहीं॥ तेहि अवसर तापस एक आवा॥ तेज पुंज लघु बयस सुहावा॥ गति अलक्ष कबि बेष बिरागी॥ मन क्रम बचन राम अनुरागी॥ सजल नयन तन पुलकि निज॥ इष्टदेव पहिचान॥ परो दंड जिमि धरणितल॥ दशा न जाय

अजो० ८
२२

बषान॥२२५॥चौपई॥रामसप्रेमपुलकउरलावा॥परमरंकजनुपारसपावा॥मनहुप्रे
मपरमारथदोऊ॥मिलतधरेतनुकहसबकोऊ॥बहुरिलषनपायनसोलागा॥ली
न्हउठायउमंगअनुरागा॥पुनिसियचरणधूरिधरसीसा॥जननिजानिसिसुदीन्हअसी
सा॥कीन्हनिषाददंडवततेही॥मिलेउमुदितलषिरामसनेही॥पियततनयनपुटपियू
षा॥मुदितसुअसनपायजिमिभूषा॥रामलषनसियरूपनिहारी॥सोचसनेहविकल
नरनारी॥तेउमातुकहोंसखिकैसे॥जिनपठयेबनबालकऐसे॥दोहा॥तबरघुबीरअ
नेकबिधिसखहिसिखावनदीन॥रामरजायसुसीसधरि॥गवननवनतिन्हकीन्ह
॥२२६॥चौपई॥पुनिसियरामलषनकरजोरी॥जमुनहिकीन्हप्रणामबहोरी॥गवनेसी
यसहितदोउभाई॥रवितनयाकरकरतबडाई॥पथिकअनेकमिलहिंमगुजा
ना॥कहहिंसप्रेमदेषिदोउभ्राता॥राजलक्षणसबअंगतुम्हारे॥देखिसोचअतिहियहोत
हमारे॥मारगचलहुपयादेहिपाये॥ज्योतिषझूठहमारेनाये॥अगमपंथगिरि
काननभारी॥तेहिमहंसाथनारिसुकुमारी॥करिकेहरिबननजाहिनजोई॥हमसंग
चलहिंजोआयसुहोई॥जावजहांलगितहंपहुंचाई॥फिरबबहोरितुमहिंसिरना
ई॥दोहा॥इहिबिधिपूछहिंप्रेमबस॥पुलकगातनिजनैन॥कृपासिंधुफेरहिंतिनहि

राम
॥२२॥

सिमृतुलतनपात कहिहिंगवाईअस्थिनकुअमगवनवस्ववहिंकिप्रात १५

कहेहि बिनीतम्रदुबैन ॥११७॥ चौपई ॥ जेपुरग्रामबसहिंमगुमांही । तिनहिनागसुरनगरसि
हाही ॥ केहिसुकृतिकेहिघेरबसाये ॥ धन्यपुण्यमयपरमसुहाये । जहंतहंरामचरण
चलिजाहीं ॥ तेहिसमानअमरावतिनाही ॥ पुण्यपुंजमगुनिकटनिवासी ॥ तिनहिंसरा
हहिंसुरपुरवासी ॥ जोनरिनयनविलोकहिंरामहिं सीतालषनसहितघनस्यामहिं
। जेहिसरसरितरामअवगाहहिं ॥ तिनहिदेवसरसरितसराहहिं ॥ जेहितरुतरप्रभुबै
ठहिंजाई ॥ करहिकल्पतरुतासुबडाई ॥ परसिरामपदपदमपरागा । मानतभूमिभू
रिनिजभागा ॥ दोहा ॥ छांहकरहिंघनविबुधगण । बर्षहिंसुमनसिहांहि ॥ देखतगि
रिबनबिहंगम्रग । रामचलेमगुजांहि ॥११८॥ चौपई ॥ सीतालषनसहितरघुराई ॥ गांव
निकटतबनिसरहिजाई ॥ सुनिसबबालकब्रद्धनरनारी ॥ चलहिंतुरतग्रहकाज
बिसारी ॥ रामलषनसियरूपनिहारी ॥ पाइनयनफलहोहिंसुषारी ॥ सजलनयन
अतिपुलकशरीरा ॥ सबभयेमगनदेखिदोउवीरा ॥ बरनिनजाइदशातिन्हकेरी ।
॥ लहीरंकजनुसुरमणिढेरी ॥ एकहिएकबोलिसिखदेहीं ॥ लोचनलाहुलेहुछ
णएहीं ॥ रामहिदेखिएकअनुरागे ॥ चितवतचलेजागसंगलागे ॥ एकनयनमगछ
विउरआनी ॥ होहिंशिथिलतनमानसबानी ॥ दोहा ॥ एकदेषिबटछांहभलि ॥ डा

अजो० २२

एककलनरिआनहिंपानी ॥ अचद्दयनाथकहहिंमृदुबानी ॥ मुनिप्रियबचनप्रीति
अतिदेषी ॥ रामकृपालसुशीलबिशेषी ॥ जानीसीयअमितमनमांही ॥ घरिकबिलं
बकीन्हबटछांहीं ॥ मुदितनारिनरदेखहिंशोभा ॥ रूपअनूपदेखमनलोभा ॥ इकट
कसबसोहहिंचहुंओरा ॥ रामचंद्रमुखचंद्रचकोरा ॥ तरुणतमालबरणतनसोहा
॥ देखतकामकोटिमनमोहा ॥ दामिनिबरणलषनसुठिनीके ॥ नखशिखसुभगभा
वतेजीके ॥ मुनिपटकटिनकसेतूणीरा ॥ सोहतकरकमलन्हधनुतीरा ॥ दोहा ॥ जटा
मुकुटसीसनसुभग ॥ उरभुज नयनबिशाल ॥ शारदपर्वबिधुबदनवर ॥ लसतस्वेदक
णजाल ॥ ११६ ॥ चौपई ॥ बरनिनजायमनोहरजोरी ॥ शोभाअमितमोरमतिथोरी ॥ रा
मलषनसियसुंदरताई ॥ सबचितवहिंमतिमनचितलाई ॥ थकेनारिनरप्रेमपियासे
मनहुंमृगीमृगदेखिदियासे ॥ सीयसमीपग्रामतियजांहीं ॥ पूछतअतिसनेहसकु
चांहीं ॥ बारबारसबलागहिंपाये ॥ कहहिंबचनमृदुसरलसुहाये ॥ राजकुमारिबिन
यहमकरहीं ॥ तियसुभावकछुपूछतडरहीं ॥ स्वामिनिअबिनयछमबहमारी ॥ बिल
गुनमानबजानिगंवारी ॥ राजकुवरदोउसहजसलोने ॥ इनतेलहिदुतिमरकतसोने
॥ दोहा ॥ श्यामलगौरकिशोरबर सुंदरसुषमाऐन ॥ शारदशर्वरीनाथमुष ॥ शारदस

राम २२

रोरुहनैन ॥२२२॥ चौपई ॥ कोटिमनोजलजावनिहारे । सुमुखिकहहुकोआहहिंतुम्हा
रे ॥ सुनिसनेहमयमंजुलबानी ॥ सकुचिसीयमनमहंमुसुकानी । तिनहिबिलोकिलो
केतधरणी । दुहुंसकोचसकुचतिबरबरणी ॥ सकुचिसप्रेमबालमृगनयनी ॥ बोली
मधुरबचनपिकबयनी ॥ सहजसुभावसुभगतनगोरे । नामलषनलघुदेवरमोरे ॥
बहुरिबंदनविधुअंचलढांकी । पियतनचितेभौंहकरिबांकी । श्यामबरणबिशाल
लनुजनैना ॥ अतिसुंदरबोलतमृदुवयना ॥ खंजनमंजुतिरीछेननयनी ॥ निजप
तिकहेउतिनहिंपियसयनी । भईमुदितसबग्रामबधूटी ॥ रंकनरतनराशिजनुलू
टी ॥ दोहा ॥ अतिसप्रेमसियपायपरि ॥ बहुविधिदेहिंअसीस ॥ सदासोहागिनिरहुतु
म । जबलगिमहिअहिसीस ॥ २२३॥ चौपई ॥ पारबतीसमपतिप्रियहोहू ॥ देविनहमप
रछाडबछोहू । पुनिपुनिबिनयकरहिंकरजोरी ॥ जौंइहिंमारगफिरियबहोरी ॥ दरश
नदेवजाननिजदासी ॥ लषीसीयसबप्रेमपियासी ॥ मधुरबचनकहिकहिपरितोषी
॥ जनुकुमुदिनीकौमुदीपोषी । तबहिलषनरघुबररुखजानी ॥ पूछेउमगुलोगनमृ
दुबानी ॥ सुनतनारिनरनयेदुखारी ॥ पुलकितअंगविलोचनवारी ॥ मिटामोदमनभ
येमलीने । विधिनिधिदीन्हलीन्हतनुछीने ॥ समुझिकर्मगतिधीरजकीन्हा ॥ शोधिसुगममम

अजोध्या
२४

गुतिन्हकहिदीन्हा॥ दोहा॥ लषनजानकीसहितबन॥ गवनकीन्हरघुनाथ॥ फेरेसब
प्रियबचनकहि॥ लियेलाइमनसाथ॥ २२॥ चौपई॥ फिरतनारिनरअतिपछिताहीं
॥ दैवहिंदोषदेहिंमनमाहीं॥ सहितबिषादपरस्परकहहीं॥ विधिकरतबसबउलटेअहे
हीं॥ निपटनिरंकुशनिठुरनिशंकू॥ जेहिशशिकीन्हसरुजसकलंकू॥ रुखकल्पतरु
सागरखारा॥ तेइपठयेबनराजकुमारा॥ जौपेइनहिदीन्हबनवासू॥ कीन्हबादिविधि
भोगबिलासू॥ येबिचरहिंमगुबिनुपदत्राना॥ रचेबादिविधिवाहननाना॥ येमहिपर
हिंडासिकुशपाता॥ सुभगसेजकतकीन्हबिधाता॥ तरुतरबासइनहिंबिधिदीन्हों
॥ धवलधामरचिरचिश्रमकीन्हो॥ दोहा॥ जोयेमुनपटधरजटिल॥ सुंदरसुठिसुकु
मार॥ विविधिभांतिभूषणबसन॥ वादिकियेकरतार॥ २४॥ चौपई॥ जोयेकंदमूल
फलखाहीं॥ वादिसुधादिअसनजगमाहीं॥ एककहहिंयहसहजसुहाये॥ आपुप्रग
टभयेविधिनबनाये॥ जहंलगिबेदकहेजुबिधिकरणी॥ श्रवणनयनमनगोचरबर
णी॥ देखहुखोजिभुवनदशचारी॥ कहंअसपुरुषकहंअसनारी॥ इनहिदेखिविधि
मनअनुरागा॥ पटुतरयोगबनावनलागा॥ कीन्हबहुतश्रमएकनआये॥ तेहिइरिषा
बनआनिदुराये॥ एककहहिंहमबहुतनजानहिं॥ आपुहिपरमधन्यकरमानहिं

राम
२४

तेउ निपुन एप पुंज जहम लेखे। जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे॥ दोहा॥ इहि बिधि कहहि कहहिं बचन प्रिय। लेहिं नयन भरि नीर॥ किमि चलिहैं मारग अगम। सुठि सुकुमार सरीर॥ १२५
॥ चौपई॥ नारि सनेह बिकल सब होहीं। चकई सांझ समय जिमि सोहीं॥ मृदु पद कमल कठिन मग जानी। गहबरि हृदय कहहिं मृदु बानी॥ परसत मृदुल चरण अरुणारे॥ सकुचति महि जिमि हृदय हमारे॥ जौं जगदीस इन्हहिं बन दीन्हा॥ कस न सुमनमय मारग कीन्हा॥ जौं मांगे पाइय विधि पांही॥ राखिय सखि इन्ह आंखिन माही॥ जे नर नारि न अवसर आये॥ तेसिय राम न देखन पाये॥ सुनि सरूप पूछहिं अकुलाई ॥ अब लगि गये कहां लगि भाई॥ समरथ धाइ बिलोकहिं जाई॥ प्रमुदित फिरहिं नयन फल पाई॥ दोहा॥ अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं॥ होहिं प्रेमवस लोग इमि॥ राम जहां जहं जाहिं॥ १२६॥ चौपई ॥ गांउ गांउ अस होइ अनंदू॥ देखि भानकुल कैरवचंदू॥ जो कछु समाचार सुनि पावहिं॥ ते नृप रानिहि दोष लगावहिं॥ कहहिं एक अति भल नरनाहू॥ दीन्ह हमहि जिन्ह लोचन लाहू॥ कहहिं परस्पर लोग लुगाई॥ बात सरल सनेह सुहाई॥ ते पितु मात धन्य जे जाये॥ धन्य सो नगर जहां ते आये॥ धन्य सो देस सैल बन गाऊं॥ जहं जहं जाहिं धन्य सो गाऊं॥ सुख पायो बिरंचि विरचि तेही॥ ये जिन्ह के सब भांति सनेही॥

अजो० ७
२५

रामलषनसियकथासुहाई। रहीसकलमगकाननछाई॥ दोहा॥ इहिबिधिरघुकुलकमल
रवि। मगलोगनसुषदेत॥ जाहिंचलेदेखतविपिन। सियसोमित्रिसमेत॥१२७॥ चौपई॥
आगेरामलषनवनिपाछे॥ तापसभेषविराजतकाछे॥ उभयमध्यसियशोभतिकैसी
॥ब्रह्मजीवबिचमायाजैसी॥ बहुरिकहौछबिजसमनबसई। जनुमधुमदनमध्यरति
लसई॥ उपमाबहुरिकहौंजियजोही॥ जनुबिधिबिचरोहिणिसोई॥ प्रभुपदरेखबीच
बिचसीता। धरहिंचरणमगचलहिंसभीता॥ सीयरामपदअंकबराये॥ लषनचलहिं
हिंमगदाहिनलाये॥ रामलषनसियप्रीतिसुहायी॥ बचनअगोचरकिमिकहिजाई
॥खगम्रगमगनदेषिछबिहोंही॥ लियेचोरिचितरामबटोरी॥ दोहा॥ जिन्हजिन्हदेषे
पथिकप्रिय। सीयसहितदोउभाई॥ भवमगअगमअनंदते। बिनुश्रमरहेसिराइ॥
॥१२८॥चौपई॥ अजहुंजासुउरसपनेकाऊ। बसहिंरामसियलषनबटाऊ। रामधामप
थजाइहिसोई॥ जोपथपावकबहिमुनिकोई॥ तबरघुबीरश्रमितसियजानी॥ देषि
निकटबटसीतलपानी॥ तहंबसिकंदमूलफलखाई॥ प्रातअन्हाइचलेरघुराई॥ देख
तबनशरसैलसुहाये॥ बालमीकआश्रमप्रभुआये॥ रामदेखिमुनिबाससुहावन॥ सुं
दरगिरिकाननजलपावन॥ सरनिसरोजबिटपबनफूले॥ गुंजतमंजुमधुपरसभू

राम
२५

तबमुनिआश्रमदियसुहाई१

ले।खगमृगबिपुलकुलाहलकरहीं।रहितबैरप्रमुदितमनचरहीं॥दोहा॥सुचिसुंदर
आश्रमनिरषि।हर्षेराजिवनैन॥सुनिरघुबरआगमनमुनि।आगेआयेलैन॥१२
७॥चौपई॥मुनिकहंरामदंडवतकीन्हा॥आशीर्वादबिप्रबरदीन्हा॥देषिरामछबिन
यनजुडाने।करिसनमानआश्रमहिंआने॥तबमुनिआसनदियेसुहाये॥मुनिब
रअतिथिप्राणप्रियपाये।कंदमूलफलमधुरमंगाये॥सियसोमित्रिरामफलखाये
बालमीकमनआनंदभारी।मंगलमूरतिनयननिहारी॥तबकरकमलजोरिरघुरा
ई॥बोलेबचनश्रवणसुषदाई॥तुमत्रिकालदरशीमुनिनाथा।बिश्वबदरजिमितुम्ह
रेहाथा।असकहिप्रभुसबकथाबषानी॥जेहिजेहिभांतिदीनबनरानी॥दोहा॥ता
तबचनपुनिमातुहित।भाइभरतअसराउ।मोकहंदरसतुम्हारप्रभु॥सबममपुण्यप्र
भाउ॥१२८॥चौपई॥देषिपायमुनिरायतुम्हारे।भयेसुकृतसबसुफलहमारे॥अब
जहांराउरआयसहोई॥मुनिउद्वेगनपावहिंकोई॥मुनितापसजिनतेंदुषलहहीं॥
तेनरेशबिनुपावकदहहीं॥मंगलमूलबिप्रपरितोषू।दहेकोटिकुलभूसुररो
षू॥असजियजानिकहियसोइठाऊं।सियसोमित्रिसहिततहांजाऊं।तहंरचिरुचिर
पर्णतृणशाला।बासकरौंकछुकालकृपाला॥सहजसरलसुनिरघुबरबानी॥साधु

अजो॰ २६

साधुबोलेमुनिग्यानी॥ कसनकहहु असरघुकुलकेतू॥ तुमपालकसंततश्रुतिसे
तू॥ छंद॥ श्रुतिसेतुपालकरामतुमजगदीशमायाजानकी॥ जोस्रजतिजगपालति
हरतिरुषपाइकृपानिधानकी॥ जोसहससीसअहीसमहिधरुलषनसचराचर
धनी॥ सुरकाजधरिनरराजतनुचलेदलनखलनिशिचरअनी॥ सोरठा॥ रामसरूप
तुम्हार॥ बचनअगोचरबुद्धिपर॥ अबिगतिअकथअपार॥ नेतिनेतिनितिनिगम
कह॥ १२६॥ चौपई॥ जगपेखनतुमदेखनिहारे॥ बिधिहरिसंभुनचावनहारे॥ ते
उनजानहिमर्मतुम्हारा॥ औरतुमहिकोजाननहारा॥ सोजानैजेहिदेहुजनाई॥
जानततुम्हैतुमहिहोइजाई॥ तुम्हरीकृपातुमहिरघुनंदन॥ जानतभक्तभक्तउरचं
दन॥ चिदानंदमयदेहतुम्हारी॥ बिगतबिकारजानअधिकारी॥ नरतनुधरेहुसंत
सुरकाजा॥ कहहुकरहुजसप्राकृतराजा॥ रामदेषिमुनिचरिततुम्हारे॥ जडमो
हहिबुधहोहिसुषारे॥ तुमजोकहहुकरहुसबसांचा॥ जसकाछियतसचाहिय
नाचा॥ दोहा॥ पूछेहुमोहिकिरहौंकहां॥ मैंपूछतसकुचाउ॥ जहंनहोहुतहंदे
हुकहि॥ तुमहिदिखावौंगाउ॥ १२७॥ चौपई॥ सुनिमुनिबचनप्रेमरससाने॥ सकु
चिराममनमहंमुसुकाने॥ बाल्मीकहंसिकहहिंबहोरी॥ बाणीमधुरअमियरस॥

राम २६

सबोरी॥ सुनहुं राम अब कहौं निकेता॥ बसहुं जहां सिय लषन समेता॥ जिन के श्रवण
समुद्र समाना॥ कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥ भरहिं निरंतर होहिं न पूरे॥ तिन के
हिय सदन तव रूरे॥ लोचन चातक जिन करि राषे॥ रहहिं दरस जलधर अभिलाषे
॥ निदरहिं सिंधु सरित सर वारी॥ रूप बिंदु जल होहिं सुखारी॥ तिन के हृदय सदन सु
खदायक॥ बसहु लषन सिय सह रघुनायक॥ दोहा॥ यस तुम्हार मानस बिमल॥
हंसिनि जीहा जासु॥ मुक्ताहल गुण गण चुगहिं॥ बसहु राम हिय तासु॥ १२८॥ चौप
ई॥ प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुवासा॥ सादर जासु लहै नित नासा॥ तुमहिं निवेदित भोज
न करहीं॥ प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं॥ सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देषी॥ प्रीति सहित
करि बिनय विशेषी॥ कर नित करहिं राम पद पूजा॥ राम भरोस हृदय नहिं दूजा॥
चरण राम तीरथ चलि जाहीं॥ राम बसहु तिन के मन मांहीं॥ मंत्रराम नित जपहिं
तुम्हारा॥ पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा॥ तर्पण होम करहिं विधि नाना॥ विप्र जेवांइ
देहिं बर दाना॥ तुम ते अधिक गुरुहि जिय जानी॥ सकल भाव सेवहिं सनमानी॥
दोहा॥ सब करि मांगहिं एक फल॥ राम चरण रति होउ॥ तिन के मन मंदिर बसहु॥
सिय रघुनंदन दोउ॥ १२९॥ चौपई॥ काम क्रोध मद मान न मोहा॥ लोभ न छोभ न रा

अजो॰
२७

गनद्रोहा॥ जिनकेकपटदंभनहिंमाया॥ तिनकेहृदयबसहुरघुराया॥ सबकेप्रि
यसबकेहितकारी॥ दुखसुखसरिसप्रसंसागारी॥ कहहिंसत्यप्रियबचनबिचारी
॥ जागतसोवतसरणतुह्मारी॥ तुमहिछाडिगतिदूसरिनाही॥ रामबसहुतिनकेउ
रमाही॥ जननीसमजानहिंपरनारी॥ धनपरायबिषतेअतिभारी॥ जेहरषहिंप
रसंपतिदेषी॥ दुखितहोहिंपरबिपतबिशेषी॥ जिनहिरामतुमप्राणपियारे॥ तिन
केउरशुभसदनतुह्मारे॥ दोहा॥ स्वामिसखापितुमातगुरु॥ जिनकेसबतुमतात
॥ तिनकेमनमंदिरबसहु॥ सीयसहितदोउभ्रात॥ १२५॥ चौपई॥ अवगुणतजिस
बकेगुणगहहीं॥ विप्रधेनुहितसंकटसहहीं॥ नीतिनिपुणजिनकेजगलीका॥
घरतुह्मारतिनकेमननीका॥ गुणतुम्हारसमझहिंनिजदोसू॥ जेहिसबभांतितुह्मा
रभरोसू॥ रामभक्तिप्रियलागहिंजेही॥ तेहिउरबसहुसहितबैदेही॥ जातिपांतिध
नधर्मबडाई॥ प्रियपरिवारसदनसुखदाई॥ सबतजितुमहिरहैलौलाई॥ ताकेहृ
दयबसहुरघुराई॥ स्वर्गनर्कअपबर्गसमाना॥ जहंतहंदेखधरेधनुबाना॥ मन
क्रमबचनजोराउरचेरा॥ रामकरहुताकेउरडेरा॥ दोहा॥ जाहिनचाहियकब
हूंकछु॥ तुमसनसहजसनेह॥ बसहुनिरंतरतासुउर॥ सोराउरनिजगेह॥ १२६॥

राम
२७॥

॥चौपई॥ इहि बिधि मुनिबर भवन देखावा॥ बचन सप्रेम राम मन भावा॥ कहहु मुनि सुन
हु भानुकुलनायक॥ आश्रम कहौं समय सुषदायक॥ चित्रकूट गिरि करहु निवा
सू॥ जहं तुम्हार सब भांति सुपासू॥ सैल सुहावन कानन चारू॥ करि केहरि मृग बिहा
रू॥ नदी पुनीत पुराण बखानी॥ अत्रीतिय निज तप बल आनी॥ सुरसरि धार नाम
मंदाकिनि॥ जो सब पातक पोतक डाकिनि॥ अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं॥ क
रहिं योग जप तप तनु कसहीं॥ चलहु सफल आश्रम सब कर करहू॥ राम देहु गौ
रव गिरिबरहू॥ दोहा॥ चित्रकूट महिमा अमित॥ कही महामुनि गाइ॥
आइ अन्हाने सरित बर॥ सीय सहित दोउ भाइ॥१५१॥ चौपई॥ रघुबर कहेउ लष
षन भल घाट॥ करहु कतहु अब ठाहर ठाट॥ लषन दीख पय उतर करारा
चहुं दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा॥ नदी पनच सर सम दम दाना॥ सकल कलु
ष कलि साउज नाना॥ चित्रकूट जनु अचल अहेरी॥ चुकइ न घात मार मुठभेरी॥ अस कहि लषन
ठाउं देषरावा॥ थलु बिलोकि रघुपति सुष पावा॥ रमेउ राम मन देवन्ह जाना॥ चले सहित सु
रपति परधाना॥ कोल किरात बेष धरि आये॥ रचे परण तृण सदन सुहाये॥ बरणि न
जाइ मंजु दुइ शाला॥ एक ललित लघु एक बिशाला॥ दोहा॥ लषन जानकी सहित प्र

अजो० १२८

नु राजत पर्णनिकेत॥ सोह मदन मुनि भेष जनु रति ऋतुराज समेत॥ १२८॥ चौपई॥
अमर नाग किन्नर दिगपाला॥ चित्रकूट आये तेहि काला॥ राम प्रणाम कीन्ह सब
काहू॥ मुदित देव लहि लोचन लाहू॥ बर्षि सुमन कह देव समाजू॥ नाथ सनाथ भये हम
आजू॥ करि बिनती दुख दुसह सुनाये॥ हर्षित निज निज गेह सिधाये॥ चित्रकूट रघुनं
दन छाये॥ समाचार सुन सुन मुनि आये॥ आवत देखि मुदित मुनि बृंदा॥ कीन्ह दंडवत
रघुकुल चंदा॥ मुनि रघुबरहि लाइ उर लेही॥ सुफल होन हित आशिष देही॥ सिय सौ
मित्रि राम छबि देखहि॥ साधन सकल सुफल करि लेखहि॥ दोहा॥ यथा योग सन
मान प्रभु॥ बिदा किये मुनि बृंद॥ करहिं योग जप यज्ञ तप॥ निज आश्रमन स्वछंद॥
१२९॥ चौपई॥ यह सुधि कोल्ह किरातन्ह पाई॥ हर्षे जनु नव निधि घर आई॥ कंद
मूल फल भरि भरि दोना॥ चले रंक जनु लूटन सोना॥ तिनमहं जिन्ह देखि दोउ भ्राता
॥ और तिनहि पूछहि मगु जाता॥ कहत सुनत रघुबीर निकाई॥ आय सबन देखे दो
उ दोई॥ करहिं जुहारि भेट धरि आगे॥ प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे॥ चित्र लिखे
जनु जहं तहं ठाढे॥ पुलक शरीर नयन जल बाढे॥ राम सनेह मगन सब जाने॥ कहि प्रि
य बचन सकल सनमाने॥ प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी॥ बचन बिनीत कहहिं कर जोरी॥

लाहू

राम १२८

मरनिर्फरनलगांतें देषाजव १

॥दोहा॥ अब हम नाथ सनाथ सब॥ भये देषि प्रभु पाय॥ भाग हमारे आगमन॥ राउर कोशलराय॥१४०॥ चौपई॥ धन्य भूमि बन पंथ पहारा॥ जहं जहं नाथ पाव तुम धारा॥ धन्य बिहंग म्रग काननचारी॥ सुफल जन्म भये तुमहि निहारी॥ हम सब धन्य सहित परवारा॥ देखि नयन भरि दरस तुम्हारा॥ कीन्ह बास भल ठाम बिचारी॥ इहां सकल रितु रहब सुखारी॥ हम सब भांति करब सेवकाई॥ करि केहरि अहि बाघ बराई॥ बन बेहड गिरि कंदर खोहा॥ सब हमार प्रभु पग पग जोहा॥ तहं तहं तुमहि अहेर खिलाउब॥ हम सेवक परिवार समेता॥ नाथ सकुच न आयसु देता॥ सुतेरसरिस सुनाव सुहाये॥ मनहु बिबुध बन परिहरि आये॥ गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी॥ त्रिविध बयार बहै सुखदेनी॥ दोहा॥ नीलकंठ कलकंठ शुक॥ चात्रिक चक्र चकोर॥ भांति भांति बोलहिं बिहंग॥ श्रवण सुखद चितचोर॥१४१॥ चौपई॥ करि केहरि कपि कोल कुरंगा॥ बिगत बयर बिहरहि इक संगा॥ फिरत अहेर राम छबि देषी॥ होहिं मुदित म्रग ब्रंद बिसेषी॥ बिबुध बिपिन जहं लगि जग माही॥ देषि राम बन सकल सिहाही॥ सुरसरि सरसुति दिनकर कन्या॥ मेकलसुता गोदावरि धन्या॥ सब सरि सिंधु नदी नद नाना॥ मंदाकिनी कर करहिं बखाना॥ उदय अस्त गिरि अरु कैलासू॥ मंदर मेरु सकल सुरबासू॥ पो

दो॥ बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन॥ बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन॥ रामहि केवल प्रेमु पिआरा॥ जानि लेउ जो जाननिहारा॥ राम सकल बनचर तब तोषे॥ कहि म्रदु बचन प्रेम परितोषे॥ बिदा कि ये सिर नाइ सिधाय॥ प्रभु गुन कहत सुनत घर आए॥ एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई॥ बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई॥ जब ते आइ रहे रघुनायक॥ तब ते भयेउ बन [illegible] ...बिताना॥ ओल [illegible]

लहिमाचलआदिकजेते॥चित्रकूटयशगावहिंतेते॥विधुंदितमनसुषनसमाई॥बिनु
श्रमबिपुलबडाईपाई॥दोहा॥चित्रकूटकेबिहंगमृग॥बेलिबिटपतृणजाति॥पु
ण्यपुंजसबधन्यअस॥कहहिंदेवदिनराति॥१४८॥चौपई॥नैयनवंतरघुपति
हिबिलोकी॥पाइजनमफलहोइबिशोकी॥परसिचरणरजअचरसुषारी॥भयेप
मपदकेअधिकारी॥सोबनशैलसुभायसोहावन॥मंगलमयअतिपावनपावन
॥महिमाकहौंकवनबिधितासू॥सुषसागरजहंकीन्हनिवासू॥पयपयोधितजि
अवधबिहाई॥जहंसियरामलषनरहेआई॥कहिनसकहिंसुषमाजसकानन
॥जोशतसहसहोहिंसहसानन॥सोमैंबरनिकहौंबिधिकेही॥डाबरकमठकिमंद
रलेही॥सेवहिंलषनकर्ममनबानी॥जाइनशीलसनेहबषानी॥दोहा॥क्षण
क्षणलषिसियरामपद॥जानिआपुपरनेह॥करतलषनसपनेनचित॥बंधुमा
तुगेह॥१४९॥चौपई॥रामसंगसियरहहिंसुषारी॥पुरपरिजनगृहसुरतिबिसा
री॥क्षणक्षणपियबिधुबदननिहारी॥प्रमुदितमनहुंचकोरकुमारी॥नाहनेहनि
तिबढतबिलोकी॥हर्षितरहतिदिवसजिमिकोकी॥सियमनरामचरणअनुरा
गा॥अवधसहससमबनप्रियलागा॥पर्णकुटीप्रियप्रीतमसंगा॥प्रियपरिवार

कुरंगविहंगा॥सासुससुरसममुनितियमुनिबर॥असनअमियसमकंदमूलफर॥
नाथसाथसाथरीसुहाई॥मयनसयनसयसमसुखदाई॥लोकपहोंहिंबिलोकत
जासू॥तेहिकिमोहसकबिषयबिलासू॥दोहा॥सुमिरतरामहितजहिं
जनत्रणसमबिषबिलास॥रामप्रियाजगजननिसिय॥कछुनआचरजतासु॥
१४०॥चौपई॥सीयलषनजेहिबिधिसुषलहही॥सोइरघुनाथकरैंजोइकह
हीं॥कहहिंपुरातनकथाकहानी॥सुनहिंलषनसियअतिसुषमानी॥जबजबरा
मअवधसुधिकरही॥तबतबबारिबिलोचनभरही॥सुमिरिमातुपितुपरिजनभाई
॥भरतसनेहसीलसेवकाई॥कृपासिंधुप्रभुहोहिंदुखारी॥धीरजधरहिंकुसमय
बिचारी॥लषिसियलषनबिकलहोइजाहीं॥जिमिपुरुषहिअनुसरपरछांहीं॥
प्रियाबंधुगतिलषिरघुनंदन॥धीरकृपालुभगतउरचंदन॥लगेकहनकछुकथा
पुनीता॥सुनिसुषलहहिंलषनअरुसीता॥दोहा॥रामलषनसीतासहित॥सो
हतपर्णनिकेत॥जिमिवासवबसअमरपुर॥शचीजयंतसमेत॥१४१॥चौपई॥
जोगवहिंप्रभुसियलषनहिकैसे॥पलकबिलोचनगोलकजैसे॥सेवहिंलषनसी
यरघुबीरहिं॥जिमिअविवेकीपुरुषशरीरहिं॥इहिबिधिप्रभुबनबसहिंसुख

अजो० ५०

री॥ षगम्रगसुरतापसहितकारी॥ कहेउरामबनगवनसुहावा॥ सुनकुसुमंतअ
वधजिआवा॥ फिरेउनिषादप्रभुहिपहुंचाई॥ सचिवसहितरथदेषनआई
॥ मंत्रीबिकलबिलोकिनिषादू॥ कहिनसकहिजसभयेउबिषादू॥ रामराम
सियलषनपुकारी॥ परेउधरणितलव्याकुलभारी॥ देखिदक्षिणदिशिहय
हिहिनाही॥ जिमिबिनुपंखबिहंगअकुलाही॥ दोहा॥ नहितणचरहिंनपियहि
जल॥ मोचतलोचनवारि॥ व्याकुलभयेउविषादगण॥ रघुबरवाजिनिहारि॥ १४७॥
चौपई॥ धरिधीरजतबकहहिंनिषादू॥ अबसुमंतपरिहरहुविषादू॥ तुमपंडित
परमारथज्ञाता॥ धरहुधीरलखिवामविधाता॥ विविधिकथाकहिकहिमृदुवानी
॥ रथबैठाऱ्योबरवसआनी॥ सोकशिथिलरथसकहिनहांकी॥ रघुबरबिरहपी
रउरबांकी॥ तरफराहिंमगुचलहिंनघोरे॥ बनम्रगमनहुआनिरथजोरे॥ अट
किपरहिंफिरिचितवहिंपीछे॥ रामवियोगविकलदुखतीछे॥ जोकहरामलषन
बेही॥ हिकरिहिकरिहृदयहेरहिंतेही॥ वाजिबिरहमतिकिमिकहिजाती॥ बिनु
मणिफणिकविकलजेहिभांती॥ दोहा॥ भयेउनिषादविषादबस॥ देखतसचिवतु
रंग॥ बोलिसुसेवकचारतब॥ दियेसारथीसंग॥ १४८॥ चौपई॥ गुहसारथिहिफि

रामु ५०

ह्योपङ्कथाई॥ बिरह बिषाद बरणि नहिं जाई॥ चले अवध लै रथहि निषादा॥ होत छ
णहि छण मग्न बिषादा॥ सोच सुमंत बिकल दुख दीना॥ धिक जीवन रघुबीर बिही
ना॥ रहहि न अंतहु अधम शरीरू॥ यश न लहे बिछुरत रघुबीरू॥ भये अयश अ
घ भाजन प्राना॥ कौन हेतु नहिं करत पयाना॥ अहह मंद मति अवसर चूका॥ अज
हु न हृदय होत दुइ टूका॥ मीजि हाथ शिर धुनि पछिताई॥ मनहु कृपण धनराशि
गवाई॥ बिरद बांधि बर बीर कहाई॥ चले समर जनु सुभट पराई॥ दोहा॥ बिप्र बिबेकी
बेदबिद॥ संमत साधु सुजाति॥ जिमि धोखे मदपान करि॥ सचिव सोच तेहि भांति
॥२१९॥ चौपई॥ जिमि कुलीन तिय साधु सयानी॥ पतिदेवता करम मन बानी॥ रहै
करम बस परिहर नाहू॥ सचिव हृदय तिमि दारुण दाहू॥ लोचन सजल दृष्टि भइ
थोरी॥ सुनै न श्रवण बिकल मति भोरी॥ सूखहिं अधर लागि मुह लाटी॥ जिव न जा
इ उर अवधि कपाटी॥ बिवरण भये न जाइ निहारी॥ मारेसि मनहु पिता महता
री॥ हानि गलानि बिपुल मन व्यापी॥ यमपुर पंथ सोच जिमि पापी॥ बचन न आ
व हृदय पछिताई॥ अवध काह मैं देखब जाई॥ राम रहित रथ देखिहि जोई॥ सकु
चिहि मोहि बिलोकत सोई॥ दोहा॥ धाइ पूछिहहि मोहि जब॥ बिकल नगर नरना

अजोधे
५२

उतरदेवमैंसवहितहृदयवज्रबैगरि॥२५०॥चौपई॥रखहिंदीनडखितसबमाता॥क
हवकाहमैंतिनहिविधाता॥रामजननिजबआइहिधाई॥सुमरिबछुजिमिधेनुलवाई
॥रखतउतरदेवमैंतेही॥गेबनरामलखनबेदेही॥जेहिसाछिदिहितेहिउतरदेवा॥जा
इअवधयहअबसुखलेवा॥रखहिंजबहिंरानडुखदीना॥जीवनजासुरामआधीना॥
देहौंउतरिकवनमुहलाई॥आयेऊंकुसलकुवरपहुंचाई॥सुनतलखनसियराम
संदेसू॥तणइवतनपरिहरवनरेसू॥दोहा॥हृदयनबिदरतपंकजिमि॥बिछुरत
प्रीतमनीर॥जानतहौंमोहिदीन्हविधि॥यहजातनासरीर॥२५१॥चौपई॥इहिविधि
करतपंथपछिताना॥तमसातीरतुरतरथआवा॥विदाकियेकरिबिनयनिषाहू
॥फिरेपायपरिविकलविषाहू॥पैठतनगरसचिवसकुचाई॥जनुमारेसिगुरुबा
ह्मणगाई॥बैठिविटपतरदिवसगवांवा॥सांझसमयतबअवसरपावा॥अवधप्र
वेसुकीन्हअंधिआरे॥पैठिभवनरथराखिउआरे॥जिन्हजिन्हसमाचारसुनिपा
ये॥भूपद्वाररथदेखनआये॥रथपहिचानिविकललखिघोरे॥गरहिंगातजिमिआ
तपवोरे॥नगरनारिनरब्याकुलकैसे॥निघटनीरमीनगणजैसे॥दोहा॥सचिवआ
गमनसुनतसब॥विकलभईरनिवास॥भवनभयंकरलागतेहि॥मानहुप्रेत

राम
५२

निवास॥१५२॥चौपई॥अतिआरतसबपूछहिंरानी।उतरुनआवबिकलभइबानी॥ न
सुनैनश्रवणनयननहिंसूझा।कहहुकहांनृपजेहितेहिबूझा॥दासिनदीखसचि
८ वबिकलाई॥कौशिल्यागृहगईलिवाई॥जाइसुमंतदीखकसराजा॥अमियरहित
जनुचंदबिराजा॥आसनशयनबिभूषणहीना।परेउभूमितलनिपटमलीना॥
॥लेइउसांससोचइहिभांती।सुरपुरतेंजनुषसेउययाती॥लेतसोचभरिछिणछिण
छाती॥जनुजरिपंखपरेउसंपाती॥रामरामकहरामसनेही।पुनिकहरामलषन
वैदेही॥दोहा॥देखिसचिवजयजीवकहिकीन्हेसिदंडप्रणाम॥सुनतउठेउब्याकुल
नृपति॥कहुसुमंतकहंराम॥१५३॥चौपई॥नृपसुमंतलीन्हउरलाई॥बूडतकछु
अधारजनुपाई॥सहितसनेहनिकटबैठारी।पूछतराउनयनभरिबारी॥रामकु
शलकहुसखासनेही॥कहंरघुनाथलषनबैदेही॥आनहुंफेरिकिबनहिंसिधा
ये॥सुनतसचिवलोचनजलछाये॥शोकबिकलपुनिपूछनरेसू।कहुंसियरामल
षनसंदेसू॥रामरूपगुणशीलसुभाऊ॥सुमिरिसुमिरिउरसोचतराऊ॥राउसुनाइ
दीन्हबनवासू॥सुनिमनभयेउनहरषहिरासू॥सोसुतबिछुरतगयेनप्राना॥कोपा
पीबडमोरसमाना॥दोहा॥सषारामसियलषनजहं॥तहांमोहिपहुंचाउ॥नाहि

अजो॰
४२

लषा हित चलन अब ॥ प्राण कहौं सत नात ॥ २५४॥ चौपई॥ सुनि सुनि सहृत मंत्रि हि
राऊ॥ प्रीतम सुअवन मंदेसु सुनाऊ। करऊ सषा सोइ बेगि तपाऊ। राम लषण सिय
बेग दिषाऊ॥ सचिव धीर धरि कहि म्रदु बानी॥ महाराज तुम पंडित ग्यानी॥ बीर सुधी
र धुरंधर देवा॥ साधु समाज सदा तुम सेवा॥ जन्म मरण सब दुख सुष भोगा॥ हानि ला
भ प्रिय मिलन वियोगा॥ काल कर्म बस होहिं गुसांई। बरबस राति दिवस की नाई॥
सुष हर्षहिं जड दुख बिलषाहीं॥ दोउ सम धीर धरहु मन माही॥ धीरज धरहुं बिबे
क बिचारी॥ छाडिय सोच सकल हितकारी॥ दोहा॥ प्रथम बास तमसा भयेउ। दूसर सु
रसरि तीर॥ न्हाइ रहे जल पान करि। सियसमेत दोउ बीर॥ २५५॥ चौपई॥ केवट की
न्ह बहुत सिवकाई॥ सो जामिनि सिंगरोर गवांई॥ होत प्रात बट छीर मंगावा॥ जटा मु
कुट निज सीस बनावा॥ राम सषा तब नाव मंगाई॥ प्रिया चढाइ चढे रघुराई॥ लषन ध
रै धनु बाण बनाई॥ आपु चढे प्रभु आयसु पाई॥ बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा। बो
ले बचन मधुर धरि धीरा॥ तात प्रणाम तात सन कहेउ॥ करि पाय परि बिनय बहोरी
॥ तात करिय जनि चिंता मोरी॥ बन मग मंगल कुशल हमारे॥ कृपा अनुग्रह पुण्य तु
म्हारे॥ छंद॥ तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुष पाइहौं॥ प्रतिपालि आयसु कु

राम
४२

शलदेषनपायपुनिफिरिआइहौं॥जननीसकलपरितोषकरिपरिपायकरिबिन
तीघनी॥तुलसीकीरेऊसोइयत्नजेहिबिधिकुशलरहहकोशलधनी॥सोरठा॥गुरु
गुरुसनकहबसंदेशूं॥बारबारपदपद्मगहि॥करबसोइउपदेस॥जेहिनसोचमो
हिअवधपति॥१५६॥चौपई॥पुरजनपरिजनसकलनिहोरी॥तातसुनावऊबिनती
मोरी॥सोइसबभांतिमोरहितकारी॥जातेंरहनरनाहसुषारी॥कहबसंदेशभरतकेआ
ये॥नीतिनतजवराजपदपाये॥पालऊप्रजहिकर्ममनबानी॥सेवेऊमातुसकलस
मजानी॥ओरनिभावहभायपभाई॥करिपितुमातुसुजनसेवकाई॥तातभांततेहि
हिराखवराऊ सोचमोरजेहिकरहितकाऊ॥लषनकहेकछुबचनकठोरा॥व
रजिरामपुनिमोहिनिहोरा॥बारबारनिजसपथदिवाई॥कहबिनताततलषनलरि
काई॥दोहरा॥कहिप्रणामकछुकहनलिय॥सियभइशिथिलसनेह॥थकित
बचनलोचनसजल॥पुलकतपल्लवितदेह॥१५७॥चौपई॥तेहिअवसररघु
बररुखपाई॥केवटपारहिनावचलाई॥रघुकुलतिलकचलेइहिभांति॥देषेउंठा
ढकुलिशधरिछाती॥मैंआपनिकिमिकहउंकलेसू॥जिअतफिरेउंलेरामसंदेसू॥
॥असकहिसचिवबचनरहिगयेऊ॥हानिगलानिसोचबसभयेऊ॥सुबतसुमं

अ॰ जो॰ ४२

तबचन नरनाहू ॥ परेउ धरनि उर दारुण दाहू ॥ तलफत बिषम मोह मनमता ॥ मांजा मन
हु मीन कहं ब्यापा ॥ करि बिलाप सब रोवहिं रानी ॥ महा बिपति किमि जाइ बषानी ॥ सुनि
बिलाप दुखहू दुख लागा ॥ धीरजहू कर धीरज भागा ॥ दोहा ॥ भयेउ कोलाहल अवध
अति ॥ सुनि नृप राउर सोरु ॥ बिपुल बिहंग बन परेउ निसि ॥ मानहुं कुलिश कठोरु ॥ १५८
चौपई ॥ प्राण कंठगत भयेउ भुआलू ॥ मणि बिहीन जिमि ब्याकुल ब्यालू ॥ इंद्रिय सकल
भइ नारी ॥ जनु सर सरसिज बन बिनु बारी ॥ कौशल्या नृप दीख मलाना ॥ रबिकुल रबि अ
थये जिय जाना ॥ उर धरि धीर राम महतारी ॥ बोली बचन समय अनुहारी ॥ नाथ समु
झि मन करिय बिचारू ॥ राम बियोग पयोधि अपारू ॥ करणधार तुम अवध जहाजू ॥
चढेउ सकल प्रिय बणिक समाजू ॥ धीरज धरिय तु पाइय पारू ॥ नाहि त बूडहि सब प
रिवारू ॥ जो जिय धरिय बिनय पिय मोरी ॥ राम लषन सिय मिलब बहोरी ॥ दोहा
॥ प्रिया बचन मृदु सुनत नृप ॥ चितयउ आंखि उघारि ॥ तलफत मीन मलीन जनु ॥ सीं
चत सीतल बारि ॥ १५९ ॥ चौपई ॥ धरि धीरज उठि बैठ भुआलू ॥ कहु सुमंत कहं रा
म कृपालू ॥ कहां लषन कहं राम सनेही ॥ कहं प्रिय पुत्र बधू बैदेही ॥ बिलपत राउ बिक
ल बहु भांती ॥ भइ जुग सरिस सिराति न राती ॥ तापस अंध श्राप सुधि आई ॥ कौश

राम ४२

सहि सब कथा सुनाई। भयेउ बिकल बरनत इतिहासा। राम रहित धिक जीवन आसा।
सो तनु राषि करब मैं काहा॥ जेइ न प्रेम पन मोर निबाहा॥ हा रघुनंदन प्राण पिरीते ॥
तुम बिन जिअत बहुत दिन बीते॥ हा जानकी लषन हा रघुबर॥ हा पितु हित चित चा
तक जलधर॥ दोहा॥ राम राम कहि राम कहि। राम राम कहि राम॥ तनु परिहरि रघुब
र बिरह। राउ गये सुरधाम॥ २६०॥ चौपई॥ जिअन मरण फल दसरथ पावा॥ अंड
अनेक अमल यश छावा॥ जियत राम बिधु बदन निहारी॥ राम बिरह मरि मरण संवारी।
॥ शोक बिकल सब रोवहिं रानी॥ रूप शील बल तेज बषानी॥ करहिं बिलाप अनेक प्र
कारा॥ परहिं भूमितल बारहिं बारा॥ बिलपहिं बिकल दास अरु दासी॥ घर घर रुदन क
रहिं पुरबासी॥ अथय आजु भानुकुल भानू॥ धर्म अवधि गुण रूप निधानू॥ गारी सक
ल कैकेकयिहि देहीं॥ नयन बिहीन जग जेहीं॥ इहि बिधि बिलपत रैन बिहानी॥ आये
सकल महामुनि ज्ञानी॥ दोहा॥ तब बसिष्ठ मुनि समय सम॥ कहि अनेक इतिहास॥ शो
क निवारेउ सबहि कर॥ निज बिज्ञान प्रकास॥ २६१॥ चौपई॥ तेल नाव भरि नृप तनु रा
षा॥ दूत बुलाइ बहुरि अस भाषा॥ धावहु बेगि भरत पहं जाहू॥ नृप सुधि कतहुं कह
हु जनि काहू॥ इतनेक कहेउ भरत सन जाई॥ गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई॥ सुनि मुनि आ

अ॰जो॰ ४४

पसुधावतनधाये॥ चलेबेगिबरबाजिलजाये॥ अनरथअवधअरंभेउजबतें॥ कुशगुनहोहि
भरतकहंतबते॥ देखहिरातिभयानकसपना॥ जागिकरहिंकटुकोटिकलपना॥ बिप्रजेवा
हिदेहिदिनदाना॥ शिवअभिषेककरहिंबिधिनाना॥ मांगहिहृदयमहेशमनाई॥ कु
शलमातुपितुपरिजनभाई॥ दोहा॥ इहिबिधिसोचतभरतमन॥ धावनपहुंचेआइ॥
गुरुअनुशासनश्रवणसुनि॥ चलेगणेशमनाइ॥१५८॥ चौपई॥ चलेसमीरबेगिहय
हांके॥ नांघतसरितशैलबनबांके॥ हृदयसोचबडकछुनसोहाई॥ असजानहि
जियजांउंउडाई॥ एकनिमेषबरषसमजाई॥ इहिबिधिभरतनगरनियराई॥ असगु
नहोहिंनगरपैठारा॥ रटहिंकुभांतिकुखेतकरारा॥ खरसृगालबोलहिंप्रतिकु
ला॥ सुनिसुनिहोहिभरतमनसूला॥ श्रीहतसरसरिताबनबागा॥ नगरबिशेषभयाव
नलागा॥ खगमृगहयगयजाहिंनजोये॥ रामवियोगकुरोगबिगोये॥ नगरनारिनर
निपटदुखारी॥ मनहुंसबनिसबसंपतिहारी॥ दोहा॥ पुरजनमिलहिंनकहहिंक
छु॥ गंवहिंजोहारहिंजाहिं॥ भरतकुशलपूछनसकहिं॥ भयबिषादमनमांहिं॥१५९
चौपई॥ हाटबाटनहिंजायनिहारी॥ जनुपुरदहुंदिशिलागिदवारी॥ आवतसुत
सुनिकेकयिनंदिनि॥ हरषीरविकुलजलरुहचंदिनि॥ सजिआरतीमुदितउ

राम ४४

विधाई।बारहिभेटहिमनवनलैआई॥भरतदुखितपरिवारनिहारा॥मानहुतुहिनव
नजवनमारा॥कैकेयीहर्षितइहिभांती॥मनहुमुदितदवलाइकिराती॥सुतहिंस
सोचदेखिमनमारे॥पूछतिनैहरकुशलहमारे॥सकलकुशलकहिभरतसुनाई
पूछीनिजकुलकुशलभलाई॥कहुकहतातकहांसबमाता॥कहांसियरामलषन
प्रियभ्राता॥दोहा॥सुनिसुतबचनसनेहमय।कपटनीरभरिनैन॥भरतश्रवणमन
सूलसम॥पापिनिबोलीबैन॥२६४॥चौपई॥तातबातमैंसकलसंवारी॥भइमंथरासहा
यबिचारी॥कछुककाजविधिवीचविगारेउ॥नृपतिसुरपतिपुरपगुधारेउ॥सुनतभ
रतभयेविकलविषादा॥जनुसहमेउकरिकेहरिनादा॥तात तातहातातपुकारी॥परेभू
मितलव्याकुलभारी॥चलतनदेखनपायउतोही॥तातनरामहिसौंपेहुमोही॥बहुरि
धीरधरउठेसंभारी॥कहुपितुमरणहेतुमहतारी॥सुनिसुतबचनकहतकैकयी॥म
र्मपांछिजनुमाहुरदेयी॥आदिहितेंसबआपनिकरणी॥कुटिलकठोरमुदितमनब
रणी॥दोहा॥भरतहिबिसरेउपितुमरण।सुनतरामबनगौन॥हेतुअपनपउजा
निजिय।थकितरहेधरिमौन॥२६५॥चौपई॥विकलविलोकसुतहिसमझावति॥मनहु
जरेपरलोनलगावति॥तातरामनहिंसोचनयोग॥बढेउसुकृतजसकीन्हेउभोग॥जी

अ॰ जो॰
५५

वनसकलजन्मफलपाये॥ अतअमरपतिसदनसिधाये॥ असअनुमानिसोचपरिहर
हू॥ सहितसमाजराजपुरकरहू॥ सुनिसुठिसहमेउराजकुमारा॥ पाकेछतजनुलागुअं
गारा॥ धीरजधरभरिलेहिंउसासा॥ पापिनिसबहिंभांतिकुलनासा॥ जोपैकुरुचिरही
असतोही॥ जनमतकाहेनमारेसिमोही॥ पेडकाटितैंपल्लवसीचा॥ मीनजिअननि
तिवारिउलीचा॥ दोहा॥ हंसवंसदशरथजनक॥ रामलषनसेभाइ॥ जननीतूंजननी
भई॥ विधितेकछाबसाइ॥ १६६॥ चौपई॥ जबतेकुमतिकुमतजियठयऊ॥ खंडखंडहो
इहृदयनगयऊ॥ वरमांगतमनभइनहिंपीरा॥ गरिनजीहमुहपरेउनकीरा॥ नृपप्र
तीतितोरिकिमिकीन्ही॥ मरणकालविधिमतहरलीनी॥ विधिहुनारिहृदयगतिजा
नी॥ सकलकपटअघअवगुणखानी॥ सरलसुशीलधर्मरतराऊ॥ सोकिमिजानहि
तीयसुभाऊ॥ असकोजीवजंतुजगमाही॥ जेहिरघुनाथप्राणप्रियनाही॥ भेअतिअ
हितरामतेउतोही॥ कोतूअहसिसत्यकहुमोही॥ जोहसिसोहसिमुहमसिलाई॥ आं
खओटउठिबैठहिंजाई॥ दोहा॥ रामविरोधीहृदयतें॥ प्रगटकीन्हविधिमोहि॥ मोसमा
नकोपातकी॥ वादिकहौंकछुतोहि॥ १६७॥ चौपई॥ सुनिशत्रुघ्नमातुकुटिलाई॥ जर
हिंगातरिसिकछुनबसाई॥ तेहिअवसरकुवरीतहंआई॥ वसनविभूषणविविधव

भाई॥ लखिरिसिभरेउलषनलघुभाई॥ बरतअनलघृतआहुतिपाई॥ हुमगिलातत
किकूबरमारा॥ परिमुहभरिमहिकरतिपुकारा॥ कूबरटूटेउफूटकपारू॥ दलितदस
नमुखरुधिरप्रचारू॥ आहिदइमैंकाहनसावा॥ करतनीकफलअनइसपावा॥ सुनि
रिपुहनलखिनखसिखखोंटी॥ लगेघसीटनधरिधरिझोंटी॥ भरतदयानिधिदीनछुडा
ई॥ कौसल्यापहिगेदोउभाई॥ दोहा॥ मलिनबसनबिबरणबिकल॥ कृसशरीरदुषभ
भार॥ कनककलपतरबेलिबन॥ मानहुहनीतुषार॥ १६८॥ चौपई॥ भरतहिंदेखि
मातुउठिधाई॥ मूर्छितअवनिपरीअकुलाई॥ देखतभरतबिकलभयेभारी॥ परेच
रणतनदशाबिसारी॥ मातुतातकहंदेहिंदेखाई॥ कहंसियरामलषनदोउभाई॥ के
कयिकतजनमीजगमांझा॥ जौंजनमीतभइकाहेनबांझा॥ कुलकलंकजेहिजनमेउमो
ही॥ अपजसभाजनप्रियजनद्रोही॥ कोत्रिभुवनमोहिसरिसअभागी॥ गतिअसितोरिमा
तुजेहिलागी॥ पितुसुरपुरबनरघुकुलकेतू॥ मैंकेवलसबअनरथहेतु॥ धिकमोहिभ
येउबेणुबनआगी॥ दुसहदाहदुखदूषणभागी॥ दोहा॥ मातुभरतकेबचनमृदु॥ सु
निपुनिउठीसंभारि॥ लियेउठाइलगाइउर॥ लोचनमोचतिबारि॥ १६९॥ चौपई॥ सर
लसुभायमायहियलाये॥ अतिहितमनहुंरामफिरिआये॥ भेटेउबहुरिलषनल

अजो० ९६

घुनाई॥ सोकसनेहन हृदयसमाई॥ देखिसुभावकहतसबकोई॥ राममातुअसकाहेनहोई
॥ मातानरतगोदवैगारे॥ आसुसहितमृदुवचनउचारे॥ अजहुंबछबलिधीरजधरहू
॥ कुसुमयसमुझिसोकपरिहरहू॥ जनिमानहुहियहानिगलानी॥ कालकर्मगति
अघटितजानी॥ काहुंहिंदोषदेहुजनिताता॥ भामोहिसबविधिवामविधाता॥ जोऐ
तेहुदुखमोहिजिआवा॥ अजहुंकोजानैकातेहिभावा॥ दोहा॥ पितुआयसुभूषणबसन
॥ ताततजेरघुवीर॥ विस्मयहर्षनहृदयकछु॥ पहिरेवल्कलचीर॥ १७०॥ चौपई॥ मु
खप्रसन्नमनरागनरोष॥ सबकरसबविधिकरिपरितोष॥ चलेविपिनसुनिसियसंग
लागी॥ रहीनरामचरणअनुरागी॥ सुनतहिलषनचलेउठिसाथा॥ रहेनयतनकियेर
घुनाथा॥ तबरघुपतिसबहीसिरनाई॥ चलेसंगसियअरुलघुभाई॥ रामलषनसिय
बनहिंसिधाये॥ गईनसंगनप्राणपठाये॥ यहसबभाइन्हआखिनआगे॥ तउनत
जातनजीवअभागे॥ मोहिनलाजनिजनेहनिहारी॥ रामसरिससुतमैमहतारी॥ जिये
मरेभलभूपतिजाना॥ मोरहृदयशतकुलिसमाना॥ दोहा॥ कौशल्याकेबचसुनि
॥ भरतसहितरनिवास॥ व्याकुलबिलपतराजगृह॥ मानहुसोकनिवास॥ १७१॥
चौपई॥ बिलपहिंविकलभरतदोउभाई॥ कौशल्यालियहृदयलगाई॥ भांतिअने

राम ९६

कभरतसमुझाये॥ कहिविवेकबरबचनसुनाये॥ भरतहुमातुसकलसमुझाई॥ कहि
पुराणश्रुतिकथासुहाई॥ [illegible]॥ छलविहीनशुचिसरल
सुवाणी॥ बोलेभरतजोरिजुगपाणी॥ जेअघमातुपितागुरुमारे॥ गाइगोठमहिसु
रपुरजारे॥ जेअघतियबालकबधकीन्हे॥ मीतमहीपतिमाहुरदीन्हे॥ जेपातकउ
पपातकअहहीं॥ कर्मबचनमनभवकबिकहहीं॥ दोहा॥ जेपरिहरिहरिहरचरण
॥ भजहिंभूतगणघोर॥ तिन्हकीगतिमोहिदेउविधि॥ जौंजननीमतमोर॥१७२॥ चौ
पई॥ बेचहिंबेदधर्मदुहिलेहीं॥ पिशुनपरापापकहिदेहीं॥ कपटीकुटिलकलहप्रि
यक्रोधी॥ वेदविदूषकविश्वबिरोधी॥ लोभीलंपटलोलुपचारा॥ जेताकहिंपर
धनपरदारा॥ पावउँमैंतिन्हकरगतिघोरा॥ जौंजननीयहुसंमतमोरा॥ जेनहिंसा
धुसंगअनुरागे॥ परमारथपथविमुखअभागे॥ जेनभजहिंहरिनरतनुपाई॥ जि
न्हहिनहरिहरसुयशसुहाई॥ तजिश्रुतिपंथबामपथचलहीं॥ वंचकबिरचिबे
षजगछलहीं॥ जननीमानमोरविश्वासा॥ मनक्रमवचनरामकरदासा॥ छंद॥
मनबचनकर्मकृपायतनकरदासमैं॥ सुनमातुरी॥ उरबसतरामसुजानजानतश्री
तिअरुचातुरी॥ असकहतलोचनबहतजलतनपुलकनखलेषतमही॥ हिय

लायलियेबहोरिजननीजानिशत्रुपदरतसरी॥दोहा॥मातुभरतकेबचनसुनिसां
चेसरलसुभाय॥कहतिरामप्रियतातुम॥सदाबचनमनकाय॥१७०॥चौपई॥रामप्रा
णतेंप्राणतुम्हारे॥तुमरघुपतिहिप्राणतेंप्यारे॥बिधुबिषचुवैश्रवैहिमआगी॥हो
इवारिचरबारिबिरागी॥भयेग्यानबरुमिटैनमोहू॥तुमरामहिप्रतिकूलनहोहू
॥मततुम्हारअसजोजगकहहीं॥सोसपनेहुसुखसुगतिनलहहीं॥असकहिमा
तुभरतहियलाये॥थनपयश्रवहिंनयनजलछाये॥करतबिलापबिपुलइहि
भांती॥बैठेबीतियईसबराती॥बामदेवबशिष्ठमुनिआये॥सचिवमहाजनसकलबुला
ये॥मुनिबहुभांतिभरतउपदेसे॥कहिपरमारथबचनसुदेसे॥दोहा॥तातहृदय
धीरजधरहु॥करहुजोअवसरआजु॥उठेभरतगुरुबचनसुनि॥करनकहेउस
बकाजु॥१७१॥चौपई॥नृपतनबेदबिदितअन्हवावा॥परमबिचित्रबिमानबनावा
॥गहिपदभरतमातुसबराखी॥रहीरामदरसनअभिलाखी॥चंदनअगरभारबहु
आये॥अमितअनेकसुगंधसुहाये॥सरजुतीररचिचिताबनाई॥जनुसुरपुरसोपानसु
हाई॥यहिबिधिदाहक्रियासबकीन्ही॥बिधिवतन्हाइतिलांजलिदीन्ही॥सोधिसमृतिस
बबेदपुराना॥कीन्हभरतदसगात्रबिधाना॥जहंजसमुनिबरआयसुदीन्ही॥तहंतस

सहसभांतिसबकीन्ही॥ नयेविप्रबहुदियेसबदाना॥ धेनुवाजिगजवाहननाना॥ दोहा॥
सिंहासनभूषणवसन॥ अन्नधरणिधनधाम॥ दियेभरतलहिभूमिसुर॥ भेपरिपूरण
काम॥ २७५॥ चौपई॥ पितुहितभरतकीन्हजसकरणी॥ सोमुखलाखजाइनहिंबरणी
॥ सुदिनसोधिमुनिवरतबआये॥ सकलमहाजनसचिवबुलाये॥ बैठेराजसभासब
जाई॥ पठयेबोलिभरतदोउभाई॥ भरतवसिष्टनिकटबैठारे॥ नीतिधर्ममयबचनउ
चारे॥ प्रथमकथासबमुनिवरबरणी॥ केकयिकुटिलकीन्हजसुकरणी॥ नृपधर्म
व्रतसत्यसराहा॥ जेहितनुपरिहरिप्रेमनिवाहा॥ कहतरामगुणशीलसुभाऊ॥ सज
लनयनपुलकेमुनिराऊ॥ बहुरिलषनसियप्रीतिबषानी॥ शोकसनेहमगनमुनि
ज्ञानी॥ दोहा॥ सुनहुभरतभावीप्रबल॥ बिलखिकहेउमुनिनाथ॥ हानिलाभजीवनम
रण॥ जसअपजसविधिहाथ॥ २७६॥ चौपई॥ असबिचारिकेहिदीजियदोसू॥ व्यर्थका
हिपरकीजियरोसू॥ तातबिचारकरहुमनमाहीं॥ सोचयोगदशरथनृपनाहीं॥ सोचि
यविप्रजोबेदबिहीना॥ तजिनिजधर्मबिषयलयलीना॥ सोचियनृपतिजोनीतिनजाना॥
॥ जेहिनप्रजाप्रियप्राणसमाना॥ सोचियबैश्यकृपणधनवानू॥ जोनअतिथिशिवभक्तिसुजा
नू॥ सोचियशूद्रविप्रअपमानी॥ मुखरमानप्रियज्ञानगुमानी॥ सोचियपुनिपतिबंच

अजो॰
४८

कनारी॥ कुटिलकलहप्रियइछाचारी। सोचियबटुनिजब्रतपरिहरहीं॥ जोनहिंगुरुआयसुअनुसरई॥ दोहा॥ सोचियग्रहीजोमोहबस। करैधर्मपथत्याग॥ सोचिययतीप्रपंचबस। बिगतबिबेकबिराग॥ १७७॥ चौपई॥ बैषानससोइसोचनयोगू॥ तपबिहायजेहिभावैभोगू॥ सोचियपिशुनअकारणक्रोधी॥ जननिजनकगुरुबंधुबिरोधी॥ सबबिधिसोचियपरअपकारी। निजतनपोषकनिर्दयभारी॥ सोचनीयनहिंकोशलराऊ॥ भुवनचारिदशप्रगटप्रभाऊ॥ नभयउनअहैनअबहोनिहारा भूपभरतजसपितातुम्हारा॥ सोचनीयसबहीबिधिसोई॥ जोनछाडिछलहरिजनहोई॥ बिधिहरिहरसुरपतिदिशनाथा॥ बरणहिंसबदशरथगुणगाथा॥ दोहा॥ कहहुतातकेहिभांतिकोउ॥ करिहिबडाइतासु॥ रामलषनतुमशत्रुहन॥ सरिससुअनशुचिजासु॥ १७८॥ चौपई॥ सबप्रकारभूपतिबडभागी॥ बादिबिषादकरियतेहिलागी। यहसुनिसमुझिसोचपरिहरहू॥ शिरधरिराजरजायसुकरहू। रायराजपदतुमकहदीन्हा॥ पिताबचनफुरचाहियकीन्हा॥ तजेरामजेहिबचनहिलागी॥ तनपरिहरेउरामबिरहागी। नृपहिबचनप्रियनहिंप्रियप्राणा। करहुतातपितुबचनप्रमाणा॥ करहुसीसधरिनृपरजाई॥ हैतुमकहासबभांतिभलाई। परशुरामपितुआज्ञाराषी॥ मारीमातुलोगसबसाषी

राम
४८

मट्टगंजी १७ का

५

तनययातिन्हिंयोबनदऊ ॥ पितुआज्ञाअघअयशननऊ ॥ दोहा ॥ अनुचितउचितवि
चारतजि ॥ जोपालहिंपितुबैन ॥ तेभाजनसुखसुयशके ॥ बसहिंअमरपतिऐन ॥ १७९
॥ चौपई ॥ अबधिनरेसबचनकुरकरहू ॥ पालहुप्रजाशोकपरिहरहू ॥ सुरपुरनृ
पपाइहियपरितोषू ॥ तुमकहंसुकृतसुयशनहिंदोषू ॥ बेदबिहितसंमतसबहीका ॥
जेहिपितुदेइसोपावैटीका ॥ करहुराजपरिहरहुगलानी ॥ मानहुमोरबचनहित
जानी ॥ सुनिसुखलहबरामबैदेही ॥ अनुचितकहबनपंडितकेही ॥ कोशल्यादिसक
लमहतारी ॥ तेउप्रजासुषहोंहिंसुषारी ॥ प्रमतुह्मारराम करजानिहिं ॥ सोसबविधि
तुमसनभलमानिहिं ॥ सोपेहुराजरामकेआये ॥ सेवाकरेहुसनेहसुहाये ॥ दोहा
॥ कीजियगुरुआयसुअवशि ॥ कहहिंसचिवकरजोरि ॥ रघुपतिआयउचितजस
॥ तवतसकरबवहोरि ॥ १८० ॥ चौपई ॥ कोशल्याधरिधीरजकहहीं ॥ सतपथ्यगुरु
आयसुअहई ॥ सोआदरियकरियाहितमानी ॥ तजियबिषादकालगतिजानी ॥
बनरघुपतिसुरपुरनरनाहू ॥ तुमइहिभांतितातकदराहू ॥ परिजनप्रजासचिव
कहअंबा ॥ तुमहीसुतसबकहअबलंबा ॥ लखिबिधिबामकालकविनाई ॥ धीर
जधरहुमातुबलजाई ॥ शिरधरिगुरुआयसुअनुसरहू ॥ प्रजापालिपुरजनदुष

हरहू॥ गुरके बचन सचिव अभिनंदन॥ सुनत भरत हिय जल सह चंदन॥ सुनी बहो
रि मातु मृदु बानी॥ शील सनेह सरल रस सानी॥ छंद॥ सानी सरल रस मातु बानी सुनि
भरत ब्याकुल भये॥ लोचन सरोरुह श्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये॥ सो दशा दे
खत समय तेहि बिसरी सबहि सुध देह की॥ तुलसी सराहत सकल सादर सीव सहज स
नेह की॥ सोरठा॥ भरत कमल कर जोरि॥ धर्म धुरंधर धीर धरि॥ बचन अमिय जनु बो
रि॥ देत उचित उतर सबहि॥ १७८॥ चौपई॥ मोहि उपदेश दीन्ह गुरु नीका॥ प्रजा सवि
व संमत सबही का॥ मातु उचित धरि आयसु दीन्हा॥ अवसि सीस धरि चाहौं कीन्हा॥
गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी॥ सुनि मन मुदित करिय भल जानी॥ उचित कि अनुचि
त किये बिचारू॥ धर्म जाइ शिर पातक भारू॥ तुम तौ देहु सरल शिख सोई॥ जो आचर
त मोर हित होई॥ जद्यपि यह समुझत हौं नीके॥ तदपि होत परितोष न जी के॥ अब
तुम बिनय मोरि सुनि लेहू॥ मोहि अनुहरत शिखावन देहू॥ उतर देउं छमब अपरा
धू॥ दुखित दोष गुण गणहिं न साधू॥ दोहा॥ पितु सुरपुर सिय राम बन॥ करण कह
हु मोहि राज॥ इहि ते जानहु मोर हित॥ कै आपन बड़ काज॥ १७९॥ चौपई॥ हित ह
मार सियपति सेवकाई॥ सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई॥ मैं अनुमानि दीख मन माहीं॥

म

आनउपायमोरहितनाहीं॥शोकसमाजराजकेहिलेखें॥लखनरामसियपदबिनुदे
खें॥बादिबसनबिनुभूषणभारू॥बादिबिरतिबिनुब्रह्मबिचारू॥सरुजशरीरबादि
बहुभोगा॥बिनुहरिभक्तिजापजपयोगा॥बादिजीवबिनुदेहसुहाई॥बादिमोरसबबि
नुरघुराई॥जाउँरामपहँआयसुदेहू॥एकहिआंकमोरहितएहू॥मोहिनृपकरि
आपनभलचहहू॥सोउसनेहजडताबसकहहू॥दोहा॥कैकेयीसुतकुटिलमति॥
रामबिमुखगतलाज॥तुमचाहतसुखमोहबस॥मोहिसेअधमकेराज॥१७७॥चौ
पई॥कहौंसाचसबसुनिपतियाहू॥चाहियधर्मशीलनरनाहू॥मोहिराजहठिदे
हहुजबहीं॥रसारसातलजाइहितबहीं॥मोहिसमानकोपापनिवासी॥जेहिलगि
सीयरामबनवासी॥रायरामकहँकाननदीन्हा॥बिछुरतगमनअमरपुरकीन्हा॥
मैंशठसबअनरथकरहेतू॥बैठबातसबसुनउँसचेतू॥बिनुरघुबीरबिलोकिअवास
॥रहेप्राणसहिजगउपहासू॥रामपुनीतबिषयरसरूषे॥लोलुपभूमिभोगकेभूखे॥क
हलौंकहौंहृदयकठिनाई॥निदरिकुलिशजेहिलहीबडाई॥दोहा॥कारणतेका
रजकठिन॥होइदोषनहिंमोर॥कुलिशअस्थितेउपलते॥लोहकरालकठोर॥१७८
॥चौपई॥कैकेयीनवतनुअनुरागे॥पावरप्राणअघाइअभागे॥जोप्रियबिरहप्रा

नप्रियलागे १

अ॰जो॰ ५०

देखबसुनबहुतअबआगे ॥ लषनरामसियकहुबनदीन्हा ॥ पठयअमरपुरपतिहि
तकीन्हा ॥ लीन्हबिधवपनअपयशआपू ॥ दीन्हेउप्रजहिशोकसंतापू ॥ मोहिदीन्हसु
खसुयशसुराजू ॥ कीन्हकेकयीसबकरकाजू ॥ इहितेमोरकाहअबनीका ॥ तेहिपर
देनकहहुतुमटीका ॥ केकईजठरजन्मिजगमाहीं ॥ यहमोहिकहंकछुअनुचितनाहीं
मोरबातसबबिधिहिबनाई ॥ प्रजापांचकतकरहुसहाई ॥ दोहा ॥ ग्रहग्रहीतपुनि
बातबस ॥ तेहिपुनिबातबस ॥ तेहिपुनिबीछीमार ॥ ताहिपियाइयबारुणी ॥ कहहु
कवनउपचार ॥ १८५ ॥ चौपई ॥ कैकयिसुअनयोगजगजोई ॥ चतुरबिरंचिदीन
मोहिसोई ॥ दशरथतनयरामलघुभाई ॥ दीन्हमोहिबिधिबादिबडाई ॥ तुमसबकहहु
कढाबनटीका ॥ रामराजसबहीकहंनीका ॥ उतरदेउंकेहिबिधिकेहिकेही ॥ करहु
सुखेनयथारुचिजेही ॥ मोहिकुमातुसमेतबिहाई ॥ कहहुकहहिकोकीन्हभलाई
॥ मोहिबिनुकोसचराचरमाहीं ॥ जेहिसियरामप्राणप्रियनाहीं ॥ परमहानिसबक
हबडलाहू ॥ अदिनमोरनहिंदूषणकाहू ॥ संशयशीलप्रेमबसअहहू ॥ सबेउचित
सबजोकछुकहहू ॥ दोहा ॥ राममातुसुठिसरलचित ॥ मोपरप्रेमबिशेषि ॥ कहहिसु
भावसनेहबस ॥ मोरिदीनतादेषि ॥ १८६ ॥ चौपई ॥ गुरुबिबेकसागरजगजाना ॥ जिन्ह

राम ५०

आपने दारुन दीनता कहहुं सबहि सिर नाइ देखि बिनु रघुनाथ पद जिअ के जरनि जाइ १८१
चौ०
हि विस्वकर खर समाना॥ मो कहं तिलक साजि सज सोऊ। भा बिधि बिमुख बिमुख सब
कोऊ॥ परिहरि राम सीय जग माहीं॥ कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं॥ सो मैं सुनब सह
ब सुख मानी॥ अंतहुं कीच तहां जहं पानी॥ डरु न मोहि जग कहिहि पोचू॥ परलोकहु
कर नाहिन सोचू॥ एकै बडु उर दुसह दवारी॥ मोहि लगि भे सिय राम दुखारी॥ जीव
न लाहु लषन भल पावा॥ सब तजि राम चरण मन लावा॥ मोर जन्म रघुबर बन ला
गी॥ झूठ काह पछिताउं अभागी॥ दोहा॥ आन उपाय मोहि नहिं सूझा॥ को जिय की
रघुबर बिनु बूझा॥ एकहि आंक इहै मन माहीं॥ प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं॥ य
द्यपि मैं अनभल अपराधी॥ भा मोहि कारण सकल उपाधी॥ तदपि शरण सन्मुख मो
हि देषी॥ छमि सब करिहहि कृपा बिशेषी॥ शील सकुच सुठि सरल सुभाऊ॥ कृपा स
नेह सदन रघुराऊ॥ अरिहु क अनभल कीन्ह न रामा॥ मैं शिशु सेवक यद्यपि बामा
॥ तुम्ह पै पांच मोर भल मानी॥ आयसु आशिष देहु सुबानी॥ जेहि सुनि बिनय मोहि
जन जानी॥ आवहिं बहुरि राम रजधानी॥ दोहा॥ यद्यपि जन्म कुमातु ते॥ मैं शठ
सदा सदोष॥ आपन जानि न त्यागिहै॥ मोहि रघुबीर भरोस॥ १८८॥ चौपई॥ भर
त बचन सब कहं प्रिय लागे॥ राम सनेह सुधा जनु पागे॥ लोग बियोग विषम बि

अ॰जो॰ ५१

बदागे ॥ मंत्र सजीव सुनत जनु जागे ॥ मातु सचिव गुरु पुर नारी ॥ सकल सनेह बिकल भै
नारी ॥ भरतहि कहहिं सराहि सराही ॥ राम प्रेम मूरति जनु आही ॥ तात भरत अस का
हे न कहहू ॥ प्राण समान राम प्रिय अहहू ॥ जे पामर आपनि जडताई ॥ तुम्हहि सुगाय
मातु कुटिलाई ॥ सो शठ कोटिक पुरुष समेता ॥ बसहिं कल्प शत नरक निकेता ॥
अहि अघ अवगुण मणि नहिं गहई ॥ हरै गरल दुष दारिद दहई ॥ [illegible] दोहा ॥
अवसि चलिय बन राम पह ॥ भरत मंत्र भल कीन्ह ॥ शोक सिंधु बूडत सबहि ॥ तुम
अवलंबन दीन्ह ॥ चौपाई ॥ भा सबके मन मोद न थोरा ॥ जनु घन धुनि सुनि चातक
मोरा ॥ चलब प्रात लखि निर्णय नीके ॥ भरत प्राणप्रिय भे सबही के ॥ मुनिहि बंदि भ
रतहि सिर नाई ॥ चले सकल घर बिदा कराई ॥ धन्य भरत जीवन जग माही ॥ शील
सनेह सराहत जाई ॥ कहहिं परस्पर भा बड काजू ॥ सकल चले कर साजहि साजू
॥ जेहि राखहिं घर रहु रखवारी ॥ सो जानै जनु गरदनि मारी ॥ कोउ कह रहन क
हिय नहिं काहू ॥ को न चहै जग जीवन लाहू ॥ दोहा ॥ जरौ सु संपति सदन सुष ॥ सु
हृद मातु पितु भाइ ॥ सन्मुख होत जो राम पद ॥ करै न सहज सहाइ ॥ १८५ ॥ चौ
पई ॥ घर घर बाहन साजहिं नाना ॥ हर्ष हृदय परभात पयाना ॥ भरत जाइ घर की

व

न

राम ५१

हृबिचारु॥नगरबाजिगजभवनभंडारू॥तौपरिनाममोरनभलाई॥पापशिरोमनिसा
इदोहाई॥करहिंस्वामिहितसेवकसोई॥दूषणकोटिदेइकिनकोई॥असबिचारिसुचि
सेवकबोले॥जेसपनेहुँनिजधर्मनडोले॥संपतिसबरघुपतिकैआही॥जौंबिनुयतन
चलौंतजिताही॥कहिसबमर्मधर्मसबभाषा॥जोजेहिलायकसोतेहंराखा॥करिसब
यतनराखिरखवारे॥राममातुपहंभरतसिधारे॥दोहा॥आरतजननीजानिसब॥भर
तसनेहसुजान॥कहेउनावनपालकी॥सुषदसुषासनजान॥१८९॥चौपई॥चकचकई
इवपुरनरनारी॥चहतप्रातउरआरतभारी॥जागतसबनिशिभयेउबिहाना॥भरतबु
लायेसचिवसुजाना॥कहेउलेउसबतिलकसमाजू॥बनहिंदेवमुनिरामहिंराजू॥बे
गचलहुसुनिसचिवजोहारा॥तुरततुरंगरथनागसवारे॥अरुंधतीअरुअग्निसमाऊ
॥रथचढिचलेप्रथममुनिराऊ॥विप्रबृंदचढिबाहननाना॥चलेसकलतपतेजनिधाना
॥नगरलोगसबसजिसजियाना॥शिवकासुभगनजायबषानी॥चढिचढिचलतभ
ईसबरानी॥बेपककैकौशिल्याआदिकसबरानी॥मिलनरामहितअतिअतुरा
गी॥तनधनधामनेकसुधिनाहीं॥सबतजिचढीपालकिनमाहीं॥चलीसेनचतुरंगअ
पारा॥सेनाधिपगजहयअसवारा॥रथबहूयपुरबासिनकेरे॥चलेनारिनरसहज

अ॰जो॰
५२

जठेरे। गुरुबसिष्टको सबपरिवारा। रथपुनि विकनपर होइ असवारा॥ बामदेव अ
रुबकुल द्विजरुंदा॥ चलेसकल मनकरत अनंदा॥ रजनी नरिपुरनर अरो नारी॥ क
रतर हेसबपंथपतयारी॥ होतबिहान नरत करिह जा। केवल प्रभुपद भावन हू
जा। हियधरिध्यान यही बरमांगा। रामपदारबिंद अनुरागा॥ शंकर बिधिगणेपू
कुलदेवा। करीसदामेंहितसेसेवा॥ सफलकरो सेवाहित करके॥ देखौं नयन चर
णरघुबरके। करतमनोरथ सुगन जनाये। दहिण अंग फूरकि सुखपायो। दोहा
॥ शंकर नमागणेपापद। करिकै नरत प्रणाम। कीन्ह पयानो हरषि हियकहिकै जे
सियराम॥ सोरठा॥ सौंपि नगर प्रभुचिसेवक कहि। सादरसब बहिलोइ॥ सुमिर रामासिय
चरणतबचले नरत दोउ नाई॥ १८२॥ चौपई॥ रामदरसबससब नरनारी॥ जनु
करिकरिणि चलेतकि बारी॥ बनसियरामसमुझि मनमांही॥ सानुज नरत पयादे जा
हीं॥ देखि सनेह लोग अनुरागे॥ उतरिचले हयगजरथ त्यागे॥ जाइसमीपराखि नि
जडोली॥ राममात तुम हदुवाणी॥ तात चढेहु रथबलि महतारी॥ होयहि प्रियपरिउषा
री॥ तुमरे चलत चलहिं सबलोगू॥ सकल शोक कृश नहिं मगयोगू॥ शिरधरि बच
नचरणसिरनाई॥ रथचढिचलत नयेदोउ नाई॥ तमसा प्रथम दिवस करिबासू॥ दूसरगो

थ

राम
५२

मतितिरनिवासू ॥ दोहा ॥ पयअहारफलअशनइक ॥ निशिभोजनसबलोग ॥ कर
तरामहितनेमव्रत ॥ परिहरिभूषणभोग ॥ १८८ ॥ चौपई ॥ सईतीरबसिचलेबिहा
ने ॥ शृंगबेरपुरसबनियराने ॥ समाचारसबसुनेउनिषादा ॥ हृदयबिचारकरैसबिषा
दा ॥ कारणकवनभरतबनजांहीं ॥ हैंकछुकपटभावमनमाही ॥ जौंपैजियनहो
तिकुटिलाई ॥ तौकतलीन्हिसंगकटकाई ॥ जानहिंसानुजरामहिमारी ॥ करौंअकं
टराजसुषारी ॥ भरतराजनीतिउरआनि ॥ तबकलंकअबजीवनहानी ॥ सकल
सुरासुरजुरहिंजुझारा ॥ रामहिसमरनजीतनिहारा ॥ काआचार्यभरतअसकर
ही ॥ नहिबिषबेलिअमियफलफरही ॥ दोहा ॥ असबिचारिगुहज्ञातिसनकहेउ
सजगसबहोहु ॥ हथवासहुबोरहुतरणि ॥ कीजियघाटारोहु ॥ १८९ ॥ चौप
ई ॥ होहुसजोइलरोकहुघाटा ॥ ठाटहुसकलमरणकेठाटा ॥ सन्मुखलोहभरतस
नलेहूं ॥ जियतनसुरसरिउतरणदेहूं ॥ समरमरणपुनिसुरसरिता ॥ रामकाजुछ
णभंगशरीरा ॥ भरतभाइनृपमैजननीचू ॥ बडेभागअसपाइयमीचू ॥ कोस्वामी
काजकरिहौंरणरारी ॥ यशधवलहुंभुवनदशचारी ॥ तजहुंप्राणरघुनाथनि
होरे ॥ दुऊंहाथमुदमोदकमोरे ॥ साधुसमाजनजाकरलेषा ॥ जायजियतजग

अजो० पत्र

सो महिमा रघु जननीपै ॐहांअनुदसौ फिदरौरै बांउंमनाजनंजोनंहरबेघा
वन विटकु टारू॥ दोहा॥ विगत निषाद निषाद पति सब हि बढायेउ छोहु॥ सुमि
रि राम मागेउ तुरत॥ तरकस धनुष सनाह॥ २९०॥ चौपई॥ बेगहिं भाइहु सजहु
जोउ॥ सुमिर जाइ कदरायन कोऊ॥ भलेहि नाथ सब कहहिं सहर्षा॥ एकहिं एक
बढावहिं कर्षा॥ चले निषाद जुहारी॥ सूर सकल रण रूचै सुरारी॥ सुमिरि राम
पदपंकज पनहीं॥ भाथा बांधि चढावेहिं धनुही॥ अंगुरि पहिरि कूंडि सिर धर
हीं॥ फरसा बांस सेल सम करहीं॥ एक कुशल अति ओडन षांडे॥ कूदहिं गग
न मनहु छिति छांडे॥ निज निज साजु समाज बनाई॥ गुह राउतहिं जुहारे जाई॥ दे
षि सुभट सब लायक जाने॥ लै लै नाम सकल सनमाने॥ दोहा॥ भाइहु लाव
हु धोष जनि॥ आज काजु बड मोहु॥ सुनि सरोष बोले सुभट॥ बीर अधीर न हो
हु॥ २९१॥ चौपई॥ राम प्रताप नाथ बल तोरे॥ करहिं कटक बिनु भट बिनु
घोरे॥ षेपक॥ शृंगबेरपुर बासी जेते॥ देषि भरत गति रोवैं तेते॥ देहिं केई दूष
ण नारी॥ जेहि जग जीवन कीन्ह दुषारी॥ भरत निषाद राम प्रिय जानो॥ अनु
जहद अपनो करि मानो॥ मिलत प्रेम न समगोय हमोति॥ यथा कुंवर नृप मिलें

जोहारी

पे

राम
पद
जाति

नि

जगबड बंचिक सोइ ॥२०७॥ चौपई॥ कपटी कायर कुमति कुजाती॥ लोक बेद बाहि
र सब भांती॥ राम कीन्ह आपन जबही तें॥ भयेउ भुवन भूषण तबही तें॥ देखि प्री
ति सुनि बिनय सुहाई॥ मिले बहोरि भरत लघु भाई॥ कहि निषाद निज नाम सु
बानी॥ सादर सकल जुहारी रानी॥ जानि लषन सम देहिं असीसा॥ जियहु सुषी सु
त लाख बरीसा॥ निरषि निषाद नगर नर नारी॥ भये सुषी जनु लषण निहारी॥ कहहिं
लहेउ यह जीवन लाहू॥ भेटेउ राम भद्र भरि बाहू॥ सुनि निषाद निज भाग बडाई
॥ प्रमुदित मन लै चले लिवाई॥ दोहा॥ सनकारे सेवक सकल॥ चले स्वामि रुष
पाइ॥ घर तरु तर सर बाग बन॥ बास बनायन्हि जाइ॥२०८॥ चौपई॥ शृंगबेरपुर भ
रत दीख जब॥ भये सनेह बस अंग शिथिल तब॥ सोहत दिये निषादहि लागू॥
जनु तनु धरे बिनय अनुरागू॥ इहि बिधि भरत सेन सब संगा॥ दीष जाइ जग पावे
नि गंगा॥ रामघाट कहं कीन्ह प्रणामा॥ भा मन मगन मिले जनु रामा॥ करहिं प्र
णाम नगर नर नारी॥ मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी॥ करि मज्जन मांगहिं कर जो
री॥ रामचंद्र पद प्रीति न थोरी॥ भरत कहे सुरसरि तव रेनू॥ सकल सुखद से
वक सुरधेनू॥ जोरि पाणि बर मांगो एहू॥ सीय राम पद सहज सनेहू॥ दोहा॥

अजो० इहिबिधिमज्जनभरतकरि॥गुरुअनुशासनपाइ॥मातुनहानीजानिसब॥डेरा
५४ चलेलेवाइ॥२०२॥चौपई जहंतहंलोगनडेराकीन्हा॥भरतसोधुसबहीकरली
राम न्हा॥गुरुसेवाकरिआयसुपाई॥मातुपहंगेदोउभाई॥चरणचापकहिकहि
मृदुबानी॥जननीसकलभरतसनमानी॥भाइहिसौंपिमातुसेवकाई॥आपु
निषादहिलीन्हबुलाई॥चलेसखाकरसोंकरजोरे॥शिथिलशरीरसनेहनथो
रे॥पूंछतसखहिंसोठावदेखाऊ॥नेकुनयनमनजरनिजुडाऊ॥जहंसियरामल
षननिशिसोये॥कहतभरेजललोचनकोये॥भरतबचनसुनिभयेउबिषादू॥
॥तुरततहांलेगयेउनिषादू॥दोहा॥जहंशिंशिपापुनीततरु॥रघुबरकियाबिश्रा
म॥अतिसनेहसादरभरत॥कीन्हेउदंडप्रणाम॥२०२॥चौपई॥कुशशाथरीनि
हारिसुहाई॥कीन्हप्रणामप्रदच्छिणजाई॥चरणरेखरजआंखिन्हलाई॥बनैन
कहतप्रीतिअधिकाई॥कनकबिंदुदुइचारिकदेखे॥राखेसीससीयसमलेखे
॥सजलबिलोचनहृदयगलानी॥कहतसखासनबचनसुबानी॥श्रीहतसीय
बिरहदुतिहीना॥यथाअवधनरनारिमलीना॥पिताजनकदेउपटतरकेही॥क राम
रतलभोगयोगजगजेही॥ससुरभानुकुलभानुभुआ॥जेहिसिहातअमरावति ५४
लु

पालू॥ प्राण नाथ रघुनाथ गुसांई॥ जो बड होत सो राम बडाई॥ दोहा॥ पति देवता सु
तीय मणि॥ सीय साथरी देषि॥ बिहरत हृदय न हहरि हर॥ पवि ते कठिन बिशेषि हरि
॥२०४॥ चौपई॥ लालन जोग लषन लघु लोने॥ भे न भाइ अस अहहिं न होने॥ पुरज
न प्रिय पितु मातु दुलारे॥ सिय रघुबीरहि प्राण पियारे॥ मृदु मूरति सुकुमार सुभा
ऊ॥ तात बाउ तन लागि न काऊ॥ ते बन सहहिं बिपति सब भांती॥ निदरे कोटि कु
लिश यह छाती॥ राम जनमि जग कीन्ह उजागर॥ रूप शील सुष सब गुण साग
र॥ पुरजन परिजन गुरु पितु माता॥ राम सुभाव सबहि सुषदाता॥ बैरिउ राम ब
डाई करहीं॥ बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं॥ शारद कोटि कोटि शत शेषा
॥ करि न सकहिं प्रभु गुण गण लेषा॥ दोहा॥ सुष स्वरूप रघुबंश मणि॥ मंगल मो
द निधान॥ ते सोवत कुश डासि महि॥ बिधि गति अति बलवान॥२०५॥ चौपई॥ राम सु
ना दुष कान न काऊ॥ जीवन तरु जिमि जुगवत राऊ॥ पलक नैन फणि मणि जेहि
भांति॥ जुगवहिं जननि सकल दिन राती॥ ते अब फिरत बिपिन पदचारी॥ कंद फल मुल
फूल अहारी॥ धिक कैकेयि अमंगल मूला॥ भइसि प्राण प्रीतम प्रतिकूला॥ मैं धिक धि
क अघ उदधि अभागी॥ सब उतपात भये जेहि लागी॥ कुल कलंक करि सृजेउ

विधाता॥ सोंइ द्रोह मोहि कीन्ह कुमाता॥ सुनि सप्रेम समझाव निषादू॥ नाथ करि
यकत वादि निषादु॥ राम तुमहि प्रिय तुमहि प्रिय रामहि॥ यह निरषदोषु विधि
वामहि॥ छंद॥ बिधि वाम की करणी कठन जेइ मातु कीन्ही वावरी॥ तेहि राति पुनि पु
नि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी॥ तुलसी न तुम सो राम प्रीतम कहत हौं हैं किये॥ प
रिणाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिय॥ सोरठा॥ अंतरजामी राम॥ सकुच स
प्रेम कृपायतन॥ चलिय करिय बिश्राम॥ यह बिचार दृढ आनि मन॥ २०६॥ चौपई॥
सषा बचन सुनि उर धरि धीरा॥ वास चले सुमिरत रघुवीरा॥ यह सुधि पाइ नगर नर नारी
॥ चले बिलोकन आरत भारी॥ परिदछिणा करि करहिं प्रणामा॥ देहिं कैकयिहि षोरि
निकामा॥ भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं॥ वाम बिधातहि दूषण देहीं॥ एक सराहहिं
भरत सनेहू॥ कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू॥ निंदहिं आपु सराहि निषादहिं॥ को क
हि सकै बिमोह निषादहिं॥ इहि बिधि राति लोग सब जागा॥ भा भिनुसार गुजारा लागा
॥ गुरहि सुनाव चढाइ सुहाई॥ नई नाव सब मातु चढाई॥ दंड चारि महं भा सब पारा॥
उतरि भरत तब सबहिं संभारा॥ दोहा॥ प्रातक्रिया करि मातु सब॥ वंदि गुरहि सिर नाइ
॥ आगे किये निषाद गण॥ दीन्हेउ कटक चलाइ॥ २०७॥ चौपई॥ कियेउ निषादनाथ अ

गुरआई ॥ मातु पालकी सकल चलाई ॥ साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा ॥ बिप्रन सहित गवनु गु
रु कीन्हा ॥ आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रणामू ॥ सुमिरे लखन सहित सियरामू ॥ गवने भरत पया
देहिं पाये ॥ कोतल संग जाहिं डोरिआये ॥ कहहिं सुसेवक बारहिं बारा ॥ होइय नाथ अ
स्व असवारा ॥ राम पयादेहिं पाव सिधाये ॥ हम कह रथ गज बाजि बनाये ॥ सिर भर जा
उ उचित अस मोरा ॥ सब ते सेवक धर्म कठोरा ॥ देखि भरत गति सुनि मृदु बानी ॥ सब सेव
क गण गरहिं गलानी ॥ दोहा ॥ भरत तीसरे पहर कहं ॥ कीन्ह प्रवेश प्रयाग ॥ कहत राम
सियराम सिय ॥ उमगि उमगि अनुराग ॥ २०८ ॥ चौपई ॥ फलका फलकत पायन कैसे
॥ पंकज कोष ओष कण जैसे ॥ भरत पयादेहिं आये आजू ॥ भये दुखित सुनि सकल
समाजू ॥ खबरि लीन्ह सब लोग नहाये ॥ कीन्ह प्रणाम त्रिवेणी आये ॥ सबहि सि
तासित नीर नहाने ॥ दिये दान महिसुर सनमाने ॥ देखत श्यामल धवल हलोरे ॥ पु
लक शरीर भरत कर जोरे ॥ सकल काम प्रद तीरथ राऊ । बेद बिदित जग प्रगट प्रभा
ऊ ॥ मागो भीख त्यागि निज धरमू ॥ आरत काह न करत कुकरमू ॥ अस जिय जानि
सुजानि सुदानी ॥ सफल करो जग याचक पानी ॥ दोहा ॥ अर्थ न धर्म न काम रुचि ॥ गति
न चहो निर्बान ॥ जन्म जन्म रति राम पद ॥ यह बरदान न आन ॥ २०९ ॥ चौपई ॥ जान

हिंरामकुटिलकरमोही॥लोगकहैगुरुसाहेबद्रोही॥सीतारामचरणरतिमोरे॥अनुदि
नबढौअनुग्रहतोरे॥जलदजन्मभरिसुरतिबिसारे॥याचतजलपविपाहनडारे॥चा
तकरटनिघटेघटिजाई॥बढेप्रेमसबभांतिभलाई॥कनकहिबानचढैजिमिदाहे
॥तिमिप्रीतमपदनेमनिबाहे॥भरतबचनसुनिमाझत्रिबेनी॥भैम्रदुबाणिसुमंगल
देनी॥तातभरततुमसबबिधिसाधू॥रामचरणअनुरागअगाधू॥बादिगलानिक
रहिमनमाही॥तुमसमरामहिप्रियकोउनाही॥दोहा॥तनपुलकेहियहर्षसुनि॥
बेणिबचनअनुकूल॥भरतधन्यकहिधन्यसुरहर्षितबर्षहिंफूल॥२०॥
चौपई॥प्रमुदिततीरथराजनिवासी॥बैषानसबटुग्रहीउदासी॥कहहिंपरस्पर
मिलिदसपांचा॥भरतसनेहसीलसुचिसांचा॥सुनतरामगुणग्रामसुहाये॥भरद्वा
जमुनिबरपहंआये॥दंडप्रणामकरतमुनिदेषे॥मूरतिवंतभागनिजलेखे॥धाइ
उठाइलाइउरलीन्हे॥दीन्हअसीसकृतारथकीन्हे॥आसनदीन्हनाइसिरबैठे॥च
हतसकुचग्रहजनुभजिपैठे॥मुनिपूछबकछुयहबडसोचू॥बोलेऋषिलखिसी
लसंकोचू॥सुनहुभरतहमसबसुधिपाई॥बिधिकरतबपरकछुनबसाई॥दोहा॥
तुमगलानिजियजनिकरहु॥समुझिमातकरतूति॥तातकैकहिदोषनहिं॥गइ

गिरा मति धूति ॥ १७१ ॥ चौपई ॥ रहौं कहत मन लकहि न कोऊ ॥ लोक बेद बुध संमत दोऊ ॥ तात तुम्हार बिमल यश गाई ॥ पाइहि कऊं बेद बडाई ॥ लोक बेद संमत सब कहई ॥ जेहि पितु राज दियि सो लहई ॥ राउ सत ब्रत तुमहि बुलाई ॥ देत राज सुष धर्म बडाई ॥ राम गवन बन अनरथ मूला ॥ जो सुनि सकल विश्व भै शूला ॥ सो भावी बस रानि अयाजा ॥ करि कुचालि अंतऊं पछितानी ॥ तहऊं तुम्हार अलप अपराधू ॥ कहै सो अधम अयान असाधू ॥ करतेऊ राज तुमहि न हि दोष ॥ रामहि होत सुनत संतोष ॥ दोहा ॥ अब अति कीन्हउ भरत भल ॥ तुमहि उचित मत एहु ॥ सकल सुमंगल मूल जग ॥ रघुबर चरण सनेहु ॥ १७२ ॥ चौपई ॥ सो तुम्हार धन जीवन प्राना ॥ भूरि भाग को तुमहि समाना ॥ यह तुम्हार आचरज न ताता ॥ दशरथ सुअन राम प्रिय भ्राता ॥ सुनहु भरत रघुपति मन माहीं ॥ प्रेम पात्र तुम सम कोउ नाहीं ॥ लषन राम सीतहि अति प्रीति ॥ निशि सब तुमहि सराहत बीती ॥ जाना मर्म न्हात प्रयागा ॥ मगन होहिं तुमरे अनुरागा ॥ तुम पर अस सनेह रघुबर के ॥ सुष जीवन जग जस जड नर के ॥ यह न अधिक रघुबीर बडाई ॥ प्रणत कुटुंब पाल रघुराई ॥ तुम तो भरत मोर मत एहु ॥ धरे देह जनु राम सनेहु ॥ दोहा ॥ तुम कहं भरत कलंक यह ॥ हम सब कहं उपदेस

न

रामभक्तिरससिद्धिहित। भायहसमयगणेश॥ दोहा॥ नवविधिविमलतातयसुतो
रा॥ रघुबरकिंकरमुमुदचकोरा॥ उदेसदाअथवइहिकबहूना॥ घटिहिनजगान
नदिनदिनदूना॥ लोकविलोकप्रीतिअतिकरहीं॥ प्रभुतापरविछ्छिविहिनहर
हीं॥ निशिदिनसुखदसदासबकाहू॥ ग्रसहिंनकेकेयिकरतवराहू॥ पूरणरामसु
प्रेमपियूषा॥ गुरुअपमानदोषवविदूषा॥ रामभक्तिअवअमियअघाहू॥ कीहेउ
सुलभसुधावसुधाहू॥ भूपभगीरथसुरसरिआनी॥ सुमिरतसकलसुमंगलखानी॥ दश
रथगुणगणबरणिनजाई॥ अधिककहाजेहिसमजगनाहीं॥ दोहा॥ जासुसनेहस
कोचबस॥ रामप्रगटभेआय॥ जेहरहियनयनन्हकबहुं॥ निरखेनाहिंअघाय॥ २०४
॥ चौपई॥ ॥कीरतिविधुतुमकीन्हअनूपा॥ जहंबसरामप्रेमम्रगरूपा॥ तातगला
निकरहुजियजाये॥ डरहुदरिद्रिहिपारसपाये॥ सुनहुभरतहमझूठनकहहीं॥ उदा
सीनतापसनरअहहीं॥ सबसाधनकरसुफलसुहावा॥ लषनरामसियदरसनपावा॥ ते
हिफलकरफलदरसतुम्हारा॥ सहितप्रयागसुभागहमारा॥ भरतधन्यतुम जगजशुज
येऊ। कहिअसप्रेममगनमुनिभयेऊ॥ सुनिमुनिबचनसभासदहरषे॥ साधुसराहिंसुम
नसुखबरषे। धन्यधन्यधुनिगगनप्रयागा। सुनिसुनिभरतमगनअनुरागा॥ दोहा॥ पु

लखिगतिहृदयरामसिय॥प्रजलसरोरुहनैन॥करिप्रणाममुनिमंडलिहि॥बोलेगद
गदबैन॥२७५॥चौपई॥मुनिसमाजअरुतीरथराजू॥सांचेहुसपथअघाइअकाजू॥
इहिथलजौंकछुकहियबनाई॥इहिसमअधिकनअघअधमाई॥तुमसर्वज्ञक
हौंसतिभाऊ॥उरअंतरजामीरघुराऊ॥मोहिनमातुकरतबकरसोचू॥नहिंदुष
जियजगजानिहिपोचू॥नाहिनडरबिगरहिपरलोकू॥पितुमरेकननाहिनशो
कू॥सुकृतसुयसभरिभुवनसुहाये॥लछमणरामसरिससुतपाये॥रामबिरहतजि
तनछिणभंगू॥नृपसोचकरकवनप्रसंगू॥रामलषनसियबिनुपगपनहीं॥करिमु
निबेषफिरहिंबनबनहीं॥दोहा॥अजिनबसनफलअसनमहि॥शयनडासिकुशपु
पात॥बसितरुतरनितसहतदुख॥हिमआतपबरषावात॥२७६॥चौपई॥यहदुखदाह
दहैनितछाती॥भूषनबासरनींदनराती॥यहकुरोगकरऔषधनाहीं॥सोधेउंसकल
विश्वमनमाहीं॥मातुकुमतबढईअघमूला॥तेहिहमारहितकीन्हबसूला॥कलि
कुकाठकरकीन्हकुयंत्रू॥गाडिअवधिपढिकठिनकुमंत्रू॥मोहिलगियहकुठाटते
हिंठाटा॥घालिसिसबजगबारहबाटा॥मिटैकुयोगरामफिरिआयें॥बसिअवध
नहिंआनउपायें॥भरतबचनसुनिमुनिसुषपाई॥सबहिंकीन्हमुनिभांतबडाई॥

अ॰जो॰
५९

तातकरहुजनिसोचबिसेषी॥सबदुखमिटिहिंरामपददेषी॥ दोहा॥ करिप्रबोध
मुनिबरकहेउ॥अतिथिप्राणप्रियहोहु॥कंदमूलफलफूलहम॥देहिंलेहुक
रिछोहु॥२१७॥चौपई॥सुनिमुनिबचनभरतहियसोचू॥भयेकुअवसरकठि
नसकोचू॥जानीगरूगुरूगिराबहोरी॥चरणबंदिबोलेकरजोरी॥सिरधरिआ
यसुकरियतुह्मारा॥परमधर्मयहनाथहमारा॥भरतबचनमुनिबरमनभाये॥
सुचिसेवकसिषनिकटबुलाये॥चाहियकीन्हभरतपहुनाई॥कंदमूलफलआ
नहुजाई॥भलेनाथकहितिन्हसिरनाये॥प्रमुदितनिजनिजकाजसिधाये॥मु
निहिसोचपाहुनबडनेवता॥तसिपूजाचाहियजसदेवता॥सुनिरिधिसिधिअ
णिमादिकआई॥आयसुहोइसोकरेगुसाई॥ दोहा॥रामबिरहब्याकुलभरत॥
सानुजसहितसमाज॥पहुनाइकरिहरहुश्रम॥कहेमुदितमुनिराज॥२१८॥
चौपई॥रिधिसिधिसिरधरिमुनिबरबानी॥बडभागिनिआपुहिअनुमानी॥क
हहिंपरस्परसिधिसमुदाई॥अतुलितअतिथिरामलघुभाई॥मुनिपदबंदिक
रियसोइआजू॥होइसुखीसबराजसमाजू॥असकहिरुचिररचेउगृहनाना॥जे
बिलोकिबिलखाहिंबिमाना॥भोगबिभूतिभूरिभरिराखे॥देखतजिन्हहिंअमर

राम
५९

अभिलाषे॥ दासीदाससाजसबलीन्हे॥ जुगावतरहहिंमनहिंमनदीन्हे॥ सबसमाज
सजसिधिपलमाहीं॥ जेसुषसपनेहुंसुरपुरनाहीं॥ प्रथमहिंबासदियेसबकेही
॥ सुंदरसुखदयथारुचिजेही॥ दोहा॥ बहुरिसपरिजनभरतकहु ऋषिआयसुअ
सदीन्ह॥ बिधिबिस्मयदायकबैभव॥ मुनिबरतपबलकीन्ह॥ २१९॥ चौपई॥ मुनिप्र
भावजबभरतबिलोका॥ सबलघुलगेलोकपतिलोका॥ सुषसमाजनहिंजाइबखा
नी॥ देखतबिरतिबिसारहिंग्यानी॥ आसनसयनसुबसनबिताना॥ बनबाटिकाबि
हंगम्रगनाना॥ सुरभिफूलफलअमियसमाना॥ बिमलजलाश्रयबिबिधिबिधाना
॥ असनपानसुचिअमितअमीसे॥ देखलोगसकुचातजमीसे॥ सुरसुरभीसुरत
रुसबहीके॥ लखिअभिलाषसुरेसुसचीके॥ ऋतुबसंतबहत्रिबिधबयारी॥ सब
कहंसुलभपदारथचारी॥ स्रकचंदनबनितादिकभोगा॥ देखिहर्षबिस्मयसबलो
गा॥ दोहा॥ संपतचकईभरतचक मुनिआयसुखेलवार॥ तेहिनिशिआश्रमपीजरा
राखेभाभिनुसार॥ २२०॥ चौपई॥ कीन्हनिमज्जनतीरथराजा॥ नाइमुनिहिसिर
सहितसमाजा॥ ऋषिआयसुअसीससिरराषी॥ करिदंडवतबिनयबहुभा
षी॥ पथगतकुशलसाथसबलीन्हे॥ चलेचित्रकूटहिचितदीन्हे॥ रामसखाक

आ

अजो० ६०

रकीन्हे लागू॥ चलत देह धरि जनु अनुरागू॥ नहिं पद त्राण सीस नहि छाया॥ प्रेम नेम ब्रत धर्म अमाया॥ लषन राम सिय पंथ कहानी॥ पूछत सखहि कहत मृदु बानी॥ राम बास थल बिटप बिलोके॥ उर अनुराग रहत नहिं रोके॥ देखि दशा सुर बरषहिं फूला॥ नहि म्रदु महि मगु मंगल मूला॥ दोहा॥ किये जाहिं छाया जलद सुषद वहे वर बात॥ तस मग भयन न राम कहं जस भा भरतहि जात॥ २२१॥ चौपई॥ जड चेतन जग जीव घनेरे॥ जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे॥ ते सब भये परम पद योगू॥ भरत दरस मेटे भव रोगू॥ यह बडि बात भरत के नाहीं॥ सुमिरत जिन्हहि राम मन माहीं॥ बारक राम कहत जग जेऊ॥ होत तरण तारण नर तेऊ॥ भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता॥ कस न होइ मगु मंगल दाता॥ सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं॥ भरतहिं निरखि हरषि हिय लहहीं॥ देषि प्रभाव सुरेसहि सोचू॥ जग भल भलेहि पोच कहं पोचू॥ गुरु सन कहेउ करअ प्रभु सोई॥ रामहि भरतहि भेंटहिं होई॥ दोहा॥ राम सकोची प्रेम बस भरत सप्रेम पयोधि॥ बनी बात बिगरन चहत करिय यतन छल सोधि॥ २२२॥ चौपई॥ बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने॥ सहसनयन बिनु लोचन जाने॥ कह गुरु बादि छोभ छल छांडू॥ इहां कपट कर होइहि भांडू॥ माया

राम ६०

पतिसेवकसनमाया॥करियतउलटिपरैसुरराया॥तबकछुकीन्हरामरुखजा
नी॥अबकुचालिकरिहोंइहिहानि॥सुनिसुरेसरघुनाथसुभाऊ॥निजअप
राधरिसाहिनकाऊ॥जेअपराधभक्तकरकरई॥रामरोषपावकसोजरई॥
लोककुंवेदविदितइतिहासा॥यहमहिमाजानहिंदुर्वासा॥भरतसरसको
रामसनेही॥जगजपुरामरामवैदेही॥दोहा॥मनहुंनआनियअमरपति॥
रघुबरभक्तअकाज॥अयशलोकपरलोकदुख॥दिनदिनशोकसमाज॥
२१८॥चौपई॥सुनसुरेसउपदेशहमारा॥रामहिसेवकपरमपियारा॥मानतसु
खसेवकसेवकाई॥सेवकबैरबैरअधिकाई॥यद्यपिसमनहिरागनरोषू॥गह
हिंनपापपुण्यगुणदोषू॥कर्मप्रधानविश्वकरिराखा॥जोजसकरैसोतसफ
लचाखा॥तदपिकरहिंसमविषमविहारा॥भक्तअभक्तहृदयअनुसारा॥अ
गुणअलेपअमानएकरस॥रामसगुणभयेभक्तप्रेमवस॥रामसदासेवक
रुचिराखी॥बेदपुराणसाधुसुरसाखी॥असजियजानितजऊंकुटिलाई॥क
रऊभरतपदप्रीतिसुहाई॥दोहा॥रामभक्तपरहितनिरत॥परदुखदुखीद
याल॥भक्तशिरोमणिभरततें॥भरतरामआयसअनुसारी॥स्वारथविवसवि

जनिडरपहु
सुरपाल॥
२१९॥चौ॰॥सत्यसिंधुप्रभुसुरहितकारी॥

कलतरु महि होहू॥ करत दोष न हरिहिं राउ मोहू॥ सुनि सुरबर सुरगुरु बर बानी॥ भा प्रबोध मन मिटी गलानी॥ बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ॥ लगे सराहन भरत सुभाऊ॥ इहि बिधि भरत चले मग जाहीं॥ दशा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं॥ जबहि राम कहि लेहिं उसासा॥ उमगत प्रेम मनहु चहु पासा॥ द्रवहिं बचन सुनि कुलिश पषाना॥ पुरजन प्रेम न जाइ बषाना॥ बीच बास करि यमुनहि आये॥ निरखि नीर लोचन जल छाये॥ दोहा॥ रघुबर बरण बिलोकि बर॥ बारि समेत समाज॥ होत बिरह बारिधि मगन॥ चढे बिबेक जहाज॥२२५॥ चौपई॥ यमुन तीर तिहि दिन करि बासू॥ भयेउ समय सम सबहि सुपासू॥ रातिहि घाट घाट की तरणी॥ आईं अगणित जाइ न बरणी॥ प्रात पार भे एकहि खेवा॥ तोषे रामसखा की सेवा॥ चले अन्हाइ नदिहि सिर नाई॥ साथ निषादनाथ लघु भाई॥ आगे मुनिबर बाहन आछे॥ राजसमाज जाइ सब पाछे॥ तेहि पाछे दोउ बंधु पयादे॥ भूषण बसन बेष सुठि सादे॥ सेवक सुहृद सचिव सुत साथा॥ सुमिरत लखन सीय रघुनाथा॥ जहं तहं राम बास बिश्रामा॥ तहं तहं करहिं सुप्रेम प्रणामा॥ दोहा॥ मगबासी नर नारि सुनि॥ धाम काम तजि धाई॥ देखि सरूप सनेह सब॥ मुदित जन्मफल पाइ॥२२६॥ चौपई॥ कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं॥ राम लषन

नसमबिरोहिंकिनाहीं ॥ वयवपुबरणरूपसोइआली ॥ शीलसनेहसरिससमचाली ॥
बेषनसोसखिसीयनसंगा ॥ आगेंअनीचलीचतुरंगा ॥ नहिप्रसन्नमुषमानसखेदा
॥ सखिसंदेहहोतइहिभेदा ॥ तासुतर्ककियगणमनमानी ॥ कहहिंसकलतेहिस
मनसयानी ॥ तेहिसराहिबाणीफुरपूजी ॥ बोलीमधुरबचनतियदूजी ॥ कहिसप्रे
मसबकथाप्रसंगू ॥ जेहिविधिरामराजरसभंगू ॥ भरतहिबहुरिसराहनलागी ॥ शी
लसनेहसुभावसुभागी ॥ दोहा ॥ चलतपयादेंषातफल ॥ पितादीन्हतजिराज ॥
जातमनावनरघुबरहिं ॥ भरतसरिसकोआज ॥२२७॥ चौपई ॥ भायपभक्तिभरत
आचरणू ॥ कहतसुनतदुषदूषनहरणू ॥ जोकछुकहियथोरसखिसोई ॥ रामबं
धुअसकाहेनहोई ॥ हमसबसानुजभरतहिदेखे ॥ भयेधन्ययुवतीजनलेखें ॥
सुनिगुणदेषिदशापछिताहीं ॥ केकइजननियोगसुतनाहीं ॥ कोउकहदूषण
रानिकुनाहिन बिधिसबभांतिहमहिजोदाहिन ॥ कहहमलोकबेदबिधिहीना
॥ लघुकुलतियकरतिमलीना ॥ बसहिंकुदेशकुगांवकुगमा ॥ कहंयहदरसपु
ण्यपरिणामा ॥ असअनंदअचरजप्रतियामा ॥ जनुमरुभूमिकल्पतरुजामा ॥
दोहा ॥ भरतदरसदेषतखुले ॥ मगुलोगन्हकरभाग ॥ जनुसिंघलबासिन्हभयेउ

अ॰ जो॰ ६
८२

बिधिबससुलभभयेमाग ॥२२८॥ चौपई॥ निजगुणसहितरामगुणगाथा॥ सुनतजा
हिंसुमिरतरघुनाथा॥ तीरथमुनिआश्रमसुरधामा॥ निरखिनिमज्जहिंकरहिंप्र
णामा॥ मनहीमनमागहिंबरएहू॥ सीयरामपदपदमसनेहू॥ मिलहिंकिरातको
लबनवासी॥ बैखानसबटुयतीउदासी॥ करिप्रणामपूछहिंजेहितेही॥ केहि
बनलषनरामबैदेही॥ तेप्रभुसमाचारसबकहहीं॥ भरतहिंदेखिजन्मफलले
हहीं॥ जेजनकहहिंकुशलहमदेखे॥ तेप्रियरामलषनसमलेखे॥ इहिबिधिबू
झतसबहिंसुबानी॥ सुनतरामबनबासकहानी॥ दोहा॥ तेहिबासरबसिप्रात
ही॥ चलेसुमिरिरघुनाथ॥ रामदरसकीलालसा॥ भरतसरिससबसाथ॥२२
९॥ चौपई॥ मंगलशकुनहोहिंसबकाहू॥ फरकहिंसुखदबिलोचनबाहू॥ भर
तहिसहितसमाजउछाहू॥ मिलिहहिंराममिटिहिदुखदाहू॥ करतमनोरथ
जसजियजाके॥ जाहिंसनेहसुरासबछाके॥ शिथिलअंगपगमगडगिडोल
हिं॥ बिकलबचनप्रेमबसबोलहिं॥ रामसखातेहिसमयदेखावा॥ शैलशिरोम
णिसहजसुहावा॥ जासुसमीपसरितपयतीरा॥ सीयसमेतबसहिंदोउबी
रा॥ देखिकरहिंसबदंडप्रणामा॥ कहिजयजानकिजीवनरामा॥ प्रेममगन

राम
८२

अस राज समाज ॥ जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥ दोहा ॥ भरत प्रेम तेहि समय जस
तस कहि सकहि कै न शेषु ॥ कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुख अह मम मलिन जनेषु
॥२८०॥ चौपई ॥ सकल सनेह सिथिल रघुबर के ॥ गये कोस दुइ दिनकर ढरके
॥ जल थल देखि बसे निशि बीते ॥ कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते ॥ उहा राम रजनी
अवशेषा ॥ जागे सीय सपन अस देषा ॥ सहित समाज भरत जनु आये ॥ नाथ
वियोग ताप तन ताये ॥ सकल मलिन मन दीन दुषारी ॥ देषी सासु आन अनुहारी
॥ सुनि सिय सपन भरे जल लोचन ॥ भये सोच बस सोच बिमोचन ॥ लषन सपन
यह नीक न होई ॥ कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥ अस कहि बंधु समेत नहाने
॥ पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥ दोहा ॥ छंद ॥ सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि
देखत भये ॥ नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गये ॥ तुलसी उठे
अवलोकि कारन काह चित चकित रहे ॥ सब समाचार किरात कोल्हन आइ तेहि
अवसर कहे ॥ सोरठा ॥ सुनत सुमंगल बैन ॥ मन प्रमोद तन पुलक भर ॥ सरद स
रोरुह नैन ॥ तुलसी भरे सनेह जल ॥२८१॥ चौपई ॥ बहुरि सोच बस भे सियरमनू
॥ कारन कवन भरत आगमनू ॥ एक आइ अस कहा बहोरी ॥ सेन संग चतुरंग

अजो॰ ६२

नत अथोरी॥ सो मुनि राम हि ना अति सोचू॥ लत पितु बन नलत बंधु संकोचू॥ भरत सुना
व समुझि मन माही॥ प्रभु चित हित थिति पावत नाही॥ समाधान तब भा यह जाने
॥ भरत कहे महं साधु सयाने॥ लखन लखेउ प्रभु हृदय खंभारू॥ कहत समय स
म नीति बिचारू॥ बिनु पूछे कछु कहउं गोसांई॥ सेवक समय न ढीठ ढिठाई॥ तु
म सर्वग्य शिरोमणि स्वामी॥ आपनि समुझि कहउं अनुगामी॥ दोहा॥ नाथ सुहृ
द सुठि सरल चित॥ शील सनेह निधान॥ सब पर प्रीति प्रतीति जिय॥ जानिय आ
पु समान॥२२२॥ चौपई॥ बिषयी जीव पाय प्रभुताई॥ मूढ मोह बस होहिं जनाई॥
भरत नीति रत साधु सुजाना॥ प्रभु पद प्रेम सकल जग जाना॥ तेऊ आजु राजपद पा
ई॥ चले धर्म मर्याद मिटाई॥ कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी॥ जानि राम बनवा
स एकाकी॥ करि कुमंत्र मन साजि समाजू॥ आये करन अकंटक राजू॥ को
टि प्रकार कलपि कुटिलाई॥ आये दल बटोरि दोउ भाई॥ जौं जिय होति न कपट
कुचाली॥ केहि सुहात रथ बाजि गजाली॥ भरतहि दोष देइ को जाये॥ जग बौरा
इ राजपद पाये॥ दोहा॥ शशि गुरु तिय गामी नघुष॥ चढे भूमि सुर यान॥ लोक
वेद ते विमुख भा॥ अधम को बेनु समान॥२२३॥ चौपई॥ सहसबाहु सुरनाथ त्रिसं

राम ६३

कू॥ केहि न राजमद दीन्ह कलंकू॥ भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ॥ रिपु रण रंच न रा
खव काऊ॥ एक कीन्ह नहिं भरत भलाई॥ निदरे राम जानि असहाई॥ समुझ परी
सो आजु बिसेषी॥ समर सरोष राम मुख देखी॥ इतना कहत नीति रस भूला॥ रण र
स बिटप पुलक जिमि फूला॥ प्रभु पद बंदि सीस रज राखी॥ बोले सत्य सहज बल भा
षी॥ अनुचित नाथ न मानव मोरा॥ भरत हमहिं उपचार न थोरा॥ कहं लगि सहिय
रहिय मन मारे॥ नाथ साथ धनु हाथ हमारे॥ दोहा॥ छत्रि जाति रघुकुल जनम
राम अनुज जग जान॥ लातहू मारे चढत सिर॥ नीच को धूरि समान॥ २२४॥ चौप
ई॥ उठि कर जोरि रजायसु मांगा॥ मनहु बीर रस सोवत जागा॥ बांधि जटा सिर
कटि कसि भाथा॥ साजि सरासन सायक हाथा॥ आजु राम सेवक जस लेऊं॥ भर
तहि समर सिषावन देऊं॥ राम निरादर कर फल पाई॥ सोवहु समर सेज दोउ भा
ई॥ आइ बना भल सकल समाजू॥ प्रगट करौं रिसि पाछिल आजू॥ जिमि करि
निकर दलै मृगराजू॥ लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू॥ तैसेहिं भरतहि सेन समेता
॥ सानुज निदरि निपातौं खेता॥ जौं सहाय कर संकर आई॥ तदपि हतौं रण राम
दोहाई॥ दोहा॥ अति सरोष माखे लषन॥ लषि सुनि सपथ प्रमान॥ सभय बि

विलोकत लोकपति॥ चाहत भभरि भगान॥२३०॥ चौपई॥ जग भै मगन गगन भै
बानी॥ लषन बाहु बल विपुल बषानी॥ तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा॥ को कहि सकै
को जान निहारा॥ अनुचित उचित काज कछु होई॥ समुझि करिय भल कह सब
कोई॥ सहसा करि पाछे पछिताही॥ कहहिं बेद बुध ते बुध नाही॥ सुनि सुर बचन लषन
सकुचाने॥ राम सीय सादर सनमाने॥ कही तात तुम नीति सुहाई॥ सब ते कठिन रा
जमद भाई॥ जो अंचवत हि मातहि नृप तेई॥ नाहिन साधु सभा जिन्ह सेई॥ सुनहु लषन
भल भरत सरीषा॥ विधि प्रपंच मह सुना न दीषा॥ दोहा॥ भरतहि होइ न राजमद॥
विधि हरि हर पद पाइ॥ कबहु कि कांजी सीकरन्हि॥ छीरसिंधु बिनसाइ॥२३१॥
चौपई॥ तिमिर तरुण तरणिहि मकु गिलई॥ गगन मगन मकु मेघहि मिलई॥ गोप
द जल बूडहिं घटयोनी॥ सहज छमा बरु छाडहि छोनी॥ मशक फूंक मकु मेरु उडा
ई॥ होइ न नृपमद भरतहि भाई॥ लषन तुम्हार सपथ पितु आना॥ सुचि सुबंधु नहि
भरत समाना॥ सगुण छीर अवगुण जल ताता॥ मिलै रचै परपंच विधाता॥ भरत हं
स रवि बंश तडागा॥ जनमि कीन्ह गुण दोष विभागा॥ गहि गुण पय तजि अवगुण बा
री॥ निज यश जगत कीन्ह उजियारी॥ कहत भरत गुण शील सुभाऊ॥ प्रेम पयोधि

भगतरघुराऊ।।दोहा।।सुनिरघुबरबाणीबिबुध देखिभरतपर हेतु।।सकलसरा
हतरामसो।।प्रभुको कृपानिकेतु।।२२७।।चौपई।।जौंनहोतजगजन्मभरतको।।
सकलधरमधुरधरणिधरतको।।कविकुलअगमभरतगुणगाथा।।कोजानैतुम
विनुरघुनाथा।।लषनरामसियसुनिसुरबानी।।अतिसुखलहेउनजाइबषानी
।।इहाभरतसबसहितसहाये।।मंदाकिनीपुनीतअन्हाये।।सरितसमीपराखिसब
लोगा।।मांगुमातुगुरसचिवनियोगा।।चलेभरतजहंसियरघुराई।।साथनिषाद
नाथलघुभाई।।समुझिमातुकरतबसकुचाही।।करतकुतर्ककोटिमनमाही
रामलषनसियसुनिममनाऊं।।उठिजनिअनतजाहिंतजिगऊं।।दोहा।।मातुम
तेमहंजानिमोहि।।जोकछुकरहिंसोथोर।।अघअवगुणआदरहिं।।समुझिआ
पनीओर।।२२८।।चौपई।।जौंपरिहरहिंमलिनमनजानी।।जौंसनमानहिंसेवक
मानी।।मोरेसरणरामकीपनही।।रामस्वामिदोषसबजनही।।जगयशभाजनचा
तकमीना।।नेमप्रेमनिजनिपुननवीना।।असमनगुणतचलेमगजाता।।सकुच
सनेहशिथिलसबगाता।।फेरतेमनहुमातुकृतखोरी।।चलतभक्तिबलधीरज
धोरी।।जबसमझहिंरघुनाथसुभाऊ।।तबपथपरतउताबलपाऊ।।भरतदशा।

तेहिअवसरकैसी॥जलप्रवाहजलअलिगतिजैसी॥देखिभरतकरसोचसनेहू॥भा
निषादतेहिसमयविदेहू॥दोहा॥लगेहोनमंगलशकुन॥सुनिगुणिकहतनिषा
द॥मिटिहिसोचुहोइहिहरष॥पुनिपरिणामबिषाद॥२३९॥चौपई॥सेवकब
चनसतसबजाने॥आश्रमनिकटजाइनियराने॥भरतदीखबनशैलसमाजू
॥मुदितछुधितजनुपाइसुनाजू॥ईतिभीतिजनुप्रजादुखारी॥त्रिविधतापपीडि
तग्रहमारी॥जाइसुराजसुदेशसुखारी॥भईभरतगतितेहिअनुहारी॥रामबास
बनसंपतिभ्राता॥सुखीप्रजाजनुपाइसुराजा॥सचिवविरागबिबेकनरेसु॥विपि
नसुहावनपावनदेसू॥भटजमनेमशैलरजधानी॥शांतिसुमतिशुचिसुंदररानी
सकलअंगसंपन्नसुराऊ॥रामचरणआश्रितचितचाऊ॥दोहा॥जीतिमोह
महिपालदल॥सहितबिबेकभुआल॥करतअकंटकराज॥सुषसंपदासुकाल
॥२४०॥चौपई॥बनप्रदेशमुनिबासघनेरे॥जनुपुरनगरगांवगणखेरे॥विपु
लविचित्रविहंगमृगनाना॥प्रजासमाजनजाइबषाना॥खगहाकरिहरिबाघब
राहा॥देषिमहिषवृकसाजसराहा॥बैरविहाइचरहिंएकसंगा॥जहंतहंमनहुं
सेनचतुरंगा॥झरनाझरहिमत्तगजगाजहि॥मनहुंनिशानविविधिविधिबाजहि

चकचकोरचातकसुकपिकगण। कूजतमंजुमरालमुदितमण॥ अलिगुणगावत
नाचतमोरा॥ जनुसुराजमंगलचऊंओरा। बेलिविटपतृणसफलसफूला। सबस
माजमुदमंगलमूला॥ दोहा॥ रामशैलशोभानिरषि। भरतहृदयअतिप्रेमु॥ ता
पसतपफलपाइजिमि॥ सुषीसिरानेनेम॥ २४३॥ चौपई॥ तबकेवटऊंचेचढिजा
ई॥ कहाभरतसनभुजाउठाई॥ नाथदेषियहविटपविशाला॥ पाकरिजंबुरसाल
तमाला॥ तिनतरवरन्हमध्यवटसोहा॥ मंजुविशालदेषिमनमोहा॥ नीलसघनप
ल्लवफललाला॥ अविचलछाहसुषदसबकाला॥ मानहुंतिमिरअरुणमयरासी
विरचीविधिसकेलिसुषमासी॥ तेहितरुसरितसमीपगुसांई॥ रघुवरपर्णकुटी
जहछाई॥ तुलसीतरुबरविविधिसुहाये॥ कहुंकहुंसियकहुंलषनलगाये॥
बटछायावेदिकाबनाई॥ सियनिजपाणिसरोजसुहाई॥ दोहा॥ जहंबैठेमुनिगण
सहित॥ नितसियरामसुजान॥ सुनहिकथाइतिहाससब॥ आगमनिगमपुरान॥
॥२४४॥ चौपई॥ सषावचनसुनिविटपनिहारी॥ उमगेभरतविलोचनवारी॥
करतप्रणामचलेदोउभाई॥ कहतप्रीतिशारदसकुचाई॥ हर्षहिंनिरषिरामपद
अंका॥ मानहुपारसपायेउरंका॥ रजसिरधरिहियनैननिलावहिं॥ रघुबरमिल

अजो० ६५

नसहिससुषपांवहि॥देषिभरतगतिअकथअतीवा॥प्रेममगनमृगखगजडजीवा॥
सखहिसनेहविवसमगुभूला॥कहिसुपंथसुषबरषहिंफूला॥निरषिसिद्धसा
धकअनुरागे॥सहजसनेहसराहनलागे॥होतनभूतलभावभरतको॥अचर
सचरचरअचरकरतको॥दोहा॥प्रेमअमियमंदरविरह॥भरतपयोधिगं
भीर॥मथिप्रगटेसुरसाधुहित॥कृपासिंधुरघुवीर॥२४२॥चौपई॥सषासमेत
मनोहरजोटा॥लषेनलषनसघनबनओटा॥भरतदीषप्रभुआश्रमपावन॥
सकलसुमंगलसदनसुहावन॥करतप्रवेशमिटेदुखदावा॥जनुयोगीपर
मारथपावा॥देखेभरतलषनप्रभुआगे॥पूछतबचनकहतअनुरागे॥सीस
जटाकटिमुनिपटवांधे॥तूणकसेकरसरधनुकांधे॥वेदीपरमुनिसाधुसमा
ज॥सीयसहितराजतरघुराज॥बल्कलबसनजटिलतनुस्यामा॥जनुमुनि
वेषकीन्हरतिकामा॥करकमलनिधनुशायकफेरत॥जीकीजरनिहरतहं
सिहेरत॥दोहा॥लसतमंजुमुनिमंडली॥मध्यसीयरघुनंद॥ज्ञानसभाजनुतनु
धरे॥भक्तिसच्चिदानंद॥२४४॥चौपई॥सानुजसखासमेतमगनमन॥विसरेहर्ष
शोकसुषदुखगन॥पाहिनाथकहिपाहिगुसांई॥भूतलपरेलकुटकीनाई॥

३

राम ६५

वचनसप्रेमलषनपहिचाने। करतप्रणामभरतजियजाने॥ बंधुसनेहसरसइहि
ओरा॥ उतसाहिबसेवाबरजोरा॥ मिलिनजाइनहिंगुदरतबनई॥ सुकबिलषनमन
ज कीगतिभनई॥ रहेराषिसेवापरभारू। चढीचंगजनुखैंचखेलारू॥ कहतसप्रेमनाइम
हिमाथा॥ भरतप्रणामकरतरघुनाथा॥ उठेराममुनिप्रेमअधीरा॥ कहुंपटकहुं
निषंगधनुतीरा॥ दोहा॥ बरबसलियेउठाइउर॥ लायेकृपानिधान॥ भरतरामकी
मिलनलषि। बिसरेसबहिअपान॥ २४४॥ चौपई॥ मिलनिप्रीतिकिमिजाइबषानी
॥ कबिकुलअगमकरममनबानी॥ परमप्रेमपूरणदोउभाई॥ मनबुधिचितअ
हमितिबिसराई॥ कहहुसप्रेमप्रगटकोकरई॥ केहिछायाकबिमतिअनुस
रई॥ कबिहिअर्थआषरबलसांचा॥ अनुहरतालगतिहिनटनाचा॥ अगम
सनेहभरतरघुबरके॥ जहंनजाइमनबिधिहरिहरके॥ सोमैंबरनिकहौंकेहि
भांति॥ बाजसुरागकिगाडरितांती॥ मिलनबिलोकिभरतरघुबरकी॥ सुरगण
सभयधुकधुकीधरकी॥ समुझायेसुरगुरुजडजागे॥ बरषिप्रसूनप्रसंसन
लागे॥ दोहा॥ मिलिसप्रेमरिपुसूदनहिं॥ केवटभेटेउराम॥ भूरिभाइभेटेभ
रत॥ लछमणकरतप्रणाम॥ २४५॥ चौपई॥ भेटेउलषनललकिलघुभाई

अजो० ६७

बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई॥ पुनि मुनिगण दोउ भाइन्ह बंदे॥ अभिमत आ
शिष पाइ आनंदे॥ सानुज भरत उमगि अनुरागा॥ धर सिर सिय पद पद्म परा
गा॥ पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये॥ सिय कर कमल परसि बैठाये॥ सीय आ
सीस दीन्ह मन माहीं॥ मगन सनेह देह सुधि नाहीं॥ सब बिधि सानुकूल लखि
सीता॥ भे असोच उर अपडर बीता॥ कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूंछा॥ प्रेम
भरा मन निज गति छूछा॥ तेहि अवसर केवट धीरज धरि॥ जोरि पानि बिन
वत प्रणाम करि॥ दोहा॥ नाथ साथ मुनिनाथ के॥ मातु सकल पुर लोग॥ सेव
क सेनप सचिव सब॥ आये बिकल बियोग॥ २४६॥ चौपई॥ शील सिंधु सुनि
गुरु आगमनू॥ सीय समीप राखि रिपुदमनू॥ चले सबेग राम तेहि काला॥ धी
र धर्म धुर दीन दयाला॥ गुरुहि देखि सानुज अनुरागे॥ दंड प्रणाम करन प्रभु
लागे॥ मुनिबर धाइ लिये उर लाई॥ प्रेम उमगि भेटे दोउ भाई॥ प्रेम पुलकि
केवट कहि नामू॥ कीन्ह दूरि ते दंड प्रणामू॥ राम सखा ऋषि बरबस भेटे॥ जनु म
हि लुटत सनेह समेटे॥ रघुपति भक्ति सुमंगल मूला॥ नभ सराहि सुर बरषहिं
फूला॥ इहि सम निपट नीच कोउ नाहीं॥ बड बशिष्ठ सम को जग माहीं॥ दो

हा॥ जेहि लषि लषनहु ते अधिक मिले मुदित मुनिराउ॥ सो सीतापति भजन को
॥प्रगट प्रताप प्रभाव॥२४३॥ चौपई॥ आरत लोग राम सब जाना। करुणाकर
सुजान भगवाना॥ जो जेहि भांति रहा अभिलाषी॥ तेहि तेहि की तेसी रुषि राषी
॥सानुज मिलि पल महं सब काहू॥ कीन्ह दूरि दुष दारुण दाहू॥ यह बडि बात
राम के नाही॥ जिमि घट कोटि एक रवि छाही॥ मिलि केवटहिं उमगि अनुरागा
॥ पुरजन सकल सराहहिं भागा। देषी राम दुखित महतारी॥ जनु सुबेलि अव
ली हिम मारी॥ प्रथम राम भेटी केकेयी॥ सरल सुभाव भक्ति मति जेहि॥ पग परि
कीन्ह प्रबोध बहोरी॥ काल कर्म बिधि सिर धरि षोरी॥ दोहा॥ भेटे रघुबर मातु स
ब॥ करि प्रबोध परितोष॥ अंब ईस आधीन जग॥ काहु न देइ दोष॥२४४॥ चौ
पई॥ गुरु तिय पद बंदे दोउ भाइ॥ सहित विप्र तिय जे संग आई॥ गंग गोरि सम स
ब सनमानी॥ देहिं असीस मुदित मृदु बानी॥ गहि पद लगे सुमित्रा अंका॥ ज
नु भेटा संपति अति रंका॥ पुनि जननी चरणन्ह दोउ भ्राता॥ परे प्रेम व्याकुल
सब गाता॥ अति अनुराग अंब उर लाये॥ नयन सनेह सलिल अन्हवाये
तेहि अवसर कर हर्ष विषादू॥ किमि कवि कहै मूक जिमि स्वादू॥ मि

निजजननिहि सानुजरघुराऊ॥ गुरुसनेह हेतकिधारियपाऊ॥ पुरजनपाइ
मुनीशानियोगू॥ जलथलतकितकितुतरेलोगू॥ दोहा॥ महिसुरमंत्रीमातु
गुरु॥ गनेलोगलियेसाथ॥ पावनआश्रमगमनकिय॥ भरतलखनरघुना
थ॥ २४६॥ चौपई॥ सीयआयमुनिबरपगलागी॥ उचितअसीसलही
मनमांगी॥ गुरुपतिनिहिमुनितियन्हसमेता॥ मिलिप्रेमकहिजायनजे
ता॥ बंदिबंदिपदसियसबहीके॥ आसिरबचनलहेप्रियजीके॥ सासुसक
लजबसीयनिहारी॥ मूंदेनयनसहमिसुकुमारी॥ परीबधिकबसमन
हुमराली॥ काहकीन्हकरतारकुचाली॥ तिन्हसियनिरखिनिपटदुखपावा
॥ सोसबसहियजोदैवसहावा॥ जनकसुतातबउरधरिधीरा॥ नीलनलिन
लोयनभरिनीरा॥ मिलिसकलसासुन्हसियजाई॥ तेहिअवसरकरुणामहि
छाई॥ दोहा॥ लागिलागिपगसबनिसिय॥ भेटतिअतिअनुराग॥ हृदयअसी
सहिप्रेमबस॥ रहिहहुभरीसोहाग॥ २४७॥ चौपई॥ विकलसनेहसीयसबरा
नी॥ बैठेनेसबहिकेहेगुरुग्यानी॥ कथनकहीजगगतिमुनिनाथा॥ कहेक
छुकपरमारथगाथा॥ नृपकरसुरपुरगमनसुनावा॥ सुनिरघुनाथदुसहदु

नपावा॥मरणहेतुनिजनेहनिहारी॥भेअतिबिकलधीरधुरधारी॥कुलिशक
ठोरसुनतकटुबानी॥बिलपतलषनसीयसबरानी॥शोकबिकलअतिस
कलसमाजू॥मानहुराजअकाजेउआजू॥मुनिबरबहुरिरामसमुझाये
॥सहितसमाजसुसरितअन्हाये॥ब्रतनिरंबुतेहिदिनप्रभुकीन्हा॥मुनिहुक
हेजलकाहुनलीन्हा॥दोहा॥भोरभयेरघुनंदनहिं॥जोमुनिआयसुदीन्ह
॥श्रद्धाभक्तिसमेतप्रभु॥सोसबसादरकीन्ह॥२५०॥चौपई॥करिपितुक्रियाबे
दजसबरणी॥भेपुनीतपातकतमतरणी॥जासुनामपावकअघतूला॥सुमिर
सकलसुमंगलमूला॥शुद्धसोभयेउसाधुसमतअस॥तीरथआवाहनसुरसरि
जस॥शुद्धभयेदुइबासरबीते॥बोलेगुरुसनरामपिरीते॥नाथलोगसबनिपटदु
षारी॥कंदमूलफलअंबुअहारी॥सानुजभरतसचिवसबमाता॥देषिमोहिप
लजिमिजुगजाता॥सबसमेतपुरधारियपाऊ॥आपुइहांअमरावतिराऊ॥
बहुतकहेउसबकियेउढिठाई॥उचितहोहितसकरियगुसाईं॥दोहा॥धर्मसे
तुकरुणायतन।कसनकहहुअस।लोगदुखितदिनदुइदरस॥देषिलह
हिंबिश्राम॥२५१॥चौपई॥रामबचनसुनिसभयसमाजू॥जनुजलनिधिमहंबि

राम

अजो· ६९

कलजिराजू ॥ मुनिमुनिगिरासुमंगलमूला ॥ नयेनमनरूमारुतअनुकूला ॥ पा
वनपयतिहुंकालअन्हाही ॥ जोबिलोकिअघओघनसाही ॥ मंगलमूरतिलो
चनभरिभरि ॥ निरखहिंहर्षदंडवतकरिकरि ॥ रामसैलबनदेखनजाही ॥ जह
सुषसकलकितहुंदुषनाही ॥ झरनाझरहिंसुधासमवारी ॥ त्रिबिधतापहरत्रि
बिधिबयारी ॥ बिटपबेलित्रणअगणितजाती ॥ फलप्रसूनपल्लवबहुभांती ॥
सुंदरसिलासुखदतरुछाही ॥ जाइबरणिबनछबिकेहिपाही ॥ दोहा ॥ सरनि
सरोरुहजलबिहंग ॥ कूजतगुंजतभृंग ॥ बैरबिगतबिहरतबिपिनमृगबिहंगबहु
रंग ॥ २५० ॥ चौपई ॥ कोल्हकिरातभिल्लबनबासी ॥ मधुसुचिसुंदरस्वादुसुधासी
भरिभरिपर्णपुटीरचिरूरी ॥ कंदमूलफलअंकुरजूरी ॥ सबहिंदेहिंकरबिन
यप्रणामा ॥ कहिकहिस्वादभेदगुणनामा ॥ देहिंलोगबहुमोलनलेही ॥ फेरत
राम दोहाईदेही ॥ कहहिंसनेहमगनमृदुबानी ॥ मानतसाधुप्रेमपहिचानी ॥ तुमसुकृ
तीहमनीचनिषादा ॥ पावादरसनरामप्रसादा ॥ हमहिअगमअतिदर्शतुम्हारा ॥ ज
समरुधरणिदेवसरिधारा ॥ रामकृपालनिषादनेवाजा ॥ परिजनप्रजाचहियज
सराजा ॥ दोहा ॥ यहजियजानिसकोचतजि ॥ करियछोहलषिनेहु ॥ हमहिकृता

३ राम ६९

रथकरनलगि। फलतृणअंकुरलेऊ ॥२५३॥ चौपई ॥ तुमप्रियपाहुनबनपगु
धारे ॥ सेवायोगनभागहमारे ॥ देवकाहहमतुमहिंगुसांई ॥ ईंधनपातकिरातमि
ताई ॥ यहहमारअतिवडिसेवकाई ॥ लेहिंनवासनबसनचुराई ॥ हमजडजीवजी
वगणघाती ॥ कुटिलकुचालीकुमतिकुजाती ॥ पापकरतनिशिवासरजाहीं ॥ न
हिपटकटिनाहिंपेटअघाहीं ॥ सपनेऊधर्मबुद्धिकसकाऊ ॥ यहरघुनंदनदर्शप्र
भाऊ ॥ जबतेंप्रभुपदपदुमनिहारे ॥ मिटेदुसहदुखदोषहमारे ॥ बचनसुनत
पुरजनअनुरागे ॥ तिन्हकेभागसराहनलागे ॥ छंद ॥ लागेसराहनभागसबअ
नुरागबचनसुनावहीं ॥ बोलनिमिलनिसियरामचरणसनेहलखिसुखपाव
हीं ॥ नरनारिनिदरहिंनेहनिजमुनिकोल्हभिल्लनकीगिरा ॥ तुलसीकृपारघु
वंशमणिकीलोहलैनौकातरा ॥ सोरठा ॥ बिहरहिंबनचहुंओर ॥ प्रतिदिनप्र
मुदितलोकसब ॥ जलज्योंदादुरमोर ॥ नयेपीनपावसप्रथम ॥२५४॥ चौपई ॥ पु
रनरनारिमगनअतिप्रीती ॥ वासरजाहिंपलकसमबीती ॥ सीयसासुप्रति
बेषबनाई ॥ सादरकरहिंसरिससेवकाई ॥ लषानमर्मरामबिनुकाहू ॥ माया
सबसियमायामाहू ॥ सीयसासुसेवाबसकीन्ही ॥ तिन्हलहिसुखसियआसि

अ॰ जो॰ १०

सदीन्ही॥ नरिविसियसहितसरलदोउभाई॥ कुटिलरानिपछिताहिंअघांही॥ अ
बजियमहिंयाचतिकैकेयी॥ महिनबीचविधिमीचुनदेयी॥ लोककहंबेदाबदित
कबिकहहीं॥ रामबिमुखथलनरकनलहहीं॥ यहसंसयसबकेमनमाहीं॥
रामगवनबिधिअवधिकिनाहीं॥ दोहा॥ निसिनिनीदनहिंभूषदिन॥ भरतवि
कलसुचिसोच॥ नीचकीचविचमगनजस॥ मीनहिंसलिलसकोच॥ २५५॥ चौप
ई॥ कीन्हेमातुमिसुकालकुचाली॥ ईतिभीतिजसपाकतसाली॥ केहिबिधिहोइ
रामअभिषेकू॥ मोहिअबकरतउपायनएकू॥ अवसिफिरहिंगुरुआयसु
मानी॥ मुनिपुनिकहरामरुचिजानी॥ मातुकहेंबहुरहिंरघुराऊ॥ रामजन
निहठकरबकिकाऊ॥ मोहिअनुचरकरकेतिकबाता॥ तेहिमहंकुसमयबा
मविधाता॥ जौंहठकरौंतोनिपटकुकरमू॥ हरगिरितेगुरुसेवकधरमू॥ एकौ
युक्तिनमनठहरानी॥ सोचतभरतहिंरैनबिरानी॥ प्रातअन्हायप्रभुहिसिर
नाई॥ बैठतपठयेऋषयनबुलाई॥ दोहा॥ गुरुपदकमलप्रणामकरि॥ बैठे
आयसपाई॥ विप्रमहाजनसचिवसब॥ जुरेसभासदआई॥ २५६॥ चौपई॥ बो
लेमुनिबरसमयसमाजा॥ सुनहुसभासदभरतसुजाना॥ धर्मधुरीणभानु

राम ३१

कुलभानू॥ राजा राम स्ववस भगवानू॥ सत्यसिंधु पालक श्रुति सेतू॥ रामजन्म मं
गलहेतु॥ गुरु मातु वचन अनुसारी॥ खलदल दलन देवहितकारी॥ नीति प्री
ति परमारथ स्वारथ॥ कोउ न राम सम जान यथारथ॥ विधि हरि हर शशि रवि
दिशपाला॥ माया जीव करम कलि काला॥ अहिप महिप जहं लगि प्रभुताई
॥ योग सिद्धि निगमागम गाई॥ करि बिचार जिय देखहु नीके॥ रामरजाय सीस
सबही के॥ दोहा॥ राखे राम रजाय रुख॥ हम सब कर हित होइ॥ समुझि सयाने
करहु अब॥ सब मिलि संमत सोइ॥२५४॥ चौपई॥ सब कहं सुखद राम अभि
षेकू॥ मंगल मूल मोद मगु एकू॥ केहि विधि अवध चलहिं रघुराई॥ कहहु स
मुझि सोइ करहु उपाई॥ सब सादर सुनि मुनिबर बानी॥ नय परमारथ स्वार
थ सानी॥ उतर न आव लोग भे भोरे॥ तब सिर नाइ भरत कर जोरे॥ भानुबंस
भे भूप घनेरे॥ अधिक एक ते एक बडेरे॥ जन्म हेतु सब कहं पितु माता॥ कर
म शुभाशुभ देइ विधाता॥ दलि दुख सजै सकल कल्याना॥ अस असीस राउर
जग जाना॥ सोइ गुसांइ विधि गति जेइ छेकी॥ सके को टारि टेक जो टेकी॥ दोहा॥
बूझिय मोहि उपाय अब॥ सो सब मोर अभाग॥ सुनि सनेहमय बचन गुरु॥

अ.जो.
७१

उरउपजाअनुरागु ॥२५४॥ चौपई ॥ तातबातफुररामक्रुपाही ॥ रामविमुषसुष
सपनेहुनाहीं ॥ सकुचौंतातकहतएकबाता ॥ अरधतजहिंबुधसरबसजाता
॥ तुमकाननगवनहुदोउभाई ॥ फिरिअहिंलषनसीयरघुराई ॥ सुनिसुभब
चनहरषेदोउभ्राता ॥ भेप्रमोदपरिपूरणगाता ॥ मनप्रसन्नतनतेजबिराजा ॥ ज
नुजियराउरामभेराजा ॥ बहुतलाभलोगन्हलघुहानी ॥ समदुषसुषसबरोव
हिंरानी ॥ कहहिंभरतमुनिकहासोकीन्हे ॥ फलजगजीवनअभिमतदीन्हे ॥
काननकरउंजन्मभरिवासू ॥ इहितेअधिकनमोरसुपासू ॥ दोहा ॥ अंतरे
जामीरामसिय ॥ तुमसर्वज्ञसुजान ॥ जौंफुरकहहुतौनाथनिज ॥ कीजियब
चनप्रमान ॥२५५॥ चौपई ॥ भरतबचनसुनिदेषिसनेहू ॥ सभासहितमुनि
भयेबिदेहू ॥ भरतमहामहिमाजलरासी ॥ मुनिमतिगढितीरअबलासी
गाचहपारयतनहियहेरा ॥ पावतिनावनबोहितबेरा ॥ औरकरहिकोभ
रतबडाई ॥ सरसीपीकीसिंधुसमाई ॥ भरतमुनिहिमनभीतरभाये ॥ सहित
समाजरामपहिंआये ॥ प्रभुप्रणामकरिदीन्हसुआसन ॥ बैठेसबसुनिमुनि
अनुशासन ॥ बोलेमुनिबरबचनविचारी ॥ देशकालअवसरअनुहारी

राम
७१

सुनऊरामसर्बग्यसुजाना॥धर्मनीतिगुणग्याननिधाना॥दोहा॥सर्वकेउरअंतरब
सऊ।जानऊंभावकुभाव॥पुरजनजननीभरतहित॥होइसोकहियउपाउ॥२
५७॥चौपई॥आरतकहहिंबिचारिनकाऊ॥सूझजुआरिहिआपनदाऊ॥सुनि
मुनिबचनकहतरघुराऊ॥नाथतुम्हारेहिहाथउपाऊ॥सबकरहितरुखरा
उरराखे॥आयसुकियेमुदितफुरभाखे॥प्रथमजोआयसुमोकहुहोई॥मा
थेमानिकरौंसिषसोई॥पुनिजेहिकहंजसकहबगुसाईं॥सोसबभांतिघटिहिसे
वकाई॥कहमुनिरामसत्यतुमभाषा॥भरतसनेहबिचारनराषा॥तेहितेकहौं
बहोरिबहोरी॥भरतभक्तिबसभइमतिमोरी॥मोरेजानभरतरुचिराषी॥जोकी
जियसोशुभशिवसाषी॥दोहा॥भरतबिनयसादरसुनिय॥करियबिचारबहो
री॥करबसाधुमतलोकमत॥नृपनयनिगमनिचोरि॥२५८॥चौपई॥गुरुअनु
रागभरतपरदेषी॥रामहृदयआनंदबिसेषी॥भरतहिधर्मधुरंधरजानी॥
निजसेवकतनमानसबानी॥बोलेगुरुआयसुअनुकूला॥बचनमंजुमृदु
मंगलमूला॥नाथसपथपितुचरणदोहाई॥भयेउनभुवनभरतसमभाई॥जो
गुरुपदअंबुजअनुरागी॥तेलोकहुबेदहुबडभागी॥राउरजापरअसअ

अजो०
७२

नुराग्र॥ कोकहिसकैभरतकरभाग्र॥ लषिलघुबंधुबुद्धिसकुचाई॥ करतबद
नपरभरतबडाई॥ भरतकहहिंसोकियेभलाई॥ असकहिरामरहेअरगाई
दोहा॥ तबमुनिबोलेभरतसन॥ सबसकोचतजितात॥ क्रपासिंधुप्रियबंधुसन
कहहुहृदयकीबात॥२६२॥ चौपई॥ सुनिमुनिबचनरामरुषपाई॥ गुरसाहि
बअनुकूलअघाई॥ लषिअपनेसिरसबछरभारू॥ कहिनसकहिंकछुक
रैबिचारू॥ पुलकशरीरसभाभेठाढे॥ नीरजनयननेहजलबाढे॥ कहब
मोरमुनिनाथनिबाहा॥ इहितेअधिककहोंमैंकाहा॥ मैंजानौंनिजनाथसु
भाऊ॥ अपराधिहुपरकोहनकाऊ॥ मोपरक्रपासनेहबिशेषी॥ षेलतषु
नसकबहूंनहिंदेषी॥ शिशुपनतेपरहरेउनसंगू॥ कबहूनकीन्हमोरमन
भंगू॥ मैंप्रभुक्रपारीतिजियजोही॥ हारेहुषेलजितावहिमोही॥ दोहा॥ महू
सनेहसकोचबस॥ सनमुषकहेउनबैन॥ दरशनत्रपतनआजुलगि॥ प्रेमपि
आसेनैन॥२६३॥ चौपई॥ बिधिनसकेउसहिमोरदुलारा॥ नीचबीचजननी
मिसपारा॥ इहौंकहतमोहिआजुनशोभा॥ आपनिसमुझिसाधुसुचिकोभा
॥ मातुमंदिमैंसाधुसुचाली॥ उरअसआनतकोटिकुचाली॥ फरैकिकोदवबा

राम
७२

बालि सुसाली॥ मुकुता प्रसवै कि संबुक ताली॥ सपनेहुं दोषक लेसु न काहू॥
मोर अभाग उदधि अवगाहू॥ बिनु समुझे निज अघ परिपाकू॥ जारेउं जाय ज
ननि कहि काकू॥ हृदय हेरि हारेउं सब ओरा॥ एकहि भांति भलेहिं भल मोरा॥ गुरु
गुसांइ साहिब सिय रामू॥ लागत मोहि नीक परिणामू॥ दोहा॥ साधु सभा गुरु प्रभु
निकट॥ कहौं सुथल सति भाउ॥ प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर॥ जानहिं मुनि रघुरा
उ॥२६१॥ चौपई॥ नृपति मरण प्रेम पन राखी॥ जननी कुमति जगतु सब साखी
॥ देखि न जाहिं बिकल महतारी॥ जरहिं दुसह ज्वर पुर नर नारी॥ महीं सकल
अनरथ कर मूला॥ सो सुनि समुझि सहेउं सब सूला॥ सुनि बन गवन कीन्ह र
घुनाथा॥ करि मुनि बेष लखन सिय साथा॥ बिनु पनही अरु प्यादेहि पाये
॥ शंकर साखि रहेउं इहि घाये॥ बहुरि निहारि निषाद सनेहू॥ कुलिश कठि
न उर भयउ न बेहू॥ अब सब आंखिन्ह देखेउं आई॥ जियत जीव जड सबै
सहाई॥ जिन्हहि निरखि मग सांपिनि बीछी॥ तजहिं बिषम बिष तापस तीछी॥
॥ दोहा॥ तेइ रघुनंदन लखन सिय॥ अनहित लागे जाहि॥ तासु तनय तजि दु
सह दुख दैव सहावै काहि॥२६२॥ चौपई॥ सुनि अति बिकल भरत बर बानी॥

आरतिप्रीतिविनयमैसानी ॥ शोकमगनसबसभाखभाहू ॥ मनहुंकमलब
नपस्योतुषारू ॥ कहिअनेकविधिकथापुरानी ॥ भरतप्रबोधकीन्हमुनिज्ञा
नी ॥ बोलेउचितबचनरघुनंदू ॥ दिनकरकुलकेरवबनचंदू ॥ तातजीयजि
नकरऊगलानी ॥ ईशअधीनजीवगतिजानी ॥ तीनिकालत्रिभुवनमतमो
रे ॥ पुणयस्वलोकताततरतोरे ॥ उरआनततुमपरकुटिलाई ॥ जाइलोकप
रलोकनसाई ॥ दोषदेहिंजननीहिजडतेई ॥ जिन्हगुरुसाधुसभानहिसेई ॥
॥ दोहा ॥ मिटहिंपापपरिपंचसब ॥ अखिलअमंगलभार ॥ लोकसुयसपु
परलोकसुष ॥ सुमिरतनामतुह्मार ॥ २६६ ॥ चौपई ॥ कहौंसुभावसत्यशि
वसाषी ॥ भरतभूमिरहराउररापी ॥ तातकुतर्ककरऊंजनिजाय ॥ बैरप्रे
मनहिंदुरेउराये ॥ मुनिगणनिकटविहंगमृगजाहीं ॥ बाधकवधिकविलो
किपराहीं ॥ हितअनहितपशुपक्षिहिजाना ॥ मानुषतनगुणज्ञाननिधाना
॥ ताततुमहिंमैजानौनीके ॥ करौंकहांअसमंजसनीके ॥ राखेउराउसत्यमो
हित्यागी ॥ तनपरिहरेउप्रेमप्रणलागी ॥ तासुबचनमेटतमनसोचू ॥ तेहि
तेअधिकतुम्हारसकोचू ॥ तापरगुरुमोहिआयसुदीन्हा ॥ अवशिजो

कहहुंबहोसोकीन्हा ॥ दोहा ॥ मनप्रसन्नकरिसकुचतजि ॥ कहहुंकरौंसोआजु ॥ सत्यसिंधुरघुबरबचन ॥ सुनिभासुषीसमाज ॥ २६७ ॥ चौपई ॥ सुरगणसहितसभयसुरराजू ॥ सोचहिंचाहतहोनअकाजू ॥ करतविचारबनतकछुनाहीं ॥ रामसरणसबरोमनमाहीं ॥ बहुरिविचारपरस्परकरहीं ॥ रघुपतिभक्तभक्तिबसअहहीं ॥ सुधिकरिअंबरीषदुर्बासा ॥ भेसुरसुरपतिनिपटनिरासा ॥ सहेसुरन्हबहुकालबिषादा ॥ नरहरिकियेप्रगटप्रहलादा ॥ लगिलगिकानकहहिंधुनिमाथा ॥ अबसुरनाथभरतकेहाथा ॥ आनउपायनदेखियदेवा ॥ मानतरामसुसेवकसेवा ॥ हियसप्रेमसुमिरहुसबभरतहि ॥ निजगुणशीलरामबसकरतहि ॥ दोहा ॥ सुनिसुरमतसुरगुरुकहेउ ॥ भलतुम्हारबडभाग ॥ सकलसुमंगलमूलजग ॥ भरतचरणअनुराग ॥ २६८ ॥ चौपई ॥ सीतापतिसेवकसेवकाई ॥ कामधेनुशतसरिससुहाई ॥ भरतभक्तितुम्हरेमनआई ॥ तजहुसोचबिधिबातबनाई ॥ देखुदेवपतिभरतप्रभाऊ ॥ सहजसुभावबिबसरघुराऊ ॥ मनथिरकरहुदेवडरनाहीं ॥ भरतहिजानिरामपरिछाहीं ॥ सुनिसुरगुरुसुरसंमतसोचू ॥ अंतरजामीप्रभुहिसकोचू ॥ निजशिरभारभरतजियजाना ॥ करतकोटिविधिउरअनुमाना ॥

करिबिचारमनदीन्हीठीका॥रामरजायसुआपनिनीका॥निजपनतजिराखेउप
नमोरा॥छोहसनेहकीन्हनहिंथोरा॥दोहा॥कीन्हअनुग्रहअमितअति॥सबबिधि
सीतानाथ॥करिप्रणामबोलेभरत॥जोरिजलजजुगहाथ॥२६९॥चौपई॥क
हउंकहावउंकाअवस्वामी॥कृपासिंधुअंतरजामी॥गुरप्रसन्नसाहिबअ
नुकूला॥मिटीमलिनमनकलपितसूला॥अपडरडरेउंनसोचसमूले॥रवि
हिनदोषदेवदिशाभूले॥मोरअभागमातुकुटिलाई॥बिधिगतिबिषमकालक
ठिनाई॥पावरोपिसबमिलिमोहिघाला॥प्रणतपालपनआपनपाला॥यहनइ
रीतिनराउरिहोई॥लोकहुंबेदबिदितनहिंगोई॥जगअनभलभलएकगुसा
ई॥कहियहोइभलकासुभलाई॥देवदेवतरुसरिससुभाऊ॥सनमुखबिमुख
नकाहुहिकाऊ॥दोहा॥जाइनिकटपहिचानितरु॥छांहसमनसबसोच॥
मागतअभिमतपावफल॥राउरंकभलपोच॥२७०॥चौपई॥लखिसबबिधि
गुरस्वामिसनेहू॥मिटेउछोभनहिंमनसंदेहू॥अबकरुणाकरकीजियसो
ई॥जनहितप्रभुचितछोभनहोई॥जोसेवकसाहिबसंकोची॥निजहितचहैता
सुमतिपोची॥सेवकहितसाहिबसेवकाई॥करैसकलसुखलोभबिहाई॥स्वा

रघुनाथ फिरे सब ही का॥ कियेर जाइ कोटि विधि नीका॥ यह स्वारथ परमार
थ साहू॥ सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू॥ देव एक विनती सुनि मोरी॥ उचित
होइ तस करब बहोरी॥ तिलक समाज साजि सब आना॥ करिय सुफल प्रभु जो
मन माना॥ दोहा॥ सानुज पठइय मोहि बन कीजिय सबहि सनाथ॥ नातरु फेरि
य बंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ॥२७१॥ चौपई नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई॥ बहु
रिय सीय सहित रघुराई॥ जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई॥ करुणासागर की
जिय सोई॥ देव दीन्ह सब मोपर भारू॥ मोरे नीति न धर्म विचारू॥ कहौं बचन
सब स्वारथ हेतू॥ रहत न आरत के चित चेतू॥ उतर देइ सुनि स्वामि रजाइ॥
सो सेवक लखि लाज लजाई॥ अस मैं अवगुण उदधि अगाधू॥ स्वामि सनेह स
राहत साधू॥ अब कृपाल मोहि सो मत भावा॥ सकुच स्वामि मन जाइ न पावा॥
प्रभु पद सपथ कहौं सति भाऊ॥ जग मंगल हित एक उपाऊ॥ दोहा॥ प्रभु प्र
सन्न मन सकुच तजि॥ जो जेहि आयसु देव॥ सो सिर धरि धरि करिहि सब॥ मि
टिहि अनट अवरेब॥२७२॥ चौपई॥ भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे॥ साधु
सराहि सुमन सर बरषे॥ असमंजस बस अवध निवासी॥ प्रमुदित मन तापस

वनवासी॥ अवधपुर हिं गे रघुनाथ सकोची॥ प्रभु गति देखि सभा सब सोची॥ जनक दूत तेहि
अवसर आवा॥ मुनि वशिष्ट सुनि बेग बुलावा॥ करि प्रणाम तिन्ह राम निहारे॥ बेष
देखि भे निपट दुखारे॥ दूतहिं मुनिवर बूझी बाता॥ कहहु विदेह नृप कुशलाता
॥ सुनि सकुचाइ नाइ महि नाथा॥ बोले चरबर जोरे हाथा॥ बूझब राउर साद र
साइं॥ कुशल हेतु सो भये गुसाईं॥ दोहा॥ नाहि त कोशल नाथ के॥ साथ कुशल ग
इ नाथ॥ मिथिला अवध विशेष ते॥ जग सब भये अनाथ॥ २७१॥ चौपई॥ कोश
लपति गति सुनि जनकौरा॥ भे सब लोग शोक बस बौरा॥ जेहि देखा तेहि समय बि
देहू॥ नाम सत्य अस लाग न केहू॥ नारि कुचालि सुनत महिपालहि॥ सूझ न ज
स कछु मणि विनु व्यालहिं॥ भरत राज रघुवर बनवासू॥ भा मिथिलेशहि हृदय
हरासू॥ नृप बूझे बुध सचिव समाजू॥ कहहु बिचारि उचित का आजू॥ समुझि अ
वध असमंजस दोऊ॥ चलिय कि रहिय न कह कछु कोऊ॥ नृपति धीर धरि हृदय
विचारी॥ पठये अवध चतुर चर चारी॥ बूझि भरत सत भाव कुभाऊ॥ आये हु
बेगि न होइ लखाऊ॥ दोहा॥ गये अवध चर भरत गति॥ बूझि देखि करतूति॥ च
ले चित्रकूट हि भरत॥ चार चले तिरहूति॥ २७२॥ चौपई॥ दूतन्ह आइ भरत की